तेरापंथ दिग्दर्शन

१९८५-८६



सं० मुनि सुमेरमल "लाडन"

संपादक

सं० मुनि सुमेरमल "लाडनूं"

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में
चंगलपेठ (तमिलनाडु) निवासी प्रसन्नमल सुरेन्द्रकुमार
गादिया द्वारा संचालित श्रीमति शान्ता बाई
चैरिटीज ट्रस्ट द्वारा सप्रेम भेंट

मूल्य : पैंतीस रुपये / प्रथम संस्करण : १९८६ / प्रकाशक : जैन विश्व भारती, लाडनूं, नागौर (राजस्थान)/मुद्रक : जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं-३४१ ३०६ ।

TERAPANTH DIGDARSHAN 1985-86
San. Muni Sumermal 'Ladnun'

Rs. 35.00

आशीर्वचन

वर्तमान की हर आहट पर समय का पहरा बैठा है। वह उसे अतीत में ले जाता है और उस पर मौन की अमिट छाप लग जाती है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो उस आहट को स्थायित्व देने का काम करते हैं। इतिहास उन्हीं के दिमाग की उपज है। 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' तेरापन्थ धर्मसंघ का वार्षिक इतिहास है। इतिहास की एक छोटी सी झलक इसमें दिखाई दे सकती है।

'तेरापन्थ दिग्दर्शन' का यह दूसरा वर्ष है। इसका प्रथम वर्ष अपने आप में एक नया प्रयोग था। कोई भी नई धारा आगे बढ़ती है तो उसमें कुछ छूटता है, कुछ जुड़ता है। 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' १९८५, ८६ में भी कुछ छोड़ने और कुछ जोड़ने का सलक्ष्य प्रयास किया गया है। पिछले वर्ष के इतिहास में रही कमियों को परिमार्जित करने के बाद भी इसमें परिष्कार की संभावना सदा रहेगी। किसी भी लेखन या सम्पादन में परिष्कार की दृष्टि जितनी स्पष्ट और उदार होती है, कृति का महत्त्व उतना ही बढ़ता है।

पाठकों का यह दायित्व है कि वे पुस्तक को पैनी दृष्टि से पढ़ें और उसकी तटस्थ समीक्षा-समालोचना करें। पाठकों की आलोचना की धार जितनी तीखी होगी, लेखक और संपादक की उतनी ही सजगता बढ़ेगी। लेखक, संपादक भी अपने पुरुषार्थ को परिमार्जित करने में अपनी सफलता समझें और विकास की संभावना देखें, यह आवश्यक है।

इतिहास के संकलन और सम्पादन का काम पूरी तरह से श्रम और शक्ति के नियोजन की अपेक्षा रखता है। आन्तरिक लगन और उत्साह के बिना ऐसा काम होना बहुत कठिन है। प्रस्तुत इतिहास के संकलन, सम्पादन में मुनि सुमेरमल (लाडनूं) ने निष्ठा और श्रमशीलता के साथ काम किया है। मैं चाहता हूं कि 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' एक ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज बने, जो आने वाली पीढ़ियों को युग-युग तक प्रेरणा दे सके। इसके लिए एक बात की ओर विशेष ध्यान देना है कि इसमें प्रशस्ति न हो, केवल प्रस्तुति हो। यथार्थ को प्रस्तुत करने का दृष्टिकोण ही इतिहास को एक निष्कलंक दर्पण बना सकता है, जिसमें अतीत की प्रत्येक आकृति का सही रूपांकन संभव है।

२८-६-८६ —आचार्य तुलसी

स्वास्थ्य निकेतन, जैन विश्व भारती

लाडनूं

मंगल-संदेश

पूरे मार्ग पर साथ चलना संभव नहीं होता; इतना ही बहुत है, कि कोई सही-सही दिशा दिखा दें। तेरापंथ अनुशासित और प्रगतिशील धर्मसंघ है और उसे आचार्यश्री तुलसी जैसे प्रगतिशील आचार्य का नेतृत्व उपलब्ध है। उसने शतशाखी वट वृक्ष की भांति सभी दिशाओं में विस्तार किया है। उसका समग्रता से लेखा-जोखा प्रस्तुत करना किसी लेखक के वश की बात नहीं, फिर भी उसका दिशादर्शन कर देना अपने आपमें एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' तथा उनके सहयोगी मुनि उदितकुमार ने दिशा सूचन के लिये जो प्रयत्न किया है, वह प्रशस्य है। इससे ऐतिहासिक तथ्यों की सुरक्षा होगी, यह ग्रंथ अगले वर्ष तथा चिर भविष्य के लिये प्रेरणासूत्र बना रहेगा।

२६-६-८६ —युवाचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, जैन विश्व भारती

प्रेरक-संदेश

इतिहास साहित्य की एक रोचक और प्रामाणिक विधा है। वह संस्कृति, सभ्यता और कला की ऐसी विधि है, जो युग-युग तक लोक चेतना को झंकृत करती रहती है। 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' इसी दिशा में उठाया हुआ एक पग है, जो नैतिक, मानवीय, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों के विकीर्ण घटकों का एक सहज जोड़ है। तेरापन्थ धर्मसंघ के संक्षिप्त वार्षिक विवरण के रूप में यह एक महत्त्वपूर्ण संकलन है। इतिहास के पाठक और शोध विद्यार्थी इससे अच्छा लाभ उठा सकते हैं।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी अपने धर्मसंघ के नेता ही नहीं हैं, एक नैतिक आन्दोलन के प्रणेता हैं। आपका समग्र जीवन मानव जाति की सेवा में समर्पित है। आपने अपने सम्पूर्ण धर्मसंघ को इस दिशा में नियोजित कर रखा है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, साहित्य, जन-सम्पर्क आदि आयामों के माध्यम से धर्मसंघ में जो काम होता है, उसकी संक्षिप्त सी झलक 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' में मिल सकती है। बोध और आचरण—दोनों भूमिकाओं का प्रशस्तीकरण ही इसकी सार्थकता है।

—साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

२८-६-८६
ऋषभ द्वार
लाडनूं

प्रकाशकीय

तेरापंथ धर्मसंघ साधु-साध्वियों की संख्या की दृष्टि से अन्यान्य धर्म-संघों की अपेक्षा बड़ा नहीं है परन्तु इस संघ द्वारा सम्पादित कार्य का विस्तार एवं व्यापकता सहज ही धर्मसंघ को एक महत्त्वपूर्ण धर्मसंघ की संज्ञा प्रदान करता है। इस संघ के सदस्य पद-यात्राओं के द्वारा भारतवर्ष के कोने-कोने में स्थित शहरों, गांवों, आदिवासी क्षेत्रों में विचरण कर जन-मानस में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना करने का प्रयास करते हैं।

साधु-साध्वियों के करीब १५० दल हजारों मीलों की पदयात्रा से चातुर्मासिक प्रवास हेतु दूर-दराज स्थानों की यात्रा के मध्य जन-वस्तियों को छूते हुए अपने आध्यात्मिक उपदेशों से जन-जन को प्रतिबोधित कर उनके आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास की प्रेरणा देते रहते हैं।

धर्मसंघ द्वारा उपरोक्त कार्य अपने आप में एक ऐतिहासिक उपक्रम है, जिसका वार्षिक लेखा-जोखा "तेरापंथ दिग्दर्शन" के इस प्रकाशन के माध्यम से सृजित किया गया है। धर्मसंघ के अनुशासक आचार्य श्री तुलसी एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी की प्रेरणा से मुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने इस प्रकाशन-योजना की क्रियान्विति में अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है, इसके लिए संस्था उनके प्रति श्रद्धा-आभार व्यक्त करती है।

श्रीचंद बैंगानी
मंत्री
जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)
दिनांक २८ जून, १९८६

प्राक्कथन

तेरापंथ जैन धर्म का अर्वाचीन संस्करण है । भगवान् महावीर के सिद्धान्तों पर पूर्ण समर्पित यह तेरापंथ धर्मसंघ अपने संस्थापक आचार्य भिक्षु के प्रति इस बात के लिए अत्यन्त आभारी रहेगा कि उन्होंने धर्मसंघ में कुछ ऐसी लक्ष्मण रेखाएं खींची हैं, जिसके भीतर किसी भी रावण की घुसपैठ नहीं होती । आचार्य भिक्षु ने एक आचार्य, एक आचार, एक विचार जैसे महत्त्वपूर्ण सूत्र तेरापंथ को दिये । जिनके बदौलत यह धर्मसंघ एक आचार्य के नेतृत्व व मार्गदर्शन में एक आचार और एक विचार की मौलिकता को कायम रखते हुए निरंतर गतिमान है ।

सम्प्रति आचार्यश्री तुलसी के गतिशील नेतृत्व में वर्तमान का तेरापंथ विविधमुखी प्रवृत्तियों का केन्द्र बन गया है । आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों के लिए जहां नूतन आयाम उद्घाटित किये हैं वहां उन्होंने समाज को एक नई दिशा दी है । तेरापंथ का मुख्य ध्येय आत्म-साधना है । इसके साथ शिक्षा, सेवा, यात्रा, जनसंपर्क आदि भी साधु-साध्वियों के जीवन के अंग हैं । वे अपनी साधना में अहर्निश संलग्न रहते ही हैं, साथ ही अपने संपर्क में आने वालों को अपनी अनुभूतियां बांटते हैं, दिशादर्शन करते हैं, उनके चरित्र-उन्नयन की प्रेरणा देते हैं । कुल मिलाकर 'तिन्नाणं-तारयाणं' के आगम वाक्य को चरितार्थ करते हुए वे स्व-कल्याण के साथ पर-कल्याण की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं ।

पूरे वर्ष में हुये कार्यक्रमों तथा घटित घटनाओं का समग्र संकलन किसी लेखक के लिए संभव नहीं है । उनमें से कुछ प्रतिशत संकलन भी हो जाये, तो इतिहास की अपूर्व थाती बन सकती है । तथ्यों के संकलन में तेरापंथ में सदैव सजगता रही है, तब ही तेरापंथ के आदि से अब तक हुए साधु-साध्वियों का विवरण सुरक्षित है ।

पूर्व वर्ष की भांति इस वर्ष भी तेरापंथ की बहुआयामी प्रवृत्तियों के संकलन का प्रयास किया गया है । आचार्यश्री जहां स्वयं की साधना में सजग हैं—नियत समय पर उठना, ध्यान स्वाध्याय करना, साधु-साध्वियों को पढ़ाना,

व संभाल करना आदि। वहां हजारों-हजारों लोगों के नैतिक जीवन को उन्नत बनाने, व्यसन मुक्त बनाने, दूर-दूर से समागत अध्यात्म प्रेमियों को मार्गदर्शन करने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य भी उनकी जीवन-चर्या के अंग है। बहत्तर बसन्त पार करने के बावजूद वे पन्द्रह-बीस किलोमीटर चल लेते हैं। दो-तीन सभाओं को संबोधित करते हैं। क्षेत्रगत बुराई को मिटाने का सलक्ष्य यत्न करते हैं। इन सारे कार्य-कलापों के संपादन में अनेकों मधुर प्रसंग घटित हो जाते हैं। जो न केवल रोचक, प्रेरणादायक व गुदगुदी पैदा करने वाले होते हैं, अपितु इतिहास की अमूल्य धरोहर बन जाते हैं।

जनसंपर्क की दृष्टि से आलोच्य वर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। हजारों-हजारों देहाती लोगों से संपर्क हुआ। भोले-भाले देहाती लोग आचार्यश्री को घंटों-घंटों घेरे रहते, अपने जीवन की समस्या का समाधान पूछते, अपनी ही भाषा में आचार्यश्री से समाधान सुनकर गद्‌गद हो उठते। बहुतों के मुख से अनायास निकल पड़ता—'भगवान आये हैं, भगवान। पैसे टके को छूते नहीं, भेंट पूजा लेते नहीं, केवल खोट मांगते हैं, दो, इनको खोट दो'। देखते-देखते बीड़ियों के बंडल टूट जाते, तंबाखू की डिबिया फेंक दी जातीं, वर्षों से शराब पी रहे लोगों की शराब छूट जाती। सैंकड़ों-सैंकड़ों सामाजिक कार्यकर्ता, राजनेता सम्पर्क में आते रहे हैं। आचार्यश्री का द्वार सबके लिए खुला है। कोई भी आकर मार्गदर्शन पा सकता है। आज आचार्य तुलसी नैतिक अभियान के पर्याय बन गये हैं। सार्वजनिक स्वच्छता के प्रतीक बन गये हैं।

देश की जटिल समस्या के समाधान में आचार्यवर निरन्तर सक्रिय रहते हैं। उलझी हुई पंजाब-समस्या के समाधान हेतु अकाली दल के दोनों नेता श्री लोंगोवाल व श्री बरनाला से आचार्यवर की महत्वपूर्ण बातचीत हुई। बातचीत के बाद एक सप्ताह के भीतर पंजाब समझौता हो गया। पूरे राष्ट्र ने राहत की सांस ली। उसके तत्काल बाद गृहमंत्री ने आचार्यश्री के पास आकर आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुत ग्रंथ ८ नवंबर १९८४ से १७ फरवरी, १९८६ तक के ४६७ दिनों की पूरी गतिविधियों, कार्यक्रमों का संकलन है। इस अवधि में आचार्यवर के कार्यक्रमों, संस्मरणों, यात्रा-प्रसंगों, भेंटवार्ताओं का विवरण खंड एक का मुख्य प्रतिपाद्य है। यह वर्ष अमृत महोत्सव का वर्ष है। आचार्यवर की पचास वर्षीय धर्मशासना की महानतम उपलब्धियों को यत्किंचित प्रस्तुति देने हेतु युवाचार्यश्री ने अमृत महोत्सव के समायोजना की

संकल्पना की। इस वर्ष अमृत-महोत्सव के तीन चरण क्रमशः गंगापुर, आमेट व उदयपुर में संपन्न हुए। उनका विस्तृत विवरण इसी खंड में उपलब्ध है।

युवाचार्यश्री की आचार्यवर से पृथक् तीन यात्राएं व आलोच्य वर्ष में विहित कार्यों का संकलन है। गुरुकुलवासरत साधु-साध्वियों का विवरण, साध्वीप्रमुखाश्री जी का अध्यापन आदि प्रवृत्तियों का आकलन इसी खंड का विषय है।

दूसरे खंड में बहिर्विहारी साधु-साध्वी-संघाटकों का विवरण है। पूर्व निर्णयानुसार तेरापंथ दिग्दर्शन वर्ष कार्तिक पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक निश्चित था, इसलिए साधु-साध्वियों का विवरण प्रायः उसी तिथि तक सीमित है। बाद में वह समय मर्यादा महोत्सव से मर्यादा महोत्सव तक का निर्णीत हो गया। अतः केन्द्र का संपूर्ण विवरण मर्यादा महोत्सव तक तथा साधु-साध्वियों का कार्तिक पूर्णिमा तक लिया गया है। आचार्यश्री के निर्देश में साधु-साध्वियां पूरे भारत में पदयात्रा करती हुई जन-जन के नैतिक उत्थान के लिए सतत प्रयत्नशील रहती हैं। उन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में क्या-क्या कार्यक्रम किये? भाई-बहिनों में तत्त्वज्ञान-कंठस्थ, तपस्या, जप, अनुष्ठान आदि क्या-क्या हुए? साधु-साध्वियों में तपस्या, स्वाध्याय, वाचन आदि कितना हुआ? आस्था से संबंधित क्या-क्या संस्मरण घटित हुए? उनका संक्षिप्त में निदर्शन है। तपस्या का विवरण प्रायः सावन व भाद्रपद महीने का है। परिशिष्ट में बारह विभाग हैं, जिनमें जीवन-विज्ञान प्रेक्षाध्यान, अमृत-पद्य तथा आचार्यश्री की सम-सामयिक गीतिकाएं हैं। समाज की विभिन्न संस्थाओं से प्रेषित विवरण भी चुवक रूप में उपलब्ध है।

अमृत-महोत्सव वर्ष जीवन-विज्ञान वर्ष के रूप में घोषित है। जीवन-विज्ञान की दृष्टि से आलोच्य वर्ष में कुछ महत्वपूर्ण कार्य संपादित हुए। प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान की ठोस भूमिका निर्मित हुई। आचार्यश्री तुलसी के वाचना प्रमुखत्व में युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा संपादित-विवेचित तृतीय अंग सूत्र स्थानांग पर एक सुंदर विवेचन राजस्थान पत्रिका में तीन-चार महीने निरंतर 'सुभाषित प्रदीप स्तंभ' के अंतर्गत प्रकाशित होता रहा।

आभार

मैं इस ग्रंथ की निर्मिति में आचार्यवर व युवाचार्यश्री के आशीर्वाद को योगभूत मानता हूं। उनके सतत मार्गदर्शन व प्रेरणा को ही मुख्य सहकारी मानता हूं। महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री का भी मैं आभारी हूं, जिनका समय-

समय पर अपेक्षित सामग्री को जुटाने में पूरा-पूरा सहयोग रहा । मुनि किशनलालजी ने प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान की रिपोर्ट तैयार की । मुनि धनंजय कुमार जी ने युवाचार्यश्री की यात्रा व अन्य विवरण को अपनी कलम से उकेरा । मुनि बालचंदजी व मुनि मधुकरजी का समय-समय पर योग मिला । आदर्श साहित्य संघ से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक विज्ञप्ति का यथोचित उपयोग हुआ । इसके अलावा अन्य संघीय पत्र-पत्रिकाओं जैन भारती, अणुव्रत, युवादृष्टि, पाथेय, प्रेक्षाध्यान से भी सामग्री प्राप्त हुई । ग्रंथ की अवधारणा में श्री प्रेमप्रकाश अग्रवाल का योग रहा । मैं इन सबके प्रति हार्दिक आभार मानता हूं ।

मेरे सहयोगी मुनि उदित कुमार का इसमें सर्वाधिक श्रम रहा है । मेरा तो केवल मार्गदर्शन व तथ्य संकलन रहा है । शेष सारा कार्य उसके द्वारा हुआ है । उसकी लेखनी और सशक्त बने, इसी मंगल भावना के साथ उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं ।

तेरापंथ दिग्दर्शन का यह दूसरा वर्ष है । इसमें काफी कुछ परिष्कार हुआ है, फिर भी इसमें संशोधन-परिवर्धन का अवकाश है । आशा है आने वाले वर्ष में और अधिक तथ्यों का संकलन होगा । धर्मसंघ के प्रत्येक साधु-साध्वियों का धार्मिक, आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का लेखा-जोखा इसमें अंकित होगा । पुस्तक पाठकों के लिये प्रेरक बने, इसी शुभाशंसा के साथ········ ।

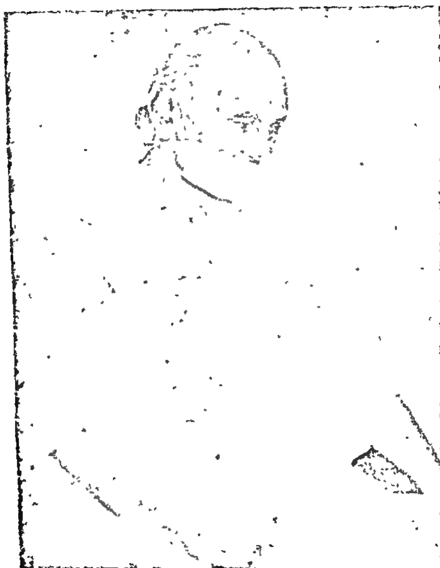
२६-६-१६८६ —मुनि सुमेर 'लाडनूं'

स्वास्थ्य निकेतन (भिक्षु विहार)
जैन विश्व भारती, लाडनूं



युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी (७२ वर्ष)





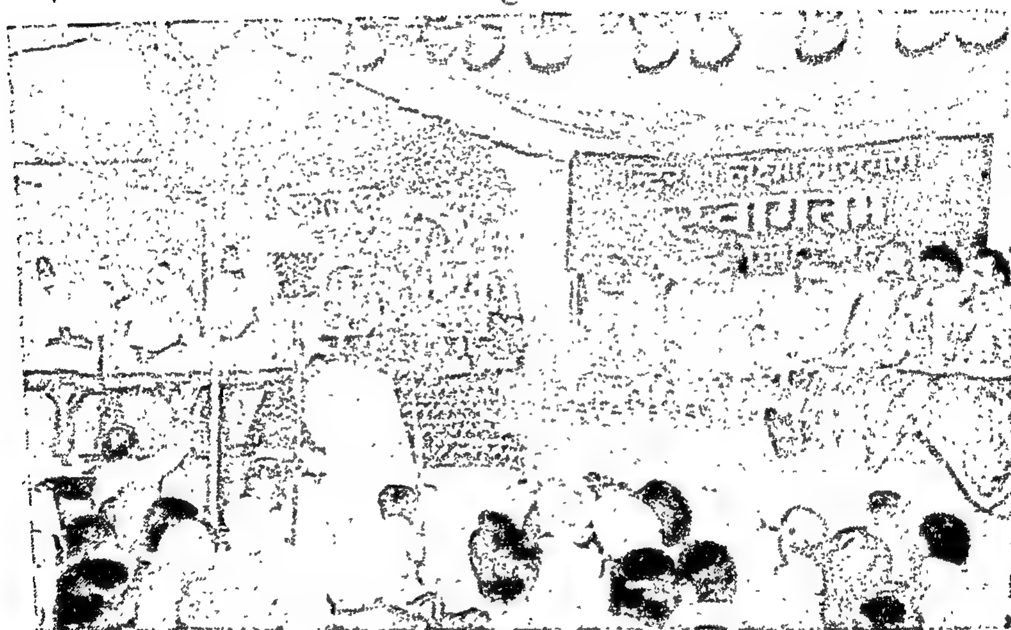
युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ (६६ वर्ष)



महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा (४५ वर्ष)



स्व० संत हरचंद सिंह लोंगोवाल व श्री सुरजीतसिंह बरनाला के साथ पंजाब की समस्या पर बातचीत करते हुए आचार्य श्री तुलसी, युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ।



हत्या से तीन दिन पूर्व संगरुर (पंजाब) में साध्वी श्री जतनकुमारी 'कनिष्ठा'
के सान्निध्य में आयोजित अणुव्रत सभा में स्व० संत लोंगोवाल



विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी व संत लोंगोवाल



आसीन्द (भीलवाड़ा) में पत्रकारों के वीच आचार्य श्री तुलसी



आमेट चातुर्मासिक प्रवेश पर आयोजित स्वागत समारोह का एक विहंगम दृश्य



(चित्र नं० १) उदयपुर में अमृत महोत्सव के तृतीय चरण के अवसर पर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा प्रदत्त 'भारत ज्योति' अलंकरण प्रदान करते हुए महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह (चित्र नं० २) पूर्व केन्द्रीय गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नंदा को सन् १९८५ का अणुव्रत पुरस्कार प्रदान करते हुए राष्ट्रपति जी।



साहित्य संस्थान, टोहाना द्वारा टोहाना में आयोजित साहित्य-प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहे आचार्य श्री तुलसी तथा प्रदर्शनी की अवगति दे रहे हैं संस्थान के सहनिदेशक श्री भीखमचंद 'अमर'



पंजाब समझौते के बाद आमेट की आमसभा में बोलते हुए केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शंकरराव चव्हाण ।



त-महोत्सव के द्वितीय चरण पर आयोजित विराट् सभा को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय कार्मिक, प्रशासनिक व पर्यावरण राज्य मंत्री श्री शिवराज पाटिल ।



आकर्षण

- जसोल में मर्यादा-महोत्सव पर श्री शिवाजी भावे को सन् १९८४ का अणुव्रत पुरस्कार समर्पित।
- मेवाड़ प्रवेश पर टॉडगढ़ में मेवाड़ प्रदेशीय स्वागत।
- गंगापुर में अमृत-महोत्सव का प्रथम चरण आयोजित व अमृत-कलश पदयात्रा का शुभारंभ।
- आमेट चातुर्मासिक प्रवेश पर अमृत-कलश में भरे ३५ हजार ४६० संकल्प पत्र आचार्यवर को समर्पित।
- मुमुक्षु बहिनों व समणियों का साप्ताहिक प्रेक्षा शिविर।
- अकाली दल के अध्यक्ष श्री लोंगोवाल की आचार्यवर से पंजाब-समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण बातचीत।
- पंजाब समझौते के तत्काल बाद केन्द्रीय गृहमंत्री श्री श० भा० चह्वान का आगमन।
- अमृत-महोत्सव के द्वितीय-चरण पर चतुर्विध धर्मसंघ द्वारा भावभरा अभिनन्दन।
- साधु-साध्वियों का नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग।
- कानोड़ में पंचदिवसीय श्रावक सम्मेलन।
- उदयपुर में मर्यादा महोत्सव व अमृतम-होत्सव के तृतीय चरण का समायोजन।
- महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा आचार्यवर को 'भारत ज्योति' अलंकरण प्रदत्त।
- पूर्व गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा को सन् १९८५ का अणुव्रत पुरस्कार समर्पित।
- साध्वी श्री यशोधराजी का साध्वी नियोजिका के रूप में मनोनयन।
- मुनि श्री मुदित कुमार की युवाचार्यश्री के आंतरिक कार्य में व्यक्तिगत सहयोगी के रूप में महत्वपूर्ण नियुक्ति।



अनुक्रम

खण्ड-१

खण्ड-२

परिशिष्ट

एक महान् परिव्राजक

आचार्यश्री के चरण जहां टिकते हैं, वहां धर्म का पवित्र प्रवाह प्रारंभ हो जाता है। वातावरण में नवीनता आ जाती है। भारी भीड़ जमा हो जाती है। आचार्यश्री अपने जनोपयोगी कार्यक्रमों से जनता को अवगत कराते हैं। वे आचरण की शुद्धि को मुख्यता देते हैं। अनुशासन एवं ईमानदारी के गिरते हुए स्तर को ऊंचा उठाने के लिए उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात्र किया, जिससे नैतिकता की पुर्नस्थापना को एक नया आयाम मिला।

आचार्यश्री तुलसी महान् परिव्राजक हैं। उन्होंने अपने छोटे-छोटे कदमों से धरती के छोर को नापा है, हजारों लोगों से संपर्क साधा है, तथा लाखों उनके संपर्क में आये हैं। शहरों की पढ़ी-लिखी जनता को वे जीवन के सही मार्ग की ओर गति करने का इंगित करते हैं, वहां गांवों की भोली-भाली जनता को व्यसन मुक्त एवं रूढ़ि मुक्त बनाने का सलक्ष्य प्रयास करते हैं। चार महीने का एक स्थान तथा शेष आठ महीनों में पाद-विहार करते हैं। इस दौरान वे जनता को संयम का पाठ पढ़ाते हैं।

चातुर्मास एक यादगार बन गया

जोधपुर का ऐतिहासिक चातुर्मास ८ नवम्बर को सानन्द संपन्न हो गया। इस चातुर्मास की सबसे बड़ी विशेषता यह थी सभी जाति और सभी वर्ग के लोगों ने बिना किसी भेदभाव के आचार्यवर को सुना। राजनीति, धर्म, समाज एवं शिक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रों के लोग आचार्यश्री के संपर्क में बराबर आते रहे। वे आचार्यश्री के असांप्रदायिक एवं स्पष्ट विचारों से बहुत प्रभावित हुए। मरू-अनुसंधान केन्द्र (काजरी) में वैज्ञानिकों के बीच आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री का 'धर्म और विज्ञान' विषय पर मार्मिक वक्तव्य हुआ। केन्द्र के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला कार्यक्रम था। हजारों-हजारों लोग संपर्क में आये, उनमें व्यसन मुक्ति की दिशा में अनुठा काम हुआ। अनेक अनुसूचित परिवार सत्संस्कारी बने।

आचार्यवर का चातुर्मास जोधपुर के ही एक उपनगर सरदारपुरा में हुआ। आधुनिक ढंग से बसे इस उपनगर में सौ से भी अधिक तेरापंथी परिवार रहते हैं, छठी पान रोड पर श्री छगनलाल तातेड़ के पुत्र द्वयश्री जिनेश्वर

कुमार एवं श्री अमृतलाल के दो बंगले हैं, जो परस्पर सटे हुए हैं, वहां आचार्यवर का चातुर्मास हुआ। पार्श्व में मेघ गेस्ट हाउस है, जहां चातुर्मास व्यवस्था समिति का प्रधान कार्यालय था। जोधपुर वासियों द्वारा ८ नवम्बर को भावभीनी विदाई दी गई। ९ व १० को आचार्यवर जोधपुर के ही उपनगर शास्त्री नगर एवं हाउसिंग बोर्ड विराजे। ११ नवम्बर को जोधपुर नगर परिषद् की सीमा समाप्त हो गई।

बाड़मेर जिला में प्रवेश

१४ नवम्बर। कोरणा / जोधपुर जिला की सीमा पारकर बाड़मेर जिला में प्रवेश किया। दूसरे दिन जिले की ओर से भावपूर्ण स्वागत किया गया।

इस अवसर पर बाडमेर के जिलाधीश श्री के० एस० मणी ने कहा—'नैतिक मूल्यों में दिन-प्रतिदिन आ रही गिरावट एक चिन्ता का विषय है, किन्तु इस संदर्भ में अणुव्रत एक आशा की किरण हैं। आचार्य तुलसी देश के एक मात्र आचार्य हैं जो नैतिक जागरण के लिए अनवरत प्रयत्नशील हैं।'

पचपदरा क्षेत्र के विधायक श्री अमराराम चौधरी ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी धर्म की साक्षात् गंगा है। बाड़मेर के रेगिस्तानी क्षेत्र को सब प्रकार से हराभरा बनाने के लिए आपका शुभागमन हुआ है। आचार्यश्री जैन धर्म के एक संप्रदाय विशेष के आचार्य हैं, किन्तु आपके कार्यों को किसी वर्ग विशेष में विभक्त नहीं किया जा सकता।'

पत्रकार श्री भूरचंद जैन ने कहा—'मानव उत्थान के लिए आचार्यश्री जो कार्य कर रहे हैं, उसका वर्णन हमारे लिए शब्दातीत है। बाड़मेर एक सीमांत क्षेत्र है। आपकी कृपा से यहां कुछ ऐसे कार्य होंगे, जिससे आपकी यह बाड़मेर जिले की यात्रा ऐतिहासिक बन जायेगी।'

उपजिलाधीश श्री रामपालसिंह चौहान, बालोतरा जिला के उपजिलाधीश श्री गुरुदयाल आर्य, विकास अधिकारी श्री रणछोड़दास नामा, उपपुलिस अधीक्षक श्री विनोद बांगड़, कोरणा गांव के सरपंच श्री सुरेन्द्र सिंह तथा बाडमेर नगरपालिका के उपाध्यक्ष श्री नेमीचन्द गोलच्छा ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया।

आचार्यश्री ने अभिनन्दन के प्रत्युत्तर में कहा—'यह स्वागत या अभिनन्दन किसी व्यक्ति का नहीं, त्याग का अभिनन्दन है, भारतीय संस्कृति का

अभिनन्दन है। हमारा सच्चा स्वागत तभी होगा, जब मानवीय मूल्यों को ऊपर उठाने में आप सहयोगी बनेंगे।'

१८ नवम्बर। आचार्यप्रवर के प्रवचन से प्रभावित होकर सैकड़ों ग्रामीणों ने मद्य, मांस, धूम्रपान आदि का परित्याग किया।

शोक विमोचन

रायपुर मध्यप्रदेश के निवासी ३२ वर्षीय नौजवान वसन्त कुमार दुगड़ एवं उसकी आठ वर्षीय पुत्री चन्द्रकला की स्टोव फट जाने से तत्काल मृत्यु हो गई। दो सगी बहिनें आग से बुरी तरह झुलस गईं। उनको अस्पताल में दाखिल किया। इस दुःखद घड़ी में उसके माता-पिता व धर्मपत्नी ने दुर्घटना के मात्र चौबीस घंटे के बाद आगोलाई में गुरुदेव के दर्शन किये आचार्यवर ने पारिवारिक सदस्यों को संबल प्रदान किया।

श्री भंवरलाल मालू गंगाशहर की माताजी का ८२ वर्ष की वृद्धावस्था में ५० मिनट अनशन में स्वर्गवास। पारिवारिक जनों ने आचार्यवर के दर्शन किये। आचार्यवर ने माताजी की भावना के अनुरूप रूढ़ि को प्रश्रय न देने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

१८ नवम्बर। पाटोदी / किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें सैंकड़ों किसानों ने आचार्यश्री के उपदेश को सुना। व्यसनमुक्त बने।

चार बार स्थान परिवर्तन

२० नवम्बर। गोपड़ी से पचपदरा के बीच मात्र पांच कि० मी० की दूरी थी, इसलिए पचपदरा के लोगों का दिनभर तांता लगा रहा। आज आचार्यवर को चार बार स्थान परिवर्तन करना पड़ा। यह आचार्यवर के जीवन का संभवतः प्रथम अवसर था। स्थान परिवर्तन का कारण गांववासियों की अनुदारता नहीं थी। उन्होंने तो अपने पूरे घर हमारे लिए खोल दिये थे। आचार्यवर सर्वप्रथम जहां ठहरे थे, वहां 'इलियां' आदि क्षुद्र जीवों की बहुलता होने से हिंसा की संभावना थी, इसलिए वह स्थान छोड़ दूसरे मकान में पधारे, उस मकान की छत टीन की थी। दोपहर में टीन के गर्म होते ही आचार्यवर को शीघ्र जुकाम होने की संभावना रहती है। अतः उसे भी छोड़ना पड़ा। तीसरा स्थान इतना छोटा था कि जिसमें मुश्किल से चार आदमी ही बैठ सकते थे। गोपड़ी गांव एवं पचपदरा के लोगों का बहुत आवागमन था, इसलिए रात्रि प्रवास बड़े स्थान पर किया। बार-बार परिवर्तन करने से

आचार्यवर को कोई कष्टानुभूति नहीं हुई, प्रत्युत एक नैसर्गिक आनन्द का अनुभव हुआ ।

पचपदरा में भावभरा स्वागत

२१ नवम्बर । प्रातः गोपड़ी से विहार कर आचार्यवर पचपदरा पधारे । पांच कि० मी० लम्बा यह मार्ग जनाकीर्ण हो गया था । पचपदरा की प्रमुख गलियों से होते हुए एक भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर नवनिर्मित प्रवचन पण्डाल में पहुंचे । श्री मोहनलाल दम्माणी का बंगला आचार्यवर का प्रवास-स्थल बना । समागत बहिर्विहारी साधु-साध्वियों तथा स्थानीय संस्थाओं की ओर से आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया । श्री सोहनलाल सालेचा ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया ।

आचार्यवर ने सभी अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में संतुलित रहने का उपदेश दिया तथा गोपड़ी में चार बार स्थान परिवर्तन की घटना का जिक्र करते हुए कहा—'गोपड़ी में छोटी सी कुटिया में हमारा मुकाम हुआ और आज इस आलीशान कोठी में, पर साधना का परिणाम है कि हमारी मनःस्थिति में कोई अन्तर् नहीं आया । इस संदर्भ में आचार्यवर ने दो पद्य भी फरमाये ।

कोठी हो चाहे कुटी, समुचित संत अदीन ।
पचपदरो और गोपड़ी, देखो दोनूं सीन ।
कोठी ओपे आज ओ, जनता रो उमड़ाव ।
काल कुटी में म्हें कियो, चार बार बदलाव ।

२३ नवम्बर/प्रातःकालीन प्रवचन में आचार्यवर ने कहा—'मैं आस्तिक उसे मानता हूं जो धर्म, कर्म और परमात्मा के प्रति आस्थावान् होता हुआ भी गलत काम करते समय प्रकम्पित होता है । पापभीरुता आस्तिक का लक्षण है ।'

२४ नवम्बर / जसोलवासी श्रीशंकरलाल मेहता (बाबूजी) के ज्येष्ठ भ्राता श्री रायचंद मेहता का निधन हो गया । पारिवारिक जनों ने आचार्यवर के दर्शन किये ।

रायचंदजी एक धार्मिक श्रावक थे—आचार्यवर ने उनके बारे में ये पद्य भी फरमाए—

शंकर रो बड़ भ्रात, रायचंद श्रावक रसिक ।
सचमुच बण्यो सनाथ, सुध धार्मिक जीवन जियो ।।

तोड़ी रूढ़ परंपरा, दृढ़ मेहता परिवार।
उदाहरण सब सामने, रख्यो सहज साकार।।

श्री मानमल सिंघवी की धर्मपत्नी श्रीमती उगमकंवर (जोधपुर) के देहान्त के एक दिन पश्चात् ही शोक समाप्त कर आचार्यवर के दर्शन किये। आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—"बहिन उगमकंवर एक धर्मनिष्ठ महिला थी। गुरुभक्ति उसकी रग-रग में रमी हुई थी। संघवी परिवार परंपरा से वैष्णव रहा है, पर बहिन उगमकंवर ने अपने परिवार को धार्मिक एवं जैनत्व के संस्कारों से रंगा। पारिवारिक जनों का यह दायित्व है कि वे बहिन से प्राप्त संस्कारों को संजोकर रखें और अधिक विकसित करें।

पुत्र-जन्म पर गुरु-दर्शन

सुख-दुःख, हर्ष-विषाद के समय संतुलन स्थापित रहे, इसलिए गुरु का मार्ग-दर्शन जरूरी है। इन वर्षों में समाज में एक अच्छी परंपरा चल रही है। शादी, मृत्यु, तपस्या आदि अवसरों पर प्रायः पूरा परिवार गुरु-चरणों में पहुंचता है, और विशेष पाथेय प्राप्त करता है। अन्टालिया (मेवाड़) के एक परिवार ने एक नई परंपरा का सूत्रपात किया है। वह है पुत्र-जन्म के उपलक्ष में गुरु-चरणों में उपस्थित होना।

अण्टालिया निवासी श्री मागरमल राठोड़ के छह पुत्र हैं। उनके तीन पुत्रों के तीन-तीन पुत्रियां हैं। उन्होंने यह संकल्प किया कि इस बार पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी तो, यथाशीघ्र गुरु-दर्शन करेंगे। संयोग से तीनों को पुत्र-लाभ हुआ। श्रद्धालु जन इसे आस्था का चमत्कार मान सकते हैं खैर कुछ भी हो, तीन बसों से इस परिवार के सैंकड़ों भाई-बहिन आचार्यवर की सन्निधि में पहुंचे।

रात्रि में आचार्यवर के सान्निध्य में कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें अनेक प्रमुख कवियों ने भाग लिया।

२५ नवम्बर/आचार्यवर ने प्रातः प्रवचन के दौरान कहा—"दहेज एक भयंकर बीमारी है, समाज का कोढ़ है, बहुत बड़ा अपराध है। मैं इसे मानवता के खिलाफ मानता हूं।"

२७ नवम्बर को रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वीप्रमुखाश्री के सान्निध्य में हुआ। २८ नवम्बर को पचपदरावासियों द्वारा आचार्यवर को भावपूर्ण विदाई दी गई।

जोधपुर से पचपदरा तक यात्रा संघ की व्यवस्था का भार जोधपुर वासियों पर था। उनके पास टेण्ट, माइक, जेनरेटर आदि की पूरी व्यवस्था थी, जिसे उन्होंने बड़ी जिम्मेवारी के साथ निभाया। साथ में चलने वाले सेवार्थियों को किसी प्रकार असुविधा नहीं होने दी।

हम रेत में जन्मे हैं

३० नवम्बर / वागुंड़ी/स्कूल का स्थान बहुत सीमित था। आचार्यवर स्कूल के छोटे से कमरे में ठहर गये। युवाचार्यश्री उससे संलग्न कोठरी में ठहर गए। संत-जन सामने टूटे फूटे बरामदे में तथा कुछ यत्र-तत्र कच्चे-झोंपड़ों में ठहर गये। साध्वियों ने स्थानाभाव के कारण स्कूल के पीछे हरे-भरे बबूल के वृक्षों की छाया में रेतीली जमीन पर अपना आसन लगा लिया। व्यवस्थापकों एवं यात्रियों द्वारा अपने लिये निर्मित तंबुओं में ठहरने का निवेदन करने पर साध्वी प्रमुखाश्री जी ने कहा—"हम रेत में जन्मे, रेत में खेले और बड़े हुए हैं फिर आज रेत का ही आनन्द क्यों न लें ?" इस प्रकार आज साध्वियों ने रेतीले गद्दे और बबूल की छाया में दिन का विश्राम लिया।

बायतू का चतुर्दिवसीय प्रवास :

२ दिसम्बर/तेवीस वर्षों की प्रलम्ब अवधि के बाद बायतू पधारने पर आचार्यवर का अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर बाडमेर-जैसलमेर क्षेत्र के सांसद श्री वृद्धिचंद जैन ने कहा—"आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री से जो धर्म की व्याख्यायें सुनी हैं, उनसे मैं बहुत प्रभावित हूं। आपने धर्म को व्यापकता प्रदान की है, इसलिए जैन-अजैन सभी आपके प्रवचनों से लाभान्वित होते हैं।',

आचार्यवर ने कहा—जो व्यक्ति बदलना नहीं जानता, वह गति नहीं कर सकता, पिछड़ जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि परिवर्तन (बदलाव) के साथ मौलिकता सुरक्षित रहे।"

३ दिसंबर/प्रातः प्रवचन में आचार्यवर ने कहा—"हलवा बनाने के लिए जिस प्रकार आटा, घी और चीनी का होना नितान्त जरूरी है ठीक वैसे ही दाता, देय और पात्र तीनों के विशुद्ध होने से ही पवित्र दान का लाभ मिल सकता है।"

४ दिसंबर को जयपुर चातुर्मास संपन्न कर उग्रविहार करते हुए मुनि श्री मोहनलाल "आमेट" ने अपने सहयोगी मुनि द्वय के साथ आचार्यवर के

दर्शन किये। रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में चला। कवास गांव में ७ दिसंबर को श्री ऋषभचंद छाजेड़ ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया।

८ दिसंबर/उत्तरलाई/कुछ सुलझे हुए विचारों के अध्यापक आचार्य वर की सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आचार्यवर से प्रश्न पूछे। अध्यापकों के प्रश्न व आचार्यवर के उत्तर प्रस्तुत हैं—

प्राध्यापक—हिन्दु धर्म के बारे में आपका क्या अभिमत है ?

आचार्यश्री—मेरी दृष्टि में हिन्दु कोई धर्म नहीं है। भारत में मुख्यरूप से धर्म की तीन धाराएं प्रवाहित हुईं—जैन, बौद्ध और वैदिक। हिन्दुस्तान में रहने वाला फिर चाहे वह किसी भी धर्म का अनुयायी क्यों न हो, हिन्दू अवश्य है। यदि वह व्यापक दृष्टिकोण सबकी समझ में आ जाए तो देश का बहुत बड़ा हित हो सकता है। वैसी स्थिति में हिन्दू शब्द किसी धर्म का प्रतीक न बनकर देश का प्रतीक बन जाएगा। आज जिसे हिन्दू धर्म कहा जाता है, वस्तुतः वह वैदिक धर्म है।

प्राध्यापक—जातिवाद के संदर्भ में आपकी क्या मान्यता है ?

आचार्यश्री—जैनदर्शन जाति के आधार पर किसी को ऊंच-नीच नहीं मानता है। व्यक्ति जाति से नहीं चरित्र से ऊंचा बनता है। ब्राह्मण कुल में जन्म लेने वाला सदा पूज्य ही होता है और शूद्र कुल में जन्म लेने वाला अस्पृश्य ही होता है, यह मान्यता उचित नहीं है। भगवान् महावीर ने जातिवाद और छुआछूत को कभी महत्व नही दिया। छुआछूत के कारण लाखों लोगों को हमने खो दिया। अब भी समय है कि हम जाति के आधार पर किसी को अस्पृश्य न मानें। बौद्धिक वर्ग का कर्तव्य है कि वह इस दिशा में एक सशक्त आवाज उठाएं और स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण करें।

प्राध्यापक—क्या भगवान् किसी को साक्षात् मिलते हैं ?

आचार्यश्री—सबसे पहले आप यह समझें कि भगवान् क्या हैं ? मेरे अभिमत से आत्मा ही परमात्मा है। ज्यों-ज्यों आप साधना करेंगे आपकी आत्मा संपूर्ण रूप से विशुद्ध बनेगी। जब आत्मा विशुद्ध बन जाएगी तो आप परमात्मा बन जाएंगे। जैनदर्शन के अनुसार कोई एक ऐसी ईश्वरीय सत्ता नहीं है, जो सर्जन और विनाश करती हो।

विशुद्ध आत्मा ही परमात्मा है।

आध्यापक—धर्म और संप्रदाय में क्या अंतर है ?

आचार्यश्री—धर्म और संप्रदाय दोनों एक नहीं, अलग-अलग हैं।धर्म जीवन का तत्त्व है, पवित्र बनने का साधन है, जबकि संप्रदाय धर्म की सुरक्षा का साधन है। आज तक जितनी भी लड़ाइयां हुई हैं, संप्रदाय के नाम पर हुई हैं। धर्म किसी को लड़ना नहीं सिखाता। वह सदा प्रेम और मैत्रीकी भावना बढ़ाता है। धर्म और मजहब को पृथक्-पृथक् मानकर चलेंगे तो हमारे सामने कोई कठिनाई नहीं होगी।

सीमान्त क्षेत्र बाडमेर में :

९ दिसंबर/दो दशक के बाद प्रातः एक विशाल स्वागत जुलूस के साथ आचार्यवर बाड़मेर पधारे। अनेक संस्थाओं के द्वारा आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया। बाड़मेर नगर परिषद के अध्यक्ष श्री सुल्तान-मल जैन ने नगर की ओर से आचार्यवर का अभिनन्दन किया। युवाचार्य श्री तथा साध्वीप्रमुखाश्री जी ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये। आचार्यश्री ने धर्म को संकीर्ण दायरे से निकालकर आचरण में लाने की बात कही।

११ दिसंबर/महिला जन-जागृति परिषद के तत्वावधान में जैन छात्रा-वास में साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में एक कार्यक्रम आयोजित हुआ।

दीक्षा-दिवस का समायोजन

१३ दिसंबर/पौष कृष्णा पंचमी का दिन हमारे धर्मसंघ के लिए महत्व का दिन है। इस दिन लाडनूं की पावन धरा पर आचार्यवर पूज्य कालूगणी के करकमलों से दीक्षित हुए थे। आज के दिन पूज्य गुरुदेव ने साधनाकाल के ५९ वर्ष पार कर ६०वें वर्ष में प्रवेश किया। महापुरुषों के जीवन से जुड़कर हर तिथि पुण्यमयी बन जाती है। आज के दिन को निमित्त मानकर युवावर्ग विशेष प्रेरणा ले तथा अपने कार्यक्षेत्र में गति करे। इस दृष्टि से पिछले वर्षों से यह युवा-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

युवाचार्यश्री ने आचार्यवर को युवा मस्तिष्क वाला बताया। साध्वी प्रमुखाश्री ने युवकों से आचार्यवर के संकेतों के अनुसार चलने का आह्वान किया। इस अवसर पर राजकीय माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्यश्री एम० आर० जैन तथा उपजिला विकास अधिकारी श्री के०के० सिंघल ने भी अपने

विचार रखें ।

दीक्षा दिवस को सौभाग्य दिवस मानते हुए आचार्यवर ने कहा—"पारिवारिक सहयोग एवं पूज्य कालूगणी की असीम कृपा का ही यह परिणाम था कि दीक्षा के भाव जगने के एक महीने के भीतर-भीतर मेरी दीक्षा हो गई ।"

१४ दिसंबर/रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री की सन्निधि में आयोजित हुआ ।

१५ दिसंबर/१३ दिसंबर को होने वाले लोकसभा चुनावों को मद्दे-नजर रखते हुए आचार्यश्री ने विशेष संदेश में कहा—"लोकसभा के सात आम चुनाव हो चुके हैं । यह आठवां आम चुनाव हो रहा है । पहले के चुनावों से इस चुनाव का वातावरण और माहौल कुछ भिन्न है । प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी की हत्या और साम्प्रदायिक उत्तेजना की घटनाओं के बाद भी स्थितियां काफी उलझी हुई हैं । यद्यपि विकास हुआ है, उद्योग और उत्पादन बढ़ा है, संपत्ति बढ़ी है, फिर भी नहीं कहा जा सकता कि सारी समस्याएं सुलझ गई हैं । यथार्थ के धरातल पर गरीबी आदि की समस्याएं आज भी विद्यमान हैं । इससे भी अधिक भयंकर समस्याएं है विचारों, धारणाओं और रूढ़ संस्कारों की । हिन्दुस्तान की अखण्डता को चुनौती रोटी की समस्या के लिए नहीं दी जा रही है, किन्तु जातीयता, साम्प्रदायिकता के आधार पर दी जा रही है । इस स्थिति में चुनाव का उद्देश्य गरीबी को मिटाना, आर्थिक विकास करना ही नहीं हो सकता । उसके साथ अखण्डता की बात भी जुड़ी हुई है । वह तभी संभव है, जब जातीयता और साम्प्रदायिकता उन्माद का स्वरूप न ले । उस पर नियंत्रण पाने के लिए कोई दण्डशक्ति कामयाब नहीं हो सकती । नैतिक शक्ति का होना बहुत जरूरी है । इस चुनाव का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा होना चाहिए, राष्ट्र को नैतिक विकास की दिशा में आगे बढ़ाना ।

लोकसभा पूरे राष्ट्र की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था है । उतना ही मूल्य है संसद के सदस्यों का । इस आधार पर उनका चुनाव भी एक साधारण घटना नहीं है । इसलिए नैतिकता की बात बहुत महत्त्वपूर्ण बन जाती है । यदि सांसदों का चुनाव नैतिकता को बल देने वाला होता है, तो लोकसभा की गरिमा बढ़ती है और साथ-साथ राष्ट्र की प्राणशक्ति भी बढ़ती है । यदि ऐसा नहीं होता है तो दोनों की शक्ति का ह्रास होता है, फिर राष्ट्रीय-चरित्र और

नैतिकता के विकास की आवाज कोरी आवाज रह जाती है।

एक धर्म-गुरु के नाते हम चाहते हैं, भारत की त्याग प्रधान परम्परा दुर्वल और क्षीण न वने। उसकी अपराजेय शक्ति में हमारी आस्था वनी रहे। इसी आधार पर हमने नैतिकता का आन्दोलन शुरू किया। उस अणुव्रत आन्दोलन की पृष्ठभूमि से हम जनता और उम्मीदवार दोनों से विनम्र अनुरोध करना चाहते हैं कि वे चुनाव को एक पवित्र संस्कार का रूप दें। हम अपेक्षा रखते हैं कि साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षक आदि सभी बुद्धिवादी लोग इस ओर देखें, वातावरण का निर्माण करें, जिससे हिंसा, अपराध तथा अनुशासनहीनता में कमी आए, अहिंसा का वातावरण शक्तिशाली वने।"

वाड़मेर का सप्त दिवसीय प्रवास कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रहा, यहां तेरापन्थ के घर कोई अधिक नहीं है, किन्तु जैन परिवार हजारों की संख्या में हैं। नगर के सभी वर्ग के लोगों ने विना किसी भेदभाव के आचार्यवर के प्रवास का लाभ उठाया। रात्रि में होने वाले युवाचार्यश्री के विषयवद्ध प्रवचनों में भी उल्लेखनीय उपस्थिति होती थी।

१६ दिसंवर/मध्याह्न में स्थानीय लोगों द्वारा आचार्यवर को भावभीनी विदाई दी गई। सायंकाल तेरापंथ सभा भवन से विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर ने विहार किया। आज का रात्रिकालीन प्रवास सहकारी वैंक में हुआ। वैंक के चेयरमेन श्री चंपालाल जैन ने वैंक परिवार की ओर से आचार्यवर का स्वागत किया।

सर्दी का प्रकोप

१७ दिसंवर/प्रातः १३ कि०मी० का विहार कर आचार्यवर 'मगने की ढाणी' पधारे। वड़े रेत के टीलों से घिरी हुई यह ढाणी सड़क से दो कि०मी० अन्दर थी। सड़क पर उतने वड़े संघ के लिए वैसा स्थान नहीं था। अतः दो कि०मी० का अतिरिक्त चक्कर लेना पड़ा। उस दिन रात्रि में सर्दी के गहरे प्रकोप से साधु-साध्वियों एवं यात्रियों को काफी शीत परिषह रहा। आचार्यवर ने इस वृत्त को ऐतिहासिकता प्रदान करते हुए काव्य की भाषा में कहा—

वाडमेर सूं पहली मंजिल, मगने जी की ढाणी।
जात्री टेंटा में ठंठरग्या, सेवा री सहनाणी॥
दो जाणों दो आवणों, वे ढाणी रा घोर।
मुश्किल सूं मंजिल मिली, वा रदखल सी रोड॥

२० दिसंबर/प्रातः सरणू से विहार कर आचार्यवर धन्ने री ढाणी पधारे। यात्रा व्यवस्थापकों के पूर्व कथनानुसार विहार साढे सोलह कि०मी० का था, अतः आचार्यवर समेत सभी साधु-साध्वियां इसी अनुमान के आधार पर चल रहे थे। जब ढाणी मात्र दो कि०मी० रही, तब अहमदाबाद के प्रमुख श्रावक श्री जीतमल भंसाली ने आचार्यवर के दर्शन किये और निवेदन किया यहां से गांव सिर्फ दो कि०मी० है। जबकि साढे सोलह कि०मी० के हिसाब से तीन कि०मी और होना चाहिए था, पर कुछ ही क्षणों में श्री जीतमल की बात प्रमाणित हो गई। किलोमीटर के पत्थर की संख्या गलत थी। उसी समय इस घटनाक्रम को एक सोरठे के माध्यम से व्यक्त करते हुए आचार्यवर ने कहा—

धार्‌यो साढ़ा सोल, साढ़े पनरे में सर्‌यो।
बोल निभायो कोल, जीतो बाजी जं तम्यो॥

पोकरजी पुनवान

सरदारपुरा/जोधपुर/निवासी श्री पोकरचंद लातेड़ ने बातचीत के दौरान निवेदन किया। गुरुदेव! जब से मैंने शासन की सेवा में अपने आपको नियोजित किया, तब से सभी दृष्टियों से मेरे वृद्धि होती रही है। मैं धर्मसंघ की सेवा को अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूं।

उस समय आचार्यवर के मुख से सहज ही एक पद मुखरित हो गया—

शासन सेवा में लग्यो, जब स्युं अन्तर् ध्यान।
तब स्युं बढ़तो ही गयो, पोकरजी पुनवान॥

पचपदरा से बाडमेर तथा बाडमेर से टापरा तक आचार्यवर का प्रायः प्रातः और रात्रि को नियमित प्रवचन होता, जिसमें सैंकड़ों ग्रामीण भाई-बहिन सोत्साह भाग लेते।

बाडमेर से बालोतरा के मध्य कई परिवार शोक विमोचन हेतु आचार्यवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए और उन्होंने आचार्यवर से संबल प्राप्त किया। स्वर्गस्थ व्यक्तियों में नोखामंडी निवासी श्री चैनरूप नवलखा का लन्दन में हृदय की सफल शल्य चिकित्सा के अनन्तर अकस्मात् निधन हो गया। संघ व संघपति के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाले नवलखा जी के मन में हमेशा गुरु-दर्शन की उत्कंठा बनी रहती थी।

बड़नगर-मध्यप्रदेश के श्री सूरजमल चौधरी ने पूज्य कालूगणी की

मालवा यात्रा के समय अच्छी सेवा की थी । उस क्षेत्र के ये जाने-माने विशिष्ट श्रावक थे ।

श्री बालचंद तलेसरा (कांकरोली) शासनभक्त और निष्ठाशील कार्यकर्ता थे । श्री हंसराज नाहटा (राजगढ़) गण और गणी के प्रति अटूट आस्था रखते थे । श्री नाहटा जी का पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से ओत:-प्रोत है ।

श्री गुमानमल सुराणा (जयपुर) आचार्यश्री के शब्दों में—"कठिन परिस्थिति में उनकी श्रद्धा मजबूत बनी रही यह महत्त्वपूर्ण बात है ।

२ जनवरी (आपाढ़ा) साध्वियों के प्रवास-स्थल पर साध्वियों को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"साध्वियां हमारे संघ की संपदा है । साध्वी-समाज की श्रद्धा और समर्पण-भाव अनन्य है । जब-जब मैं इस श्वेत सेना को देखता हूं, सात्विक प्रसन्नता का अनुभव होता है ।

आचार्यवर ने आगे कहा—"मैं साध्वियों से कहना चाहता हूं कि सभी-साध्वियां ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना के साथ-साथ प्रसन्न रहने का विशेष अभ्यास करें । अनुकूलता में प्रसन्न बन जाना और प्रतिकूलता में उदासीन बन जाना साधना का लक्षण नहीं है । साधक वह कहलाता है, जो प्रतिकूलता में भी प्रसन्न रहता है । प्रतिकूलता सब के जीवन में आती है । यहां तक कि मुझे सबसे अधिक प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है । शारीरिक और मानसिक दोनों स्तर पर समता सधे, यह बहुत आवश्यक है । यह तभी संभव है, जब हम संवेदन से ऊपर उठेंगे ।"

बालोतरा में भव्य स्वागत :

५ जनवरी / सिवाणची-मालाणी में सबसे बड़ा क्षेत्र बालोतरा ही है । इस नवोदित औद्योगिक नगरी में पिछले वर्ष आचार्यश्री का चातुर्मास भी हुआ था । बालोतरा के उस ऐतिहासिक चातुर्मास की यादें अभी भी ताजा थीं । बालोतरा पदार्पण से पूर्व इस क्षेत्र के अन्य कस्बे, टापरा, आपाढ़ा, आसोतरा में भी आकर्षक कार्यक्रम हुए । आपाढ़ा में बड़ी हाजरी व किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ । बालोतरा पहुंचने पर स्थानीय जनता द्वारा आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया ।

नयापुरा स्थित नाहटा चौक में नवनिर्मित वर्धमान समवसरण में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्ष श्रीनन्दकिशोर खत्री,

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष एवं पूर्व न्यायाधीश श्री सोहनराज कोठारी ने अपने विचार रखे। आचार्यवर ने अपने प्रवचन में गुणग्राहकता की ओर तत्पर रहने का उपदेश दिया।

साप्ताहिक प्रवचन माला :

पौष एवं माघ का महिना हमारे धर्मसंघ के लिए, विशेषतः साधु-साध्वियों के लिए महत्वपूर्ण होता है। पूर्व में कृत कार्यों का गुरुचरणों में समर्पण एवं आगामी वर्ष के लिए नूतन पाथेय प्राप्त करते हैं। साधना के बहुमुखी विकास व रत्नत्रय की दृष्टि से एक विशेष प्रवचनमाला का आयोजन किया गया। इस प्रवचनमाला में निर्धारित विषयों पर युवाचार्य श्री का विशेष प्रवचन होता। अंत में आचार्यश्री का उद्बोधन होता। उन प्रवचनों का क्रम इस प्रकार था—

तारीख	विषय	तारीख	विषय
६ जनवरी	कैसे चलें ?	१० जनवरी	कैसे खायें ?
७ जनवरी	कैसे ठहरें ?	११ जनवरी	कैसे बोलें ?
८ जनवरी	कैसे बैठें ?	१२ जनवरी	कैसे श्वास लें ?
९ जनवरी	कैसे सोएं ?		

मध्यान्ह में युवाचार्यश्री ध्यान के विभिन्न प्रयोगों का प्रशिक्षण देते। इस विशेष प्रवचनमाला में प्रायः सभी साधु-साध्वियों ने भाग लिया।

वर्धमान महोत्सव :

१३ जनवरी / बालोतरा / आचार्यवर के सान्निध्य में वर्धमान महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। मुनिश्री मधुकर आदि संतों ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी श्री संघमित्रा आदि साध्वियों ने भी एक सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।

युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—"सिद्ध बनने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं—निर्मलता, तेजस्विता और गंभीरता। तेरापंथ धर्मसंघ में तीनों की आराधना होती हैं। इसीलिए यह वर्धमान है। यहां आत्मानुशासन, आत्मनिरीक्षण और आत्म-संयम की भावना ही प्रधान है इसीलिए यह वर्धमान है।"

आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—वर्धमान महोत्सव वह पर्व नही है, जिसकी कोई तिथि निश्चित हो। पहले इसका कोई व्यवस्थित रूप नहीं

था। हमने इन वर्षों में इसे कार्यक्रम का रूप दे दिया और अब परंपरा प्रारंभ हो गयी और आगे भी चलती रहेगी।"

आचार्यश्री ने तेरापंथ को मर्यादित बताते हुए मर्यादा को जीवन का प्राण बताया तथा श्रावक समाज को मर्यादा से परिचित कराने की दृष्टि से मर्यादा का वांचन किया जाये और सभी को जानकारी दी जाये।

१४ जनवरी को रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

तत्त्वज्ञान-प्रतियोगिता :

साधु-साध्वियों में तात्विक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए मर्यादा महोत्सव के प्रसंग पर एक उपक्रम प्रारंभ किया गया। वह उपक्रम था जैन तत्त्व प्रवेश (भाग-१) का, यह परीक्षा आषाढ़ा में ली गई थी। ८ जनवरी मध्यान्ह बालोतरा में मुनि सुमेरमल ने परीक्षा परिणाम घोषित किया। कुल ३६ परीक्षार्थियों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान इस प्रकार रहे—

प्रथम—मुनिश्री दिनेशकुमार
द्वितीय—साध्वी श्री चित्रलेखा,
तृतीय—मुनि धर्मेश कुमार, मुमुक्षु हंसमुख
साध्वी श्री शारदाश्री, साध्वी श्री शांतिलता
साध्वी श्री उर्मिला कुमारी साध्वी श्री वर्धमानश्री
साध्वी श्री विशुद्धप्रभा

इससे पूर्व साधुओं में 'तत्त्व चर्चा' नामक थोकड़े की परीक्षा हुई, जिसमें १३ मुनियों ने हिस्सा लिया, जिसमें मुनिश्री दिनेश कुमार, मुनिश्री धर्मेश कुमार, मुनिश्री ऋषभकुमार क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे।

शोक-विमोचन

श्री मिलापचंद रुणवाल (जयसिंहपुर) ६६ वर्ष की उम्र में हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। श्री रुणवाल एक धर्मनिष्ठ श्रावक थे। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में बड़ी रुचि व निष्ठा के साथ भाग लेते थे।

श्री नेमचंद दूगड़ (नोहर) का ३० सितम्बर ८४ को स्वर्गवास हो गया। भक्तिमान व साधु-साध्वियों की अच्छी सेवा करने वाले श्री दूगड़ ने साध्वीश्री कमलूजी से अंतिम समय में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार किये।

श्रीमती माली देवी बाफणा (कलकत्ता) तेईस दिन के तिविहार अनशन में ४ जनवरी, प्रातः १०.१५ पर स्वर्गस्थ हुई। अंतिम समय में परिणाम ऊंचे थे। कलकत्ता में इस अनशन से धर्मसंघ की उल्लेखनीय प्रभावना हुई।

श्रीमती केसरदेवी सेठिया (भीनासर) धार्मिक संस्कारों से ओतः-प्रोत महिला थी। परिवार के सदस्यों पर उनके धार्मिक संस्कारों की अच्छी छाप है। उन्होंने अपने पूर्व कृत संकल्प के अनुसार अनशन किया और वर्धमान परिणमों में उसे संपन्न किया।

श्रीमती जमनादेवी लिगा (बीदासर) का संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह अपनी धार्मिक क्रिया के प्रति जागरूक थी। इन सबके पारिवारिक जनों ने बालोतरा में आचार्यश्री के दर्शन किये व आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया।

जसोल में जोरदार स्वागत :

१६ जनवरी/आचार्यश्री वृहद् साधु-साध्वी समुदाय के साथ बालोतरा से प्रस्थान किया। बालोतरा व जसोल के बीच की दूरी मात्र ५ कि० मी० है। दोनों ही क्षेत्रों तथा सिवाणची-मालाणी के हजारों नर-नारी आचार्यवर के साथ गगनभेदी नारों के साथ चल रहे थे। बालोतरा से विदाई व जसोल की ओर से स्वागत हो रहा था। वहां विदाई एवं स्वागत का संगम हो गया।

तेरापंथ धर्मसंघ के १२१ वें मर्यादा महोत्सव की समायोजना के लिए एक विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर ने जसोल की पावन धरती पर अपने चरण रखें। श्री मज्जयाचार्य के साथ संबंधित 'धक्के जाओ' के इतिहास प्रसिद्ध प्रसंग से जुड़े इस जसोल कस्बे में तेरापंथ के सौ से अधिक परिवार हैं। 'पारस अणुव्रत भवन' के पीछे निर्मित विशाल 'मर्यादा समवसरण' में स्वागत कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, स्थानीय विधायक श्री अमराराम चौधरी व जसोल के सरपंच श्री नाहरसिंह ने अपने विचार रखें। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में उपस्थित जनसमूह को संयमी व अनुशासित बनने का आह्वान किया।

अष्टाह्निक-प्रवचन माला

मर्यादा महोत्सव के पावन प्रसंग पर सैकड़ों साधु-साध्वियों व हजारों श्रावक-श्राविकाओं की सहज ही अधिक उपस्थित होती है। तेरापंथ धर्मसंघ

की गतिविधियां व सैद्धान्तिक तथ्यों की यथार्थ अवगति हस्तगत हो सके, इस दृष्टि से प्रातः-काल इस प्रवचनमाला की आयोजना हुई जिसमें युवाचार्य श्री व आचार्यश्री का प्रवचन होता। उसका क्रम इस प्रकार है :—

तारीख	विषय	विषय प्रवेश
१८ जनवरी	प्रेक्षाध्यान और शरीर विज्ञान	मुनिश्री किशनलाल
१९ जनवरी	तेरापंथ और अनुशासन	मुनि सुमेरमल "लाडनूं"
२० जनवरी	तेरापंथ और आचार्य भिक्षु	साध्वीश्री जतनकुमारी "कनिष्ठा"
२१ जनवरी	श्रावक के बारह व्रत और अणुव्रत आचार-सहिता	मुनि सुमेरमल "लाडनूं"
२२ जनवरी	,, ,,	,,
२३ जनवरी	जैन विद्या—तत्त्ववाद	साध्वीश्री संघमित्रा
२४ जनवरी	जैन विद्या—पराविद्या (पुनर्जन्म)	मुनिश्री महेन्द्र कुमार
२५ जनवरी	जैन विद्या—कर्मवाद	

रात्रि में भी युवाचार्यश्री के महत्वपूर्ण वक्तव्य हुए।

१२१ वां मर्यादा महोत्सव

१६ जनवरी/प्रथम दिवसीय कार्यक्रम।

मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम त्रिदिवसीय होता है। जो वसंतपंचमी से प्रारंभ हो जाता है। मंगलाचरण व सामूहिक वंदन के बाद कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री फूलकुमारी (लाडनूं) ओबरा (उत्तर प्रदेश) चातुर्मास संपन्न कर ६१ दिनों में १४०० किलोमीटर की यात्रा कर आचार्यश्री के दर्शन किये। इससे पहले दिन मुनिश्री राजकरण ने मात्र ७७ दिनों में १८०० कि० मी० यात्रा परिसंपन्न कर आचार्यश्री के चरणों में पहुंचे।

युवाचार्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—"सम्वत्सरी का संबंध जैन समाज से है, किन्तु मर्यादा महोत्सव का संबंध पूरे संसार से हैं। आज की सबसे बड़ी समस्या है अनुशासन की। राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक इन तीनों क्षेत्रों में अनुशासन की बहुत बड़ी मांग है। बिना अनुशासन एवं मर्यादा के किसी भी कार्य की निष्पत्ति संभव नहीं है।"

आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में कहा—"हमारे धर्मसंघ में कला को, विद्या को तथा अन्य आधुनिक विद्याओं को स्थान प्राप्त है, किन्तु सबसे

अधिक स्थान सेवा को दिया जाता है। रुग्ण और वृद्ध साधु-साध्वियों की सेवा करना हमारे यहां सर्वश्रेष्ठ कार्य माना जाता है और उनकी सेवा करना सभी अपना पुनीत धर्म मानते हैं।"

मध्याह्न में विराट महिला सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के महत्वपूर्ण उद्बोधन हुए। रात्रि में दीक्षार्थिनी बहिनों को भावभीनी विदाई दी गई।

द्वितीय दिवस/विराट श्रावक सम्मेलन

२७ जनवरी/समणी वृन्द के मंगलाचरण के पश्चात् कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री विजयसिंह सुराणा आदि वक्ताओं के भाषण हुए। व्यवस्था निकाय प्रमुख मुनि श्री बुद्धमल जी ने श्रावक-समाज को अपनी जिम्मेवारी को परिपूर्णता के साथ निभाने के लिए सदैव जागरूक रहने का आह्वान किया।

युवाचार्यश्री ने अपने वक्तव्य में कहा—"साधु-साध्वियों का जितना मूल्य रहा है, संघीय दृष्टि से श्रावक-श्राविकाओं का उसमें कम मूल्य नहीं रहा। तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशासन, संगठन और व्यवस्था को चलाने में श्रावक-श्राविकाओं का बहुत बड़ा योगदान है।"

युवाचार्यश्री ने विस्तार से धर्म संघ के साहित्य और अन्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला।

आचार्यश्री ने श्रावकों को आह्वान किया—"अपनी सारी कुंठाओं, संकीर्णताओं एवं उलझनों को छोड़कर कुछ करने का संकल्प लेना चाहिए। श्रावक समाज हमारे धर्मसंघ का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारे पूर्वाचार्यों ने श्रावकों को बहुत महत्व दिया है।"

दीक्षा-समारोह

दीक्षा का ऐसा संस्कार है जो बहिर्मुखता से अन्तर्मुखता की ओर ले जाता है, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है, भोग से योग की ओर ले जाता है। ऐसे तो सभी धर्मों में दीक्षा-संस्कार दिया जाता है, पर जैन-दीक्षा काफी कठिन और घोर है। जीवन भर पदयात्रा करना, पांच महाव्रतों का पालन करना, रात्रि भोजन विरमण करना, आदि अनेक विषयों से आबद्ध होता है। तेरापंथ-दीक्षा इससे भी कठिन है। इसमें इन विषयों के अतिरिक्त कठिन कार्य यह है गुरु-चरणों में मन को सर्वात्मना समर्पित कर देना। कहां

जाना, कहां रहना, किसके साथ रहना, आदि का निर्णय गुरु के निर्देश में ही होता है।

आज मध्याह्न में बीस हजार की महती उपस्थिति में दीक्षा-समारोह का भव्य आयोजन हुआ। सर्व प्रथम दीक्षार्थिनी बहिनों का परिचय प्रस्तुत किया गया। आचार्यप्रवर ने दीक्षा संस्कार पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के भावपूर्ण वक्तव्य हुए। उसके बाद आचार्यश्री ने आगम-वाणी का उच्चारण करते हुए दोनों वहिनों को दीक्षा प्रदान की, उनका परिचय इस प्रकार है।

नाम	पूर्व नाम	आयु	अध्ययन	संस्था में
साध्वीश्री लब्धि प्रभा	मुमुक्षु लता गर्ग	२६	स्नातक प्रथम वर्ष	६ वर्ष
साध्वीश्री अमित रेखा	मुमुक्षु अभिलाषा छाजेड़	१८	प्राग् स्नातक प्रथम वर्ष	१½ ,,

इनमें प्रथम टिटिलागढ़ (उड़ीसा) तथा द्वितीय जसोल की है।

रात्रि में भी आचार्यवर के सान्निध्य में कार्यक्रम चला। अनेक वक्ताओं ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

मर्यादा महोत्सव का मुख्य कार्यक्रम

२८ जनवरी, माघ शुक्ला सप्तमी; दोपहर १२.३० बजे, उपस्थिति साधु ६७, साध्वियां १६७; भाई-बहिन लगभग २५०००।

- मंगलाचरण-मुनिश्री विजयकुमार आदि मुनि वृन्द।
- सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिन्तक, विचारक एवं श्री विनोबाभावे के अनुज श्री शिवाजी भावे को सन् १९८४ का अणुव्रत पुरस्कार दिया गया।
- केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री कृष्णचंद पंत, राजस्थान नहर मंत्री श्री चंदनमल वैद, पूर्व मंत्री श्री मथुरादास माथुर, सांसद श्री मोहरसिंह आदि उपस्थित थे।

श्रीपंत ने कहा—"दुनियां में पुरस्कार कई तरह के मिलते हैं। हमारे देश में भी कई तरह के पुरस्कार दिये जाते हैं। लेकिन चरित्र-निर्माण के लिए किसी प्रकार का पुरस्कार नहीं मिलता, जबकि मैं इसे आवश्यक मानता हूं। देशवासियों के चरित्र को उन्नत बनाने में गांधीजी ने बहुत काम किया। मुझे प्रसन्नता है कि आचार्यश्री तुलसी इस दिशा में स्तुत्य प्रयास कर रहे हैं और उसका देशवासियों पर अच्छा असर पड़ा है।"

दैनिक जनसत्ता के संपादक श्री प्रभाष जोशी ने कहा—"अब जमाना विज्ञान और अध्यात्म का आया है। आजकल के बहुत सारे वैज्ञानिक अध्यात्म की मूल धारणाओं को सिद्ध करने में लगे हुए हैं। अहिंसा की सार्वभौम शक्ति को वैज्ञानिक लोग भी स्वीकार करते हैं। जो समाज सबसे अधिक अहिंसक होगा, वही सबसे अधिक टिकाऊ होगा। मैंने आचार्यजी से इन बातों पर खुली बातचीत की है।"

दैनिक हिन्दुस्तान के संपादक श्री विनोद कुमार मिश्र ने कहा—"सत्ता और राजनीति के बिना यह दुनिया न पहले चली है, न वर्तमान में चल रही है और न भविष्य में चलने वाली है। हमारे यहां राम और कृष्ण की पूजा होती है, वाल्मीकि और तुलसी की पूजा नहीं होती। यह जीवन का एक बहुत बड़ा सत्य है। लेकिन साथ ही यह भी सत्य है कि राजनीति की अतिशयता समाज और देश को बर्बाद कर देती है। उसे विनाश की ओर ले जाती है राजनीति और अध्यात्म के समन्वय से ही यह समाज चल सकता है। आचार्य श्री तुलसी से दिल्ली में मैं कई बार मिला हूं। आप अणुव्रत के द्वारा बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।"

- जय तुलसी फाउन्डेशन के अध्यक्ष श्री धर्मचंद चौपड़ा ने फाउन्डेशन की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला।
- श्री शिवाजी भावे ने पुरस्कार ग्रहण करते हुए कहा—"परिवर्तन की प्रक्रिया में सबसे पहले स्वयं का परिवर्तन होना चाहिये। उसके बाद समाज-परिवर्तन तथा राष्ट्र-परिवर्तन की बात होगी। सर्वोदय एवं अणुव्रत समाज ने इस दिशा में कुछ काम किया है। आचार्यश्री तुलसी का विनोबाजी से बहुत गहरा संबंध था। जब आप पवनार पधारे थे, उस समय विनोबाजी दो कि० मी० आगे आकर आगवानी की तथा हाथ पकड़कर अपने आश्रम तक ले गये। उस समय के फोटो आज भी सुलभ हैं।"
- साध्वी प्रमुखा श्री ने कहा—"चेहरे को सुन्दर बनाने के लिए रंग का उपयोग किया जाता है, वैसे ही जीवन की आकृति को सुन्दर बनाने के लिए सर्वोत्कृष्ट उपयोगी तत्त्व है—चरित्र व अनुशासन"।
- युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन में कहा—"मर्यादा महोत्सव हमारे जीवित अनुशासन का परीक्षण है यह परीक्षा की एक कसौटी है। आज संघ और संस्थाओं की बहुलता है, किन्तु यह जीवित अनुशासन कहीं-कहीं

ही देखने को मिलता है। जीवित अनुशासन वह होता है, जिसमें अहंकार और ममकार के परिष्कार की क्षमता होती है। आग्रह के परिष्कार की क्षमता होती है। अपनी असमर्थता को स्वीकार करने की क्षमता होती है। अपने घनिष्ठ से घनिष्ठ व्यक्ति को भी सिद्धान्त च्युत होने पर छोड़ने की क्षमता होती है।"

- आचार्यश्री ने अपने महत्वपूर्ण उद्बोधन में कहा—"मर्यादा महोत्सव केवल साधु-साध्वियों तथा श्रावक-श्राविकाओं के लिए ही नहीं, मानव मात्र के लिए है। हर व्यक्ति के लिये मर्यादा आवश्यक है। हर व्यक्ति को मर्यादित जीवन जीने का प्रयास करना चाहिये।"

आचार्यश्री ने विस्तार से अणुव्रत एवं सम-सामयिक समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डाला, साथ ही आचार्यवर के सद्य रचित एक भावपूर्ण गीत* से पंडाल में समा बंध गया। आचार्यवर ने आगामी मर्यादा महोत्सव उदयपुर में मनाने की घोषणा की तथा होली चौमासा टाडगड, महावीर जयंति आसीन्द, अक्षय तृतीया गंगापुर करने की घोषणा की। आचार्यश्री ने कुछ साधु-साध्वियों के आगामी चातुर्मासों की नियुक्तियां कीं।

श्री विजयसिंह सुराना श्री जैन श्वे० तेरापंथी महासभा तथा श्री खेमचन्द सेठिया जैन विश्व भारती के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये।

शोक विमोचन

श्री झींटूलाल दूगड़ (राजलदेसर) एक संघनिष्ठ श्रावक थे। अपने क्षेत्र में साधु-साध्वियों की पूरी सार संभाल रखते थे।

- श्री केसरीचंद सेठिया शार्दुलपुर के जाने माने सेठिया परिवार के प्रमुख सदस्य व वरिष्ठ श्रावक थे। वे साधु-साध्वियों की अच्छी सेवा करते थे। उनकी धर्मपत्नी एक धर्मनिष्ठ महिला है।
- श्रीमती छोगीबाई सुराणा (सुजानगढ़) मुनिश्री सुमेरमल "सुमन" की संसार पक्षीया माता थीं। कुछ समय सेवा करके मुनिश्री "सुमन" को अच्छी तरह विदाई दी और उसके बाद स्वयं इस संसार से विदा ले ली।
- श्री मोहनलाल कावडिया (राजनगर) ८० वर्ष की अवस्था में दिवंगत हो गये। वे राजनगर के अच्छे श्रावकों में थे।
- श्री धर्मचन्द दूगड़ (सरदारशहर)—उनकी संघ-संघपति के प्रति गहन

* देखें परिशिष्ट १।

आस्था एवं भक्ति थी।

- श्री मोहनलाल सेठिया (चाड़वास) का कलकत्ता में निधन हो गया। शीघ्र गुरुदेव के दर्शन कर उनकी धर्मपत्नी ने बड़ी हिम्मत का परिचय दिया।
- श्री मांगीलाल बैंगानी (बीदासर) पिछले कई वर्षो से जलोदर की की बीमारी से पीड़ित होते हुए भी बड़ी हिम्मत और साहस का परिचय देते रहते थे। वे गांव में ठाठीक व दबंग व्यक्ति थे। मातुश्री वदनांजी के अनन्य सेवा भावी श्रावक थे। धर्मसंघ के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी।

इन सभी के पारिवारिक जनों ने जसोल में आचार्यवर के दर्शन किये और उन्होंने आध्यात्मिक संवल प्राप्त किया।

जसोल से विहार

५ फरवरी को बीस दिवसीय सफल प्रवास व्यतीत कर आचार्यवर ने जसोल से विहार किया। बालोतरा के पार्श्व से गुजरते हुए एक विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर जाणियाणा पधारे। मार्गवर्ती काणाणा, पारलू, समदड़ी, राखी, खाण्डप आदि गांवों का स्पर्श किया। सभी जगह हजारों लोगों ने आचार्यवर को सुना और अपने जीवन को व्यसन मुक्त बनाने का प्रयास किया।

१३ फरवरी को जालौर जिला पार कर पाली जिला में प्रवेश किया। कुलथाना में पाली जिला की ओर स्वागत करने के लिए विशेष रूप से जिलाधीश श्री पी० के० देव, पाली से विधान सभा के लिए कांग्रेस प्रत्याशी श्री शौकतअली, पुलिस अधीक्षक श्री परमानन्द रछोइया तथा न्यायाधिकर्ता दण्डनायक श्री वसंतिलाल वावेल आदि ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। आचार्यश्री ने अणुव्रत को मानव धर्म की प्रक्रिया उजागर करने वाला तत्त्व बताया।

पाली में भव्य स्वागत

१६ फरवरी/कुछ भक्तजनों की मार्गगत फैक्ट्रियों का स्पर्श करते हुए विशाल जन समूह के साथ पाली नगर में प्रवेश किया। जालोरी गेट, गजानन्द मार्ग, जैन मार्केट, राणा प्रताप चौक आदि को पार करता हुआ स्वागत जुलूस नेहरू नगर में भगवान महावीर समवसरण में स्वागत सभा के

रूप में परिणत हो गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय संचार मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा। अध्यक्ष सांसद श्री मूलचन्द डागा तथा मुख्य वक्ता थे न्यायाधीश श्री वावेल।

श्री मिर्धा ने कहा "देश भौतिक रूप से कितना ही उन्नति कर ले, मगर जब तक हमारे सामाजिक जीवन या व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता का समावेश नहीं हो पाता, तब तक वह समाज व देश आगे बढ़ नहीं सकता। आचार्य तुलसी हमारे देश की उन कुछ महान् आत्माओं में से हैं, जो नैतिकता का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।"

श्री मूलचंद डागा ने कहा—"धर्म के मार्ग पर चलकर ही जीवन की कालिमा को धोया जा सकता है। आचार्यश्री का पाली पर महान उपकार होगा जो कि यहां के लोगों को जीवन का सही मार्ग दिखाने आये हैं।"

श्री वावेल ने कहा—"लक्ष्मी, सरस्वती और कीर्ति—ये तीन दैविक शक्तियां हर समय आपके साथ बनी रहती हैं, पर आचार्यजी इनसे निर्लिप्त रहते हैं, उसकी चाह नहीं रखते। आप चाह रखते हैं कि सारा संसार सत्य, अहिंसा और सदाचार के मार्ग पर चले।"

आचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में वर्तमान समय में संपूर्ण मानव जाति के लिए एक आचार-संहिता की आवश्यकता पर जोर दिया।

"नाथु से महाप्रज्ञ" पुस्तक का विमोचन

१७ फरवरी / पाली / आचार्यप्रवर के सान्निध्य में 'नाथु से महाप्रज्ञ' पुस्तक का विमोचन किया गया, जिसके लेखक हैं जोधपुर के श्रद्धालु श्रावक श्री चन्दनराज मेहता। लेखक ने स्वयं उपस्थित होकर यह पुस्तक आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री को समर्पित की।

आचार्यश्री ने कहा—"पूज्य कालूगणी भविष्य द्रष्टा तथा हमारे निर्माता थे। मुनि नथमल जी को होनहार समझकर मुझे सौंप दिया। इनकी शिक्षा का पूरा दायित्व मेरे पर था और ये सदा मेरे प्रति पूर्णतया समर्पित रहे। मेरे सजग दायित्व इनके सजग समर्पण से जो घटित हुआ उसे सभी मुनि नथमल से बने युवाचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व से जानते हैं।"

आचार्यश्री ने पुस्तक स्वीकार करते हुए कहा—कालूगणी इनको (युवाचार्य महाप्रज्ञ) वात्सल्य से नाथु ही कहा करते थे। इस पुस्तक में नाथु के जीवन की शुरूआत से लेकर आज युवाचार्य महाप्रज्ञ के पद तक की जीवन-

यात्रा का वर्णन एवं घटनाओं की अनुभूतियों का संचालन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया गया है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—"मेरे दीक्षादाता गुरु पूज्य कालूगणी थे और शिक्षा गुरु के रूप में दीक्षित होते ही उसी दिन आचार्यश्री तुलसी मिले। ऐसे दो महान् और समर्थ गुरु शताब्दियों में किसी-किसी को ही मिलते हैं, जैसे मुझे मिले हैं। मैंने आज तक जो कुछ किया उसके पीछे श्रद्धेय आचार्यश्री की प्रेरणा और शक्ति ही काम करती रही है।"

१९ फरवरी / पाली / प्रातः कालीन प्रवचन में आचार्यवर ने कहा—भगवान न तो प्रणाम करने से खुश होता है। और न अप्रणाम से नाखुश। हम अपने लिए भगवान की वन्दना करते हैं। क्योंकि वह वंदनीय है। वन्दनीय को वन्दना करना हमारा दायित्व है, फर्ज है। लेना-देना कुछ नहीं है। भगवान कुछ देता नहीं, हमें कुछ लेना नहीं है। यह तो हमारा कर्तव्य है कि हम उसकी वंदना करें।"

२० फरवरी / पाली/विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा—'मैं परदें को कायरता का प्रतीक मानता हूं। धर्म की पालना के लिए, अहिंसा की पालना के लिए पर्दा प्रथा का अंत करना आवश्यक समझता हूं।'

२१ फरवरी / पाली/अष्टमाचार्य कालूगणी का जन्मदिन फाल्गुन शुक्ला द्वितीया थी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में उनका पावन स्मरण किया गया। मुनि श्री महेन्द्र कुमार ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। आचार्यवर ने कालूगणी को महान् प्रेरणास्रोत बताते हुए अपनी विनम्र भावाञ्जलि प्रकट की।

आकाशवाणी, जोधपुर के श्री वेद बजाज ने आचार्य श्री, युवाचार्य श्री एवं साध्वी प्रमुखा श्री की वार्ता रेकार्ड की। इस वार्ता में सच्चा भारत के सम्पादक श्री सम्पत भंडारी व मनमोहन कर्णावट ने भी भाग लिया। वार्ता में तेरापंथ, अणुव्रत, रूढ़िमुक्त समाज संरचना, साहित्य तथा अनेक ज्वलंत विषयों पर विस्तार से चर्चा चली। आचार्य श्री से यह पूछा जाने पर कि "आपकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पदयात्रा कौन सी रही।" प्रत्युत्तर में आचार्यवर ने कहा—हमारी पद यात्राओं में सबसे महत्त्वपूर्ण पदयात्रा दक्षिण की रही। मैं इस यात्रा को इसलिए महत्त्व देता हूं कि उस समय हिन्दी को लेकर भाषा-विवाद जोरों पर था उस स्थिति में मैं दक्षिण-

गया था। मैं पूरी दक्षिण-यात्रा में हिन्दी में बोला। मुझे सभी ने प्रेम से सुना। ऐसे तो वहां अनुवादक की भी व्यवस्था थी।

युवाचार्य श्री से प्रेक्षा ध्यान, उसकी उपयोगिता एवं शिविर आदि पर विस्तार से प्रश्नोत्तर चले। जैन धर्म व गांधी जी की अहिंसा विचार धारा पर युवाचार्य श्री ने मार्मिक तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया।

२२ फरवरी / पाली / रात्रि मे युवाचार्य श्री के सान्निध्य में मुनि श्री महेन्द्र कुमार ने स्मरण शक्ति के चामत्कारिक अवधान प्रयोग किये। हजारों लोगों व गणमान्य व्यक्तियों के बीच यह कार्यक्रम पूर्ण सफल रहा।

२३ फरवरी / पाली / प्रवास का अंतिम दिन। रात्रि में विदाई समारोह का कार्यक्रम था। अनेकों वक्ताओं ने आचार्यवर को भावभीनी विदाई देते हुए सन् १९८६ का चातुर्मास पाली में करने की पुरजोर प्रार्थना की।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पाली जिला पुलिस अधीक्षक श्री परमानंद रोछैया ने कहा—"आचार्य तुलसी जी के दर्शन करने का यह मेरा प्रथम अवसर है। मैं आपके उदात्त विचारों एवं निर्माणकारी कार्यों से बहुत प्रभावित हूं। तेरापंथ संघ की मर्यादा और अनुशासन को देखकर मैं स्वयं अनुशासित बन गया। आपकी शिक्षा का ही यह परिणाम मानता हूं कि तीन-तीन पाकेट सिगरेट पीने वाला मैं केवल तीन सिगरेट पर आ गया हूं इसे भी मैं शीघ्र छोड़ दूंगा।"

२४ फरवरी को पाली से विहार हो गया। प्रातः रावलियास व सायं तीन हजार की आबादी वाले लांबिया गांव पधारे। रात्रि प्रवचन से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियों ने मद्य-मांस का परित्याग किया। २५ फरवरी को चवाड़िया गांव में श्री धूलचंद ने सपत्नी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया।

२६ फरवरी / खारची गांव एक घंटे विराज कर आचार्यवर मारवाड़ जंक्शन पधारे। स्थानीय जनता द्वारा आपका स्वागत किया गया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में कहा—"मारवाड़ जंक्शन ट्रेनों का संगम स्थल है। यहां यातायात की बहुत अच्छी सुविधा है। मैं उपस्थित जनसमुदाय से कहना चाहता हूं कि आप लोगों का जीवन भी नैतिकता, प्रामाणिकता एवं चरित्र निष्ठा का संगम स्थल बने।"

आचार्यवर यहां दो दिन विराजे। यातायात की अच्छी सुविधा होने

के कारण पार्श्ववर्ती क्षेत्रों के लोग बहुत बड़ी तादाद में पहुंचे । २६ फरवरी को रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखा श्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ ।

चिरपटिया होकर २८ फरवरी को नींबली पधारे, रात्रिकालीन कार्यक्रम में श्री धर्मेश मुनि ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यवर का स्वागत किया । सारण, राढ़झालरा होते हुए २ मार्च को दुधालेश्वर महादेव पधार गये । यहां पधारने के साथ ही पाली जिले की सीमा पार कर अजमेर जिले की सीमा में प्रविष्ट हो गए । यह ऐतिहासिक उत्तुंग हरे-भरे पर्वतों से घिरा हुआ है । वहां ५०० वर्ष से भी अधिक समय से अनवरत एक पहाड़ी झरना प्रवाहित हो रहा है ।

मध्याह्न में पहाड़ों एवं वृक्षों की सघन छाया में बने प्राकृतिक पण्डाल में मेवाड़ की ओर से आचार्यवर का अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया । अनेकों वक्ताओं ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया । इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री, युवाचार्यश्री, एवं आचार्यवर के प्रेरणादायी वक्तव्य हुए ।

टॉडगढ़ में मेवाड़ स्तरीय अभिनन्दन

३ मार्च / टाडगढ़ / सूर्योदय के साथ ही आचार्यवर ने टॉडगढ के लिए दुधालेश्वर महादेव से प्रस्थान किया । चारों ओर ऊंचे पर्वत, सर्वत्र हरियाली, टेढे-मेढ़े पहाड़ी रास्तों के मध्य से होकर गुजरता रंग विरंगा काफिला, बड़ा ही मनभावना लग रहा था । मेवाड़ के कोने-कोने से समागत हजारों लोगों के एक भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर ग्राम बाहर स्थित डाकबंगले में पधारे । आधा घंटा ठहरने के बाद आचार्यवर साहित्य संस्थान का नव क्रीत भवन 'प्रज्ञा शिखर' पर, जो पूर्व में कर्नल टॉड का बंगला था, पधारे । विविध आयामी रचनात्मक कार्यों के केन्द्र इस साहित्य संस्थान के निर्देशक श्री लालचंद कोठारी, सहनिदेशक श्री भीखम चंद कोठारी हैं । ऊंची पहाड़ी पर स्थित इस प्रज्ञा शिखर में साहित्य संस्थान द्वारा 'जैन साहित्य प्रदर्शनी' का समायोजन किया गया । इस प्रदर्शनी में विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पाच हजार पुस्तकें प्रदर्शित की गईं । आचार्यश्री, युवाचार्यश्री ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा उपस्थित जन समूह को सम्बोधित किया ।

डाक बंगले से विहार कर आचार्यप्रवर 'प्रज्ञा समवसरण' पधारे ।

मेवाड़ का प्रवेश द्वार होने से टॉडगढ में मेवाड़ स्तरीय स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलने वालों में प्रमुख थे—माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ सिंह मेहता, पूर्व विधायक श्रीमती लक्ष्मीबाई चुंडावत तथा मेवाड़ स्तरीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री उत्तम चंद संकलेचा, अमृत महोत्सव राष्ट्रीय सीमति के संयोजक श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट, मेवाड़ तेरापंथ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी, मेवाड़ प्रान्तीय महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती हर्पिला हिरण, मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट, साध्वीश्री कीर्तिलता, श्री भीखमचंद कोठारी। मेवाड़ के कवि श्री माधवराज, श्री शीलव्रत शर्मा, आकाशवाणी-उदयपुर की युवा कलाकार सुश्री संध्या शर्मा ने आचार्यवर का काव्यात्मक अभिनन्दन किया।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास ने कहा—'आज का दृश्य देखकर पन्द्रह-बीस वर्ष पूर्व का भिवानी दृश्य याद आ रहा है। आचार्यश्री का स्वागत करने के लिए मुख्यमंत्री की हैसियत से मैं स्वयं उपस्थित था। आचार्यश्री देश के महान् संत हैं। आपके कार्यों को हम शब्दों के घेरे में नहीं बांध सकते।

अमृत महोत्सव क्या है, इस पर प्रकाश डालते हुए युवाचार्यश्री ने कहा 'आचार्यवर ने अपने प्रशासन के पचास वर्षों में जो समुद्र मंथन किया और उससे जो अमृत प्राप्त हुआ उसे बांटने का अवसर ही अमृत-महोत्सव है।'

आचार्यवर ने विस्तार से आगामी वर्ष के कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। आमेट के वरिष्ठ श्रावक श्री कजोड़ी मल बोहरा ने आभार ज्ञापन व मंच के दायित्व का निर्वहन किया श्री महेंद्र कर्णावट ने।

टॉडगढ प्रवास के दौरान पचासों राजपूतों ने आचार्यवर की प्रेरणा से होली के उपलक्ष में एक साथ शिकार न करने का संकल्प लिया। उनमें होली पर 'हेडो' खेलने का परम्परागत रिवाज था। आचार्यश्री के सान्निध्य का सब पर सात्विक असर हुआ और सदा के लिए उनका शिकार छूट गया।

शोक विमोचन

पाली व टॉडगढ के बीच वे परिवार आचार्यवर की उपासना में पहुंचे, जिनके पारिवारिक सदस्य की मृत्यु के उपरान्त विशेष आध्यात्मिक संबल पाने हेतु आये। वे ये हैं—

- श्री चन्दनमल बैंगानी (बीदासर) का कलकत्ता में स्वर्गवास हुआ। उनकी धर्म में न केवल गहरी निष्ठा थी, बल्कि धर्म उनके जीवन-व्यवहार में परिलक्षित होता था। उनके रहन-सहन, खान-पान में सहज संयम था। उनके पुत्र श्री सरदार मल बैंगानी वर्षों से दिल्ली में अणुव्रत के कार्य से संपृक्त हैं।
- स्वर्गीय श्री सुगनचंद चोपड़ा की धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का ८३ वर्ष की परिपक्व अवस्था में ३५ घंटों के तिविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया।
- श्रीमती अणची देवी बैंद (राजलदेसर) का स्वर्गवास हो गया, आचार्यश्री ने कृपा करके उनके बारे में ये पद्य फरमाये—

मीखम चंद बैंद की अम्बा, अणची बाई आस्थावान।
पांच पुत्र अरु च्यार पुत्रियां, शुभ संस्कारी नव संतान।।
त्याग तपोमय जीवन जीयो, परतख पुन्याई रे पाण।
बोन्युं जन्म सुधार्‌या देवी, सहज सादगी पूर्ण प्रयाण।।२।।

८ मार्च को बरार, १० मार्च को ठीकरवास पधारे। बरार-ठीकरवास मध्य आसन गांव में एक घण्टा विराजें। आचार्यवर के स्वागत में पांच दम्पतियों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। वे हैं—श्री धनराज बाबेल, श्री भंवरलाल बाबेल श्री भूरालाल दक, श्री भूरालाल छाजेड़, श्री मोहनलाल छाजेड़। आचार्यवर के सान्निध्य में मेवाड के कार्यकर्ताओं की एक आवश्यक मीटिंग रखी गई। कार्यकर्ताओं की महती उपस्थिति में अमृत-महोत्सव के कार्यक्रमों पर चिंतन चला। कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय भी लिये गये। रात्रि-कालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में चला।

११ मार्च को बग्गड़, १२ को काच्छवली तथा १३ मार्च को आचार्यश्री पीपली पधारे। रावत समाज के प्रमुख श्री भीमसिंह ने अपनी सामाजिक संस्था की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन किया। आचार्यश्री ने श्री मांगीलाल छाजेड़ व श्री हस्तीमल दक की याद करते हुए उनकी सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा पंच सूत्री कार्यक्रम की चर्चा की।

देवगढ़ में

१३ मार्च/अल्प समय में देवगढ़ में दुबारा पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा भावभरा अभिनन्दन किया गया। राव साहब श्री नाहरसिंह ने अपने

विचार रखे। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में कहा—'मैं प्रकृति का उपासक हूं। प्रकृति से मुझे वहुत प्रेरणा मिलती है। मेरा मानना है कि मनुष्य को प्रकृति में जीना चाहिए। वनावटीपन में मेरा कोई विश्वास नहीं है। वाह्य साज-सज्जा को बुरा नहीं मानता, किन्तु इसी तरह भीतर को भी सजाना चाहिए।'

देवगढ़ के विशिष्ट कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री धूलचंद डागा की स्मृति में प्रकाशित 'समयं गोयम मा पमायए नामक स्वाध्याय पुस्तक आचार्यश्री को भेंट की गई। मध्याह्न में स्थानकवासी समाज के श्री शिवमुनि, विजयमुनि आदि संत आचार्यश्री, युवाचार्यश्री की सान्निध्य में उपस्थित हुए और लगभग एक घंटा तक सौहार्दपूर्ण वातावरण में वातचीत हुई। रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में चला।

आचार्यश्री की मेवाड़ यात्रा एक विशेप उद्देश्य को लेकर हो रही है और वह उद्देश्य है अमृत-महोत्सव की समायोजना। इस यात्रा के दौरान पंच सूत्री संकल्प अभियान को तीव्रता के साथ चलाया जा रहा है। इसके साथ-साथ रूढ़ि मुक्ति एवं विग्रह-शमन की दिशा में भी आचार्यश्री सघन प्रयत्न कर रहे हैं। आचार्यश्री जहां जाते हैं वहां गांव का पूरा प्रतिलेखन करते हैं। उन्हें जहां खोट नजर आती है वहां करारी चोट करते हैं। सामाजिक या पारिवारिक वैमनस्य / विग्रह / तड़ को मिटाने में वे पूरी शक्ति के साथ लग जाते हैं। १५, १६ मार्च को आचार्यश्री के द्विदिवसीय प्रवास के दौरान लसानी गांव के वर्षों के विवाद का पटाक्षेप हो गया।

लसानी के विवाद का मुख्य मुद्दा था—मृत्युभोज, जो स्थानकवासी एवं तेरापंथी समाज के वीच था। तेरापंथी श्रावकों के मृत्युभोज का परित्याग करने से स्थानकवासी भाइयों ने आपत्ति उठाई और मृत्युभोज में शामिल होने पर जोर दिया। तेरापंथी त्याग-भंग के लिए कतई तैयार नहीं थे, अन्ततः दोनों के वीच विवाह आदि प्रसंगों में भी आना-जाना वंद हो गया। आचार्यश्री ने समझाने का प्रयास किया। वे समझते हुए भी अपने आग्रह पर अड़े रहे। स्थानकवासी संप्रदाय के पंजावी साधु श्री विजयमुनि तथा डा० शिव मुनि ने भी इस झगड़े को मिटाने का सफल प्रयास किया और वर्षों के वैमनस्य को समाप्त कर दिया।

साध्वियां कम : झोलके अधिक

१७ मार्च / आचार्यवर को लसाणी से ताल पहुंचना था। उन दोनों

गांवों के बीच की दूरी मात्र आठ कि० मी० है। ताल से चार कि० मी० की दूरी पर काकरोदगांव था, पर वह मार्ग में नहीं आता था। लसाणी से काकरोद होते हुए ताल जाये, तो छह कि० मी० अतिरिक्त पड़ता था, इस तरह आठ कि० मी० की जगह चौदह कि० मी० हो जाता था। पहले तो काकरोद जाना स्थगित कर दिया, पर वहां के श्रद्धालु भाई-बहिनों के विशेष अनुरोध पर आचार्यवर ने काकरोद जाने की स्वीकृति दी।

आचार्यवर ११ साधुओं तथा साध्वी प्रमुखाश्री समेत छह साध्वियों के साथ काकरोद पधारे। शेष साधु-साध्वियां सीधे ताल पहुंचे। काकरोद के लिए जो रास्ता था ताल जाने के लिए पुनः उसी रास्ते से आना था, इसलिए साधुओं ने अपना वजन वहीं रास्ते में रख दिया। साध्वियों का वजन ताल जाने वाली साध्वियों ने ले लिया।

डेढ घण्टे के प्रवास के अनन्तर आचार्यवर पुनः रवाना हुए। आचार्यवर से आगे चल रही साध्वियों के मानस में संतों का वजन देखकर उत्साह जागा। साध्वियां संख्या में कम थीं और संतों के झोलके अधिक। कमजोर सी दीखने वाली साध्वियों ने दो-दो झोलके अपने-अपने कंधों पर उठा लिये। स्वयं साध्वी प्रमुखाश्री भी झोलके हाथ में लेकर चल पड़ीं। साध्वियों के अत्यधिक अनुरोध के बावजूद साध्वी प्रमुखाश्री जी झोलके लेकर सहज भाव से चलती रही। पीछे आ रहे संतों को जब यह जानकारी मिली कि साध्विया वजन लेकर चली गयीं, दो संत काफी तीव्र गति से चले, पर वे साध्वियों के निकट पहुंचे, तब तक साध्वियां ताल पहुंच चुकी थी। स्थान पर पहुंचकर संतों ने कृतज्ञता ज्ञापित की। आचार्यवर ने प्रसन्नता अभिव्यक्त की।

काकरोद से ताल पधारने तक ग्यारह बज चुके थे। गर्मी तेज हो गई थी। फिर भी स्वागत का संक्षिप्त कार्यक्रम रखा गया। सरपंच के स्वागत भाषण के पश्चात् आचार्यवर ने अपने प्रवचन में अच्छे इन्सान बनने के दो तरीके बताये—उपदेशश्रवण और उसका प्रयोग।

रमणीय पर्वतों की गोद में

कुक्कर खेड़ा, भीम होते हुए २० मार्च को आचार्यश्री बड़ाखेड़ा पधारे। यह गांव पहाड़ों के मध्य बसा हुआ है। चारों ओर दृष्टिपात करने पर नजर आते हैं वृक्षों, लताओं हरियाली से लदे हुए पहाड़। ऊंचाई पर

स्थित इस गांव में अनेकों पक्के मकान हैं। आचार्यवर के पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। आचार्यश्री ने अपने वक्तव्य में कहा—"भारतीय संस्कृति में वैभव का स्थान त्याग से नीचे रहा है। मैं मानता हूं कि जब तक त्याग का सम्मान रहेगा, भारत सदा उन्नत रहेगा।

साध्वी श्री सोहनांजी (छापर) ने बंगाल, बिहार, असम, आदि सुदूर प्रदेशों की यात्रा संपन्न कर ६ वर्ष ४४ दिन की सुदीर्घ अवधि के बाद आज आचार्यप्रवर के दर्शन किये। साध्वी श्री ने कलकत्ता चातुर्मास परिसंपन्न कर अनवरत यात्रा करते हुए १३० दिनों में २२०० किलोमीटर लंबा मार्ग तय किया। इस प्रलंब यात्रा में कलकत्ता से जयपुर तक साध्वियों की उपासना कर कलकत्ता श्रावक समाज ने विशेष दायित्व निभाया। साध्वियों ने अपनी यात्रा के संस्मरणों को गीत के माध्यम से प्रस्तुति दी और आचार्यवर के प्रति अपनी असीम आस्था अभिव्यक्त की।

भीम और बड़ाखेड़ा गांवों में एक-एक परिवार में आग्रही वृत्ति होने से वैमनस्य व्याप्त था और वे अपनी बात से झुकने के लिए तैयार नहीं थे। आचार्यश्री के विशेष प्रयत्नों से वर्षों का झमेला सुलझ गया। यह झगड़ा बड़ाखेड़ा आसन, बराकन इन तीन गांवों से संबद्ध था।

२१ मार्च को भीम, सांयकाल थाणा पधारे। आज तीन जिलों का स्पर्श हो गया। प्रातः बड़ाखेड़ा से चले, जो अजमेर जिले में है। दिन का प्रवास भीम में हुआ जो उदयपुर जिले के अन्तर्गत है। सायंकाल आचार्यश्री थाणा पधार गये जो भीलवाडा जिला में है। राणावास स्थित तेरापंथ होस्टल के मुख्य गृहपति श्री मूलसिंह की भावना उस समय साकार हो गई, जब उन्होंने आचार्यवर के अपने गांव में शुभ दर्शन किये। आचार्य श्री ने थाणा गांव आने का श्रेय एकमात्र मुलसिंह जी को दिया। श्रीसिंह ने इसके लिए हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

थाणा से शिवपुर, ज्ञानगढ़ होते हुए २३ मार्च को चीताम्बा पधारे। स्कूल में आचार्यवर का सार्वजनिक अभिनन्दन रखा गया। आचार्यश्री का द्विदिवसीय प्रवास ऊंची पहाड़ी पर स्थित तेरापंथ भवन में हुआ। इस भवन की निर्मिति में श्री कजोड़ीमल का श्रम जुड़ा हुआ है।

२५ मार्च को आचार्यश्री झालरा पधारे। आज आसीन्द पंचायत समिति की सीमा प्रारंभ हो गई। इस अवसर पर मेवाड़ कान्फ्रेन्स के पूर्व अध्यक्ष श्री चांदमल दूगड़, आसीन्द ग्राम पंचायत विकास अधिकारी श्री

भंवरलाल गन्ना, आसीन्द ग्राम पंचायत समिति के प्रधान श्री किशनसिंह चूण्डावत ने अपने विचार रखे । आचार्यश्री ने उपस्थित जन समूह को उद्बोधन दिया । सायं रघुनाथपुरा पधारे ।

२६ मार्च को आचार्यश्री के कटार पधारने पर विद्यालय की ओर से प्रधानाध्यापक श्री मदनचन्द कोठारी, गांव की ओर से सरपंच श्री ईश्वर प्रसाद ने आचार्यवर का स्वागत किया । अध्यापक ने खड़े होकर आजीवन शराब पीने का प्रत्याख्यान कर दिया । शराब को लेकर अध्यापक महोदय स्वयं दुःखी थे, बदनाम भी थे । आचार्यश्री के सामीप्य से उसमें आत्मविश्वास जागा, सदा-सदा के लिये व्यसन से छुटकारा पा लिया । पंचायत समिति के प्रधान श्री किशन सिंह चूण्डावत ने स्वागत में कहा—"आज आसीन्द तहसील का बच्चा, बूढ़ा जवान हर व्यक्ति उल्लसित है क्योंकि देश के महान् संत उनके मध्य पधारे हैं आपका सच्चा स्वागत तभी होगा जब हम आपके उपदेशों को आत्मसात् करेंगे ।"

आचार्यश्री ने स्वागत के जवाब में जनता से दृष्टि का सम्यक् निर्माण करने की बात कही ।

किसान सम्मेलन

२७ मार्च/कटार आचार्यवर के सान्निध्य में मध्याह्न किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ । इसमें न केवल कटार के किसान ही अपितु, पार्श्ववर्ती अनेक स्थानों, गांवों के किसान बड़ी संख्या में उपस्थित हुए । सर्वोदयी नेता श्री मनोहरसिंह मेहता ने आचार्यश्री प्रेरित पंच सूत्री कार्यक्रम की चर्चा की ।

आचार्यश्री वृहद् किसान सम्मेलन को संबोधित करते हुए अज्ञान जन्य बुराइयों एवं व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी । प्रवचनोपरान्त अनेक लोगों ने धूम्रपान व मद्यपान का परित्याग किया । पूर्व निर्धारित्त कार्यक्रम के अनुसार २७ मार्च को आचार्यवर कटार से विहार कर कीडीमाल पधारने वाले थे, और उससे आगे कई क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए आसीन्द पधारने वाले थे, पर इस क्रम में थोड़ा परिवर्तन करना पड़ा । उस परिवर्तन का कारण आचार्यवर के घुटनों का दर्द था । २७ मार्च को कटार में विराजना हुआ । वहां से सीधे कीडीमाल होते हुये आचार्यवर सीधे आसीन्द पधार गये । श्रद्धेय युवाचार्यश्री बदनोर रूट से होते हुए ३१ मार्च को आसीन्द पधार गये ।

आसीन्द में आचार्यवर का गर्मजोशी से स्वागत

३१ मार्च / आसीन्द बावीस वर्षों की प्रलंब अवधि के बाद आसीन्द

पधारने पर खारी नदी में निर्मित महावीर समवसरण में आचार्यश्री का स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। आसीन्द नगरपालिका अध्यक्ष श्री शंकर देव भारतीय, स्थानीय प्रमुख कार्यकर्ता श्री चांदमल दूगड़ ने स्वागत में अपने विचार रखे। भीलवाड़ा क्षेत्र के सांसद श्री गिरधारीलाल व्यास ने कहा—"आचार्य तुलसी हमारे देश की महान विभूति हैं। आपने अणुव्रत के माध्यम से जनता में एक नई चेतना जागृत की है और उसके कल्याण का पथ प्रशस्त किया है। मैं अपने क्षेत्र की ओर से आपका स्वागत करता हूं।

साध्वी प्रमुखाजी ने मानव मन में फैली प्रदूषण की बीमारी को दूर करने परबल दिया। युवाचार्यश्री ने यथार्थवादी दृष्टिकोण बनाने पर जोर देते हुए कहा—"धन सिर्फ धन होता है। वह न तो काला होता है और न ही सफेद होता है। काला होता है आदमी का मन। जब तक वह स्वच्छ नहीं होगा, सफेद नहीं होगा, तब तक कालेधन को समाप्त करने की बात कोई अर्थ नहीं रखती।" आचार्यवर ने उपस्थित जनसमूह से मन की कालिमा धोने का आह्वान किया।

१ अप्रेल / रात्रि में "राम और महावीर" विषय पर युवाचार्यश्री का महत्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। विषय प्रवेश किया मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने। अंत में आचार्यश्री का उद्‌बोधन हुआ।

२ अप्रैल / रात्रि में "परामनोविज्ञान" विषय पर विशेष वक्तव्य हुआ युवाचार्यश्री का। कार्यक्रम के पूर्व ब्यावर कालेज के समाज विज्ञान के प्रोफेसर एवं पुर्नजन्म पर शोध करने वाले श्री कीर्तिस्वरूप रावत ने पुनर्जन्म पर अपने एक दो खोजपूर्ण तथ्यों से जनता को अवगत किया तथा स्वलिखित सद्य प्रकाशित "परामनोविज्ञान" पुस्तक आचार्यवर को भेंट की। इस विषय पर हिन्दी में लिखी गई यह प्रथम पुस्तक है। रात्रि के दोनों प्रवचन बाजार में हुए। इन दोनों प्रवचनों में नगर के सभी वर्गों की महती उपस्थिति थी।

महावीर जयन्ति

३ अप्रैल / आसीन्द / भगवान महावीर का २५८४ वां जन्म दिवस आचार्यवर के सान्निध्य में बड़े ही हर्ष एवं उल्लास पूर्ण वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री रामपाल उपाध्याय तथा अध्यक्ष पूर्व राजस्थान नहर मंत्री संघ प्रवक्ता श्री चन्दनमल वैद थे। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री श्रेयांसकुमार के गीत से हुआ। मुमुक्षु

बहिनों समणियों, साध्वियों की सामूहिक गीतिकाएं हुईं। राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा के प्राचार्य डा० महावीर राज गेलड़ा, मुनिश्री किशनलाल, साध्वीश्री कनकश्री तथा ब्यावर क्षेत्र के विधायक श्री माणक डाणी ने भगवान महावीर के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला। साध्वी प्रमुखाश्री जी ने महावीर के उपदेशों का जिक्र करते हुए कहा—"महावीर ने जाति, वर्ण, वर्ग के अंतर को पाट कर "एगेव माणुसी जाई" का उपदेश दिया, पर आज जैनों में भी विभेद की दीवारें खड़ी हो गई। जब तक हम विभक्त रहेंगे, महावीर को अच्छी तरह नहीं मना सकेंगे। उन्हें मनाने के लिए उनके सिद्धान्तों को अपनाना होगा और वैचारिक आग्रह को त्यागना होगा।"

श्री रामपाल उपाध्याय ने कहा—"कार्ल मार्क्स ने समाजवाद के बारे में जो कुछ कहा है, उससे भी हजारों वर्ष पहले भगवान महावीर ने और अधिक क्रांतिकारी विचार दिये हैं। यदि देशवासी भगवान महावीर के विचारों पर चलते, तो यह हमारा देश न तो सैकड़ों वर्षों तक गुलाम रहता और न ही आज की यह अराजकता देखने को मिलती।"

युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—"वर्तमान में जिसकी प्रासंगिकता होती है, उसी का स्मरण किया जाता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है, भगवान महावीर उतने ही अधिक प्रासंगिक बनते जा रहे हैं। महावीर ने सापेक्षवाद के आधार पर मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या प्रस्तुत की। वर्तमान की पहली आवश्यकता यह है कि महावीर के भक्त सही माने में भक्त बने।"

महावीर जयन्ति मनाने के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए परमाराध्य आचार्य प्रवर ने कहा—"इस आयोजन के माध्यम से भगवान महावीर के उपदेशों, शिक्षाओं एवं पराक्रमी जीवन को हम स्मृति में लाएं और भावीपीढ़ी को संस्कार दें।" आचार्यवर ने विस्तार से भगवान महावीर के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला।

रात्रि में संघ प्रवक्ता श्री चन्दनमल बैद का आसीन्दवासियों द्वारा अभिनन्दन किया गया।

४ अप्रैल को महावीर जयन्ति का द्वितीय चरण मनाया गया, जिसमें आसीन्द क्षेत्र के विधायक श्री वी० पी० सिंह ने अपने विचार रखते हुए कहा—"भगवान महावीर क्षत्रिय थे। उनके पूर्व भी जितने तीर्थंकर हुए वे सब क्षत्रिय थे। जैन धर्म को क्षत्रियों की महत्वपूर्ण देन है। बादशाह जहांगीर ने

जब विश्वविख्यात जैन मंदिर राणकपुर पर आक्रमण किया था, उस समय हमारे पूर्वज श्री जयमल्ल ने उसके साथ जंग किया और मंदिर को नष्ट होने से बचाया।" आचार्य श्री और युवाचार्यश्री के भी विस्तार से प्रेरक प्रवचन हुए।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में मेवाड़ प्रान्तीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग ३५ गांवों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अमृत-महोत्सव के प्रसंग पर महिला समाज में विशेष जागृति आए, इसी उद्देश्य से कार्यक्रम का समायोजन किया गया था। साध्वी प्रमुखा श्री ने महिला प्रतिनिधियों को महत्त्वपूर्ण उद्बोधन दिया।

अमृत-यात्रा-प्रशिक्षण शिविर का भी आसीन्द में आयोजन हुआ। श्री मानव मुनि श्री पूर्णचन्द्र बडाला आदि ने इसमें विशेष रूप से भाग लिया।

विदेशों में अणुव्रत व प्रेक्षा-ध्यान की पद्धति को जन-जन को अवगत कराने हेतु समाज भूषण श्री मोहनलालजी कठौतिया तथा तुलसी अध्यात्म नीडम् के निदेशक श्री धर्मानन्दजी विदेश रवाना होने वाले थे। उससे पूर्व उन्होंने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के दर्शन किए और उनको यात्रा कार्यक्रम की जानकारी दी। आचार्यवर युवाचार्यश्री ने उनकी यात्रा के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

६ अप्रैल / बाराणा/आचार्यवर के स्वागत में सांसद श्री गिरधारीलाल व्यास ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने जनता से अपने जीवन को उन्नत बनाने का आह्वान किया।

८ अप्रैल / दौलतगढ़ / आसीन्द पंचायत समिति के प्रधान श्री किशनसिंह चुण्डावत ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यश्री का अभिनंदन किया। आचार्यश्री ने अपने संबोधन में कहा—"दौलत दो प्रकार की होती है एक दौलत तो हीरे, जवाहिरात आदि। दूसरी दौलत है त्याग, तपस्या व संयम की। वास्तविक धनी तो दूसरी दौलत वाला होता है।" द्विदिवसीय प्रवास के दूसरे दिन रात्रि में 'कैसे जीएं' विषय पर युयाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। युवाचार्यश्री से पूर्व मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' का वक्तव्य हुआ।

१० अप्रैल / लाछुड़ा / साध्वीश्री सुबोधकुमारी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में सबको अणुव्रत के पथ पर चलने का उपदेश दिया।

मध्याह्न में किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें हजारों किसानों

ने भाग लिया। ढोली ग्राम के ठाकुर श्री उम्मेदसिंहजी, आसीन्द क्षेत्र के विधायक व बदनोर ठाकुर वृजेन्द्रपालसिंह, सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री मनोहर मेहता ने किसान-सम्मेलन को संबोधित किया। आचार्यश्री के शिक्षामृत से प्रभावित होकर सैंकड़ों किसानों ने मद्य, मांस, धूम्रपान आदि का परित्याग किया। ११ अप्रैल को "धार्मिक कैसा हो?" विषय पर युवाचार्यश्री का सार-गर्भित वक्तव्य हुआ, विषय प्रवेश मुनिश्री किशनलाल ने किया।

१२ अप्रैल / तिलोली / आचार्यवर के स्वागत में ७० खटीक परिवारों ने एक साथ खड़े होकर मद्य-पान न करने का नियम लिया। १३ व १४ अप्रैल को बेमाली में आचार्यवर का प्रवास हुआ।

१५ अप्रैल / चांदरास/सरपंच श्री चांदमल घोड़ावत, प्रधानाध्यापक श्री राधेश्याम शर्मा ने स्वागत में अपने दो शब्द कहे। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में सुसंस्कारी बनने की प्रेरणा दी। सुदूर दक्षिण यात्रा करने वाली साध्वीश्री रामकुमारी 'लाडनूं' ने अपनी चार सहयोगिनी साध्वियों के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। नौ वर्षों की प्रलम्ब अवधि तक सुदूर क्षेत्रों में विचरण करने वाला यह प्रथम ग्रुप है। साध्वियों ने एक सुमधुर गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचार्यवर ने दक्षिण भारत में उनके द्वारा किये धार्मिक उपकारों पर संतोष व्यक्त किया।

१६ अप्रैल / बावलास/स्थानीय ठाकुर श्री जसवंतसिंह ने अपनी प्राचीन परम्परा के मुताबिक आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा—'आचार्यश्री के स्वागत में न केवल गांव को सजाया-संवारा गया है, अपितु अपने दिलों की सफाई में भी लोग लगे हैं। आपका सच्चा स्वागत आपकी शिक्षाओं का जीवन में अवतरण करने से होगा।'

१० अप्रैल / अडमीपुरा/सरपंच श्री प्रकाशचन्द मृतरिया, गुजर समाज की ओर से श्री ओंकारमल ने आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। मुनिश्री मानमलजी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन किया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में प्रतिकूल परिस्थिति में धैर्यवान बनने की प्रेरणा दी। अडमीपुरा गांव को अणुव्रत गांव बनाने की घोषणा की गई। इस गांव की अधिकांश जनता व्यसन मुक्त तथा शिक्षित है, कोई भी भूमिहीन नहीं है। अणुव्रत आदर्शों पर विकसित होने पर इसका नाम आदर्शपुरम् दिया गया। रात्रि में 'जीवन का लक्ष्य' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य

हुआ, प्राग् वक्तव्य मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने दिया।

१८ अप्रैल को बोरियापुर, १६ को आशाहोली, २० को नान्दशा पधारे। नान्दशा में रात्रिकालीन कार्यक्रम महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

तिलक भूमि गंगापुर में

२१ अप्रैल / आचार्यश्री साधु-साध्वियों के विशाल परिवार के साथ गंगापुर पधारे। गांव बाहर सड़क के सन्निकट ही अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का समाधि-स्थल है। आचार्यवर वहां पधारे तथा कुछ क्षण ठहरे भी। पिछले वर्ष मेवाड़ में विचरने वाले मुनिश्री हनुमानमलजी 'हरीश' ने वहीं दर्शन किये। मुनिश्री सुखलाल, जो कई दिनों से यहां पर थे, ने आचार्यवर की अगवानी की। समाधि स्थल से विहार कर आचार्यवर रंग-भवन पधारे। यह वही भवन है जहां आज से ४६ वर्ष पूर्व आचार्यवर आचार्यपद पर आसीन हुए थे। लगभग आधा घंटा आचार्यवर वहां ठहरे। उस समय आचार्यवर ने एक सोरठा फरमाया—

रंग-भवन में रंग, अमृत-महोत्सव अवसरे।
आए अमित उमंग, 'तुलसी' युव प्रमुखा सहित॥

नगर के मुख्य मार्गों से होता हुआ जुलूस राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में स्थित विशाल प्रवचन पंडाल में पहुंचने पर सभा रूप में परिणत हो गया। नगरपालिका तथा समाज की सभी संस्थाओं के द्वारा आचार्यवर का अभिनन्दन किया गया। साध्वीश्री आनन्दकुमारी एवं साध्वीश्री सुजानांजी, जो पिछले २२ महीनों से गंगापुर विराज रही है, की ओर से साध्वीश्री उज्ज्वल रेखा ने अपनी एक कविता के माध्यम से आचार्यवर का स्वागत किया। राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने अपनी मातृभूमि की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया। मुमुक्षु बहिनों का एक सुमधुर गीत हुआ।

युवाचार्यश्री ने महावीर के अनेकांत सिद्धांत की चर्चा करते हुए अमृत-महोत्सव की आयोजना पर प्रकाश डाला। आचार्यश्री ने मेवाड़ यात्रा को उत्साह व उल्लासपूर्ण बताते हुए मेवाड़ी भाई-बहिनों की श्रद्धा-भक्ति की सराहना की तथा ५० वर्ष पूर्व के इतिहास का संक्षिप्त सजीव चित्रण प्रस्तुत किया, जिसे सुनकर श्रोता सराबोर हो गये।

अक्षय तृतीया

२३ अप्रैल / गंगापुर/वैसाख शुक्ला तीज को मनाया जाने वाला यह 'अक्षय तृतीया' पर्व प्राग् ऐतिहासिक काल से ही विशिष्ट महत्व का दिन माना जाता रहा है। आज के दिन भगवान् ऋषभदेव ने अपने पौत्र श्रेयांस के हाथों इक्षु रस से पारणा किया था। तब से यह दिन अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सैंकड़ों भाई-बहिन एकांतर तपस्या का स्वीकरण व समापन करते हैं। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष अक्षय तृतीया का भव्य कार्य-क्रम गंगापुर में मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित जन-समूह को देखकर मर्यादा-महोत्सव का-सा आभास हो जाता है।

साधु-साध्वियों आदि के वक्तव्यों एवं गीतिकाओं से आज के दिन की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने मंजे हुए विचार रखे।

युवाचार्यश्री ने अपने भाषण में कहा—'गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण (रामचरित मानस) लिखा है और वह जन-जन में लोकप्रिय है। वैसे ही भगवान् ऋषभ का जीवनचरित्र पद्यमय ऋषभायण लिखा जाना चाहिए।'

आचार्यश्री ने अक्षय तृतीया पर्व की विस्तृत अवगति दी और कहा—'तपस्या आत्म-शुद्धि के लिए की जानी चाहिए, आडम्बर और प्रदर्शन के लिए नहीं। मैं चाहता हूं कि लेने-देने की परम्परा डालकर तपस्या को भारी न बनाया जाए।'

आचार्यवर के सान्निध्य में पारणा करने वाले भाई-बहिनों की संख्या १२४ थी।* उनमें बहुत सारे तपस्वियों के साथ-साथ अनेक भाई-बहिन ऐसे भी थे, जिनके पांचवां सातवां, दशवां बारहवां वर्षी तप चल रहा है। स्वयं आचार्यश्री ने तपस्वी भाई-बहिनों से मंच पर भिक्षा ग्रहण की। इस अवसर पर कुछ साधु-साध्वियों ने भी आचार्यवर के सान्निध्य में वर्षीतप का पारणा किया, वे हैं—

- मुनिश्री मिश्रीमल (तेले-तेले)
- मुनिश्री अर्जुनलाल, मुनिश्री कमल कुमार
- दीर्घ तपस्विनी साध्वीश्री पन्नांजी (३६ वर्षों से निरन्तर), साध्वीश्री सुजानांजी (१७ वर्षों से निरंतर)।

२३ अप्रैल / रात्रि में 'तप का जीवन में प्रभाव' विषय पर मुनिश्री

* देखें परिशिष्ट २

किशनलाल ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए।

२४ अप्रैल। रात्रि में 'दहेज उन्मूलन' विषय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक प्रवचन हुए। प्रारम्भ में मुनिश्री सुखलाल, सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री मनोहर सिंह मेहता ने अपने मंजे हुए विचार रखे। सभी वक्ताओं ने कानून के जरिये इस बीमारी का इलाज करने की अपेक्षा हृदय परिवर्तन व सामाजिक बहिष्कार को अधिक कारगर उपाय बताया।

२५ अप्रैल / रात्रि में 'मद्य निषेध' विषय पर मुनिश्री सुखलाल ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के भी महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए।

२६ अप्रैल / रात्रिकालीन कार्यक्रम में 'अस्पृश्यता निवारण' विषय पर रखा गया। प्रारम्भ में राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने विस्तार से इस विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से आचार्यश्री द्वारा मानव मात्र के लिए किये जा रहे कार्यों की सराहना की। अन्त में आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री ने विशाल जनसभा को संबोधित किया।

अमृत-महोत्सव का शुभारम्भ

आचार्यश्री तुलसी वर्तमान के एक बहुचर्चित प्रतिभा संपन्न आचार्य हैं। आचार्यश्री ने समग्र मानव जाति को जो अवदान दिया है, उसको हम घेरे में नहीं बांध सकते। आचार्यश्री अपने आचार्यकाल के पचासवें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं। समाज ने इस वर्ष को युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के निर्देशन में अमृत-महोत्सव वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया। यह समारोह मात्र स्तुतिपरक नहीं, कर्तृत्व-प्रस्तुति देने वाला है। इस अवसर पर आचार्यश्री के विचारों एवं कार्यक्रमों से जनता को अवगत कराया जायेगा। यह समारोह समाज व राष्ट्र के आंतरिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इस समारोह को चार चरणों में मनाने की परिकल्पना है, जिसका प्रथम चरण २८ एवं २९ अप्रैल को गंगापुर में समायोजित हुआ।

२८ अप्रैल / सूर्योदय के पूर्व पूरे नगर में प्रभात-जागरिका निकाली गई, जिसमें हजारों स्त्री-पुरुष, युवक, कन्याओं ने अपने-अपने गणवेश में भाग लिया,

आचार्यश्री प्रवास-स्थल (स्कूल) के ठीक पीछे के अहाते में नव

निर्मित अमृत समवसरण में ८.२० बजे कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

- मंगलाचरण—समणीवृन्द।
- आचार्यवन्दना—मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन', मुनिश्री मधुकर।
- त्रिपदी वन्दना—मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'।
- संगीत—साध्वी प्रमुखाश्रीजी आदि ५१ साध्वियां मुनिश्री श्रेयांसकुमार आदि युवा संत, पारमार्थिक शिक्षण संस्था की बहिनें।
- वक्तव्य—मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनिश्री किशनलाल, समणी सुप्रज्ञा, श्री देवेन्द्र हिरण, श्री देवेन्द्र कर्णावट।
- परिसंवाद—'प्रकृति की पुलकन' शीर्षक से साध्विश्री विवेकश्री आदि साध्वियां।
- साहित्य भेंट—मुनिश्री सुखलाल के अन्तरिम संयोजन में साहित्य-भेंट का क्रम चला, जिसमें पृथक्-पृथक् संस्थानों द्वारा प्रकाशित एवं साधु-साध्वियों द्वारा लिखित/अनुदित/संपादित पुस्तकें आचार्यवर को भेंट की गई।

राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने आचार्यवर की शिक्षाओं को भावी पीढ़ी के लिए शुभ कदम बताया।

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने कहा—'व्रतों का महत्त्व तभी है जब वे जीवन में उतरें। भगवान महावीर ने जो सिद्धांत प्रतिपादित किया है, उसे आचार्य तुलसी जी वर्तमान के संदर्भ में समीचीन रूप से प्रस्तुति दे रहे हैं। आप मानव-मानव के जीवन व्यवहार में प्रामाणिकता एवं नैतिकता को अवतरित करने का स्तुत्य प्रयास कर रहे हैं। मैं इस प्रयास की मंगल कामना करता हूं।'

मुख्यमंत्री ने अमृत-महोत्सव कार्यक्रम की सफलता हेतु संप्राप्त प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का संदेश पढ़कर सुनाया, जो अविकल इस प्रकार है—

मानव जन्म विकास के लिए है, विनाश के लिए नहीं।

व्यक्ति और समाज निष्ठा, सादगी और सत्य के अन्वेषण से बढ़ते हैं। आचार और विचार में संयम होना चाहिए और हम सब मनुष्य की एकता के लिए काम करें।

आचार्य तुलसी इन नैतिक मूल्यों के प्रसार के काम में लगे हैं। उनके

अमृत-महोत्सव के अवसर पर मैं उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।
नई दिल्ली (ह०) राजीव गांधी
१६ अप्रैल, १९८५

साध्वी प्रमुखाश्री जी ने अमृत महोत्सव की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए कहा—'कार्यकाल के पचास वर्ष हर व्यक्ति पूरे करता है, पर अमृत महोत्सव सबका नहीं मनाया जाता। मनाया उसी का जाता है, जो अमृत वितरण करें। स्वयं विष पीकर भी औरों को अमृत पिलायें। युग की समस्याओं का युगीन भाषा में समाधान देने से ही आपको युग प्रधान के रूप में अभिनन्दित किया'।

साध्वी प्रमुखाश्री ने आगे कहा—'इंग्लैण्ड के इतिहास में क्रामविल नहीं आता, तो इंग्लैण्ड का इतिहास कुछ दूसरा ही होता। फ्रांस के नभ में नेपोलियन का उदय न होता, तो फ्रांस की कहानी कुछ दूसरे प्रकार की होती। इसी प्रकार तेरापंथ की धरती पर आचार्यश्री तुलसी न आते तो तेरापंथ का इतिहास भी दूसरा ही होता। समग्र मानव जाति के हितों को ध्यान में रख कर आपने जो अवदान दिया है, इतिहास की विरल घटना है।

जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान् श्री दलसुख भाई मालवणिया ने अपने लिखित संदेश में कहा—'अठारहवीं सदी अंग्रेजों की, बीसवीं सदी अमेरिका की और इक्कीसवीं सदी आचार्य तुलसी की है। आज आचार्यश्री के उदार दृष्टिकोण से तेरापंथ शब्द जैन धर्म का पर्यायवाची बन गया है।'

देश के सुप्रसिद्ध कवि, साहित्यकार श्री कन्हैयालाल सेठिया ने अपने संदेश में काव्यात्मक भाषा में लिखा—

तुम अमृत के रूप कर दिया, तुमने क्षर को अक्षर।
धन्य हो गया तुम्हें प्रकट कर, यह भव रत्नाकर॥

ये दोनों संदेश पढ़कर सुनाये गए।

अमृत महोत्सव मनाने के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद आज आदमी घुटन महसूस कर रहा है। उसका कारण है एक पक्षीय विकास। आज आदमी पदार्थ जगत् की ओर बहुत गतिशील बना हुआ है तथा उसके भीतर से टूटन जारी है। जब तक दोनों पक्षों की समानता नहीं होगी, विषमता मिट नहीं पायेगी। अमृत-महोत्सव का उद्देश्य ही यह है कि दोनों समानान्तर रेखा पर चले'। युवाचार्यश्री ने विस्तार से आचार्यश्री के जीवन चित्र को विभिन्न कोणों से

खींचा तथा उनके चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से किए गये कार्यों को संपूर्णमानव जाति के लिए महत्त्वपूर्ण अवदान माना। इस अवसर पर युवाचार्यश्री ने अमृत-महोत्सव वर्ष को 'जीवन-विज्ञान वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की।

आचार्यश्री ने अपने अमृत-संदेश में कहा—'मैंने अमृत-महोत्सव के आयोजनात्मक रूप को पसन्द नहीं किया, रचनात्मक व प्रयोजनात्मक रूप को पसन्द किया है। हमारे सामने दो मुख्य काम हैं—चरित्र निर्माण और जीवन-विज्ञान। हमें ऐसा धर्मसंघ मिला है, जिसमें हम खुलकर काम कर सकते हैं। हम अणुव्रत के माध्यम से व्यापक दृष्टिकोणपरक कार्य कर रहे हैं।' आचार्यश्री ने पचास वर्ष पूर्व की स्मृतियों का एक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया तथा गंगापुर से संबंधित आचार्य पद प्राप्ति की घटनाओं से उपस्थित जनसमूह को अवगति दी।

२६ अप्रेल। प्रातःकाल की मंगलवेला में आचार्यवर के सान्निध्य में अमृत-यात्रा का प्रारंभ हुआ। अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति के संयोजक श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट ने अपने वक्तव्य में यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट किया।

आचार्यवर ने सर्वप्रथम इस यात्रा के प्रथम यात्री दल को सामूहिक रूप से पांच संकल्प कराये। आचार्यवर, युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री तथा साधु-साध्वी परिवार के साथ अमृत-कलश-पदयात्रा का शुभारंभ किया। आकाश जयनारों से गूंज उठा और वातावरण खुशियों से झूम उठा।

प्रातः कालीन अमृत-महोत्सव के द्वितीय दिवस का कार्यक्रम ठीक साढ़े आठ बजे प्रारंभ हुआ। अनेकों साधु-साध्वियों ने गीतिका, मुक्तक, एवं कविताओं के द्वारा आचार्यवर का गुणानुवाद किया। साध्वीश्री कमलूजी, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वीश्री कल्पलता आदि ग्यारह साध्वियों ने 'तब से अब' शीर्षक से एक रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया, जिसमें समावेश था आचार्यवर के आचार्य पट्टाभिषेक के समय की साध्वियों की स्थिति तथा वर्तमान में साध्वियों की स्थिति। परिसंवाद में भाग लेने वाली सभी साध्वियों को आचार्यवर ने १३ दिनों की षट् विगय वर्जन की बख्शीश की। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री ने साध्वियों द्वारा गृहीत संकल्पों से युक्त एक अमृत-कलश आचार्यवर को भेंट किया।

युवाचार्यश्री एवं आचार्यश्री के इस अवसर पर महत्त्वपूर्ण उद्बोधन

हुए। श्री शुभकरण दसाणी, श्री सीताशरण शर्मा ने भी अपने विचार रखे। श्री चंपालाल आंचलिया (कलकत्ता) द्वारा प्रेषित पत्र सुनाया गया। पत्र में इस बात का विशेष उल्लेख था कि कलकत्ता स्थित विश्व विख्यात संस्था एसियाटिक सोसायटी ने अपने यहां जैन चेयर की स्थापना की है। मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' तथा मुनिश्री कमलकुमार ने स्थान-स्थान पर होने वाली तपस्याओं का विवरण देते हुए तप-जप में सबको नियोजित होने की प्रेरणा दी। इस तरह अमृत-महोत्सव के प्रथम चरण का यह द्विदिवसीय कार्यक्रम बड़े ही उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया।

३० अप्रैल/रात्रि में 'पीछे मुड़कर देखना होगा' विषय पर युवाचार्य श्री का विशेष प्रवचन हुआ। विषय प्रवेश मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने किया।

१ मई / 'अनेकान्तवाद' पर युवाचार्यश्री का दार्शनिक प्रवचन हुआ। शुरू में मुनिश्री किशनलाल ने विषय की पृष्ठभूमि पर अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

पट्टाभिषेक स्थल-रंग भवन में

२ मई / प्रातः विद्यालय से विहार कर आचार्यवर रंग भवन पधारे। यह वही भवन है जहां अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का स्वर्गवास हुआ था।

रंग भवन के मुख्य हाल में ज्योंही आचार्यवर पट्ट पर विराजे, सभी साधु-साध्वियां वहां बैठ गए। आचार्यश्री ने पचास वर्ष पूर्व के प्रसंगों का मार्मिक एवं सजीव वर्णन किया। एक घंटे चली इस गोष्ठी में आचार्यवर ने भाव-विभोर होकर घटना प्रसंगों की प्रस्तुति दी और साधु-साध्वियों ने भी एकाग्रता से सुना। आचार्यवर ने भवन के उन भागों के बारे में भी बताया कि आचार्य बनने से पूर्व मैं कहां बैठा करते थे, कहां सोते थे, और कहा संतों को पढ़ाते थे।

श्री गणपतलाल हिरण ने आचार्यवर के रंग भवन पधारने के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की व पूरे परिवार की ओर से स्वागत किया। श्री भंवरलाल हिरण ने अष्टमाचार्य श्री कालूगणी की बैकुण्ठी में चांदी के कलश तथा उछाल के लिए निर्मित चांदी के फूल, कपड़े की फरियां व अंत्येष्ठी में काम आया चंदन दिखाया। रंग भवन में आचार्यवर का त्रिदिवसीय प्रवास हुआ। साध्वी प्रमुखाश्री जी ने ५ मई को शिवरति के लिए विहार कर दिया। रात्रि-कालीन प्रवास वहीं हुआ।

शोक विमोचन

टाडगढ़ व गंगापुर के बीच ३ मार्च से २१ अप्रैल के मध्य शोक विमोचन हेतु कई परिवार आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुंचे। अपने पारिवारिक सदस्य के बिछुड़ने पर सबको दुःख होता है, पर आचार्यवर की पावन सन्निधि से सबको तोष मिला, प्रेरणा मिली, संबल मिला। जो स्वर्गस्थ हुए वे निम्नोक्त हैं—

श्रीमती सेवा बाई खिण्डालिया आरकोणम-तमिलनाडु के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री सोवनराज की धर्मपत्नी थीं। वे कुछ वर्षों से कैंसर रोग से पीड़ित थी। असह्य शारीरिक वेदना के क्षणों में भी वे सहनशील बनी रहती थीं। गुरुदेव व साधु-साध्वियों की उपासना व दान देने की उनकी भावना बेजोड़ थी। अन्तिम समय में उनको साध्वीश्री किस्तुरांजी का आध्यात्मिक संबल भी प्राप्त हो गया।

'दीवानजी' उपनाम से प्रसिद्ध तथा साध्वीश्री रूपां के ससार पक्षीय भाई श्री जयचंदलाल छाजेड़ (सरदारशहर) संघ-संघपति के प्रति समर्पित थे। वे जीवन भर इकरंगे रहे।

श्री भूरामल बांबलिया (पुर) एक श्रद्धालु श्रावक थे। उनमें पात्र-दान देने की अभिलाषा सतत बनी रहती थी।

श्रीमती रायकंवरी बैंगानी (बीदासर) श्री मेघराज की पत्नी थी। वह एक धर्मनिष्ठ महिला थी।

श्री मदनचंद बोरड़ (लाडनूं) एक धार्मिक व्यक्ति थे। उनकी एक पुत्री वर्तमान में पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययनरत है।

श्रीमती भंवरीदेवी बैंगानी (लाडनूं) का ८५ वर्ष की अवस्था में ४३ दिनों के तिविहार व २ दिनों के चौविहार अनशन में दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। इस अनशन से दिल्ली में उल्लेखनीय प्रभावना हुई। दो समणियां भी वहां गईं। आचार्यश्री ने बैंगानी परिवार को शासन भक्त परिवार बताते हुए उनकी संघीय सेवाओं का उल्लेख किया। श्रीमती भंवरीदेवी धर्म की धोरिणी (श्रद्धालु) महिला थी। गुरु के नाम से तो वह सोती जाग जाती।

श्री नेमीचंद गोगड़ (बालोतरा) एक तपस्वी, श्रद्धालु और भक्तिमान श्रावक थे। विवाह के १० वर्ष बाद ही पत्नी का देहावसान होने के बाद शेष जीवन अध्यात्म-साधना में लगा दिया।

श्री शांतिभाई मूलतः वाव निवासी थे, अब अहमदाबाद में बस चुके

थे। वे अच्छे धार्मिक रुचि वाले व्यक्ति थे। प्रेक्षाध्यान के प्रति उनकी विशेष अभिरुचि थी। वे हार्ट के मरीज थे।

मास्टर गुलाबचंदजी मनोत (अजमेर) सहज संस्कारी श्रावक थे। वे जहां भी गए, अपने संपर्क में आने वालों में धार्मिक संस्कार भरते रहे। लगभग पचास वर्षों तक वे अध्यापक रहे। उन्होंने अपने पूरे परिवार को बौद्धिक दृष्टि से परिसंपन्न बनाने के साथ धर्म के गहरे संस्कारों से संस्कारित भी किया।

श्री सूरजमल बांठिया (राजलदेसर) आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा होमियोपैथिक औषधियों के काफी अनुभवी थे। साधु-साध्वियों की औषधि के रूप में अच्छी सेवा करते थे। सेवाकेन्द्र में सेवारत साध्वीश्री भीखांजी दर्शन देने उनके घर गईं। उनके रहते-रहते श्री बांठिया जी का देहान्त हो गया।

श्रीमती बोलिया (पुर) श्री हीरालाल बोलिया की धर्मपत्नी थीं। वह एक जागरूक व संस्कारी महिला थी।

श्री मिश्रीमल सेठिया (पूना) एक जिम्मेदार श्रावक थे। उस क्षेत्र में आने वाले साधु-साध्वियों की पूरे दायित्व के साथ सेवा करते थे।

श्री चैनरूप मुसरफ (राजगढ़) एक श्रद्धालु श्रावक थे। इस परिवार के कुछ व्यक्ति संघ-बहिर्भूत साधुओं के संपर्क के कारण गुमराह भी हुए, पर उन पर उसका कोई असर नहीं हुआ। वे बराबर इकरंगे श्रावक रहे।

श्री गोपीचंद चौपड़ा गंगाशहर का जैन विश्व भारती के प्रांगण में ६ अप्रैल को अकस्मात् बीमारी में स्वर्गवास हो गया। आचार्यश्री के शब्दों में—'गोपीचंदजी तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम समाज-भूषण, विशिष्ट विद्वान, कर्मनिष्ठ श्रावक श्री छोगमल चौपड़ा के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे भी पिता की तरह कर्मठ और विद्वान थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत व बंगला भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। वे अनुभवी, सूझबूझ वाले तथा पत्र-प्रेषण में दक्ष थे। अस्सी वर्ष की अवस्था में भी वे परवश नहीं हुए। विगत सात वर्षों से वे जैन विश्व भारती को अपनी सेवायें दे रहे थे।'

अणुव्रत ग्राम आमली में

६ मई / अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री के अणुव्रत ग्राम आमली पधारने पर भावभीना स्वागत किया गया। गंगापुर से आमली तक पूरा मार्ग जनाकीर्ण हो गया था। आमली प्रवेश पर अणुव्रत द्वार का उद्घाटन हुआ। सन् १९६२ से आमली को अणुव्रत ग्राम बनाने का प्रयास चल रहा था।

अमृत-महोत्सव के इस पावन प्रसंग पर इस आयाम को एक आकार मिला। गांव के सभी लोगों में अच्छा सांप्रदायिक सौहार्द है। गांव की ६५ प्रतिशत जनता मद्य-मुक्त है। आपसी मामलों को कोर्ट के बजाय पारस्परिक समझौते के जरिये सुलझाया जाता है। गांव में कोई भी भूमि हीन एवं बेघरबार नहीं है। शिक्षा एवं चिकित्सा की समुचित व्यवस्था है। हर वर्ग का व्यक्ति अणुव्रत के साथ जुड़ा हुआ है और उसके प्रति आस्थाशील है।

आमली ग्राम को संस्कारी बनाने में वहां चतुर्मास करने वाले साधु-साध्वियों में स्वर्गीय मुनिश्री नेमीचन्द ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुनिश्री सुखलाल का भी इस दिशा में सक्रिय प्रयास रहा। आमली ग्राम में अणुव्रत पुस्तकालय व वाचनालय, साक्षरता केन्द्र, अणुव्रत न्याय समिति आदि अनेक प्रवृत्तियां चल रही है। आचार्यवर ने आमली के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामनारायण चेचानी की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए 'अणुव्रत सेवी के रूप में सम्मानित किया।

आमली से महेन्द्रगढ़, कारोई, मांगवा, बागौर, घोड़ास, भादू, पिथास होते हुए आचार्यवर पुर पधारे। इन गांवों में आचार्यवर के प्रवचनों से प्रभावित होकर सैकड़ों लोगों ने धूम्रपान व मद्यपान का परित्याग किया। 'हम लोग रोटी पानी छोड़ सकते हैं, पर शराब को नहीं छोड़ सकते'—ऐसा कहने वालों ने जब शराब न पीने का संकल्प लिया और तो जनता के आश्चर्य का पार नहीं रहा। घोड़ास ग्राम में शराब के पंच प्यारों द्वारा शराब को सदैव के लिये अलविदा करने का पूरे गांव पर गहरा असर पड़ा।

मेवाड़ में हर पांच-सात किलोमीटर पर कोई न कोई गांव आ जाता है —काफी ग्रामों में तेरापंथ के एक-दो परिवार मिल जाते है। युगीन प्रभाव से अछूते मेवाड़ी लोगों की श्रद्धा बेजोड़ है। उनके लिये १०-१५ कि०मी० चलना साधारण सी बात है। आचार्यवर की यात्रा मे जिस ग्राम में पड़ाव होता उसके चारों ओर से १०-१५ कि०मी० पैदल चलकर दर्शन, प्रवचन-श्रवण के लिये आ जाते।

१५ मई / पुर/यहां आचार्य भिक्षु ने दो चतुर्मास किये, तब से केवल दो चातुर्मास छोड़कर निरंतर साधु-साध्वियों का चातुर्मासिक प्रवास हो रहा है। आचार्य प्रवर के स्वागत समारोह में बोलते हुए राजस्थान के भू० पू० सिंचाई मंत्री श्री रामप्रसाद लड्ढा ने कहा कि—"आज विश्व में हिंसात्मक उपकरणों का निर्माण तेजी के साथ हो रहा है चारों ओर भय, आतंक एवं

अशांति का वातावरण बना हुआ है। इस संदर्भ में आचार्यश्री तुलसी हमें यही वात वतला रहे हैं कि शांति तो स्वयं अंतःकरण में विद्यमान है। अपेक्षा है उसे सही रूप में पहचानें।"

आचार्यवर ने महापुरुषों द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने का उपदेश दिया।

पुर में तत्व ज्ञान प्रशिक्षण शिविर

आचार्यवर के सान्निध्य एवं मुनि सुमेर मल "लाडनूं" के निर्देशन में एक सप्त दिवसीय शिविर (१२ मई से १८ मई) का आयोजन किया गया। इस शिविर में मेवाड़ के ८२ वालकों ने भाग लिया। शिविर समय में वालकों को विशेष रूप से तीन विषयों का प्रशिक्षण दिया गया। (१) तत्व-ज्ञान (२) अनुशासन (३) व्यावहारिक ज्ञान।

१८ मई को शिविर समापन कार्यक्रम में शिविर संचालक श्री हस्तीमल सेठिया ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा शिविर की समस्त प्रवृत्तियों पर अपने संक्षिप्त विचार रखे। इन ७ दिनों में अधिकांश वच्चे तीनों कसौटियों पर खरे उतरे। कार्यक्रम के वीच पूछे गये प्रश्नों के प्रदत्त उत्तरों से सवको यही अनुभूति हो रही थी कि शिविर से वालकों में संस्कार कितने गहरे एवं परि-पक्व हो जाते हैं। तीनों कसौटियों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को भीलवाड़ा गर्ल्स कॉलेज की प्रिंसीपल श्रीमती वड़ेरा ने पुरस्कार प्रदान किये।

अपने आशीर्वचन में आचार्य प्रवर ने शिविरार्थियों से कहा—"वे शिविर में प्राप्त तत्त्वज्ञान, अनुशासन व सुसंस्कारों को संजोगकर रखें जिससे दूसरे वालकों के लिये अनुकरणीय वन जाए। मुनि सुमेर मल "लाडनूं" तथा इसके दोनों सहगामी मुनि विजय व उदित ने इस शिविर में अच्छा श्रम किया है।" आचार्यप्रवर ने संस्कारों की सुरक्षा हेतु ऐसे शिविरों के समायोजन पर वल दिया।

१६ मई / पुर / संस्कार निर्माण सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें स्थानीय वेरवा जाति (हरिजन) के लोगों ने विशेष रूप से भाग लिया। अनेकों ने अपने विचार रखे। आचार्यवर का इस अवसर पर महत्वपूर्ण उद्वोधन हुआ। लगभग २६ वर्षों पूर्व मुनिश्री कानमल के विशेष प्रयत्नों से वेरवा जाति मद्य, मांस से विमुक्त वनी तथा तेरापंथ की गुरुधारणा स्वीकार की थी। आचार्य श्री इनके मोहल्ले में भी पधारे। आचार्यश्री के उद्वोधन

से इस जाति के लोगों को गहरा आत्मतोष मिला।

१८ मई/पुर/यहां तीन सामाजिक विग्रह शांत हुए। पहला विग्रह था वावलिया परिवार व नेनावटी परिवार के बीच। यह कई वर्षो से चला आ रहा था। आचार्यश्री की विशेष प्रेरणा से वर्षो का मनोमालिन्य समाप्त हो गया तथा परस्पर क्षमा याचना की। दूसरा विग्रह था समूचे तेरापंथी समाज से। उसका मूल था-मृत्युभोज। मृत्युभोज कोई करे और कोई न करे, यह मनोभेद का कारण बना। आचार्यवर के प्रयास से सबने सर्वसम्मत संकल्प किया कि भविष्य में वे मृत्यु भोज नहीं करेंगे। तीसरा बेरवा जाति से था, जो तेरापंथी हैं। उनके विवाद का मुद्दा था—जमीन। विवाद इतना बढ़ा कि मामला कोर्ट में पहुंच गया। आचार्यवर के समझाने से सबने श्री गणेशमल चोरड़िया को अपना मध्यस्थ बना लिया और उनके किसी भी फैसले को स्वीकार्य मान लिया।

पुर प्रवास के दौरान रात्रि में युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुवे। जिनमें १५ मई को 'अन्दर का खजाना खोजें' १६ मई को 'धर्म और नैतिकता, तथा १७ को 'हिंसा आज की ज्वलन्त समस्या' विषय थे। १६ मई को स्थानीय कन्यामण्डल की कन्याओं ने दहेज पर एक रोचक परिसंवाद किया।

भीलवाड़ा में भव्य स्वागत

२० मई/आचार्यवर के भीलवाड़ा प्रवेश पर आचार्यवर का भव्य स्वागत किया गया। बापू नगर से जवाहर रोड, सांगानेरी दरवाजा, तथा मुख्य बाजार मार्ग होते हुए राजेन्द्र मार्ग स्थित रा० उ० मा० विद्यालय पहुंचे। वहां आयोजित स्वागत समारोह में आचार्यश्री ने उपस्थित जन समूह से अणुव्रत के नियमों को स्वीकार करने का आग्रह किया। युवाचार्यश्री ने समस्या के समाधान में हिंसा को स्पष्ट शब्दों में नकारा। कार्यक्रम के प्रारंभ में राजस्थान के पूर्व नहर मंत्री श्री चंदनमल वैद, पूर्व सिचाई मंत्री श्री राम प्रसाद लढ्ढा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अभिनंदन समारोह के साथ जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का प्रारंभ हो गया। वर्तमान के परि-प्रेक्ष्य में शिक्षा के प्रारूप पर आचार्य श्री, युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए। उन्होंने बदलते समीकरण में भावनात्मक विकास करने वाली शिक्षा प्रणाली की जोरदार वकालत की।

२१ मई को 'भारतीय दर्शन में समग्र जीवन की कल्पना' विषय पर युवाचार्य श्री का विशेष वक्तव्य हुआ। मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने विषय

प्रवेश किया।

आचार्यश्री कैदियों के बीच

२६ मई/भीलवाड़ा/ आचार्यवर सेन्ट्रल जेल के अधिकारियों एवं अपराधियों के विशेष निवेदन पर वहां पधारे। जेल अधिकारियों ने मुख्य गेट पर स्वागत किया। आचार्यवर ने अपराधियों को महत्त्वपूर्ण उद्बोधन दिया, जिससे अनेकों कैदियों ने मद्यपान का परित्याग किया तथा अपनी बुराइयों का जिक्र करते हुए भविष्य में उन्हें न दोहराने का संकल्प लिया। रात्रि में "संयम ही जीवन है" विषय पर युवाचार्यश्री का सारगर्भित वक्तव्य हुआ। प्राग् वक्तव्य मुनि सुमेरमल "लाडनूं" का हुआ।

रात्रि में मुनि श्री मधुकर के सान्निध्य में 'काव्य सन्ध्या' का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें अनेकों संतों तथा मुमुक्षु बहिनों की भावपूर्ण गीतिका, कविता, मुक्तक हुए। जनता को भावविभोर बना देने वाले इस कार्यक्रम का संयोजन मुनि श्री मोहजीत कुमार 'निर्भय' ने कुशलता के साथ किया।

२८ मई/आचार्यवर ग्राम भारती पधारे, जहां युवाचार्यश्री के निर्देशन में २० मई को जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का प्रारंभ हुआ था। शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—"श्रद्धेय युवाचार्यश्री का ऊर्जस्वल व्यक्तित्व आपकी चेतना को आन्दोलित कर रहा है। आप लोगों ने आठ दिनों में जो कुछ प्राप्त किया है उसका अभ्यास जारी रखें क्योंकि वह आपके जीवन की अमूल्य थाती है। युवाचार्य श्री ने अपने उद्बोधन में कहा—"इस शिविर का उद्देश्य अध्यापकों को प्रशिक्षित करना है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक कार्यक्रम को और जोड़ दिया जाये, तो निश्चय ही एक नया मोड़ आएगा। पर इसके लिये लोगों को खपना पड़ेगा।"

आचार्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—"शांति,सुख, आनंद प्राप्ति के लिये तीन अपेक्षायें है—जीवन प्रकाशमय बने, मोह का आवरण दूर करें, राग द्वेष को क्षीण कर वीतराग बने।"

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का समापन

२९ मई/इस शिविर में देश के विभिन्न भागों से समागत १३० शिविरार्थियों ने भाग लिया। इसमें अधिकांश शिक्षक थे। डा० धर्मानन्द जैन ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुनिश्री सुखलाल, मुनिश्री किशनलाल,

आचार्यवर, युवाचार्य श्री, डा० महावीर गेलडा, प्रो० विपिन भाई, श्री रामेश्वर प्रसाद जैन, सुदर्शना खन्ना आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा स्वागत समिति भीलवाड़ा के आमंत्रण पर आयोजित की गई २२ से २५ मई के मध्य शिविर में जीवन-विज्ञान पुस्तक लेखन संगोष्ठी हुई। इसमें बोर्ड के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ सिंह मेहता, सचिव श्री मांगीलाल जैन ने विशेष रूप से भाग लिया। जीवन-विज्ञान के पाठ्यक्रम के संदर्भ में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि शीघ्रातिशीघ्र जीवन-विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें तैयार की जायें। कक्षा ६ से ११ तक के जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम पर पुस्तकें लिखने हेतु दो दलों का गठन किया गया। पहले दल के संयोजन का दायित्व डा० महावीर गेलड़ा तथा दूसरे दल का डा० शिवकुमार शर्मा को सौंपा गया। समागत लेखकों ने भी शिविर-समापन के प्रसंग पर अपने विचार व्यक्त किये।

पारदर्शी दृष्टिकोण

३० मई/भीलवाड़ा रोटरी क्लब तथा लायन्स क्लब के संयुक्त तत्वावधान में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। टाऊन हॉल में आयोजित इस संगोष्ठी का विषय था "पारदर्शी दृष्टिकोण"। दोनों क्लबों के पदाधिकारियों, सक्रिय कार्यकर्ताओं के अलावा अनेकों बुद्धिजीवियों एवं पत्रकारों ने भी भाग लिया। रोटरी क्लब के अध्यक्ष श्री के० एन० भंसाली तथा लायंस क्लब के उपाध्यक्ष श्री बंशीलाल जैन ने संस्था की ओर से स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भीलवाड़ा जिलाधीश श्री सत्यप्रिय गुप्ता ने कहा—"वर्तमान माहौल में आचार्यश्री का संदेश न केवल भारत के लिये, अपितु संपूर्ण विश्व के लिये महत्त्वपूर्ण है। आवश्यकता इस बात की है कि लोग इनसे प्रेरणा लेकर शोषण, छल, कपट व गरीबी से मुक्त आदर्श राष्ट्र के निर्माण में सहयोग करें।

श्री माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा के प्राचार्य डा० महावीर राज गेलड़ा ने आचार्यश्री का परिचय देते हुए कहा कि—"सूरज आकाश में सतत गतिमान रहता है। यहां पांव-पांव चलने वाला सूरज जन-जन की चेतना को जागृत करने के लिए अविराम गति से उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम घूम रहा है। लगभग समूचे भारत को आपने अपने कोमल पैरों से नापा है। आज अपेक्षा है कि ये पावन चरण विदेशी धरती पर टिकें, जिससे वहां की जनता आपका पथ प्रदर्शन प्राप्त कर सके।"

दीक्षा-समारोह

१ जून/भीलवाड़ा/स्थान-राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
समय-८ ३० बजे/उपस्थिति-१० हजार।

प्रातःकाल से हो रही वर्षा से कार्यक्रम में विघ्न उपस्थित होने का अंदेशा था, पर कार्यक्रम के पूर्व ही वर्षा प्रायः थम गई। कई दिनों की भीषण गर्मी सुहावने मौसम में परिवर्तित हो गई। सरदारशहर निवासिनी दीक्षार्थिनी बहिनों का सर्व प्रथम परिचय प्रस्तुत किया पारमार्थिक शिक्षण संस्था की बहिन मुमुक्षु शांता जैन ने। दोनों के पिताओं ने लिखित आज्ञा पत्र पूज्य गुरु-देव को समर्पित किया। इन दोनों बहिनों ने अपने मंजे हुए विचार रखते हुए शीघ्र दीक्षा देने का निवेदन किया।

इस दीक्षा समारोह में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा भी उपस्थित थीं। उन्होंने अपने भाषण में कहा—"सत्य और अहिंसा के उपदेश का जमाना लदगया है, अब उसका हमारे जीवन में प्रयोग होना चाहिये। भाषा, जाति प्रांत और धर्म के नाम पर आज जो हिंसा का वाता-वरण बन रहा है, उसका मुकाबला हम आचार्यश्री के बताये हुए मार्ग पर ही चलकर कर सकते हैं।" युवाचार्य श्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक प्रवचन हुए। आचार्यश्री ने आर्ष वाणी का उच्चारण करते हुए उन्हें अपनी अन्तरंग परिषद में शामिल किया। उनका परिचय इस प्रकार है—

नाम	पूर्वनाम	आयु	अध्ययन	संस्था
साध्वी श्री पीयूष प्रभा	मुमुक्षु प्रेम सेठिया	३० वर्ष	स्नातक प्रथम वर्ष	५ वर्ष
साध्वी श्री अमृत प्रभा	मुमुक्षु राकेश नौलखा	२६ वर्ष	संस्था का सम्पूर्ण अध्ययन	१० वर्ष

साध्वीश्री अमृत प्रभा संस्था में अध्यापन भी करा रही थी।

इस अवसर पर सरदार शहर निवासी श्री अभय कुमार वैद को आचार्य प्रवर ने दीक्षा प्रदान की। लगभग २० वर्षों तक संयम पर्याय पालने के पश्चात् वे एक वर्ष पूर्व धर्मसंघ को छोड़ गृहस्थ बन गये थे, किन्तु उन्हें अपने कृत्य का भान हुआ और पुनः संघ में प्रविष्ट होने की आचार्यवर से भावभरी प्रार्थना की। आज इस अवसर पर उन्हें पुनः दीक्षा प्रदान की और वे मुनि अभय कुमार बन गये।

दीक्षा समारोह में भाग लेने के बाद मध्याह्न में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने आचार्यवर, युवाचार्यश्री से राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर बातचीत की। पंजाब, असम एवं गुजरात की स्थिति पर भी संक्षिप्त चर्चा चली। एक घण्टे चली इस वार्ता में आचार्यवर ने अणुव्रत को मानवीय आचार-संहिता एवं प्रेक्षाध्यान को आन्तरिक परिवर्तन की प्रक्रिया बताया। युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान को रासायनिक प्रक्रिया का उपक्रम बताते हुए कहा—"आवेश से असंतुलित व्यक्ति का इस प्रक्रिया से आंतरिक शोधन हो जाता है। अणुव्रत की आचार-संहिता को जीवन में अवतरित करने के लिये प्रेक्षाध्यान भूमिका निर्माण का कार्य करती है। छात्रों में भावनात्मक विकास हो, इस दृष्टि से जीवन-विज्ञान एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा पद्धति है।" युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान के बारे में सविस्तार विवेचन किया। आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण विचारों से श्रीमती सिन्हा काफी प्रभावित हुईं।

रात्रि में जनता की ओर से आचार्यवर को भावभीनी विदाई दी गई।

२ जून को भीलवाड़ा से विहार कर आरजिया पधारे। रावले में आचार्यप्रवर का प्रवास होने से ठाकुर श्री भानुसिंह तथा उनके पूरे परिवार ने अपने आपको कृतकृत्य माना। ३ जून को २० हजार की आबादी वाले तहसील क्षेत्र मांडल पधारने पर आचार्यवर का भावभरा स्वागत किया गया। ४ जून को मुहारिया पधारने पर मांडल तहसील के सरपंच ठाकुर श्री शंकरसिंह, विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने आचार्यवर के स्वागत में अपने विचार रखे। आचार्यवर ने अपने प्रवचन में कहा—"मनुष्य ने अपनी बुद्धि से आकाश में पक्षी की भांति उड़ना सीख गया है, जल में मछली की तरह तैरना सीख गया है, चन्द्रलोक पर भी उसकी पहुंच हो गई है, पर जब तक जीवन में धर्म की कला का अवतरण नहीं होता, तब तक अन्य कलायें अकिंचित्कर हैं।" अन्य सैंकड़ों ग्रामीण भाइयों ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का नियम लेकर आचार्यश्री को अच्छी खासी भेंट दी। १६ जून को बांकली ग्राम में विधायक श्री पारीक ने अपनी मातृभूमि की ओर से हार्दिक स्वागत किया। ७ जून को गोविन्दपुरा में भी अनेकों ने धूम्रपान न करने तथा शराब न पीने का नियम ग्रहण किया।

८ जून/गौहाटी तेरापंथी सभा भवन को लेकर स्थानीय श्रावकों में

मनोमालिन्य उत्पन्न हो गया था । इस मनोमालिन्य को मिटाने हेतु जसोल में एक लिखित फैसला भी हुआ, फिर भी उससे यथेष्ट समाधान नहीं निकल पाया । आखिर नायड़ियास गांव में दोनों पक्षों के प्रतिनिधि आचार्यवर की सन्निधि में पहुंचे । पूर्व निर्णय को कुछ संशोधनों के साथ पुनः स्वीकार कर लिया । इस मामले को सलटाने में श्री शुभकरण दसाणी की भी अहम् भूमिका रही ।

रायपुर में भावभीना स्वागत :

९ जून/ आचार्यवर के रायपुर पदार्पण पर स्थानीय जनता द्वारा भावभीना अभिनंदन किया गया । राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने कहा—"मुझे अनेक बार आपके दर्शनों का लाभ मिला है । आचार्यश्री के प्रति मेरे मन में श्रद्धा है, विश्वास है, इसलिए मैं जयपुर, दिल्ली या और अन्य कहीं भी रहूं, आपके दर्शन अन्तर्मन से हो जाते हैं ।" शिक्षामंत्री ने आचार्यश्री के कार्यक्रमों पर विस्तार से अपने विचार रखे । इस प्रसंग पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के भी महत्त्वपूर्ण वक्तव्य हुए ।

रायपुरवासियों की विशेष प्रार्थना के कारण आचार्यवर दूसरे दिन रायपुर ही रुके । युवाचार्यश्री प्रातः बोराणा पधारे गये । आचार्यश्री शाम को पधारे । स्थानीय सरपंच श्री वृद्धिचंद मुणोत, उपखंड अधिकारी श्री दीक्षित, उप पुलिस अधिक्षक श्री मोहनलाल शर्मा ने आचार्यवर का स्वागत किया । ११ जून को आचार्यश्री बागोलिया पधार गये । गांव के सरपंच श्री लालूराम कुमावत ने आचार्यश्री का स्वागत किया । १२ जून को आचार्यश्री राजाजी का करेड़ा पधार गये । स्थानीय सरपंच श्री भेरुलाल मेड़तवाल ने आचार्यवर का भावभीना अभिनंदन किया । गंगाशहर चातुर्मास सानन्द संपन्न कर लंबे-लंबे विहार करते हुए मुनिश्री राकेशकुमार ने आज आचार्यश्री के दर्शन किये । विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने अपने क्षेत्र की ओर से स्वागत किया । आचार्यश्री ने वर्तमान युग में धर्म और मजहब को आधुनिक संदर्भो में व्याख्यायित करने पर बल दिया । साथ ही आचार्यश्री ने राकेश मुनि के काम करने के तौर तरीकों पर प्रसन्नता प्रकट की तथा इस चिलचिलाती धूप में आने को समर्पण का द्योतक माना ।

तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर :

६ जून से राजाजी का करेड़ा में मुनि सुमेरमल "लाडनूं" के निर्देशन

में एक सप्तदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर की शुरुआत हुई । पुर के बाद मेवाड़ में यह दूसरा शिविर था । १६ गांवों के १३५ लड़कों ने इसमें भाग लिया । शिविर में ली गई तत्वज्ञान परीक्षा का परिणाम ६२ प्रतिशत रहा ।

१४ जून को आचार्यवर के सान्निध्य में शिविर समापन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें प्रधानाध्यापक माधोलाल कोठारी ने अपने विचार रखे । शिविर के प्रमुख संचालक श्री हस्तीमल सेठिया ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की । विभिन्न परीक्षाओं में विशेष स्थान प्राप्त लड़कों को स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री कालूराम मेड़तवाल के हाथों पुरस्कार प्रदान किया गया । मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने अभिभावकों से ऐसे शिविरों में बच्चों को बार-बार अध्ययन करवाने का आह्वान किया ।

आचार्यश्री ने शिविरों को एक स्वस्थ उपक्रम एवं रचनात्मक कार्य बताते हुए वर्तमान की शिक्षा में समय, शक्ति व अनुशासन के महत्त्व को प्रतिपादित किया । उन्होंने शिविरार्थियों से यह अपेक्षा महसूस की—"वे शिविर में प्राप्त तात्विक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा अनुशासन को अपने जीवन में स्थायी बनायें ।

१५ जून को करेड़ा का त्रिदिवसीय प्रवास संपन्न कर आचार्यवर निम्बाहेड़ा जाटान पधारे । स्थानीय ठाकुर श्री शिवचरण, सरपंच श्री रामलाल ने गांव की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया । सायं आचार्यश्री चिलेसर पधार गये ।

१६ जून को आचार्यश्री भींटा होते हुए सरेवड़ी पधारे । भीटा में स्थानकवासी भाइयों के विशेष आग्रह पर एक घंटा रुके तथा प्रवचन दिया । वहां से मेवाड़ के परंपरागत उबड़ खाबड़ पहाड़ी रास्ते से होते हुए सरेवड़ी में ऊंची पहाड़ी पर स्थित स्कूल पधारे । आचार्यश्री के मंगल प्रवचन से प्रभावित होकर कई व्यक्तियों ने मद्य-मांस का परित्याग किया ।

१७ जून को आचार्यवर कमेड़ी पधारे । सायं ऊमरी पधार गये । ऊमरी मे रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में हुआ । मुनि श्री कमल कुमार ने रात्रि कार्यक्रम कमेड़ी में किया ।

१८ जून प्रातः प्रवचन ऊमरी में हुआ । सायं कून्दवां पधार गये । १९ जून को प्रातः युवाचार्यश्री पालड़ी पधार गये । आचार्यश्री प्रातः कून्दवा विराजे । सायं पालड़ी पधार गये ।

२० जून को प्रातः वागड़ के लिए विहार किया रास्ते में एक कि० मी०

का चक्कर लेकर आचार्यश्री डीडवाना पधारे। यह ठाकुर हरिदानजी का गांव है। २५ वर्ष पूर्व जो खूंखार व कुख्यात डाकू थे । जिनके नाम मात्र से कंप-कंपी छूट जाती थी। वे साध्वियों के संपर्क में आये। विचार बदले। जीवन बदला। व्यवहार बदला और वे डाकुपन का बाना छोड़कर एक सहज सद्गृहस्थ बन गये। उनके विशेष आग्रह पर ही आचार्यश्री पधारे। प्रवचन दिया और आगे बागड़ पधार गये । स्वागत-कार्यक्रम रावले में रखा गया । ठाकुर मूलसिंह तथा श्री मोहनलाल ओस्तवाल ने स्थानीय जनता की ओर से भावभीना स्वागत किया।

२१ जून को आचार्यवर माकरडा होते हुए साकरडा पधारे । आज मुनि सुमेरमल (लाडनूं) बागड़ से सीधे आमेट तीन संतों से पहुंच गये। २२ को जिलोला और २३ को आचार्यश्री चारभुजा रोड स्टेशन पधार गये। मुनि श्री अभयकुमार के पैर में "मचरोड़" पड़ जाने पर साधन से आमेट लाये।

शोक विमोचन :

गंगापुर व आमेट के मध्य शोक विमोचन हेतु कई परिवार आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुंचे। स्वर्गस्थ व्यक्तियों के नाम निम्नोक्त हैं—

- श्री मूलचन्द चपलोत (राजनगर) उनका ८२ वर्ष की अवस्था में २० मिनट के संथारे में स्वर्गवास हो गया । वे धर्म संघ के सेवाभावी श्रावक थे।
- श्रीमती हुलासी देवी सुराणा (राजगढ़) उनका चार दिन के चौविहार अनशन में स्वर्गवास हुआ । वह एक धर्मनिष्ठ व श्रद्धालु श्राविका थी ।
- श्री सोहनलाल बोथरा (लूनकरणसर) श्री बोथरा को मृत्यु के तीन पूर्व मृत्यु का आभास हो गया और अपने स्वजनों को मृत्यु के अनन्तर शोक संताप नहीं करना, जल्दी आचार्यश्री जहां विराजते हैं वहां पहुंच कर दर्शन कर लेने की बात कही। वे एक धार्मिक व संस्कारी श्रावक थे।
- श्री हणूतमल वैद (चूरू) श्री वैद का कलकत्ता में स्वर्गवास हो गया। वे स्वर्गीय श्रावक श्री सागरमल के पुत्र थे।
- श्री चुन्नीलाल नवलखा (लावा सरदारगढ़) वकील श्री नाथूलाल के कनिष्ठ भ्राता श्री चुन्नीलाल एक निष्ठावान श्रावक थे। दोनों भाइयों

में घनिष्ठ प्रेम था। भाई-भाई में ऐसा प्रेम बहुत कम देखने को मिलता है।

- श्री राजकरण दूगड़ (सरदारशहर/अहमदाबाद) ४१ वर्ष की अल्पावस्था में हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वरिष्ठ श्रावक श्री शुभकरण दूगड़ के पुत्र तथा श्री श्रीचंद नाहटा के वे जामाता थे। व्यवसाय के क्षेत्र में उन्होंने नाम कमाया। धार्मिक संस्कार उन्हें विरासत में मिले थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संपत ने बड़ी हिम्मत का परिचय दिया। पांच दिन के भीतर पूरे परिवार ने रायपुर में आचार्य श्री के दर्शन कर लिये।
- श्री चौथमल सेठिया (छापर) वे एक अर्थसंपन्न व निष्ठाशील श्रावक थे। साधु-साध्वियों को दवा की अपेक्षा होने पर अच्छी दलाली करते थे।
- श्रीमती मुन्नीदेवी मालू (सुजानगढ़) वह एक मनोबली श्राविका थी। अन्त समय में डाक्टरों द्वारा दवा लेने के लिए जोर दिया, अन्यथा लकवा की चेतावनी दी। इतना भय दिखाने पर भी वह स्वीकृत व्रत पर अडिग रही और उसने रात्रि में दवा नहीं ली।

मेवाड़ की कहानी

मेवाड़ पर्वतीय इलाका है। अरावली पर्वतमाला की चोटियों के मध्य छोटे-छोटे गांव बसे हुए हैं। दिल्ली से बम्बई को जोड़ने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग न० ८ मेवाड़ में जरूर है, पर सैकड़ों-सैकड़ों गांव ऐसे हैं जहां रोड नाम की चीज ही नहीं है और यदि है, तो वह कंकरों का मलवा मात्र है। मेवाड़ जहां राणा सांगा, महाराणा प्रताप जैसे वीरों की वीरता के लिए विख्यात हैं, वहां मीरा की भक्ति मेवाड़ की रग-रग में समाई हुई है। भामाशाह जैसा राष्ट्रभक्त एवं दानवीर भी इसी मेवाड़ भूमि का सपूत था। शील की अखंडता के लिए हजारों राजकुमारियों एवं रानियों का जौहर भी इसी धरती का दस्तावेज है। तेरापंथ की जन्मस्थली बनने का गौरव भी इसी भूमि को प्राप्त है। अमृत-पुरुष आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव के भव्य आयोजन का सौभाग्य भी इसी संभाग को संप्राप्त हो रहा है।

करीब २१ वर्षों की प्रलम्ब अवधि के बाद आचार्यश्री मेवाड़व्यापी दौरा कर रहे हैं। होली चौमासा टाडगढ़ करने के बाद आचार्यश्री छोटे-बड़े

आदि का नाम चारभुजा रोड़ है ।

हैप्पी हाऊस में

आमेटवासियों के लिए उस दिन खुशी का पार नहीं रहा, जब चिर प्रतीक्षा के बाद आचार्यश्री को अपने नगर में अपनी नजरों से देख रहे थे ।

२३ जून का शुभ प्रभात । आचार्यश्री जिलोला से विहार कर आमेट स्टेशन (चार भुजा रोड स्टेशन) पधारे । वहां 'हैप्पीहाऊस' आचार्यश्री का प्रवास स्थल बना । कच्छारा परिवार अपने बीच आचार्यश्री को पाकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था ।

खचाखच भरे पण्डाल में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में बंबई की प्रमुख समाज सेविका श्रीमती जयंती बहिन मेहता, ब्लिट्ज के संपादक श्री नन्दकिशोर नौटियाल, भारत जैन महामंडल के मंत्री श्री चन्दमल चांद आदि उपस्थित थे ।

श्रीमती मेहता ने कहा—'वर्तमान में आचार्यश्री जो कार्य कर रहे हैं, उसकी हम किसी से तुलना नहीं कर सकते हैं । देश में अनेक धर्म हैं, अनेक संप्रदाय हैं, अनेक आचार्य हैं, किन्तु आचार्यश्री के समान कोई भी सक्रिय नहीं है । आचार्यश्री अपने समाज की ही नहीं, संपूर्ण मानव समाज की बहुमूल्य सेवा कर रहे हैं ।

श्री नौटियाल ने कहा—आज विश्व की महाशक्तियों में शास्त्रों की होड़ लगी हुई है । संसार विनाश के कगार पर खड़ा है । सारा जगत् भयभीत है । अगर उसे कोई बचा सकता है, तो वह अणुव्रत ही बचा सकता है ।

इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन हुए । कार्यक्रम का संयोजन श्री चन्दनमल 'चांद' ने किया । रात्रि प्रवास हैप्पी हाऊस में ही हुआ ।

अमृत-समवसरण में अमृत पुरुष का भव्य अभिनन्दन

२४ जून / आमेट के प्रसिद्ध स्थल अखाडा से स्वागत जुलूस का प्रारंभ हुआ । पंक्तिबद्ध रंग-बिरंगी पोशाकों में शोभित स्वागत-जुलूस में आचार्यश्री अपने उत्तराधिकारी युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ, साध्वी प्रमुखाश्री जी समेत ३१ साधु ६५ साध्वियों के साथ मन्थर गति से चल रहे थे । जिस गली से आचार्यश्री गुजरते, किनारे खड़े हजारों-हजारों लोगों के हाथ जुड़ जाते, मस्तक झुक जाते । अमृत-समवसरण पहुंचते ही स्वागत जुलूस एक विशाल

स्वागत-सभा के रूप में परिणत हो गया।

समाज की सभी संस्थाओं के द्वारा मुक्तकों, कविताओं, गीतिकाओं के माध्यम से अपने आराध्य का अभिनन्दन किया गया।

राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष तथा आमेट क्षेत्र के विधायक श्री हीरालाल देवपुरा ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के कार्याध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा ने भी अपने विचार रखे। स्वागत समिति के अध्यक्ष महन्तश्री जयरामदासजी महाराज ने आचार्यश्री को देश की महान विभूति बताया।

साध्वी प्रमुखाश्री ने आचार्यश्री से ऐसी अमृत की बूंद प्राप्त करने का आह्वान किया, जो नई चेतना, नई शक्ति को जगा सके। युवाचार्यश्री ने अहिंसा की तेजस्विता पर बल दिया। आचार्यश्री ने चातुर्मासिक प्रवास काल में अधिकाधिक समत्व की साधना में रहने का आह्वान किया।

२५ जून / तेरापंथ धर्मसंघ ने कुछ ऐसे अवदान दिये हैं, जो न केवल तेरापंथ और जैनों के लिए, अपितु समग्र मानव-जाति के लिए हैं। उन अवदानों में एक है—प्रेक्षाध्यान। अणुव्रत जहां चारित्रिक धरातल को ठोस बनाता है, वहां प्रेक्षाध्यान उसे प्रायोगिक स्तर पर परिपक्व बनाता है। सैकड़ों-सैकड़ों व्यक्तियों के आदतों और व्यवहारों में बहुत बड़ा अन्तर आया है। कइयों के लिए तो यह वरदान के रूप में साबित हुआ है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था की मुमुक्षु बहिनें, उपासिकाएं एवं समणियां एक पावन उद्देश्य की संप्राप्ति के लिए अहर्निश प्रयत्नशील हैं। वे भी प्रेक्षाध्यान के सैद्धांतिक व प्रायोगिक स्वरूप को समझे। स्वयं पर प्रयोग करे तथा दूसरों को भी इस विधि से आकृष्ट करें, इस दृष्टि से केवल उनके लिए श्रद्धेय युवाचार्यश्री के निदेशन में सप्तदिवसीय शिविर प्रातः कालीन कार्यक्रम में प्रारंभ हुआ। शिविर-स्थल था रमणीक एवं मनोहारी 'सूर्या निवास'।

२५ जून से २९ जून तक रात्रि में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने प्रवचन किया। अन्त में आचार्यवर का महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुआ।

२६ जून / नीमली (पाली) निवासी श्री मिश्रीमल धोका का मद्रास में ६ जून को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। नियमित सामायिक व प्रतिक्रमण करने वाले ७४ वर्षीय धोकाजी के पौत्र मुनिश्री धर्मेश कुमार एक वर्ष पूर्व दीक्षित हुए थे। आज रात्रि में उनके पारिवारिक जनों ने आचार्यवर के दर्शन किये।

२७ जून / चूरू के सांसद श्री मोहर्रसिह राठौड़ का २४ जून को हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। उनके पारिवारिक जनों को प्रदत्त अपने संदेश में आचार्यप्रवर ने कहा—'चूरू जिले के अन्तर्गत लाखाऊ ग्राम के श्री मोहरसिह का दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। श्री राठौड़ तीन वार विधान सभा के सदस्य चुने गए। इस वार वे लोकसभा के सदस्य चुने गए। राजनैतिक व्यक्ति के जीवन और आचरण के वारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन होता है, पर मोहरसिहजी के वारे में कहा जा सकता है कि वे नीति निष्ठ, चरित्रवान और प्रामाणिक व्यक्ति थे। उनका जीवन व्यसनों से मुक्त था। यहां तक कि वे चाय भी नहीं पीते थे। ऐसा सुना है कि वे सप्ताह में एक दिन उपवास करते थे। उस दिन वे अन्न, जल आदि कुछ भी नहीं लेते थे।

मोहरसिह जी का हमारे धर्मसंघ के साथ वहुत निकट का संवंध था। संघ प्रवक्ता चंदनमल जी वैद के वे मित्र थे। समाज के और भी अनेकों लोगों के साथ उनका घनिष्ट सम्वन्ध था। वे पक्के अणुव्रती और श्रद्धालु थे। प्रायः प्रतिवर्ष दर्शन करने आते थे। हमारे मन में भी उनके प्रति वहुत आदर था।

मोहरसिह जी ने आयुष्य कम पाया, वह किसी के हाथ की वात नहीं है, किंतु उन्होंने राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेते भी हुए अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखा, वह वास्तव में ही वहुत वड़ी वात है।

मोहरसिहजी के परिवार के लोग इस दुःख के समय अपने मनोवल का परिचय देंगे। उनकी चारित्रिक विशेषताओं को अपने जीवन में संजोकर रखेंगे। यही उनकी सच्ची स्मृति होगी।

३० जून / रात्रिकालीन कार्यक्रम मुमुक्षु वहिनों का रहा, जिसमें उन्होंने मुक्तक, कविता, भाषण आदि के द्वारा अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। १ जुलाई को रात्रि में मुमुक्षु वहिनों ने रोचक चन्दनवाला परिसंवाद प्रस्तुत किया।

२२६ वां तेरापंथ स्थापना दिवस

२ जुलाई / आज का दिन तेरापंथ धर्मसंघ का महत्त्वपूर्ण दिन है। इस दिन एक ऐसी मशाल प्रज्वलित हुई थी, जिसने अज्ञान के आवरण को अनावृत कर यथार्थ के धरातल पर एक प्रकाशपुंज का अभ्युदय किया। उस प्रकाशपुंज के रश्मिवलय से सवा दो सौ वर्षों से संपूर्ण मानव जाति की राह आलोकित होती रही है।

विचार संगोष्ठी के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जनजाति क्षेत्रीय विकास आयुक्त श्री मीठालाल मेहता ने लोगों को सलाह दी कि वे दया, दान व दमन करना सीखें।

उन्होंने आगे कहा—'मेरा संप्रदाय से विरोध नहीं है। बंधन को मैं आवश्यक मानता हूं। नदी पार करनी है, तो छलांग नहीं लगाई जा सकती। नौका का बंधन स्वीकार करना होगा। धर्म की साधना के लिए संप्रदाय एक सहारा है। उसमें रहते हुए धर्म व्यापक बने, कोई कठिनाई नहीं है। कठिनाई वहां होती है, जहां वैचारिक स्वतन्त्रता से परे रहकर धर्म को जन्म के साथ ओढ़ लिया जाता है।'

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डा० के० एल० कोठारी व डा० के० सी० सोगानी ने 'भारतीय धर्म संस्कृति में तेरापंथ का योगदान' विषय पर विस्तृत वक्तव्य दिए। गीतिकाओं, भाषणों के अनन्तर युवाचार्यश्री ने कहा—'तेरापंथ की नींव त्याग व अनुशासन पर रखी गई है। अनुशासन के कारण इस पंथ की विशिष्ट परम्परा बनी व एक नए समाज का उदय हुआ।'

युवाचार्यश्री ने आगे कहा—'तेरापंथ की स्थापना आचार्य भिक्षु ने की, पर वस्तुतः स्थापना की नहीं गई, स्वतः हुई। तीर्थंकर तीर्थ का प्रवर्तन करते नहीं, होता है। तीर्थंकर जब कैवल्य की भूमिका पर पहुंचते हैं, उनके पीछे अपने आप समाज खड़ा हो जाता है। आचार्य भिक्षु त्याग की भूमिका पर खड़े हुए, उनके पीछे स्वतः समाज बन गया।'

आचार्यश्री ने कहा—'तेरापंथ की परम्परा विष पीने की रही है, विष वमन की नहीं। हमने दूसरों की अच्छाइयों को हमेशा ग्रहण किया, पर उनकी बुराइयों की कभी आलोचना नहीं की। हम एक संप्रदाय में रहते हुए भी असांप्रदायिक नीति में हैं।' आचार्यश्री ने उपस्थित जनसमूह से अर्जन के साथ विसर्जन करने की बात कही।

मध्याह्न में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम था। नौ वर्ष तक की उम्र के सैकड़ों बच्चों को आचार्यश्री ने मंत्र दीक्षा के संस्कार से संस्कारित किया। बच्चों को 'मंत्र दीक्षा' पुस्तक व एक माला भेंट की गई। इस कार्यक्रम के बाद जैन विचार गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के अलावा अनेक विद्वानों ने जैन धर्म के विविध आयामों पर अपने विचार रखे।

३ जुलाई / मुमुक्षु बहिनों, उपासिकाओं एवं समणियों के लिए २५ जून को प्रारम्भ हुए शिविर का आज समापन कार्यक्रम था। मुनिश्री

किशनलाल, श्री सीताराम दाधीच, श्री आनन्दकुमार तिवारी, श्री श्यामलाल, कुमारी वीणा, श्री नाथूलाल 'जिज्ञासु' आदि ने अपने विचार रखें।

युवाचार्यश्री ने इस शिविर का मुख्य उद्देश्य स्वभाव परिवर्तन तथा नई आदतों के निर्माण को माना। उन्होंने आत्म-निरीक्षण की शक्ति को जगाने के लिए उपदेश की अपेक्षा प्रयोग को महत्त्वपूर्ण बताया। आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन में इस शिविर को लाभदायक बताया।

रात्रि में युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ। विषय था—'क्या आपने अपना घर बना लिया।' विषय प्रवेश किया मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने।

श्री रूपचन्द गोखरू गंगापुर, श्री रोशनलाल एवं श्री प्रकाशचंद्र सुतरिया अड़सीपुरा इन तीनों युवकों ने मेवाड़ यात्रा में मार्ग की लंबी व अच्छी सेवा की। रात्रि में वे आचार्यवर की सन्निधि में बैठे थे। आचार्य श्री ने उनके बारे में यह पद्य फरमाया—

जीभर गुरु सेवा करी, रोशन रूप प्रकाश।
दिवस रात पल-पल सफल, भारी बरी सुवास।।

४ जुलाई/मध्याह्न में ब्यावर कॉलेज के प्रोफेसर एवं पुनर्जन्म के प्रमुख शोधकर्ता, हिन्दी में प्रकाशित "परा मनोविज्ञान" पुस्तक के लेखक श्री कीर्तिस्वरूप रावत ने सपत्नीक आचार्यश्री से भेंट की। सद्य घटित घटनाओं पर स्वयं की शोध से अवगत कराया और कहा—'अब पुनर्जन्म सिद्धान्त स्पष्ट होता जा रहा है।'

रात्रि में 'महाभारत और उत्तराध्ययन' विषय पर युवाचार्यश्री का तुलनात्मक वक्तव्य हुआ। प्राग् वक्तव्य मुनिश्री मुदित कुमार ने दिया।

५ जुलाई/'शांत सहवास' विषय पर युवाचार्यश्री, आचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुए। अध्यात्म साधना केन्द्र, मेहरोली दिल्ली के प्रमुख श्री मोहनलाल कठोतिया तथा श्री धर्मानन्द जैन, जो विदेश यात्रा कर अभी-अभी लौटे हैं, ने आचार्यवर के दर्शन किये। प्रवचन में उन्होंने अपनी यात्रा के संस्मरण सुनाये और विदेशी जनता की प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों के प्रति जागृत अभिरुचि के बारे में भी बताया।

६ जुलाई/रात्रि प्रवचन का विषय था "क्या आप दिन में सोते हैं?" प्रारम्भ में मुनिश्री किशनलाल ने इस विषय पर प्रकाश डाला। युवाचार्यश्री ने कहा—"वही व्यक्ति जीवित है, जो जागृत है। जो व्यक्ति सोया रहता है

वह श्वास लेते हुए भी जीवित नहीं है। आयुर्वेद के अनुसार सामान्यतः दिन में सोना वर्जित है। दिन में सोने से स्नायु तंत्र सुस्त बनता है। स्नायुतंत्र को सुस्त बनाने वाला रोगों को निमंत्रण देता है।"

७ जुलाई/प्रातः प्रवचन में आचार्यश्री ने तेरापंथ का मूल सिद्धान्त बताते हुए कहा—"जिस क्रिया में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की वृद्धि हो, उसमें धर्म है तथा जिस क्रिया में इनकी वृद्धि न हो, उसमें धर्म नहीं है। लोक धर्म अवश्य है।"

एकाग्रता का जिक्र करते हुए आचार्यवर ने कहा—"सरसा में एक भव्य जुलूस मेरे सामने से गुजरा। घंटे भर तक वह मेरे सामने से गुजरता रहा। मैंने एकाग्रता का अभ्यास किया। एक बार भी मेरा मन उधर नहीं गया। मुझे विश्वास हो गया—जयाचार्य की भांति आज भी एकाग्र बना जा सकता है।"

रात्रि में अवधान का भव्य कार्यक्रम आचार्यश्री के सान्निध्य में रखा गया। अवधानकार थे मुनिश्री श्रीचंद्र "कमल"। उन्होंने सूक्ष्म गणित व स्मृति के विलक्षण प्रयोग किए। दो घंटे चले इस कार्यक्रम में मुनिश्री ने जनता का मन मोह लिया।

८ जुलाई/जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का प्रारंभ हुआ। युवाचार्य श्री ने आंतरिक आवेगों पर नियंत्रण की क्षमता प्राप्त करने को अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण बताया। राजस्थान राज्य शैक्षिक व अनुसंधान विभाग के निदेशक श्री भंवरलाल शर्मा ने भी अपने विचार रखे।

लोंगोवाल का आगमन

९ जुलाई/पंजाब कुछ अर्से से आतंक, हत्या के गंभीर दौर से गुजर रहा था। पूरे देश को यह समस्या घुण की तरह खाये जा रही थी, ऐसे में आचार्यश्री निरन्तर प्रयत्नशील थे कि पंजाब में शान्ति, सौहार्द एवं समन्वय का वातावरण निर्मित हो। समय-समय पर आचार्यश्री ने अपनी मंशा भी जाहिर की और अपनी समाधानपरक बातों से भारत सरकार एवं अकाली दल को भी अवगत कराया गया। दोनों ने इन विचारों का खुले दिल से स्वागत किया।

समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री शुभकरण दसाणी अकाली दल के अध्यक्ष श्री हरचंदसिंह लोंगोवाल से मिले और उन्हें आचार्यश्री के विचारों से अवगत कराया। अन्ततः दोनों संतों के मिलन का कार्यक्रम तय हुआ।

९ जुलाई को प्रातः श्री हरचंदसिंह लोंगोवाल तथा श्री सुरजीतसिंह बरनाला विमान द्वारा उदयपुर और वहां से कार द्वारा आमेट पहुंचे।

मध्याह्न में लगभग चार बजे से पौने छह: बजे तक पौने दो घण्टे आचार्यवर तथा लोंगोवाल के बीच वार्तालाप हुआ। बातचीत में युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री, श्री सुरजीतसिंह बरनाला, श्री शुभकरण दसाणी उपस्थित थे। वार्तालाप के पश्चात् आचार्यश्री एवं श्री लोंगोवाल ने पत्रकारों के सवालों का जवाब दिया।

रात्रि में साढ़े आठ बजे सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ। श्री शुभकरण दसाणी ने अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया। श्री लोंगोवाल एवं बरनाला के अमृत-कलश में पंचसूत्री संकल्प पत्र डालने के साथ ही समवसरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—"जैन, सिख, हिन्दू, मुसलमान सब भाई हैं। एक ही भारतीय परंपरा के मूल स्रोत और इसी मातृभूमि का सिंचन करने वाले सब भाई-भाई है। नाना जातियां, नाना संप्रदाय और नाना विचार फिर भी सब मिलजुल कर रहे हैं। ऊपर की बातों को कभी महत्त्व नहीं मिला।" युवाचार्यश्री ने आमेट को ऐतिहासिक क्षेत्र बताते हुए तुलसी-लोंगोवाल मिलन को सुखद वातावरण की निर्मिति में महत्त्वपूर्ण माना।

आचार्यश्री ने इस मिलन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा—"आतंक एवं अशान्ति के वातावरण को मिटाकर अहिंसा व अमन चैन का साम्राज्य स्थापित करना संतों का पहला काम है। मैंने श्री लोंगोवाल के साथ हुई बातचीत से यह पाया है कि उनके मन में देश की एकता व अखण्डता के प्रति अटूट विश्वास है। हिंसा के प्रति उनके मन में पीड़ा है। शान्ति स्थापना की गहरी तड़फ है।"

आचार्यश्री ने आगे कहा—"मैं अपनी ओर से कुछ विशेष बातें कहना चाहता हूं। पहली बात कि पंजाब-समस्या का समाधान बातचीत के जरिये होना चाहिए, इसमें हिंसा को कोई प्रश्रय न मिले। दूसरी बात यह है कि बातचीत के लिए स्वस्थ वातावरण का निर्माण हो। तीसरी बात यह है कि जहां कहीं किसी भी व्यक्ति या समुदाय के द्वारा हिंसा होती है। उसकी खुले शब्दों में भर्त्सना होनी चाहिये। चौथी बात यह है कि कोई व्यक्ति खराब हो सकता है, किन्तु उसे लेकर पूरी कौम को खराब बताना, बदनाम करना कभी उचित नहीं है।" आचार्यश्री ने इस कार्य में छाया की तरह

जुड़े श्री दसाणी की दूरदर्शिता एवं साहस की सराहना की और इस कार्य के लिए साधुवाद भी दिया ।

पन्द्रह हजार की विशाल उपस्थिति में श्री लोंगोवाल ने कहा—"आज देश में सबसे पहली जरूरत शान्ति की है । इस समय देश में हिंसा का घिनौना खेल खेला जा रहा है । ऐसे क्षण में जरूरत है आचार्यश्री तुलसी जैसे महान संतों की । आज देश की सबसे बड़ी समस्या उसकी एकता और अखण्डता की है । उसे बरकरार तभी रखा जा सकता है, जब आचार्यश्री जैसे संत और उनकी शिष्य मण्डली सब जगह जाकर शान्ति और अमन के लिए काम करें । आचार्यश्री के प्रयासों से इस कार्य को बल मिलेगा और हम भी पूरा-पूरा सहयोग देंगे ।"

श्री लोंगोवाल ने अपने लम्बे भाषण में जोरदार शब्दों में खण्डन किया "सिख अलगाववादी हैं । वे पृथक् खालिस्तान की मांग करते हैं । सिख हिन्दुओं के दुश्मन हैं । उन्होंने इन सबकी सुप्रीम कोर्ट के किसी जज द्वारा जांच करने की भी चुनौती दी । अगर यह साबित हो जाए कि हम अपराधी हैं तो हमें जरूर सजा मिलनी चाहिये ।" श्री लोंगोवाल ने श्री दसाणी का भी विशेष उल्लेख किया ।

रात्रि में १०.३० बजे से ११.३० तक पुनः लोंगोवाल के साथ बातचीत हुई और १० जुलाई को प्रातः श्री लोंगोवाल तथा श्री बरनाला आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर आमेट से उदयपुर, उदयपुर से दिल्ली के लिए रवाना हो गये ।

१० जुलाई / कांकरोली में श्री सुन्दरलाल बाफना की पत्नी का ब्लड कैंसर के कारण निधन हो गया । इसीलिए वहां से एक संघ दर्शनार्थ आज आमेट पहुंचा ।

आचार्यवर के आमेट पधारने के बाद आज तक कई परिवार शोक-विमोचन हेतु दर्शनार्थ पहुंचे । वे इस प्रकार हैं—रतनगढ़ निवासी श्री भोंवराज तातेड़ का हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास । आचार्यवर ने उनके बारे में ये पद्य फरमाये ।

सवैया

रतनगढ़ श्रावक समाज को भूषणभारी,
धर्मसंघ रो सहज बण्यो रहतो आभारी
श्रमणोपासक भोंवराज अब निजर्‌या नावं
जल्दी स्युं जल्दी कुण उणरो आसन पावं ।।१।।

गुरु दर्शन री सदा सुरंगी चाह राखतो
गुरु अनुशासन री इकरंगी राह झांकतो।
कारणीक मुनि सतियांरी, सेवा रो मोको,
कभी न चूक्यो वो हो, शासन भक्त अनोखो ॥२॥

दोहा

सभी तरह संपन्न था, शांत सुखी परिवार।
भींवराज तातेड़ री, स्मृति रहसी हर वार ॥३॥

- श्री चैनरूप संचेती मोमासर का पूर्णिया (विहार) में निधन हो गया। वे एक धार्मिक तथा गणगणी के प्रति समर्पित श्रावक थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी एक तपस्विनी महिला है।
- श्री सोहनलाल हीरावत (चूरू) एक विश्वासी श्रावक थे। साधु-साध्वियों की सेवा जिम्मेदारी से करते थे। संघ व समाज के लिए उनके विचार ऊंचे थे। वे अन्तिम श्वास तक सक्रिय रहे।
- प्रेक्षाध्यान के साधक श्री मोहनलाल आंचलिया के पुत्रश्री निर्मलकुमार का बोलपुर पश्चिम बंगाल में २६ वर्ष की स्वल्पावस्था में निधन हो गया। ऐसे दुःख भरे क्षणों में उनके माता-पिता ने दृढ़ता व वैराग्य वृत्ति का परिचय दिया।
- श्री खेमचंद चौपड़ा (गंगाशहर) एक गुण संपन्न, वेदाग और समाज के दीपते श्रावक थे। वे अपनों के ही नहीं, वहुतों के काम आते थे। कोई भी व्यक्ति उनके पास कुछ अपेक्षा लेकर आता, वह निराश नहीं लौटता था। पूरे परिवार के वे प्रेरणास्रोत थे। श्री चौपड़ा दिन में तीन समय सामायिक किया करते थे। संपन्नता के साथ जितने उदार थे उतने ही सादगी के प्रतीक थे।
- श्री मेघराज खटेड़ (लाडनूं) आचार्यश्री के संसार पक्षीय सबसे बड़े भाई स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी के पुत्र तथा मुनिश्री हंसराज के कनिष्ठ भ्राता थे। अपने परिवार का पूरा दायित्व वहन कर रहे थे। अचानक ब्रेन हेमरेज से देहावसान हो गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचनदेवी (जो मुनिश्री सुखलाल की संसार पक्षीया बहिन है) ने बहुत दृढ़ता और विवेक का परिचय दिया है।

११ जुलाई/प्रातःकालीन प्रवचन में आचार्यश्री ने समता धर्म की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा—"सम्मान-अपमान, सुख-दुःख, लाभ-अलाभ में सम

रहने वाला व्यक्ति ही महानता की कोटि में आता है। वही व्यक्ति जीवन्त व्यक्तित्व का धनी है, जिसके जीवन में प्रशंसा और निंदा की अतिशयता रही हो। उज्जैन में एक मुसलमान गांधी मेरे पास आया। पैरों और कपड़ों में इत्र लगा दिया। चारों ओर खुशबू फूटने लगी। देवास गांव में किसी ने पत्थर दे मारा। हमारे लिए तो दोनों अवसरों पर समत्व रखना उचित है।" आचार्यश्री ने अपने आलोचकों का आभार मानते हुए कहा—"उनका ही उपकार है, वरना इतने लोग आचार्य तुलसी को कैसे जान पाते ?"

१२ जुलाई/श्रीडूंगरगढ़ के पुगलिया परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री तोलाराम पुगलिया का २८ जून को पक्षाघात की लंबी बीमारी में देहावसान हो गया। वे एक प्रतिष्ठित श्रावक, साहसी व व्यापक विचारों के धनी थे। सेवा और दान की भावना उनकी सदा बनी रहती थी। व्यावसायिक, सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से उन्होंने सफल जीवन जीया। उनकी धर्मपत्नी तथा पूरे परिवार ने आज आचार्यवर के दर्शन किये और एक नई खुराक प्राप्त की।

शाम को इस्लामी शिक्षा अधिकारी मुल्ला साहब अली असगर तथा आमिल साहब मोहम्मद हुसैन उदयपुर से आचार्यवर के दर्शनार्थ आए और बातचीत की।

१३ जुलाई/आज आचार्यवर ने आहार-विवेक पर मार्मिक प्रवचन दिया। भोजन का शरीर के साथ क्या संबंध है ? उसका शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है ? उसका साधना से क्या वास्ता है ? इन बिंदुओं को स्पर्श करते हुए आचार्यवर ने कहा—"हमारे भोजन का उद्देश्य है—शरीर को चलाना। चबा-चबाकर खाना, खाते वक्त आवेश नहीं करना, चीनी रहित दूध पीना—ये शारीरिक स्वस्थता के कुछ मूलभूत सूत्र हैं। चबाने को इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि खाए हुए पदार्थों का कार्य आंतों को करना पड़ता है। चबाने के अभाव में आंतों को अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है, जिससे ऊर्जा अधिक खर्च हो जाती है।" रात्रि में जैन स्थानकवासी कान्फ्रेंस के उपाध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत तथा अन्य पदाधिकारियों ने दर्शन किये।

१६ जुलाई/आज दो संघ शोक-विमोचन हेतु आचार्यश्री के सान्निध्य में पहुंचे। उनमें एक था पुर भीलवाड़ा का, जो पचपन वर्षीय फतहलाल बोरदिया के निधन के कारण श्री हरखलाल के नेतृत्व में आया था। इस संघ में ८५ व्यक्ति थे। दूसरा संघ था लाकोला का, जिसमें ४० व्यक्ति थे। उनके

परिवार के एक बुजुर्ग सदस्य श्री छगनलाल सूतरिया का देहान्त हो गया। वे अस्सी वर्ष के थे।

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

१७ जुलाई/तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनूं तथा राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के तत्त्वावधान में ८ जुलाई को जो शिविर प्रारंभ हुआ था उसका आज समापन कार्यक्रम था। आज के शिक्षा जगत् में बौद्धिक विकास बहुत हो रहा है तथा कुछ शारीरिक विकास भी हो रहा है। किन्तु मानसिक एवं भावनात्मक विकास का अभाव है। जीवन-विज्ञान इन चारों के विकास का महत्त्वपूर्ण पाठ्यक्रम है।"

आचार्यवर के सान्निध्य तथा युवाचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर में १०८ शिविरार्थी थे, जिनमें राजस्थान के विभिन्न जिलों की ४० स्कूलों के ८० अध्यापक, संस्थाओं के प्रधान तथा उपजिला निदेशक उपस्थित थे। शिविर के अन्तिम दिनों में स्कूलों के प्रधानाध्यापक एवं जिला शिक्षाधिकारी भी हाजिर हुए। श्रद्धेय युवाचार्यश्री का सतत सान्निध्य व मार्ग दर्शन प्राप्त था।

समापन कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु हंसमुख दोषी के मंगलाचरण से हुआ। मुनिश्री किशनलाल ने शिविर की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के अनुसंधान अधिकारी श्री लक्ष्मीनारायण जोशी ने इस शिविर को प्रारम्भिक अभ्यास बताते हुए इसे उपयोगी माना।

संस्थान के संयुक्त निदेशक श्री चतरसिंह मेहता ने कहा—"आज दुःख का सबसे बड़ा कारण है कथनी और करनी में असमानता। अब जीवन-विज्ञान शिक्षा जगत् का कार्यक्रम बन गया है। हम सबका दायित्व है कि इस काम को आगे बढ़ाने में मनोयोग से जुटें।"

राजस्थान शिक्षक संघ के अध्यक्ष श्री वासुदेव शास्त्री ने कहा—"साक्षराः बहुवचनान्त शब्द है। उसे उल्टा पढ़ा जायेगा राक्षसा। आज के लोगों की यही स्थिति बनती जा रही है। जो जितने अधिक साक्षर बन रहे हैं। वे वृत्ति से उतने ही राक्षस बनते जा रहे हैं। यह चिंता की बात है। आज आचार्यश्री तुलसी नैतिक और चारित्रिक निर्माण का जो कार्यकर रहे हैं। वह वस्तुतः स्तुत्य है।"

युवाचार्यश्री ने तनाव, अशांति व अनैतिकता की समस्या से भी कहीं

अधिक समस्या मिथ्या दृष्टिकोण को बताई। युवाचार्यश्री ने कहा —"आज मनुष्य का ऐसा दृष्टिकोण निर्मित हो गया है कि हिंसा का समाधान हिंसा है। उसने हिंसा को हथियार बना लिया है। मौजूदा हालात में अपेक्षा है दृष्टि बदलने की। दृष्टिकोण की सम्यक् निर्मिति से सभी समस्याएं स्वतः समाहित हो जाती हैं।" युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान की उपादेयता पर भी महत्त्वपूर्ण शब्द कहे।

आचार्यश्री ने प्रायोगिक धर्म की विस्तृत व भावपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की।

१८ जुलाई/प्रातः प्रवचन के दौरान आचार्यवर ने चतुर व्यक्ति की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए कहा—"जो दूसरों की कुटिलता को समझ जाता है और किसी से धोखा नहीं खाता। कुटिल वह होता है जो दूसरों को धोखा देता है। होशियार दोनों हैं पर अन्तर बहुत गहरा है।"

१६ जुलाई/श्री नवरत्नमल दूगड (सरदारशहर) का मात्र २७ वर्ष की उम्र में हैदराबाद में एक मोटर दुर्घटना में निधन हो गया। आज उनका पूरा परिवार आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुंचा। उनकी धर्मपत्नी सहित पूरे परिवार ने इस वज्रपात को बड़े ही धैर्य एवं साहस के साथ सहन किया।

श्रीमती सीरू देवी गिड़िया (बीदासर) ने अनशन पूर्वक समाधि मृत्यु का वरण किया। वह श्री चंपालाल की धर्मपत्नी थीं। धर्म के संस्कार उसके रग-रग में रमे हुए थे।

श्री कुन्दनमल कोठारी (रीछेड़) का हृदयगति रुक जाने से बंबई में निधन हो गया। वे एक संतदास श्रावक थे। उन्होंने कम उम्र में धार्मिक दृष्टि से अच्छा कार्य किया है।

श्री रणजीत कुमार बोकड़िया के मेधावी एवं तेजस्वी पुत्र श्री सुनील कुमार की मद्रास में एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। कुछ दिन पूर्व उसने जैन कॉलेज में अध्यक्ष पद पर शानदार विजय प्राप्त की थी। उसकी माता श्रीमती मंजु एक प्रबुद्ध महिला है। उसने इस अवसर पर बड़ी दृढ़ता एवं साहस का परिचय दिया है।

श्री गणपतमल भंडारी (जोधपुर) एक निष्ठाशील, तत्वज्ञानी व तेरापंथ के सिद्धान्तों के अच्छे जानकार थे। वे जो भी कार्य अपने हाथ में लेते थे, वह बड़ी निष्ठा और तत्परता के साथ संपन्न करते थे।

इन सबके परिजनों ने पिछले दिनों आचार्यवर के दर्शन किये। तथा

आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया।

अनुशासन की अनिवार्य अपेक्षा

२१ जुलाई/आज प्रातः कालीन प्रवचन का विषय था—'अध्यात्म और अनुशासन'। साध्वी श्री सिद्ध प्रज्ञा ने प्राग् वक्तव्य में आत्मा की भीतर की प्रक्रिया को अध्यात्म बताया। युवाचार्यश्री ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा—"हमारे भीतर क्रिया की दो प्रणालियां हैं, एक इच्छा को जगाती है दूसरी उस पर नियंत्रण रखती है। आगम की भाषा में पहली उदय जन्य प्रणाली तथा दूसरी क्षयोपशम जन्य प्रणाली है।" उन्होंने आगे कहा—"अनुशासन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और जीवनगत व्यवस्था है। जहां जीवन है वहां नियमन भी आवश्यक है। इच्छाओं पर अंकुश करने का कार्य हमारी विवेक शक्ति करती है। यह विवेक शक्ति का अनुशासन है। अबोध के लिए विधि-निषेध का अनुशासन होता है, जबकि समझदार के लिए उपदेश-संकेत की भाषा उपयोगी रहती है।"

आचार्यश्री ने कहा—"अध्यात्म और अनुशासन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आत्मा में निवास करने वाला कभी अनुशासनहीन नहीं हो सकता। अनुशासन की प्रत्येक क्षेत्र में अनिवार्यता है। ऑफिस, सेना, सरकार, परिवार में अनुशासन के बिना काम नहीं चलता। धर्मसंघों में भी उसकी अनिवार्य अपेक्षा है।"

आचार्यश्री ने अनुशासन का ठोस धरातल समर्पण बताते हुए युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ का उल्लेख किया और कहा—"इनके समर्पण भाव ने ही इनको नथमल से युवाचार्य महाप्रज्ञ की गरिमा से अभिमंडित किया है।"

आचार्यश्री ने मेवाड़ के युवक-युवतियों से तीन बातों की अपेक्षा की।

१. रविवारीय जैन-विद्या की कक्षा में अनिवार्य उपस्थिति हो।

२. प्रत्येक युवक-युवती अणुव्रत नियमों को समझें व जीवन में उतारें।

३. प्रेक्षा-ध्यान की विधि को समझें व प्रयोग करें।

काव्य-सन्ध्या

२१ जुलाई/रात्रि में मुनिश्री मधुकर के सान्निध्य में काव्य-संध्या का समायोजन किया गया। मुनिश्री विजयकुमार मुनिश्री, कमलकुमार, मुनिश्री श्रेयांसकुमार, मुनिश्री मुदितकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार श्री भीखमचंद वैद तथा मुमुक्षु हंसमुख ने अपने मुक्तक कविता, गीत प्रस्तुत किये। मुनि श्री

मधुकर ने अपनी कुछ चुनिन्दा गीतिकाओं से एक समा सा बांध दिया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन मुनिश्री लोकप्रकाश ने किया। जनता ने इस कार्यक्रम को बहुत पसन्द किया।

२४ जुलाई/रात्रि में युवक-युवतियों की वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गई, जिसका विषय था—'आज का युवावर्ग दिशाहीन है।' पन्द्रह प्रतियोगियों में श्री कुन्दन लोढ़ा व घेवर मेहता प्रथम, श्री सुशील नौलखा द्वितीय तथा सुश्री रेखा हिरण तृतीय रही।

२५ जुलाई/मध्यान्ह १ बजे साधु-साध्वियों की गोष्ठी हुई, जिसमें पंचम अंग सूत्र भगवती (२/२५) के उस प्रसंग पर युवाचार्यश्री ने विस्तृत व सारपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की, जिसमें अणगार के गुणों का उल्लेख है। अंत में आचार्यवर ने साधु-साध्वियों को महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्रदान की।

२६ जुलाई/प्रातः प्रवचन के दौरान खारची ग्राम प्रधान श्री चक्रवर्तीसिंह ने कहा—"अकाली नेता संत लोंगोवाल ने इस आमेट नगर में आचार्यश्री से जो आलोक पाया, मार्गदर्शन प्राप्त किया। उसी के आलोक में परसों २४ जुलाई को पंजाब की समस्या का समाधान मिल गया। पता नहीं, आचार्यश्री की क्या अतिशयता है कि इनके पास कोई भी समस्या लेकर आता है, लौटते वक्त समाधान प्राप्त करके जाता है।"

त्याग का आसन ऊंचा रहेगा

२७ जुलाई/भारत सरकार व शिरोमणी अकालीदल के अध्यक्ष श्री हरचंदसिंह लोंगोवाल के मध्य २४ जुलाई को समझौता होते ही केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शंकरराव चव्हाण ने आचार्यवर के दर्शन करने का निश्चय किया। दिल्ली से विशेष विमान से उदयपुर डबोक हवाई अड्डे उतरे और वहां से कार द्वारा आमेट पहुंचे। पहुंचते ही लगभग आधा घण्टा व्यक्तिगत वार्तालाप हुआ। उसके बाद सार्वजनिक समारोह रखा गया, जिसमें साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—"कम्प्युटर युग में विकास की बहुत संभावनाएं हैं। उसकी क्षमता भी बहुत है। लेकिन आज जरूरत है अहिंसा, मैत्री और प्रेम की।" उन्होंने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर बल दिया।

युवाचार्यश्री ने कहा—"आज एक नये जीवन दर्शन की खोज करनी है वह है त्याग की शक्ति का विकास। त्याग का आसन ऊंचा और भोग का आसन नीचा रहेगा, तो सारी दुनिया को समाधान मिलता रहेगा।"

गृहमंत्री ने कहा—"समाज जब छोटे-छोटे झगड़ों में फंसा रहता है,

तो देश कमजोर होता है। यदि हम इन बेकार के झगड़ों को छोड़कर एक हो जाएं तो देश की ताकत का दुनिया में कोई मुकाबला नहीं कर सकता।"

गृहमंत्री ने आगे कहा—"हाल में देश में एक ऐसी शुभ घटना हुई है, जिससे देश के सामने उत्पन्न एक बहुत बड़ा खतरा टल गया है। राजीव गांधी व लोंगोवाल के बीच हस्ताक्षरित समझौते में आचार्यश्री तुलसी की बहुत बड़ी भूमिका रही है। प्राचीनकाल में भारत में संतजन जनता के प्रेरणास्रोत रहे हैं। आचार्यश्री ने लोंगोवाल को सद्प्रेरणा देकर बातचीत के लिये तैयार किया। यह महान् कार्य देश को राहत दिलाने वाला सिद्ध हुआ है।" गृहमंत्री ने युवाचार्यश्री द्वारा भोग और त्याग को लेकर व्यक्त किये विचारों से अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा—"त्याग का महत्त्व और बढ़ना चाहिये।"

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में आचार्यश्री ने कहा-"हमें इस बात का ख्याल रखना है कि अभी केवल एक समस्या हल हुई है। अभी देश के सामने गुजरात और असम और भी कई समस्याएं हैं जिनका निवारण करना है। मनुष्य है, समाज है, राष्ट्र है, तो समस्याएं होंगी। मेरे सामने भी समस्याएं आती हैं। मैं उनका समाधान खोजता हूं।"

उन्होंने गृहमंत्री को इंगित करते हुए कहा—"समस्याएं है, पर हमें उनसे विचलित नहीं होना है" आचार्यश्री ने चुटकी ली कि समस्याएं नहीं होंगी, तो हमारे पास काम ही क्या बच जाएगा ?"

आचार्यश्री ने आगे कहा—"लोंगोवाल जब मुझ से मिले तो मैंने उनसे यही कहा कि अब आप लोगों को सरकार से खुलकर बात कर लेनी चाहिए। पहले तो वे तैयार नहीं हुए। मैंने उनसे स्पष्ट कहा—इस मौके पर अगर आप बात नहीं करते हैं, तो फिर यह मामला बहुत लंबा पड़ जायेगा और जिसका खामियाजा सिख कौम को भुगतान पड़ेगा। उसके बाद लोंगो-वाल वार्ता करने को तैयार हो गए।"

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा ने स्वागत भाषण किया। श्री शुभकरण दसाणी ने भी अपने विचारे रखे। समाज कल्याण राज्यमंत्रीश्री छोगालाल बाकोलिया भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की सारे देश में सुन्दर प्रतिक्रिया हुई।

३ अगस्त/राजस्थान उच्च न्यायलय में न्यायाधीश पद पर नियुक्ति के कुछ दिन बाद ही श्री जसराज चौपड़ा ने सपरिवार आचार्यवर के दर्शन

किये । इससे पूर्व वे जिला एवं सत्र न्यायधीश थे । वे एक संस्कारी और अपनी नियमित सामायिक आदि करने में जागरुक व्यक्ति हैं ।

प्रातः प्रवचन के दौरान श्री चौपड़ा ने कहा—"मैं आचार्यश्री की कृपा से ही अपने जीवन में कुछ सीख पाया हूं, बढ़ पाया हूं । आचार्यश्री का व्यक्तित्व जन-जन को प्रभावित करने वाला है । जिस व्यक्ति के जीवन में धर्म उतरा हुआ होता है, वह सहज ही दूसरों को आकृष्ट कर लेता है ।"

श्री चौपड़ा ने आगे कहा—"हमारे घरों में कुछ ऐसे प्रतीक रहने चाहिए जिन्हें देखने मात्र से आगन्तुक को यह अवगति हो जाये कि यह जैन है" श्रीचौपड़ा ने हमारे जीवन व्यवहार से जैनत्वकी झलक के प्रकटीकरण की महत्ता प्रतिपादन की ।

आचार्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा—"हमें अनाग्रह का महत्त्वपूर्ण दर्शन मिला है, किंतु जैन समाज आग्रह में जी रहा है । यदि आग्रह न हो तो आज सम्वत्सरी चार-चार बार नहीं मनाई जाती । जैनों में सब कुछ अच्छा होते हुए भीकुछ.कमियां भी हैं जैसे तत्त्वज्ञान की अल्पता, बच्चों में सद्संस्कारों का अभाव, भविष्य के चिंतन का दारिद्रय—इन सबसे जैनों को बचाना है ।" आज की इस संगोष्ठी का विषय था "जैन धर्म और हमारा जीवन ।"

अनुशासन फलः समर्पण बीज

४ अगस्त/आज प्रातः कालीन प्रवचन का विषय था—'अनुशासन और समर्पण ।' साध्वीश्री चंदनबाला ने प्रारम्भ में विषय की प्रस्तुति दी । युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन में कहा—"समर्पण के बिना अनुशासन संभव नहीं है । अनुशासन फल है बीज नहीं । इसका बीज है समर्पण । इसलिए जहां समर्पण है वहीं अनुशासन होगा ।

युवाचार्यश्री ने आगे कहा—"केवल व्यक्ति के प्रति समर्पण नहीं, आदर्श, सिद्धांत, और विचारों के साथ तादात्म्यभाव स्थापित करना समर्पण है । शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण और गुरु का शिष्य के प्रति वात्सल्य भाव, दोनों ही सिद्धान्त के प्रति समर्पण है ।"

आचार्यश्री ने अनुशासन और समर्पण की विशद व्याख्या प्रस्तुत की । उन्होंने कहा—"तेरापंथ-संघ में साधु-साध्वियां तो समर्पित हैं ही, श्रावक-श्राविका समाज का समर्पण भी बेजोड़ है । वह तीर्थ, धाम, मूर्ति सब कुछ गुरु को ही मानता है, इसलिए हजारों मीलों से कष्टों की परवाह नहीं कर गुरु -दर्शन को आते हैं । वह कष्टपूर्ण स्थिति मे भी गुरु शरण की दवा का उपयोग

करते हैं।"

८ अगस्त / प्रातःकालीन प्रवचन में आचार्यवर ने कहा—'जीवन की अनिवार्य अपेक्षाएं हिंसा के विना पूरी नहीं होतीं। पर हिंसा को अहिंसा मानना मिथ्या दृष्टिकोण है। हिंसा को हिंसा मानना सम्यक् दृष्टिकोण है।'

उन्होंने आगे कहा—'खून से सना वस्त्र कभी खून से साफ नहीं होता। बीमारी को बीमारी से नहीं मिटाया जा सकता, वैसे ही हिंसा से हिंसा का समाधान नहीं पाया जा सकता।'

रात्रि में 'आज गुरुवार है' विषय पर युवाचार्यश्री का प्रेरक प्रवचन हुआ। प्राग् वक्तव्य मुनिश्री मुदितकुमार ने दिया। अन्त में आचार्यश्री का उद्बोधन हुआ।

९ अगस्त / युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन में कहा—'हमारी भावधारा की दो विपरीत प्रवृत्तियां हैं—निर्माण और ध्वंस। शत्रुता ध्वंसात्मक मनोभाव है और मैत्री निर्माणात्मक मनोभाव है दो विरोधी भाव एक साथ नहीं पनपते। एक सक्रिय होता है तो दूसरा निष्क्रिय हो जाता है।'

११ अगस्त / प्रातः आचार्यवर ने हिंसा-अहिंसा पर सारगर्भित प्रवचन दिया। उन्होंने कहा—'हमारा सिद्धांत हिंसा या अहिंसा से जुड़ा हुआ नहीं है। हमारा सिद्धांत तो आज्ञा प्रधान है। जिस प्रवृत्ति में वीतराग की आज्ञा है, उसमें यदि हिंसा है तो वह द्रव्य हिंसा है भाव से हिंसा नहीं है। वह भाव से पापमुक्त बना रह सकता है। जहां प्रमाद है वहां हिंसा है। अप्रमाद अहिंसा है।'

१५ अगस्त/आज मध्याह्न १ बजकर १५ मिनट पर साध्वीश्री केसरजी (लाडनूं) का ५९ वर्ष की अवस्था में मात्र १२ घण्टे की बीमारी में अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। दूसरे दिन १६ अगस्त को प्रातः साध्वीश्री केसरजी के पार्थिव शरीर का चन्द्रभागा नदी के किनारे ढूंढिया मगरी पर अन्तिम संस्कार किया। अन्तिम संस्कार में मेवाड़ के अनेकों क्षेत्रों तथा स्थानीय लोगों की उपस्थिति दस हजार से भी अधिक थी।

सं० १९९७ कार्तिक कृष्णा ८ को लाडनूं में तेरह वर्ष की अवस्था में आचार्यवर के करकमलों से दीक्षित साध्वीश्री केसर के दो भाई तेरापंथ संघ में दीक्षित हैं—मुनिश्री हनुमानमल 'हरीश', मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'। उन्होंने ४५ वर्ष तक संयम-पर्याय का पालन किया। प्रारम्भ से ही वे साध्वीश्री सोनांजी के साथ थीं और वर्षों तक उन्हें गुरुकुलवास का सौभाग्य मिला। साध्वीश्री

सोनांजी के स्वर्गवास के बाद वे पिछले आठ वर्षों से अग्रगण्य के रूप में विचर रही थीं।

मध्याह्न में आचार्यवर के सान्निध्य में उनकी स्मृति सभा आयोजित की गई। मुनि सुमेरमल ने अपनी संसार पक्षीया भगिनी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—'साधु जीवन की सफलता का एक मात्र राज है—समाधि-मृत्यु को प्राप्त करना। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि साध्वी केसरजी ने अपनी संयम यात्रा समाधि पूर्वक गुरु चरणों में सानन्द सम्पन्न की। ऐसा अवसर किसी भाग्यशाली को ही मिलता है।'

साध्वी प्रभावना ने, जो लगभग बारह वर्षों तक उनके साथ रही, अपने विचार रखे।

आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—'दुनियादारी और धर्म के दो रास्ते हैं। दुनियादारी में जन्म के समय हर्ष और मृत्यु के समय शोक होता है, पर धर्म के क्षेत्र में संयमपूर्वक जीवन और संयमपूर्वक मृत्यु दोनों ही प्रसन्नता के विषय हैं। साधु-जीवन में समाधि मृत्यु को प्राप्त करना सब खतरों को पार कर जाना है। साध्वी केसरजी ने सुखे-सुखे पंडितमरण कर लिया, समाधि मृत्यु का वरण कर लिया यह जीवन की अपूर्व सफलता है। आचार्यवर ने उनके सम्बन्ध में एक पद्य फरमाया, वह इस प्रकार है—

सती केसर! तू हुई है सफल अपनी सफर में,
बाल्यवय से सजग चलती रही अपनी डगर में।
अचानक ही आज पंडित मरण गुरुकुलवास में,
भाग्य से ही मिले ऐसा समय सहज सुवास में।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

हिंसा और भ्रष्टाचार की धधकती हुई ज्वाला मानवीय मूल्यों को जिस रूप में भस्मसात् कर रही है, यह एक बड़ी घटना है। इसकी त्रासदी बहुत भयावह है, किन्तु अणुव्रत की चिनगारी ने अपनी पैंतीस वर्षों की जिंदगी में जो काम किया है, वह अहिंसा, शांति, मैत्री व चरित्र के क्षेत्र में नई धारा के उद्गम का निमित्त बना है। अणुव्रत आन्दोलन के अन्तर्गत अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह पिछले कई वर्षों से प्रतिवर्ष व्यापक रूप से मनाया जाता है। इस वर्ष आमेट में १५ अगस्त से २१ अगस्त तक इस सप्ताह के विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रम इस प्रकार थे—

१५ अगस्त	भावात्मक एकता दिवस
१६ अगस्त	व्यसन मुक्ति दिवस
१७ अगस्त	मिलावट निरोध दिवस
१८ अगस्त	अस्पृश्यता निवारण दिवस
१९ अगस्त	दहेज उन्मूलन दिवस
२० अगस्त	जीवन-विज्ञान दिवस
२१ अगस्त	अणुव्रत प्रेरणा दिवस

इन निर्धारित दिवसों में आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन होते तथा राजनीति, धार्मिक एवं शैक्षिक जगत् के जाने-माने व्यक्ति भी इस मौके पर मौजूद रहते। मिलावट निरोध दिवस पर युवाचार्यश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा—'मिलावट एक ऐसा अपराध है, जिसे कभी वख्सा नहीं जा सकता, क्योंकि इससे नैतिक और आध्यात्मिक वल का पतन होता है। जिस समाज या राष्ट्र का नैतिक वल क्षीण हो जाता है, वह कभी सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता।'

मेवाड़ स्तरीय महिला प्रशिक्षण शिविर

१७ अगस्त व १८ अगस्त को आचार्यवर के सान्निध्य में तथा साध्वी प्रमुखाश्री के निदेशन में मेवाड़ स्तरीय महिला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें २५ गांवों की वहिनों ने सोत्साह भाग लिया। साध्वी प्रमुखाश्री ने मेवाड़ी वहिनों के अधुनापि रूढ़िग्रस्त होने की पृष्ठभूमि में अशिक्षा को मूलभूत कारण माना। उन्होंने वहिनों से पर्दाप्रथा का वहिष्कार करने की जोरदार अपील की।

२२ अगस्त / पिछले दिनों कई परिवार शोक विमोचन के लिए आचार्यवर की पावन सन्निधि में पहुंचे। स्वर्गस्थ व्यक्तियों का परिचय इस है—

- श्री रायचंद सिंघी (भादरा) व्यापरिक दृष्टि से वे सुपोल रहते थे। वहां के सार्वजनिक व संघीय कार्यक्रमों में वे गहरी दिलचस्पी लेते थे।
- श्रीमती किरण देवी सेखानी (वीदासर) का चौविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया। कैंसर रोग से पीड़ित होने पर भी वड़ी सहनशीलता के साथ जीवन जीया। वह श्री गोरधनजी सेखानी की धर्मपत्नी थीं।

- श्री तोलाराम भंसाली (छापर) की दिल्ली में एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। ऐसे विकट समय में उनकी धर्मपत्नी की दृढ़ता उल्लेखनीय थी।
- श्रीमती मनोहरीदेवी नाहटा (छापर) का ८४ वर्ष की उम्र में वाराणसी में ४१ दिन के तिविहार तथा ४ दिन के चौविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया। वह धर्मनिष्ठ व तपस्विनी महिला थी। उसने अपने जीवन-काल में काफी तपस्याएं की। इस अनशन से वाराणसी में धर्मसंघ की उल्लेखनीय प्रभावना हुई।
- श्री सोहनलाल इंटोडिया (वनेड़िया-मेवाड़) का वनेड़िया गांव मे एक मात्र तेरापंथी घर है। पूरे गांव में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। यही कारण है कि उनके चले जाने से गांव के प्रायः सभी व्यक्ति अच्छी संख्या में आये हैं।

श्रीमती मनोहरी देवी बैद (लाडनूं) की अनशन पूर्वकसमाधि-मृत्यु हुई। श्री मोहनलाल कलचक्की वाले की वह धर्मपत्नी थी। वह एक आस्थाशील महिला थी। अन्त समय में उसे गुरु ही गुरु दीखते थे। लगता है वह गुरुमय बन गई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का १६ वां वार्षिक अधिवेशन परम श्रद्धेय आचार्यवर के सान्निध्य में आयोजित हुआ। परिषद् का मेवाड़ में यह पहला अधिवेशन था। इस अधिवेशन में देश के लगभग एक सौ स्थानों से तीन सौ पचासी युवक प्रतिनिधियों ने सोत्साह भाग लिया। तीन दिवसीय इस अधिवेशन की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत है।

२५ अगस्त/प्रातः परिषद् अध्यक्ष श्री पदमचंद पटावरी ने ध्वाजारोहण किया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में नई संभावनाओं के साथ आचार्यवर से संबल प्राप्त करने का आव्हान किया। आचार्यवर ने कहा—"युवक शक्ति, संतुलन व सक्रियता को कायम रखने वाले हों।" कार्यक्रम के अन्त में संस्कार केन्द्र के युवकों ने योगासन की झलक प्रस्तुत की।

प्रातः नौ बजे अधिवेशन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम परिषद् अध्यक्ष श्री पटावरी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। मेवाड़ तेरापंथी युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री उत्तमचंद सकलेचा, आमेट परिषद् के मंत्रीश्री उत्तमचंद बोहरा

ने आगन्तुक युवक प्रतिनिधियों का स्वागत किया। मुनिश्री राकेशकुमार द्वारा लिखित तथा आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकें मुनिश्री धर्मेन्द्र ने भेंट कीं। अ० भा० ते० यु० प० के प्रथम अध्यक्ष श्री बच्छराज दूगड़ ने अपने विचार रखे।

आचार्यश्री ने आज के दिन को ग्रन्थि प्रतिलेखन का दिन बताते हुए युवकों को महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन दिया। उन्होंने विशेष रूप से तीन संकल्प सूत्रों की ओर युवकों का ध्यान आकृष्ट किया।

- अनुचित तरीकों से अर्थ का अर्जन न करना।
- अर्जित संपत्ति का व्यक्तिगत क्षेत्र में अधिक उपयोग न करना।
- आवेग पर नियंत्रण रखना।

२६ अगस्त/आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम श्री हंसमुख दोषी के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। श्री अरुण हिरण गंगापुर, श्री हंसराज मेहता भागलपुर तथा श्री धर्मेश डांगी ने 'संगठन और हमारा दायित्व' विषय पर अपने विचार रखे। मुनिश्री मधुकर ने एक युवा-गीत द्वारा युवकों की चेतना झंकृत की।

युवाचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में चार सूत्री कार्यक्रम से युवकों को विशेष रूप से आकृष्ट किया। वे चार सूत्र हैं—विसर्जन, समर्पण, व्रत दीक्षा और उपासक दीक्षा। युवाचार्यश्री ने कहा—इन चारों का विकास होता है तो समाज का काया-पलट हो सकता है। सभी युवकों को अपने जीवन में एक बार उपासक दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए।"

आचार्यवर ने अपने प्रवचन में कहा—"युवकों को अंकन की दृष्टि अपनानी चाहिए। जो आवाज केन्द्र से उठती है, उस पर गहन निष्ठा रखते हुए उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करना चाहिए।"

२७ अगस्त/आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री पद्मचंद पटावरी ने शपथ ग्रहण की। मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने उपासक दीक्षा की विस्तार से चर्चा करते हुए उसकी साधना पद्धति पर प्रकाश डाला एवं इस बात पर बल दिया कि हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह पर्यु-षण में आठ दिनों के लिए उपासक दीक्षा स्वीकार करे।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी परिषद ने शेरपुर निवासी श्री प्रेमचंद सिंगला एडवोकेट को "युवकरत्न" के अलंकरण से सम्मानित किया। श्री सिंगला पंजाब के एक संघनिष्ठ युवक हैं। परिषद् के उपमंत्री श्री

भंवरलाल डागा गंगाशहर ने श्री सिंगला का परिचय प्रस्तुत किया। श्री सिंगला ने अपने संक्षिप्त भाषण में आचार्यवर के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त की।

श्री पदमचंद पटावरी आगामी तीन वर्षों के लिए पुनः सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस प्रकार परिषद् का त्रिदिवसीय अधिवेशन सानन्द संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में अनेक प्रतिनिधियों ने कई प्रतियोगिताओं में सोत्साह भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रमुख स्थान प्राप्त प्रतियोगी तथा सम्मानित परिषदों की सूची इस प्रकार है।

- चर्चा-स्पर्धा-चल विजयोपहार
  प्रथम—श्री सुरेन्द्र जैन, तेयुप भिवानी विपक्ष
  द्वितीय—श्री कमलकिशोर पुगलिया, तेयुप सिलिगुड़ी पक्ष
  तृतीय—श्री सुनिल सामोता, तेयुप इन्दौर पक्ष
- तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता
  प्रथम—श्री हंसमुख दोसी, तेयुप सूरत
  द्वितीय—श्री आलोक पगारिया, तेयुप इन्दौर
  तृतीय—श्री भारत भूषण जैन, तेयुप भिवानी
  श्री डूंगरचंद चौपड़ा, तेयुप पाली
- सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
  प्रथम—श्री हिम्मतमल कोठारी, तेयुप टाडगढ़
  द्वितीय—श्री नवरत्न दूगड़, तेयुप ब्यावर
  श्री महेन्द्रकुमार बोहरा, तेयुप आमेट
  तृतीय—श्री हंसमुख दोसी, तेयुप सूरत
  श्री निर्मल के. जैन, तेयुप मद्रास
- संस्कार केन्द्र योगासन स्पर्धा
  प्रथम—श्री उत्तमचंद बोहरा, तेयुप आमेट
  द्वितीय—श्री राजेन्द्र भंसाली, तेयुप गंगाशहर
  तृतीय—श्री गणपतमल बोहरा, गोवन्दी
- युवादृष्टि उपहार योजना
  प्रथम—श्री अमृतलाल संचेती, तेयुप कलकत्ता
  द्वितीय—तेरापंथ युवक परिषद्, बम्बई
- शाखा परिषद मूल्यांकन

श्रमणोपासक दीक्षा का अभिनव प्रयोग हुआ। पर्युषण पर्व में नवीनता एवं निखार लाने की दृष्टि से इस बार आचार्यवर का संकेत था—श्रमणोपासक दीक्षा का आचार्यवर के इस संकेत से साढ़े तीन सौ भी अधिक भाई-बहिनों ने श्रमणोपासक दीक्षा अंगीकार की। खाद्य-संयम, ब्रह्मचर्य-पालन, सादी वेशभूषा, मौन, आसन, ध्यान आदि से व्यस्त दिनचर्या श्रमणोपासक दीक्षा के मुख्य नियम थे। दीक्षित भाई-बहिनों के लिए प्रातःकाल साढ़े चार बजे से रात्रि में साढ़े नौ बजे तक का कार्यक्रम बनाया गया।

वे ध्यान, स्वाध्याय, जप, कायोत्सर्ग, आसन आदि में व्यस्त रहते थे। प्रातः आसन श्री केवलचंद दरला व मुमुक्षु हंसमुख दोषी तथा सामूहिक जप मुनि श्री श्रेयांस कुमार आदि कराते थे। दोपहर में साध्वी प्रमुखाश्रीजी, मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' के जैन धर्म, जैन संस्कार तेरापंथ, समर्पण आदि बिन्दुओं पर महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुए। आचार्यश्री ने विशेष रूप से अपना बहुमूल्य समय दिया। कायोत्सर्ग, ध्यान का अभ्यास मुनिश्री किशनलाल करवाते थे।

सामूहिक आयंबिल अनुष्ठान

१६ सितंबर/दोपहर में आचार्यवर की सन्निधि में सामूहिक आयंबिल का कार्यक्रम हुआ। प्रारंभ में मुनिश्री किशनलाल ने इस अनुष्ठान की उपयोगिता एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला।

आचार्यश्री ने आयंबिल की उपयोगिता बताते हुए कहा—"आयंबिल का अनुष्ठान एक विशिष्ट अनुष्ठान है। शक्ति संवर्धन के साथ स्वाद-विजय का भी सहज अभ्यास हो जाता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को मानसिक तनाव जन्य अशांति एवं कुण्ठा से मुक्त कर शांत एवं सुखी जीवन की ओर अग्रसर कर देती है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—'आयंबिल का अनुष्ठान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति स्वस्थ एवं सुखी हो सकता है। यह एक आध्यात्मिक चिकित्सा है।'

इस अनुष्ठान में १५०० भाई-बहिनों ने भाग लिया। श्रावक-श्राविकाओं ने अमृत-समवसरण में एक साथ पंक्तिबद्ध बैठकर एक ही द्रव्य अधपके चावल तथा चावलों के पानी "ओसावन" से आयंबिल किया। साधु-साध्वियों ने आचार्यवर के सान्निध्य में एक ही स्थान पर आयंबिल किया। यह सबके लिए अपूर्व अवसर था।

मेवाड़ में सामाजिक वर्गभेद मिटाने का निर्णय

१७ सितम्बर / मेवाड़ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी कान्फ्रेंस का ३६ वां वार्षिक अधिवेशन समायोजित हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता कान्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी ने की।

आचार्यश्री ने इस मौके पर कहा—'बदलते युग चिंतन के साथ जो समाज नहीं बदल सकता है, वह अपने अस्तित्व को कभी भी सुरक्षित नहीं रख सकता। आज अपेक्षा है कि भेद में से अभेद खोजा जाए। बिखराव सारी दुनिया में है, लेकिन बंट-बंट कर आदमी कितना बंटेगा। आज जब अन्तर्जातीय संबंध बन रहे हैं, वहां एक ही समाज ओसवाल हो या अग्रवाल, छोटे-छोटे तबकों में बंट रहे हैं, यह उचित नहीं है।'

अधिवेशन में सामाजिक वर्गभेद व नया मोड़ आदि प्रश्नों पर व्यापक विचार विमर्श के अनन्तर कुछ संशोधन किए गए। इस अवसर पर जो महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया गया, वह है तेरापंथ ओसवाल समाज से छोटे-बड़े साजन (दसा-बीसा) का भेद-भाव समाप्त करने का। यह समाज में एक क्रान्तिकारी कदम है। अमृत-महोत्सव वर्ष में लिया गया यह निर्णय सर्वत्र प्रशंसित हुआ। सामाजिक वर्ग भेद समाप्ति की विचार-चर्चा में अनेकों व्यक्तियों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय सेवा

१८ सितम्बर / मेवाड़ में भीलवाड़ा जिला के अन्तर्गत आशाहोली क्षेत्र में मुनिश्री मानमल का चातुर्मास था। १० सितंबर प्रातः सवा नौ बजे प्रवचन करते हुए मुनिश्री अचानक अस्वस्थ हो गये। उन्हें पक्षाघात हो गया। यह समाचार आनन-फानन आचार्यवर के पास पहुंचा। उस समय आचार्यवर ने मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन' तथा मुनिश्री भवभूति को आसाहोली जाने के लिए आदेश दिया। आदेश मिलते ही दोनों मुनियों ने शाम को ही आमेट से विहार कर दिया। चालीस किलोमीटर चलकर दूसरे दिन सायं मुनिश्री की परिचर्या में उपस्थित हो गए। मुनिश्री की हालत काफी नाजुक थी। एक बार स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार हुआ, किन्तु पुनः पक्षाघात का तेज दौरा आया और बेहोश हो गए। आखिर २२ सितंबर को उनका स्वर्गवास हो गया। दूसरे दिन मुनिश्री मानमल के सहयोगी मुनिश्री निर्मल कुमार को साथ लेकर मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन' व मुनिश्री भवभूति ने आशाहोली से विहार किया

और आज प्रवचन में आचार्यवर के दर्शन किये। मुनिश्री 'सुदर्शन ने वहां की पूरी स्थिति निवेदित की।

मुनिश्री मानमल के संबंध में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए, आचार्यवर ने कहा—'मुनि मानमल संघनिष्ठ और गुरु-इंगित का आराधक था। अपनी पत्नी के साथ उसने दीक्षा ली थी। उनका नाम था साध्वी गुलाबांजी। दीक्षा लेकर बहुत लंबे समय तक श्री डूंगरगढ़ में साध्वी लाडांजी के साथ रही। दो वर्ष पूर्व जोधपुर में उनकी अनशनपूर्वक समाधि मृत्यु हो गई। मुनि मानमल शरीर से स्थूल था, पर उपकरणों से बहुत हल्का रहता था। व्याख्यान देने का उसको बड़ा शौक था।'

आचार्यवर ने दोनों मुनियों द्वारा अच्छी सेवा करने व आध्यात्मिक संबल प्रदान करने की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सम्वत्सरी

१९ सितंबर / सम्वत्सरी महापर्व आचार्यवर की पावन सन्निधि में बड़े ही हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। प्रातः साढ़े सात बजे से सायंकाल चार बजे तक प्रवचन चला। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री, मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री उदित कुमार, मुनिश्री मुदित कुमार, साध्वीश्री जतनकुमारी, साध्वीश्री मधुस्मिता के विस्तार से प्रवचन हुए। मुनिश्री मधुकर, मुनिश्री विजयकुमार, मुनिश्री श्रेयांस कुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश तथा साध्वियों की सुमधुर गीतिकाएं हुईं। इस महापर्व पर करीब तीन हजार भाई-बहिनों ने अष्ट प्रहरी पौषध किए। सैंकड़ों चतुष्प्रहरी पौषध हुए।

२० सितम्बर / खचाखच भरे अमृत-समवसरण में क्षमापना का नयनाभिराम कार्यक्रम संपन्न हुआ। साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं के भाषण एवं गीतिकाओं के बाद साध्वी प्रमुखाश्री ने एक हृदयग्राही कविता प्रस्तुत करते हुए अपने विचार रखे। मैत्री और क्षमा पर युवाचार्यश्री का सारगर्भित वक्तव्य हुआ। आचार्यश्री ने आज के दिन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा—'क्षमा याचना एकांगी होती है। खमत-खामणा सर्वांगीण होता है। क्षमा याचना छोटा बड़ों से करता है। खमत-खामणा छोटे-बड़े दोनों करते हैं, क्षमायाचना में वह अर्थ नहीं, जो खमत-खामणा में हैं, अतः खमत-खामणा का खुला प्रयोग होना चाहिए।' सर्वप्रथम आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री से गले मिलकर खमत-खामणा किया। साधु-साध्वियों, श्रावक-

श्राविकाओं से पृथक्-पृथक् खमत-खामणा किया, सबने आचार्यवर को वन्दन करते हुए खमत-खामणा किया। सुदूर क्षेत्रों में प्रवासित साधु-साध्वियों, अन्य जैनाचार्यों, साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं से खमत-खामणा किया। आचार्यवर के खमत-खामणा के भाव-विभोर दृश्य को देखकर अनेक लोगों की आंखें गीली हो गईं। साधु-साध्वियों तथा श्रावक-श्राविकाओं ने परस्पर खमत-खामणा किया। रात्रि में कालूगणी स्मृति दिवस होने से उनके जीवन से संबंधित भाषण, गीतिकाएं आदि हुईं। आचार्यश्री ने पूज्य कालूगणी को उपकारी बताते हुए कृतज्ञता से ओत:प्रोत विचार रखे।

इंदिरा ज्योति पदयात्री आमेट में

आज रात्रि में राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस 'आई' द्वारा आयोजित इंदिरा ज्योति पदयात्रा दल ने आचार्यवर से भेंट की। यह यात्रा महात्मा-गांधी की जन्मस्थली गुजरात होकर दिल्ली जाने वाली थी।

यात्रा दल को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'भावात्मक एकता का संकल्प आज की परिस्थितियों में आवश्यक है। देश में व्याप्त हिंसा एवं आंतकवाद का मूल कारण भावात्मक एकता का अभाव है। स्वर्गीया प्रधानमंत्री देश में शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण के लिए प्रयत्न करते हुए शहीद हो गईं। विवेक हीन आततायियों ने असमय में इन्दिरा जी की हत्या कर दी थी। यह इन्दिराजी की हत्या नहीं, बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति की हत्या थी।'

आचार्यश्री ने हिंसा और आतंकवाद की इस परिस्थिति में शान्ति व अहिंसक शक्तियों को जागृत करने की अपेक्षा पर बल दिया।

इस अवसर पर पदयात्रा दल के संयोजक श्री गणपतसिंह ने पदयात्रा की संक्षिप्त जानकारी दी। करीब एक सौ पदयात्रियों ने पांचसूत्री संकल्प पत्र भर कर अमृत कलश में डाले।

संवत्सरी के दिन आमेट में बैंगलोर की श्रीमती प्यारी बाई बोहरा का स्वर्गवास हो गया। उनके सम्बन्ध में आचार्यवर ने कहा—'प्यारी बाई का ६४ प्रहरी पौषध में स्वर्गवास हो गया। अठाई की तपस्या के दौरान उनके शारीरिक गड़बड़ हो गई, पर उसने हिम्मत का परिचय दिया। वह साधु-साध्वियों की अच्छी सेवा करती थी।'

बंबई के युवा श्रावक तथा रक्षा मंत्रालय में वरिष्ठ अधिकारी श्री नरेन्द्र मोर का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। बंबई के जाने-माने व

तत्वज्ञ श्रावक श्री मगनभाई वकील वाला के लघु भ्राता श्री हीरा भाई की पुत्री वसंता वहिन के वे पति थे। नरेन्द्र भाई जन्मना जैन नहीं, कर्मणा जैन थे। तेरापंथ की प्रवृत्तियों में अच्छा रस लेते थे। जहां भी रहे कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया। रक्षामंत्रालय ने भी उनकी कर्तव्यनिष्ठा का जिक्र किया है। तेरापंथ समाज को ऐसे युवकों पर गर्व है।

अमृत-महोत्सव : द्वितीय चरण

एक महान् व्यक्तित्व का अभिनन्दन

आचार्यश्री तुलसी विश्व क्षितिज पर एक वहुचर्चित जैनाचार्य हैं। वे तेरापंथ के नवम आचार्य हैं। उन्होंने न केवल तेरापंथ धर्म संघ को ही अवदान दिया हैं, अपितु संपूर्ण मानव जाति का पथ प्रशस्त किया है। उनके ऊर्जस्वल एवं कर्मशील नेतृत्व से पूरा मानव समाज लाभान्वित और प्रभावित हुआ है। जीवन के एकोत्तर वसन्त पार करने के वावजूद आचार्यश्री में आज भी वही चुम्वकीय आकर्षण एवं स्फूर्ति दृष्टिगोचर हो रही है। समग्र मानव-जाति को प्रदत्त अवदानों, उपकारों को यत्किंचित् प्रस्तुति देने हेतु "अमृत-महोत्सव" के रूप में समायोजना करने का निर्णय लिया गया। उनके उत्तरा-धिकारी युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ के निदेशन में यह भी तय हुआ कि समारोह केवल स्तुति व भक्ति अभिव्यक्ति का ही साधन न बने, जन-जन में कर्तृत्व का जागरण एवं उनके भविष्य को संवारने वाला हो। समारोह के चार चरणों की शृंखला में दूसरा चरण आमेट में २२, २३ व २४ सितंवर को मनाया गया।

२२ सितंवर/पौ फटने के साथ ही प्रभात जागरिका निकाली गई, जिसमें हजारों-हजारों स्त्री-पुरुष, युवा सभी अपने-अपने गणवेश में आदर्श वाक्य लिखी तख्तियां लिये हुए एवं संयत नारे लगाते हुए अनुशासन वद्ध ढंग से चल रहे थे।

दोपहर ठीक १२ वजे सुनील वाल निकेतन का विशाल मैदान। दूर-दूर तक सामियानों के नीचे वैठा विशाल जन समुदाय। आठ फुट ऊंचे मंच पर वड़े तख्त पर विराजमान अमृत पुरुष आचार्यश्री तुलसी, उनके वाईं ओर छोटे तख्त पर युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ, धवल आभा विखेरता हुआ उनका शिष्य-शिष्या परिवार। मंच के एक तरफ गणमान्य नागरिक।

अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति द्वारा आयोजित इस समारोह में चालीस हजार से भी अधिक विशाल जननेदिनी की उपस्थिति में युवाचार्यश्री

ने जनाभिनन्दन कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मुमुक्षु बहिनों की स्वागत-अर्चना से समारोह का प्रारम्भ हुआ। महंत श्री जयरामदास ने आचार्यवर का अभिनन्दन किया। मुनि श्री सुमेरमल "सुदर्शन", मेवाड़ स्तरीय महिला मंडल, लोक कवि श्री अब्दुल जब्बार ने गीत-अर्चना की। अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के मंत्री श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट ने आचार्यवर के पचास वर्षों की क्रांतिकारी कहानी का संक्षिप्त बखान किया। युवाचार्यश्री के नेतृत्व में साधु साध्वियों द्वारा "भैक्षव शासन के श्रृंगार" बधाई गीत प्रस्तुत किया गया।

श्रद्धाभिवन्दन के क्रम में राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा ने कहा—"आज हम लोग अमृत-महोत्सव मनाने एवं आचार्यश्री को अपना अभिनन्दन समर्पित करने के लिए एकत्र हुए हैं। हमारा सौभाग्य है कि आपने यह अवसर मेवाड़ को प्रदान किया। आप हमारा युगों-युगों तक मार्ग-दर्शन करते रहें, यही मंगल भावना है।" सर्वोदयी कार्यकर्त्री सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने कहा—"हमारा अहोभाग्य है कि हमें आचार्यश्री का सान्निध्य मिला है। अहिंसा के विकास के लिए हम अपरिग्रह के सूत्र को अपनाएं यह आवश्यक है।"

केन्द्रीय विज्ञान, तकनीकी, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार राज्य मंत्री श्री शिवराज पाटिल ने कहा—"आचार्य तुलसी के प्रति किसी एक वर्ग के व्यक्ति नहीं, वरन् समस्त मानव समाज नतमस्तक है और आदर की भावना लिये हुए है। इसका कारण है आपका उदार एवं मानवता वादी दृष्टिकोण।" अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी ने कहा—"पचास वर्षों से एक छत्र नेतृत्व करना तेरापंथ के इतिहास में प्रथम घटना है। आपने तेरापंथ संघ एवं जैन धर्म को जो दिशा दी है, वह इतिहास की अमूल्य थाती है।"

गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबूभाई पटेल ने कहा—"न मैं जैन हूं, न ही तेरापंथी। अमृत-महोत्सव पर मैं आचार्य तुलसी जी को प्रणाम करने आया हूं क्योंकि मैं आपका भक्त हूं। और वह इसलिए हूं कि आचार्यश्री ने जैन धर्म को जन धर्म के रूप में प्रस्तुति दी है।" जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान श्री दलसुखभाई मालवणिया ने अप्रमत्तता, सतत जागरूकता व बेजोड़ अनु-शासन को तेरापंथ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता बतलाई और आचार्यवर के अवदानों की संक्षिप्त चर्चा की। भारत जैन महामंडल के महामंत्री श्री चन्दनमल 'चांद' ने भी अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

राजस्थान शिक्षक संघ के अध्यक्ष श्री विशनसिंह शेखावत ने एक लाख सा ५ हजार शिक्षकों की ओर से आचार्यवर को अपनी अभिवंदना प्रस्तुत करते हुए कहा—"आचार्य तुलसी ने देश में चरित्र निर्माण की दिशा में जो ठोस कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है। राजस्थान का शिक्षक समुदाय चरित्र निर्माण के इस महान् यज्ञ में आपके साथ है।" श्री राजकुमार बरड़िया ने राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ तथा श्री शेखावत ने राजस्थान शिक्षक संघ द्वारा पारित अणुव्रत प्रस्ताव पढ़कर सुनाया। छात्र संघ के प्रस्ताव में उन्होंने हिंसात्मक आन्दोलनों के बजाय अहिंसात्मक आन्दोलन के जरिये अपने मंतव्य को प्रकट करने का निर्णय लिया। प्रस्ताव २० सितम्बर को पारित किया गया। पूरा पत्र अविकल इस प्रकार है।

"लोकतंत्र में अपने हितों और अधिकारों के लिए सबको संघर्ष करने का अधिकार है। किन्तु वह संघर्ष अहिंसक मार्ग से होना चाहिए।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने जहां अन्याय का प्रतिकार जरूरी बताया है, वहां शांति और अहिंसा के मार्ग पर भी विशेष बल दिया है।

हमारा संगठन अहिंसा के मार्ग में आस्था रखता है। आचार्य श्री तुलसी के आचार्य पदारोहण के ५० वर्ष के उपलक्ष में आयोजित अमृत-महोत्सव के अवसर पर हमारा संगठन यह संकल्प प्रकट करता है कि यदि कोई भी समस्या हमारे सामने होगी, तो शान्ति और अहिंसा के मार्ग से हम उसका समाधान करेंगे, हिंसा और तोड़फोड़मूलक प्रवृत्तियों से दूर रहेंगे।

हस्ताक्षर—सुभाष स्वामी — चन्द्रशेखर खूंटेटा
महासचिव — उपाध्यक्ष

मुनि सुमेरमल "लाडनूं" के संयोजकत्व में साहित्य-समर्पण एवं अन्य भेंट का क्रम चला। भेंट में हैदराबाद संघ द्वारा कलात्मक कल्प-वृक्ष, श्री सुभाष कच्छारा द्वारा विशेष निर्मित प्लेट जिसमें आचार्यवर के महत्त्वपूर्ण अवदानों की चर्चा थी, श्री भंवरलाल डागलिया द्वारा अर्चना के श्लोकों से अंकित चांदी का श्रीफल मुख्य थे। बंबई, संगरूर, कर्नाटक आदि अनेक स्थानों से हजारों संकल्प पत्र अमृत-कलश में समर्पित किए गए। बोरा-वड़ कन्यामण्डल ने अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में एक लाख पद्य कंठस्थ किए।

युवाचार्यश्री ने तीस मिनट तक खड़े रहकर आचार्यप्रवर का समस्त संघ की ओर से विनम्र अभिवन्दन किया। यह इस समारोह का सर्वाधिक

दर्शनीय एवं ऐतिहासिक कार्यक्रम था। समूचे संघ की ओर से युवाचार्यश्री ने आचार्यवर को शाल ओढ़ाई तथा अभिनन्दनपत्र समर्पित किया, जिसका चित्रांकन साध्वीश्री विमलप्रज्ञा ने किया। साध्वी परिवार द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुएं, पात्र, अमृत कलश, पीले कागज का हार, ओघा आदि आचार्यवर को अर्पित किए गए। इन कलात्मक वस्तुओं में साध्वीश्री रामकुमारी "लाडनूं" की कुशल अंगुलियों का योग था। युवाचार्यश्री ने हस्तलिखित कविता संग्रह "पुरुषार्थ के पचास वर्ष" आचार्यवर को भेंट की। डायरीनुमा इस कविता संग्रह की साज सज्जा मुनिश्री राजेन्द्रकुमार ने बड़े ही मनोयोग पूर्वक की। भाव-विभोर होते हुए युवाचार्यश्री ने पीले कागज तथा 'नमीतिये' से निर्मित हार आचार्यश्री के गले में अर्पित कर दिया।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने उद्‌बोधन में आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त त्रिसूत्री अभियान अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन-विज्ञान की महत्त्वपूर्ण चर्चा की। उन्होंने अपरिग्रह सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए कहा—"अमृत महोत्सव के इस महान् अवसर पर आचार्यश्री ने एक ओर सूत्र दिया है—विसर्जन का, जो अपरिग्रह की दिशा में मील का पत्थर है। व्यक्ति हिंसा के लिए परिग्रह नहीं, परिग्रह के लिए हिंसा करता है। समूची मानव जाति की चेतना को जागृत करने में यह विसर्जन सूत्र बहुत मददगार साबित होगा। अपेक्षा है—अर्थ के प्रति ममत्व त्याग को हर व्यक्ति समझे और अपने जीवन में उतारें।" युवाचार्य श्री के नेतृत्व में समूचे संघ की ओर से "भैक्षव शासन के श्रृंगार" बधाई गीत प्रस्तुत किया।*

आचार्यश्री तुलसी ने अमृत संदेश में कहा—"आज विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता है—मैत्री। मैत्री के लिए विश्वास का वातावरण बनाया जाये। अणु-अस्त्रों की होड़ समाप्त की जाए। मनुष्य-मनुष्य के बीच में वर्ण, जाति के आधार पर पड़ने वाली खाई को पाटी जाए। मैं उस सवेरे की प्रतीक्षा में हूं जिस दिन भेदमुक्त मानवजाति मुक्त वातावरण में जीने का आनन्द लेगी तभी अध्यात्म में प्रगति संभव है।" आचार्यश्री ने अपरिग्रह, आज की शिक्षा पद्धति व धर्म और संप्रदाय की व्याख्या करते हुए वर्तमान की राष्ट्रीय समस्याओं के संदर्भ में अपने बहुमूल्य विचार रखे। आचार्यश्री ने समग्र मानव जाति के प्रति मंगलकामना करते हुए अध्यात्म रस लेने तथा जीवन की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान में योगभूत बनने का आह्वान किया।

* देखें परिशिष्ट—३।

आचार्यश्री ने अमृत-महोत्सव गीत का समुच्चारण किया† तथा अमृत महोत्सव का नवीन घोष दिया—"नया सवेरा आये, सोया मन जग जाए।" आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री को स्वयं द्वारा निर्मित एवं लिखित कुछ पद्य प्रदान किए। इस चातुर्मास में आचार्यश्री ने गुरुकुलवासरत सभी साधु-साध्वियों के लिए उनके गुणों के अनुरूप पद्य बनाए हैं तथा समणियों के लिए भी पद्यों की रचना की है।* आचार्यवर ने इस अवसर पर प्रेक्षा-गीत व जीवन-विज्ञान गीतों का भी संगान किया।•

"तुलसी जीवन दर्शन प्रदर्शनी" का आचार्यश्री के सान्निध्य में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार के हाथों उद्घाटन हुआ। आज के इस अर्चना समारोह में प्रकृति ने भी अपने श्रद्धासुमन दस मिनट तक चढ़ाये। हल्की वर्षा व तेज हवा से वातावरण सुरम्य हो उठा। कार्यक्रम का प्रभावी संयोजन डॉ० महेन्द्र कर्णावट ने किया।

२२ सितंबर/द्वितीय कार्यक्रम/अमृत महोत्सव का रात्रिकालीन कार्यक्रम श्री जैन श्वे० तेरापन्थी महासभा के अध्यक्ष श्री विजयसिंह सुराणा की अध्यक्षता में हुआ। प्रारम्भ मुनिश्री विजय कुमार के सुमधुर गीत से हुआ। युवा-साधुओं ने ३० मिनट का 'आचार्य तुलसी अतीत के झरोखे में' नामक एक रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया। श्रोताओं द्वारा प्रशंसित तथा मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" द्वारा निर्मित इस परिसंवाद में मुनिश्री श्रेयांसकुमार, मुनिश्री अरविंद-कुमार, मुनिश्री धनंजय कुमार, मुनिश्री प्रशान्तकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार, मुनिश्री जिनेश कुमार, मुनिश्री लाभरुचि तथा मुनिश्री लोकप्रकाश ने भाग लिया।

अर्चना के इन क्षणों में अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोतीलाल एच० रांका, श्री मांगीलाल सेठिया, पुर वैरवा समाज की ओर से श्री देवी-लाल, पंचायत प्रधान खारची (मारवाड़) ठाकुर चक्रवर्तीसिंह, स्थानकवासी कान्फ्रेंस के उपाध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत, कविश्री माधव दरक, सुमधुर गायिका सुश्री सन्ध्या शर्मा, संसद सदस्य श्री रामचंद्र विकल, कार्यक्रम अध्यक्ष श्री विजय सिंह सुराणा ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। मुनिश्री श्रेयांसकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार, मुनिश्री लाभरुचि, मुनिश्री लोकप्रकाश ने गीत प्रस्तुत

† देखें परिशिष्ट—४

* देखें परिशिष्ट—५।

• देखें परिशिष्ट—६।

किया।

नवभारत टाइम्स के उपसंपादक श्री पारसदास जैन ने कहा—"आचार्यश्री ने तेरापंथ और जैन धर्म के उन्नयन के लिए ही नहीं, वरन् समग्र मानव समाज के लिए कार्य किया है। अस्पृश्यता निवारण के लिए आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।" दैनिक ट्रिब्यून" के संपादक श्री राधेश्याम शर्मा ने कहा—"आचार्य तुलसी संप्रदाय विशेष के आचार्य हैं, किन्तु आपके कार्यक्रम बहुत व्यापक हैं। आपके कार्यक्रम एक विचारधारा से घिरे हुए नहीं हैं। आप आधुनिक विचारों के पृष्ठ-पोषक हैं।"

आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए। श्री मानव मित्र (मानमलजी आंचलिया—सरदारशहर) ने आचार्यवर से एक वर्ष के लिए उपासक दीक्षा ग्रहण की। पिछले वर्ष जोधपुर में चरमोत्सव के दिन उन्होंने एक वर्ष की उपासक दीक्षा स्वीकार की थी। पिछले वर्ष तो उनके पैसे तक छूने का परित्याग था। वे साथ में एकान्तर तप भी करते हैं।

२३ सितंबर/तृतीय कार्यक्रम/मध्याह्न १२.१५ बजे अमृत महोत्सव कार्यक्रम के साथ अखिल भारतीय महिला मंडल के ११ वें वार्षिक अधिवेशन के प्रारम्भ का कार्यक्रम भी था। साध्वी श्री मधुस्मिता के सुमधुर गीत से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। प्रारंभिक औपचारिकताओं के बाद मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सज्जन देवी चौपड़ा ने अपने विचार रखे। साध्वी समाज ने एक सुमधुर सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती सरला रायजादा के स्वर में महिला समाज ने आचार्यश्री की गीत-अर्चना की। मुनिश्री किशनलाल ने आचार्यवर का काव्यमय अभिनन्दन किया। मंडल की मंत्री श्रीमती निर्मला डूगड़ ने वार्षिक रिपोर्ट पेश की।

राजस्थान के पूर्व वित्तमंत्री श्री चन्दनमल बैद ने कहा—"आचार्य श्री के सतत सान्निध्य एवं मार्ग-दर्शन से समाज में बहुंमुखी परिवर्तन आया है। देश में व्याप्त हिंसा को समाप्त करने के लिए आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।" जीवन-साहित्य के संपादक, गांधीवादी विचारक श्री यशपाल जैन ने कहा—"आचार्यश्री तुलसी ने मानवता की सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है। मानव सच्चे अर्थों में मानव बने, यही इनके जीवन का ध्येय है।"

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार ने कहा—"तेरापंथ समाज जो बेहद पिछड़ा माना जाता था और आज से चालीस वर्ष पूर्व मैं सुनता था

कि कोई एक समाज है जिसके बारे में जो कुछ कहा जाता था वह मैं आज नहीं कह सकता। आज वही तेरापंथ समाज जैनों में ही नहीं, समस्त भारत में इस वक्त सबसे अधिक प्रगतिशील, मर्यादित और नैतिक समाज माना जाता है। यह सब आचार्यश्री के द्वारा संभव हुआ है।" उन्होंने साध्वी-समाज की प्रगति पर आश्चर्य व्यक्त किया। साप्ताहिक हिन्दुस्तान की संपादिका श्रीमती शीला झुनझुनवाला ने कहा—"आचार्य तुलसीजी ने अंधविश्वासों और रूढ़ियों में भटकी नारी को नई चेतना प्रदान की है। आज महिलाओं का शैक्षणिक स्तर बढ़ रहा है, पर आवश्यकता है इसके साथ संस्कारों का निर्माण हो।"

कार्यक्रम का संयोजन मेवाड़ प्रान्तीय महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा कोठारी ने किया। इस अधिवेशन में श्रीमती निर्मला जैन (जगरावाँ-पंजाब) को "नारी रत्न" के अलंकरण से सम्मानित किया। सूरत के विशिष्ट श्रावक श्री कुसुम भाई जवेरी की सेवाओं का स्मरण करते हुए आचार्यवर ने उन्हें 'संघ-प्रभावक' के संबोधन से संबोधित किया। जयपुर-मोमासर के श्रावक श्री उत्तमचंद सेठिया की माता श्रीमती मनोहरी देवी सेठिया को मरणोपरान्त 'श्राविका रत्न' के सम्मान से विभूषित किया। इस अवसर पर आचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण वक्तव्य हुए।

२३ सितंबर/चतुर्थ कार्यक्रम/रात्रि कार्यक्रम के अध्यक्ष अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश भगवतप्रसाद तथा प्रमुख वक्ता जय तुलसी फाउण्डेशन के संयोजक श्री धरमचंद चोपड़ा थे। विभिन्न संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री धरमचंद चोपड़ा, अणुव्रत कार्यकर्ता श्री सावित्री प्रसाद गौतम, अ० भा० ते० युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री पदमचंद पटावरी, अणुव्रत विश्वभारती के श्री मोहनलाल जैन, मित्र परिषद् कलकत्ता के अध्यक्ष श्री मन्नालाल बरड़िया ने आचार्य-अर्चना में श्रद्धा सुमन चढ़ाये। समारोह का संयोजन मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने किया।

२४ सितम्बर/पंचम व अंतिम कार्यक्रम/मध्याह्न १२.३० बजे समणी परिवार की अमृत-वन्दना से समारोह का प्रारम्भ हुआ। मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट', साध्वीश्री कनकश्री, समणी कुसुमप्रज्ञा द्वारा आचार्यप्रवर का भावभीना अभिवन्दन किया गया। देवगढ़ कन्यामंडल द्वारा गीत अर्चना तथा युवा साधुओं द्वारा आचार्यप्रवर का 'ओ जीवन के निर्माता जीवन की लो सौगातें' गीत से समूह अभिवंदना की। मुनिश्री उदितकुमार

एवं मुनिश्री मुदित कुमार ने आचार्यवर के शासनकाल के ऐसे रोचक पचास कीर्तिमान प्रस्तुत किये, जो पूर्व आठ आचार्यों के शासनकाल में नहीं हुए। पत्रकार श्री राजेन्द्रशंकर भट्ट, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्द सेठिया, राज्यसभा सदस्य श्री भंवरलाल पंवार, श्री शोभासार जोशी, श्री सोहनलाल गांधी, डा० आर० भटनागर ने अपनी भावनाएं व्यक्त की।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित एवं डा० भटनागर तथा एस० एल० गांधी द्वारा संपादित अंग्रेजी पुस्तक 'आचार्य तुलसी: समर्पण के पचास वर्ष' का विमोचन हुआ। श्री मोतीलाल रांका व श्री खेमचंद सेठिया द्वारा अखिल भारतीय अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति एवं जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित नवीन साहित्य आचार्यवर को भेंट किया। अहमदाबाद सूरत, पाली, बगड़ी, पंचपदरा, श्रीडूंगरगढ़, लाडनूं तथा मेवाड़ की ओर से आचार्यवर के आगामी चातुर्मास की प्रार्थना की गई। आमेट क्षेत्र के सत्तर ग्रामीण भाइयों ने मद्यपान न करने का संकल्प लिया। धर्म की व्यापक प्रस्तुति देते हुए युवाचार्यश्री ने सम्यक् दृष्टिकोण के निर्माण की प्रेरणा दी।

आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में जनता के सामने तीन मांगे प्रस्तुत की—

१. पचास अणुव्रती कार्यकर्ता मिले, जो स्वय अणुव्रती रहते हुए वर्ष भर में चार महीने अणुव्रत कार्यक्रम को व्यापक बनाने में लगाये।
२. पचास ऐसी महिला कार्यकत्री हों, जो कहीं भी जाकर समय-समय पर काम करने में सक्षम हों।
३. पचास समर्पित व्यक्ति सामने आए, जो वर्ष में कम से कम चार महीने का समय समाज-सेवा में लगाये।

आचार्यश्री ने इन तीन मांगों के अनुरूप प्रयत्न करने का आह्वान किया। संयोजन के दायित्व का निर्वहन डा० महेन्द्र कर्णावट ने कुशलतापूर्वक किया।

तेरापंथ धर्मसंघ व समाज की निष्ठापूर्वक एवं निष्काम सेवा करने वाले को २१००१ रुपये का 'श्रीमती मनोहरी देवी डागा समाज सेवा पुरस्कार' प्रारम्भ किया गया। सरदारशहर के वरिष्ठ श्रावक श्री रिद्धकरण नौरतनमल डागा द्वारा इस वर्ष का यह पुरस्कार समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री शुभकरण दसाणी को प्रदान किया गया।

अमृत-महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय

समिति द्वारा 'तुलसी जीवन दर्शन' प्रदर्शनी का वृहद् निर्माण किया गया। प्रदर्शनी में आचार्य तुलसी के जीवन से संबंधित तीन सौ से अधिक बड़े चित्र एवं एक सौ के लगभग चार्टस जिनमें आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कृर्तृत्व को दर्शाया गया। आचार्य तुलसी साहित्य, प्रथम मर्यादा-महोत्सव ब्यावर के समाचारों की कटिंग, रेखा चित्र, अभिनन्दन पत्र एवं दुर्लभ चित्र प्रदर्शनी के आकर्षण बिन्दु थे। इस प्रदर्शनी को मूर्त रूप देने वाले थे—अखिल भारतीय राष्ट्रीय समिति के संयुक्त मंत्री श्री डा० महेन्द्र कर्णावट।

इस प्रकार अमृत-महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम सानन्द संपन्न हुआ।

निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में साधु-साध्वियों की निबंध प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता का विषय था—आचार्यश्री का जीवन एवं उनके महत्त्वपूर्ण अवदान। प्रतियोगिता में १२ साधु तथा १४ साध्वियों ने भाग लिया। दो श्रेणियों में विभक्त इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा है—

	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी
प्रथम	मुनिश्री राजेन्द्रकुमार	मुनिश्री प्रशान्त कुमार
द्वितीय	मुनिश्री धनञ्जयकुमार	साध्वीश्री अमृतप्रभा
	साध्वीश्री निर्वाणश्री	
तृतीय	साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा	साध्वीश्री अर्हत्प्रभा
	साध्वीश्री विमलप्रज्ञा	मुनिश्री अरविन्दकुमार

भिक्षु चरमोत्सव

२६ सितम्बर / अमृत समवसरण में आचार्यश्री के सान्निध्य में मध्यान्ह एक बजे १८६वां भिक्षु चरमोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। तेरापन्थ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देने वाले थे—मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट', साध्वीश्री उज्ज्वलरेखा, साध्वीश्री अर्हत् प्रभा, समणी मधुरप्रज्ञा, श्री सोहनराज कोठारी। साध्वीश्री चंदनबाला आदि साध्वियां, साध्वीश्री मधुस्मिता तथा पारमार्थिक शिक्षण संस्था की मुमुक्षु बहिनों ने सुमधुर गीतिकाओं के द्वारा अपने आराध्य की अर्चना की। साध्वीश्री मनीषाश्री ने कविता प्रस्तुत की।

साध्वी प्रमुखाश्री ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी अभ्यर्थना समर्पित करते हुए उनके जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। युवाचार्यश्री ने स्वामीजी को सत्य-पथ का महान् अन्वेषक बताया। आचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु के गुणों की एक प्रभावशाली गीतिका समुच्चारित की।* आचार्यश्री ने कहा—'स्वामीजी ने न केवल विचार के क्षेत्र में क्रांति की है, अपितु आचार के क्षेत्र में भी की है। उसी का परिणाम है कि आज तेरापंथ धर्मसंघ का व्यवस्था पक्ष उतना ही मजबूत है जितना सैद्धान्तिक पक्ष'। आचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु के जीवन-प्रसंगों का रोचक वर्णन किया।

रात्रि में चरमोत्सव का अवशिष्ट कार्यक्रम चला, जिसमें श्रद्धालु जनों ने गीतिका, मुक्तक एवं अपने विचारों से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की।

स्वामीजी की समाधि पर समाधिमरण

पूना निवासी स्वर्गीय श्री प्रेमराज मरलेचा के सुपुत्र श्री शांतिलाल मरलेचा का हृदयगति रुक जाने से उपवास में सिरियारी में निधन हो गया। आचार्यवर ने उनके बारे में कहा—'भाई शान्तिलाल आचार्य भिक्षु के साथ अपना इतिहास जोड़कर युग-युग के लिए अपना स्मृति चिह्न अंकित कर गया। स्वामीजी का जन्म त्रयोदशी का। शान्ति का जन्म भी त्रयोदशी का। स्वामीजी की जन्म स्थली कंटालिया। शान्ति की जन्म स्थली भी कंटालिया। स्वामीजी का परिनिर्वाण भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी, सिरियारी। शान्ति की भी वह त्रयोदशी, वही सिरियारी। स्वामीजी के चरमोत्सव के माहौल के बीच। इस घटना को मैं इतिहास की विरल घटना मानता हूं। शान्तिलाल शासन का भक्त श्रावक था। गुरु के प्रति उसमें अटूट श्रद्धा थी। उसके परिवार ने विशेषकर उसकी माता एवं पत्नी ने इस अवसर पर जिस दृढ़ता का परिचय दिया है, सचमुच में वह श्लाघनीय है।

नवान्हिक प्रेक्षा-प्रयोग

यह वर्ष अमृत-महोत्सव का वर्ष है। इस वर्ष कुछ नूतन कार्य, नूतन प्रयोग प्रारम्भ होने हैं। चातुर्मास के प्रारंभ में आचार्यवर ने अपनी इच्छा जाहिर की कि गृहस्थों के लिए इतने शिविर आयोजित होते हैं। क्यों नहीं साधु-साध्वियों के लिए भी ऐसा शिविर लगे, जिससे उन्हें प्रेक्षाध्यान का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक स्वरूप समझाया जा सके। आचार्यवर एक प्रयोग-

---

* देखें परिशिष्ट—७।

धर्मा व्यक्तित्व हैं न जाने उन्होंने अपने जीवन में कितने प्रयोग किए हैं। उन्हीं प्रयोगों की शृंखला में यह 'नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग' था। अमृत-महोत्सव के द्वितीय-चरण की विराट् समायोजना के बाद ३० सितंबर से ८ अक्टूबर का यह शिविर आयोजित हुआ।

३० सितम्बर/प्रातः ८.३० बजे आचार्यवर के सान्निध्य में व युवाचार्यश्री के निदेशन में उपसंपदा ग्रहण के साथ नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग प्रारंभ हुआ। उपसंपदा को विवेचित करते हुए युवाचार्यश्री ने शिविर में करणीय कार्यों का दिशा-दर्शन दिया। इस तरह के पहले प्रयोग में आचार्यवर, युवाचार्यवर सहित सभी साधु और साध्वी प्रमुखाश्री आदि प्रायः सभी साध्वियां सम्मिलित हुईं। इस प्रयोग के दौरान साधु-साध्वियों का अधिकांश समय विभिन्न प्रयोगों में बीता। इस अवधि में गृहस्थों से सम्पर्क नहीं जैसा रहा।

प्रातः ४.३० बजे से रात्रि ९.३० बजे तक के समय में ध्यान, जप, मौन, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग आदि उपक्रमों को कराने वाला यह एक अनूठा प्रयोग था।

प्रातः आचार्यवर साधु-परिवार के साथ योगासन कराते। उस समय का दृश्य बहुत आकर्षक होता था। नवपदी जप का प्रयोग भी हुआ। नमस्कार महामंत्र के पांच पद तथा एसो पंच णमुक्कारो....के चार पद, इस प्रकार नौ पदों का उच्चारण करते हुए नौ रंगों के साथ नौ केन्द्रों पर सामूहिक जप का प्रयोग करवाया गया।

मध्याह्न १.३० से ३.३० तक सामूहिक संगोष्ठी का आयोजन हुआ करता था। पृथक्-पृथक् विषयों पर चर्चा चलने के साथ जिज्ञासा समाधान का क्रम भी चला। इस संगोष्ठी में आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए। आहार-विवेक, शरीर-विज्ञान, श्वास-प्रेक्षा, चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा आदि विभिन्न विषयों पर युवाचार्यश्री के मार्मिक प्रवचन हुए।

संगोष्ठी में कैसे चलना, कैसे प्रमार्जन करना, कैसे सफाई करना आदि छोटी-छोटी बातों का आचार्यवर ने स्वयं सक्रिय प्रशिक्षण दिया।

इस प्रयोगकाल में प्रतिदिन दो अंतरंग गोष्ठियों का आयोजन हुआ। उन गोष्ठियों में साधना, शिक्षा, साहित्य, मर्यादा, व्यवस्था आदि अनेक विषयों पर चर्चा चली। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री की सन्निधि में कुछ चुने हुए साधु-साध्वियां उन गोष्ठियों में सम्मिलित हुए।

इस प्रेक्षा-प्रयोग के दौरान जनता के लिए आचार्यप्रवर का सान्निध्य निर्धारित समय पर ही उपलब्ध होता। तीन समय निश्चित थे प्रातः और सायं वन्दना व प्रतिक्रमण तथा प्रवचन के समय। इस प्रयोग में आचार्यवर का चरण स्पर्श साधु-समाज व श्रावक-समाज दोनों के लिए निषिद्ध था।

शिक्षामंत्री का आगमन

६ अक्टूबर/राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री रामपाल उपाध्याय आज आचार्यवर के दर्शनार्थ आमेट पहुंचे। प्रातः प्रवचन के वक्त अपने विचारों की प्रस्तुति करते हुए शिक्षामंत्री ने कहा—"मैं ऑपरेशन कराने विदेश गया, तब आपके दर्शन करके गया था और अब भारत आते ही आपके श्रीचरणों में पहुंच गया। मैंने इस यात्रा में कई जगहों पर जीवन-विज्ञान की चर्चा की। मुझे ऐसा लगता है कि शिक्षा जगत् में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने में जीवन-विज्ञान परियोजना बहुत महत्त्वपूर्ण है।' शिक्षामंत्री ने रूढ़ि उन्मूलन तथा पंजाब समस्या के सन्दर्भ में आचार्यवर की भूमिका पर अपनी ओर से प्रशस्तिपूर्वक अभ्यर्थना की।

युवाचार्यश्री ने समस्त समस्याओं का समाधान भौतिक संसाधनों से करने की प्रवृत्ति को मिथ्याधारणा बतलाया। इसके लिए उन्होंने जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान को उत्तम प्रक्रिया बताया। आचार्यश्री ने नई पीढ़ी के निर्माण में इन प्रयोगों को व्यापक प्रभावशील माना।

ज्ञानशाला की बदौलत

कर्नाटक की राजधानी, फूलों की नगरी बेंगलूर में पिछले कई वर्षों से नियमित ज्ञानशाला चल रही है। इसके मुख्य संयोजक हैं श्री सोहनलाल कटारिया। इस ज्ञानशाला में सौ-सौ, दो-दो सौ, कभी-कभी चार सौ लड़के-लड़कियां शामिल होते हैं और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस ज्ञानशाला से सैकड़ों विद्यार्थी ऐसे निकले हैं जिनको पच्चीस बोल प्रतिक्रमण, भक्तामर आदि कंठस्थ हैं। समाज सहयोग, अभिभावकों की रुचि, लड़के-लड़कियों की लगन, कार्यकर्ताओं की कर्मठता का ही यह सुपरिणाम है कि बेंगलूर तेरापंथ ज्ञानशाला व्यवस्थित चल रही है। अमृत-महोत्सव के संदर्भ में श्री सोहनलाल कटारिया के नेतृत्व में कई कार्यकर्ता व ४० लड़के-लड़कियां एक अक्टूबर को आमेट पहुंचे। यहां वे पांच दिन ठहरे। इन दिनों आचार्यवर साधु-साध्वियों के साथ नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग के तहत एकान्तवास कर रहे थे, उसके बाव-

जूद आचार्यवर प्रतिदिन मध्याह्न में आधा घंटा उनको समय देते। प्रातः प्रवचन व रात्रि में लड़के-लड़कियों ने सुमधुर गीतिका, नववद्ध कव्वाली आदि का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, साथ ही सायं सामूहिक प्रतिक्रमण किया। उन्होंने कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये।

शोक विमोचन

इन दिनों शोक विमोचन हेतु कुछ परिवार दर्शनार्थ आमेट पहुंचे। दिवंगत व्यक्तियों का परिचय इस है—

- श्री संतोषचंद सेठिया (बीदासर) वे पिछले कुछ अर्से से अस्वस्थ थे। आचार्यवर ने उनके बारे में कहा—'बीदासर का सेठिया परिवार श्रद्धानिष्ठ परिवार है। संतोषचंदजी एक संघनिष्ठ, व भक्त श्रावक थे। पैंतीस वर्ष की छोटी अवस्था में ही उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया। तेरह वर्ष की किशोर वय से वे चतुर्दशी का उपवास करते थे।'
- श्री मूलचंद शामसुखा (गंगाशहर) का बंगाईगांव (असम) में हृदय-गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। वे एक संघनिष्ठ श्रावक थे। मुनिश्री श्रेयांसकुमार, मुनिश्री अजितकुमार एवं साध्वी अनुशासनाश्री के वे संसारपक्षीय पिता थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रूपादेवी की श्रद्धा उल्लेखनीय है। बच्चों को संस्कार देने वे में बेजोड़ हैं।
- श्रीमती तिलोकचंद बोरड़ (लाडनूं) का धर्म जागरण करते स्वर्गवास हो गया। वह एक श्रद्धालु श्राविका थी। गुरु-उपासना में उन्हें अधिक आनन्द की अनुभूति होती थी। उन्होंने अपने जीवन में रूढ़ि को प्रश्रय नहीं दिया।
- श्री राणमल बूरड (वायतू) का संसार पक्षीय पुत्री साध्वीश्री राकेश-कुमारी की सेवा में सरदारपुरा (जोधपुर) में निधन हो गया। आचार्यवर के शब्दों में 'राणमलजी अपने क्षेत्र के एक जिम्मेदार श्रावक थे। वायतू में उ,हें शय्यातर होने का लाभ भी प्रायः मिलता रहा है। वे उस क्षेत्र में विचरण करने वाले साधु-साध्वियों की अच्छी सेवा करते थे।'
- श्रीमती मोहनदेवी सेठिया (चाड़वास) का १० दिन के अनशन में स्वर्गवास हो गया। वह साध्वीश्री विवेकश्री की संसार पक्षीय दादी थी।

- श्री ताराचंद सेठिया (शार्दूलपुर) की माताजी का गौहाटी में १७ दिनों के चौविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया। श्री सेठिया की माताजी ने निर्मल भावों व मजबूती से इतना लंबा व महत्त्वपूर्ण अनशन कर संघ की उल्लेखनीय प्रभावना की।
- श्रीमती भूरादेवी जैन (टोहाणा) प्रसिद्ध श्रावक लाला रणजीतसिंह की धर्म पत्नी थीं। उनके निधन पर उनके पुत्र श्री लाजपतराय जैन के नेतृत्व में पूरे परिवार ने दर्शन किये। आचार्यवर ने श्रीमती भूरादेवी को मरणोपरान्त 'दृढ़धर्मिणी' के रूप में संबोधित करते हुए कहा—'चौरासी वर्षीया भूरादेवी गुरुदर्शन के नाम पर हर वक्त तैयार रहती थी। वह अपने परिवार को एक ही शिक्षा देती थी कि धर्म को कभी मत भूलना। यही वजह है कि उनका पूरा परिवार संस्कारी है। लगभग ७० वर्षों तक टोहाना में उनके घर चातुर्मास हुए हैं।'
- युवा कार्यकर्ता श्री फरजनकुमार जैन (दिल्ली) की माताजी एक श्रद्धालु श्राविका थी। दिल्ली में साधु-साध्वियों की अच्छी सेवा करती थी। वह एक संस्कारी माता थी।
- वाव के सिंघवी परिवार में एक मास की अवधि में तीन व्यक्तियों का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। तीनों व्यक्ति थे—श्री बाघजी भाई, केशवभाई, एवं नरपत भाई। केशव भाई और नरपत भाई दोनों सगे भाई थे। बाघजी उनके चाचा थे। उनके पारिवारिक-जन आचार्यश्री की पावन सन्निधि में पहुंचे। आचार्यवर ने सिंघवी परिवार को अपने संबोधन में कहा—'वाव श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है। तीन सदस्यों के चले जाने पर भी परिवार के लोगों ने जिस दृढ़ता का परिचय दिया है, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।'
- श्रीमती मनखूदेवी लूणिया (चाड़वास) एक दृढ़ संकल्पी श्राविका थी। वह धर्म संघ के प्रति आस्थाशील थी। उसने परिवार को अच्छे संस्कार दिये।

१० अक्टूबर/रात्रि में 'क्या आप सुनना चाहते हैं?' विषय पर युवाचार्यश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। विषय की भूमिका पर मुनिश्री किशनलाल ने प्रकाश डाला।

२१ अक्टूबर/दस दिवसीय चालीसवें प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

समारोह आयोजित हुआ। मंगलाचरण के रूप में कार्यक्रम का प्रारंभ शिविरार्थिनी बहिनों द्वारा प्रेक्षा-संगान से हुआ। मुनिश्री किशनलाल ने प्रेक्षा-ध्यान की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के इस अवसर पर प्रेरक उद्‌बोधन हुए। शिविरार्थियों ने अपने प्रेरणादायी संस्मरण सुनाये। कार्यक्रम का संयोजन श्री रसिक भाई मेहता ने किया।

अ० भा० अणुव्रत का ३४ वां वार्षिक अधिवेशन

२२ अक्टूबर/प्रातः ६ बजे अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का ३४वां वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। अणुव्रत गीत के द्वारा समणी वृन्द ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। अमृत-महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत आयोजित इस अधिवेशन की एक विशेषता यह थी कि इसमें देश के जाने-माने कुछ शिक्षाविद् विशेष रूप से आमंत्रित थे। उनमें श्री ईश्वर भाई पटेल, श्री यशवंत भाई शुक्ल, श्री चिनुभाई नायक, डा० रामजी सिंह, डा० दयानंद भार्गव आदि प्रमुख थे। अ० भा० अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश भाई ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री श्री शुभकरण सुराणा ने समिति का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

श्री ईश्वर भाई ने कहा—"जीवन को परिष्कृत करने वाला शिक्षण ही सही शिक्षा है।" श्री दयानंद भार्गव ने कहा—"साक्षर होने वालों के लिए प्रज्ञा का जागरण व संस्कार परिष्कार होना बहुत जरूरी है। सत्संस्कारों के अभाव में संस्कृत का 'साक्षर' शब्द उलटा होकर 'राक्षस' बन जाता है। बुद्धि और प्रज्ञा का समन्वय हो जाए, तो भारत विश्व का अग्रणी बन सकता है।" श्री रामजीसिंह ने कहा—"आज हमारा देश भ्रष्टाचार से विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है। जिस देश में सरस्वती की अधिक पूजा-वंदना होती है उसी देश में निरक्षरता है। यह एक क्रूर व्यंग्य है। स्वतंत्र भारत के पहले वर्ष में शिक्षा पर कुल आय का साढ़े सात प्रतिशत खर्च हुआ और आज ढाई प्रतिशत खर्च हो रहा है। अब कैसे प्रगति हो शिक्षा के क्षेत्र में! अणुव्रत आन्दोलन लोक प्रशिक्षण का एक उत्तम माध्यम है। आचार्य तुलसी जन चेतना को जगाने का महान् कार्य कर रहे हैं।"

युवाचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा—"अणुव्रत आन्दोलन स्वयं में एक विद्यापीठ है। इसकी शिक्षा सावधिक न होकर जीवन पर्यन्त होती है। शिक्षित व्यक्ति को ईमानदार होना आवश्यक है, तभी वह समाज में उपयोगी

वन सकता है।" उन्होंने समाज के लिए तीन अपेक्षाओं का निरूपण किया—श्रम, ईमानदारी व समन्वय वृत्ति। उन्होंने कहा—"इस त्रिवेणी का प्रत्येक व्यक्ति में अवतरण आवश्यक है। इन तीनों में एक का अभाव भी जीवन को पंगु बना देता है। इस त्रिवेणी के अवतरण में जीवन-विज्ञान परियोजना सहायक सिद्ध हो रही है। इस शिक्षा-प्रणाली के द्वारा संकल्प शक्ति, सृजनात्मक शक्ति व भावनात्मक शक्ति के विकास का प्रयोग किया जा रहा है।"

आचार्यवर ने अपने प्रवचन में कहा—"अणुव्रत आन्दोलन पुरुषार्थ का प्रतीक है। उसके कतिपय निष्कर्ष हैं—धर्म किसी जाति, वर्ग व वर्ण की बपौती नहीं, जन-जन की सम्पत्ति है। धर्म परमार्थ का पथ प्रशस्त करता है। धर्म अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाता है। इसलिए प्रत्येक आदमी अपने जीवन में धर्म को अवतरित करें।"

मध्यान्ह में आचार्यवर के सान्निध्य में कार्यकर्ताओं की गोष्ठी हुई। गोष्ठी के मुख्य उद्देश्य थे—अणुव्रत कार्यक्रम को गतिदेना, कार्यकर्ताओं की टीम तैयार करना, इस कार्य में आनेवाली बाधाओं पर चिंतन करना आदि। इस गोष्ठी में विभिन्न क्षेत्रों से समागत बीस कार्यकर्ताओं ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये। उन सुझावों का निष्कर्ष था—अणुव्रत कार्यक्रम में तेरापंथी लोगों को विशेष रूप से सहयोग करना चाहिए। अणुव्रत की भूमिका स्पष्ट हो, सक्रिय हो तथा इसके प्रचार-प्रसार का दायित्व नई पीढ़ी को सौंपा जाना चाहिए। स्थान-स्थान पर कार्यकर्ता सक्रिय हो, अपना समय दे, तभी अणुव्रत कार्यक्रम को गति मिल सकती है। समय-समय पर कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया जाये। कार्यकर्ताओं को चरित्र-निष्ठ होना अत्यन्त अपेक्षित है।

अंत में गोष्ठी को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"अणुव्रत-कार्यक्रम मानवता के साथ जुड़ा हुआ है। आज अनैतिकता से सभी दुःखी हैं, उधर कार्यकर्ताओं की बहुत कमी है। इसको मैं अपनी कमी मान सकता हूं क्योंकि त्रुटि का स्वीकरण ही त्रुटि के परिष्कार का रास्ता है। अणुव्रत कार्यक्रम को गति देने के लिए आज ईमानदार कार्यकर्ताओं की महती अपेक्षा है।"

२३ अक्टूबर/दूसरे दिन प्रातः खुले अधिवेशन का प्रारंभ मुनिश्री अरविन्द कुमार के मंगलाचरण से हुआ। अधिवेशन के इस सत्र में अणुव्रत-प्रवक्ता श्री देवेन्द्र कर्णावट, श्री चीनूभाई, श्री राधेश्याम, श्री यशवंत भाई ने

अपने उपयोगी विचारों से जनता को लाभान्वित किया । अ० भा० अणुव्रत समिति ने अमृत-कलश पदयात्रियों में से श्री पूर्णचंद वड़ाला तथा श्री रामनारायण चेचाणी को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया । श्री चेचाणी ने अणुव्रत-ग्राम स्थापना में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया ।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री ने वर्तमान की सवसे वड़ी जरूरत चरित्र को बताते हुए कहा—"आचार्यश्री ने स्वतंत्रता के साथ ही अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से यह कार्य प्रारंभ किया है । भीतर के खोखलेपन को भरने के लिए अणुव्रत बहुत उपयोगी है ।" आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के भी महत्त्वपूर्ण प्रासंगिक उद्‌वोधन हुए ।

द्वि-दिवसीय अणुव्रत अधिवेशन की सवसे वड़ी विशेपता थी शिक्षा संगोष्ठी का आयोजन । प्रधानमंत्री श्री राजीवगांधी की इस घोषणा से पूरे देश में नई नीति पर खुली वहस चल रही है—शिक्षा नीति में व्यापक फेर वदल किया जायेगा ।, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम तथा नैतिक मूल्यों को वल मिल सके "इस दृष्टि से देश के जाने-माने शिक्षा-शास्त्रियों ने परिसंवाद में "नई शिक्षा नीति" पर विचार मंथन किया । वे शिक्षाशास्त्री थे—श्री ईश्वरभाई पटेल, श्री यशवंत शुक्ल, श्री चीनुभाई, नायक, डा० दयानंद भार्गव डा० रामजी सिंह । युवाचार्यश्री के सान्निध्य में इस परिसंवाद की तीन संगोष्ठियां हुई । अधिवेशन के अंत में इस संगोष्ठी द्वारा किये गये विचार संचय को श्री रामजीसिंह ने प्रस्तुत किया । वह इस प्रकार है—

१. प्राक्कथन :

शिक्षा आज देश की ज्वलन्त समस्या है । इसका उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है, फिर भी इसका मूल प्रयोजन मानव की अन्तर चेतना को जाग्रत करना है । शिक्षा के माध्यम से आज बुद्धि और मन को तो जगाया जा रहा है लेकिन हमारे अन्तर की चेतना जागृत नहीं होती और जव तक ऐसा नहीं होता, हमारी शिक्षा शिक्षा की चुनौतियों को उत्तर नहीं दे सकती, हमारी समस्याओं का समाधान भी नहीं कर सकती । बुद्धि के विकास के साथ प्रज्ञा का उदय और संस्कार-परिष्कार के साथ सम्यक् जीवन का निर्माण आवश्यक है । शारीरिक विकास और वौद्धिक विकास के द्वारा प्रामाणिकता और कर्त्तव्यनिष्ठा पैदा नहीं की जा सकती । यही नहीं हम अपने आवेगों और संवेगों पर नियंत्रण नहीं कर सकते । बुद्धि से भाषा का

परिष्कार, तर्क शक्ति की प्रखरता और उपादेय जानकारियों की उपलब्धि तो हो सकती है किन्तु नैतिकता का विकास एवं चरित्र-निर्माण संभव नहीं है । जब तक भावना का विकास नहीं होगा, हमारे व्यक्तित्व में उदारता, सहृदयता सहिष्णुता आदि के गुण भी पल्लवित नहीं होंगे और सामाजिक सामंजस्य की कल्पना भी दिवास्वप्न रहेगी । आचारण-शून्य शिक्षण कोरी बौद्धिकता है, उससे सद्गुण और सदाचार का विकास कोई अनिवार्य नहीं है ।

शिक्षा और समाज-व्यवस्था के बीच गहरा अनुबन्ध है । दुर्भाग्य से हमारी शिक्षा समाज-व्यवस्था से कटी हुई है। इसलिए इसकी प्रासंगिकता दिनों-दिन क्षीण होती जा रही है । शिक्षा समाज-व्यवस्था के अनुरूप होकर ही प्रासंगिक होती है । इसलिये न केवल व्यक्ति के निर्माण के लिए, बल्कि समाज-व्यवस्था को युगानुरूप और गतिशील बनाने के लिए शिक्षा अत्यन्त सशक्त उपकरण है । जीर्ण-शीर्ण सामाजिक—सांस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तन तथा लोकतंत्र, समाजवाद एवं सर्व-धर्म समभाव एवं अहिंसा आदि के जीवन-मूल्यों के प्रति निष्ठा जागृत करना शिक्षा का मुख्य प्रश्न है । यदि हमारी शिक्षा व्यवस्था समाज में धर्मान्धता, अन्धविश्वास, आर्थिक विषमता, हिंसा और आतंकवाद की चुनौतियों का उत्तर नहीं दे सकती तो वह अप्रासंगिक है । वह ठीक है कि समाज में बढ़ती हुई हिंसा और विघटन के अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक कारण हैं, किंतु सबके मूल में मुख्य रूप से अभाव है, जो सामान्यतः श्रम-निष्ठा की कमी से उत्पन्न होता है । दुर्भाग्य से हमारी शिक्षा पद्धति से निकले बुद्धिजीवी श्रम से भी कतराते हैं और आचरण से भी । यदि उनकी बौद्धिकता और विशेषज्ञता में श्रम-निष्ठा और चरित्र-निष्ठा जुड़ जाती, तो समाज का स्वास्थ्य बहुत कुछ ठीक हो जाता ।

२. नैतिक ह्रास और जीवन-विज्ञान के प्रयोगों की भूमिका

नैतिक और चारित्रिक शिक्षा पर विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं विशेषज्ञ समितियों ने समय-समय पर अपनी महत्त्वपूर्ण अनुशंसायें दी हैं, किंतु उनके ठोस कार्यान्वयन का कभी गंभीर प्रयास नहीं हुआ है । आज मूल्यों की इस संकटग्रस्त स्थिति को अत्यन्त खतरनाक माना जा रहा है और शिक्षा की प्रक्रिया को सुसंगत और व्यवहार्य मूल्य—प्रणाली तथा तर्कसंगत, वैज्ञानिक एवं नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित करने की आवश्यकता को महसूस किया

जा रहा है। यह एक शुभ लक्षण है।

मूल्यों के उत्तरोत्तर ह्रास को रोकने के लिये बौद्धिक पाठ्यक्रम में भी बच्चे से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक यथायोग्य महापुरुषों की जीवनियां, महाकाव्यों से त्यागमय जीवन घटनायें, कला-साहित्य का ज्ञान, स्वातंत्र्य संग्राम के इतिहास के साथ-साथ मानवीय संस्कृति के विकास की गाथा, धर्म के मूल तत्त्वों की जानकारी, विज्ञान और अध्यात्म का सामंजस्य, तुलनात्मक धर्मदर्शन के अध्ययन आदि का समावेश अपेक्षित है, किन्तु केवल बौद्धिकता एवं विचारवादिता से भावना का विकास संभव नहीं। इसलिये हमें इसका अनुसंधान करना होगा कि हम किस प्रकार शिक्षार्थियों में नैतिकता एवं चरित्र विकसित कर सकें।

सौभाग्य से आचार्यश्री तुलसी के मार्गदर्शन में उनके पट्टशिष्य युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इस संदर्भ में "जीवन-विज्ञान" की कल्पना और योजना रखी है जो वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत तो है ही, अब प्रयोगसिद्ध भी हो चुकी है। केवल सिद्धान्त बोध के द्वारा विद्यार्थी अपनी अस्मिता को पहचान सके और सामाजिक न्याय के प्रति समर्पित हो सके, यह कम संभव है। इसके लिये सिद्धान्त एवं प्रयोग दोनों का समन्वय आवश्यक है। जीवन-विज्ञान में अध्यात्म और विज्ञान, तत्वमीमांसा और योग, मानविकी और भौतिकी, रसायनविज्ञान, मनोविज्ञान और समाजविज्ञान तथा सृष्टि संतुलनशास्त्र का समन्वय है। संक्षेप में जीवन-विज्ञान यह मानता है कि मस्तिष्क में असीम शक्ति की जागृति तनाव और थकान के बिना की जा सकती है। मस्तिष्क विद्या के अनुसार मस्तिष्क का बायां भाग तर्क, गणित, भाषा और भौतिक विचार के लिये उत्तरदायी है, उसका दायां भाग आध्यात्मिक जागृति, अन्तर्प्रज्ञा, स्वप्न और कल्पना के लिये उत्तरदायी है। अनुकंपी नाड़ी तंत्र की अति-सक्रियता से व्यक्ति आक्रामक, उद्धत एवं अशान्त रहता है, जबकि परानुकंपी नाड़ी तंत्र की अति सक्रियता से व्यक्ति डरपोक, दब्बू, हीनभावना से ग्रसित होता है। यह स्नायविक असंतुलन है। जीवन-विज्ञान इन दोनों का संतुलन कर व्यक्ति को एक शांत मानव एवं स्वस्थ नागरिक बनाता है। मनुष्य के अन्दर बुद्धि एवं संवेग में संघर्ष होता है। बुद्धि उचित अनुचित का भेद तो बता देती है किंतु संवेग ही प्रबल होकर आचरण में प्रवृत्त करता है। इसलिये ज्ञान और आचरण की दूरी बनी रहती हैं। जीवन-विज्ञान का अभ्यास संवेग को नियंत्रण में रखने की पद्धति है। उसी प्रकार संवेग निरन्तर

क्रियाशील रहते हैं जिससे शक्ति का बहुत अपव्यय होता है । अतः सक्रियता से मस्तिष्क एवं मेरु प्रणाली पर दबाव पड़ता है स्वचालित नाड़ी तंत्र भी दबाव का अनुभव करता है, जीवन-विज्ञान संवेग का भी नियंत्रण करता है । जीवन-विज्ञान के द्वारा चेतना प्रक्रिया को कम कर विश्र प्रक्रिया को बढ़ाया जा सकता है ताकि मस्तिष्क पर दबाव न पड़े। पीनियल ग्लैंड की निष्क्रियता से नियंत्रण की क्षमता और थाइमस ग्लैंड की निष्क्रियता से आनन्द की अनुभूति में कमी आ जाती है और वृत्ति बाह्यमूलक हो जाती है । हमें यह समझना चाहिये कि व्यवहार एवं आचरण का मुख्य आधार भाव-धारा है। भाव दो भागों में विभक्त है—विधेयात्मक एवं निषेधात्मक। जीवन-विज्ञान के द्वारा विधेयात्मक भाव का विकास कर निषेधात्मक भाव से मुक्ति पायी जा सकती है। इस प्रकार जीवन-विज्ञान तनाव-मुक्ति की भी प्रक्रिया है । इसके साथ स्मृति सम्वर्धन और ग्रहण क्षमता का मौलिक आधार, लयबद्धश्वास जिससे मस्तिष्क को पर्याप्त ऑक्सिजन मिल जाता है और मानसिक तनाव कम कर अध्ययनशीलता को केन्द्रित एवं प्रभावी बनाता है। संक्षेप में जीवन-विज्ञान मस्तिष्क प्रशिक्षण की वह प्रवृत्ति है जिसमें संवेग, एवं विचार—नियंत्रण की पद्धति है, जिसके सात साध्य तत्व एवं पांच साधन तत्व हैं।

भारतीय संस्कृति की परपंरा में ऋषिमुनियों ने हमारी उच्च चेतना को जगाने के लिये योग, ध्यान आदि के अभ्यास पर बल दिया है । श्रवण, मनन के साथ निदिध्यासन हमारी शिक्षा का अनिवार्य अंग था । दुर्भाग्य से आज श्रवण और पठन तक बात रह गयी। मनन और निदिध्यासन दोनों हमने भुला दिये हैं। जब तक मनुष्य की भावना नहीं बदलती या दूसरे शब्दों में जब तक उसका अन्तः परिवर्तन या हृदय परिवर्तन नहीं होता, मात्र व्यवस्था परिवर्तन से उसका बदलाव नहीं होगा । भाव-परिष्कार एवं आचरण परिवर्तन के लिये "जीवन-विज्ञान" एक अभिनव प्रयोग हैं । इसके अभ्यास से हम विद्यार्थियों में एक ओर तो उनकी स्मृति, अवधान एवं ग्रहण-शीलता को प्रखर कर सकते हैं, दूसरी ओर उनमें कर्तव्यनिष्ठा, दायित्वबोध और अनुशासन सरलता से ला सकते हैं।

अतः संगोष्ठी की यह सशक्त अनुशंसा है कि "जीवन-विज्ञान" के अध्ययन और प्रयोग को "नयी शिक्षा नीति" में प्रारंभिक स्तर से ही यथा-योग अनिवार्य स्थान दिया जाए। इससे परंपरागत धार्मिक शिक्षा को लागू करने के विवाद भी नहीं खड़े होंगे एवं भारतीय संविधान की धारा २८ का

भी किंचित् उल्लंघन नहीं होगा । जीवन-विज्ञान वास्तव में केवल नैतिक शिक्षा का ही विकल्प नहीं, यह शिक्षा को सार्थक, समयोपयुक्त एवं समग्र वनाने का एक विज्ञान है । इसमें न धर्म या अध्यात्म की एकांगिता है, न विज्ञान की। यह अन्तर विपयानुवंधी होने के कारण इसके अन्तर्गत एक साथ सामान्यीकरण एवं विशिष्टीकरण दोनों का समन्वय है। सवसे महत्त्व की वात तो यह है कि जीवन-विज्ञान अव काफी हद तक प्रयोगसिद्ध हो चुका है। जीवन-विज्ञान शिविरों में अनेकों साधु-साध्वियों एवं हजारों लोगों ने इसका लाभ तो उठाया ही है, अव तो राजस्थान सरकार ने जीवन-विज्ञान का पाठ्यक्रम प्रथम चरण में २८ माध्यमिक विद्यालयों में लागू कर दिया है। इसकी उपादेयता महसूस कर गुजरात विश्वविद्यालय ने अहमदावाद में एवं राजस्थान पुलिस अकादमी ने जयपुर में शिविर आयोजित किये । अहमदा-वाद में मेडिकल ऐसोसिएशन ने "अंतःस्रावी ग्रंथियों एवं प्रेक्षाध्यान" पर एक विशेष संगोष्ठी की। सवों को उत्साहवर्धक परिणाम मिले हैं । अव तो जीवन-विज्ञान का विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक स्तर तक एवं शिक्षकों के लिये शिक्षक-प्रशिक्षक का पूरा पाठ्यक्रम भी तैयार किया जा चुका है। इसको देखते हुए यदि भारत का कोई विश्वविद्यालय आगे वढ़कर अध्ययन एवं शोध के लिए स्नातकोत्तर डिप्लोमा या डिग्री स्तर पर जीवन-विज्ञान का पाठ्क्रम प्रारंभ कर देश को नेतृत्व दे सके तो एक वहुत वड़ा काम होगा ।

३. शिक्षा और आजीविका :

शिक्षा में जीवन-विज्ञान के साथ आजीविका का भी प्रश्न कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। शिक्षा यदि हमारी जीविका का साधन नहीं वन सकती तो शिक्षा का प्रयोजन भी सिद्ध नहीं होगा और इसलिए पद्धति में प्रवेश पाने या उसमें टिकने के लिए प्रेरणा भी नहीं रहेगी। यही कारण है कि सामजिक रूप से उसमें उपयोगी उत्पादक श्रम को शिक्षा का अनिवार्य अंग वनाना ही चाहिये। इससे एक ओर तो हम शिक्षार्थियों को आजीविका के लिये आश्वस्त कर उनमें आत्मविश्वास और स्वावलंबन की भावना का संचार कर सकेंगे, साथ-साथ व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में शरीर श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित कर ऊंच-नीच के सामाजिक भेदभाव को भी कम कर सकेंगे । श्रम जीवन का एक मूल्य है। विना हाथ-पांव हिलाये हम जी ही नहीं सकते । प्रश्न इतना ही है कि हम शरीर-श्रम को सामाजिक उपयोगिता से कितना जोड़

सकते हैं। संगोष्ठी का स्पष्ट चिंतन है कि शिक्षा को हमें हस्त-शिल्प उद्योग और व्यवसाय से जोड़ना ही होगा। हाथ-पांव पैर से काम करने वालों को केवल कर्म कौशल ही प्राप्त नहीं होता है, बल्कि श्रम का अभ्यास बहुत हद तक उसका हृदय भी शुद्ध करता है। दूसरे शब्दों में क्रियाशक्ति के विकास से हृदय या भाव-शक्ति का भी विकास होता है। इसलिए प्रायोगिकी के साथ शिक्षा का अनुबन्ध होना ही चाहिये। भारतीय संदर्भ में प्रायोगिकी को ग्राम विकास तथा सामान्य लोगों के जीवन से अधिकाधिक जोड़ना होगा। इसके लिए शिक्षा को गांवों में कृषि, पशुपालन, कुटीर एवं व्यावसायिक नगरों में कल-कारखानों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों ………से जोड़कर इसे अधिक सार्थक बनाया जाना चाहिये। इस संदर्भ में हमें शिक्षा—नीति का राष्ट्र की अर्थनीति के साथ मेल बैठाना होगा ताकि हमारे भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का सम्यक् उपयोग हो सके। जन शक्ति-योजना के साथ चूंकि हम शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक एवं उद्योग का मेल नहीं बिठा पाये। इसलिए देश की शिक्षा निर्जीव हो गयी और शिक्षित बेरोजगारी की समस्या भी विकराल बनती जा रही है। इस संबंध में समिति जहां भारत के औद्योगिक विकास का स्वागत करेगी वहां उद्योग के त्वरित आधुनिकीकरण के स्थान पर समुचित तकनीक अपनाने के लिये सरकार से आग्रह रखेगी क्योंकि भारत की विराट् जनसंख्या एवं सीमित पूंजी का खयाल रखना होगा। फिर तकनीक और प्रायोगिकी मनुष्य के लिये है, मनुष्य प्रायोगिकी के लिए नहीं।

कुछ लोगों को अभिभ्रम है कि जीविकोपार्जन की औद्योगिकी शिक्षा से साहित्यकला आदि का अध्ययन दुर्बल पड़ेगा। वास्तव में कर्म से विच्छिन्न होकर साहित्य सचमुच साहित्य कहलाने लायक नहीं रहेगा। वेद, उपनिषद आदि के रचनाकारों के जीवन में ज्ञान और कर्म अलग नहीं थे। प्राचीन युग में सुक-रात और आधुनिक युग में मस्क्यूलर ने दीर्घकालीन सैनिक जीवन व्यतीत किया। डिवी ने कार्यानुभव, क्रोमेको ने कर्म, मांटेस्सरी ने क्रिया के द्वारा शिक्षण, माओ ने आधा काम-आधा पठन (हाफ-हाफ) एवं गांधी ने उद्योग के माध्यम से शिक्षण का विचार रखा। इसलिये आभिजात्य प्रभाव के कारण शिक्षा में कर्मकौशल की जो उपेक्षा हुई है उसका प्रायश्चित्त करना ही होगा एवं हस्त-शिल्प-कृषि-उद्योग को पाठ्यक्रम एवं परीक्षा का अनिवार्य अंग बनाना होगा। प्रचलित पाठ्क्रम इतना बोझिल हो गया है कि इसमें न तो नैतिक शिक्षा और न आजीविका की शिक्षा के लिये गुंजाइश है। जिस प्रकार प्राचीन भारतीय

संस्कृति में ग्रहण शिक्षा के साथ आसेवन शिक्षा का समन्वय किया गया था। हमें भी साहस पूर्वक शिक्षा में ज्ञान के साथ कर्म को जोड़ना होगा। हां, यह ध्यान रखना होगा कि जब बच्चे छोटे हों, तो उद्योग एवं हस्त-शिल्प की शिक्षा उनके लिये बोझ नहीं, वल्कि आनन्द का पर्याय वने।

(४) शिक्षा का सार्वभौमीकरण एवं अनौपचारिक शिक्षण तथा अणुव्रत की भूमिका

मूल्यों के ह्रास एवं जीविकोपार्जन के दुर्दान्त संकट के साथ शिक्षा के सार्वभौमीकरण की समस्या शिक्षा को वड़ी चुनौती है क्योंकि संविधान में निरक्षरता निवारण के निर्देश के वावजूद भी देश में आज लगभग $\frac{2}{3}$ लोग निरक्षर हैं एवं यदि ऐसी स्थिति रही तो इस शताव्दी के अन्त तक यहां के ५४ प्रतिशत लोग निरक्षर हो जायेंगे।

इस दु:स्थिति के निवारण के लिए शिक्षा पर हमें अपनी राष्ट्रीय आय का कम से कम ७.५ प्रतिशत (जितना पहली पंचवर्षीय योजना में प्रावधान था) धन खर्च करना ही चाहिये एवं उसमें प्राथमिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार को प्राथमिकता देनी होगी। हमें यह वरावर याद रखना होगा कि शिक्षा राष्ट्र की सर्वोत्तम प्रतिरक्षा है और हमारे सामाजिक, आर्थिक विकास का भी सशक्त उपकरण है। शिक्षा का सार्वभौमीकरण केवल स्कूली शिक्षा को सशक्त करने से ही नहीं, अपितु अनौपचारिक शिक्षण को व्यापक वनाने से फलीभूत होगा। इस पवित्र काम में सरकार के साथ परिवार, स्वयंसेवी, संस्थाओं, धार्मिक-सांस्कृतिक संगठनों आदि का पुरुषार्थ लगाना चाहिये। सरकार जहां विद्यालय-भवन नहीं वना सके, वहां हम मंदिर, उपाश्रय, धर्मशालाएं एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों का उपयोग करें। अनौपचारिक शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिये निवर्तमान शिक्षकों का योगदान लेना चाहिए, क्योंकि वे दक्ष भी होंगे एवं उन पर खर्चा भी कम होगा। साक्षरता की प्रेरणा के लिए अन्य उपायों के अतिरिक्त किसी भी नौकरी या अनुदान प्राप्ति तथा वोट देने के लिये साक्षरता की योग्यता अनिवार्य कर दी जाय। अनौपचारिक शिक्षण को जीवन एवं जीवनपरक वनाने के लिये हमें इसे समाजोपयोगी तथा जीविकोपयोगी भी वनाना होगा।

लेकिन यह महसूस किया गया कि निरक्षरता का कलंक मिटाने के लिये एक कठोर राजनैतिक संकल्प एवं एक व्यापक जनान्दोलन आवश्यक है।

इसके लिये तकनिकी एवं शिल्प संस्थानों को छोड़ कुछ समय तक देश के सभी शिक्षण संस्थानों को बंद करके ३५ लाख शिक्षकों, लगभग एक करोड़ विश्व-विद्यालय के विद्यार्थियों एवं राष्ट्र के समस्त स्वयंसेवी एवं धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाओं की सम्मिलित शक्ति को संयोजित कर युद्ध स्तर पर १ वर्ष के भीतर निरक्षरता-निवारण का कार्य पूरा किया जा सकता है। जिस प्रकार गुजरात में शिक्षण-नवनिर्माण दल बना है, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर एक शिक्षा सेना बनाकर यह अभियान किया जाए।

यह संतोष और हर्ष की बात है कि अणुव्रत आन्दोलन विगत कई दशाब्दों से नैतिक-आध्यात्मिक जागरण के द्वारा अनौपचारिक रूप से लोक-शिक्षण का एक महान् कार्य रहा है। इस अमृत वर्ष में अणुव्रत आन्दोलन ने निरक्षरता निवारण का पुनीत कार्य अपने कार्यक्रमों में विशेष रूप से जोड़कर भारत की अन्य स्वयंसेवी एवं धार्मिक सांस्कृतिक संस्थाओं के लिये एक उदाहरण एवं आदर्श प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रीय परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण चिंतन

संसद सदस्य श्री रामचंद्र विकल अणुव्रत-कार्यक्रमों से प्रारंभ से जुड़े हुए हैं तथा उसमें रुचि भी लेते हैं। दिल्ली में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में प्रायः सम्मिलित होते हैं। समय-समय पर आचार्यवर के सान्निध्य में भी समुपस्थित हो जाते हैं। अमृत-महोत्सव कार्यक्रम में भी उन्होंने भाग लिया। श्री विकल का जन्मदिन राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। आचार्यवर ने इसके लिए एक संदेश भी प्रदान किया। उन्होंने विकलजी के जन्मदिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने को वर्तमान की राष्ट्रीय परिस्थितियों में एक महत्त्वपूर्ण चिंतन बताया।

जैन विद्या परिषद

२६ अक्टूबर / त्रिदिवसीय जैन विद्या परिषद का आज प्रातः आचार्य-वर के सान्निध्य में उद्घाटन हुआ। इस परिषद् में साधु-साध्वियों, समणियों तथा समागत विद्वानों ने अपने शोध पत्र पढ़े। सभी शोध पत्रों का मुख्य प्रति-पाद्य था—पंचम अंग सूत्र भगवती। इस परिषद् के संयोजक थे श्री माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्यश्री महावीर राज गेलड़ा। जैन विश्व भारती के द्वारा आयोजित इस परिषद् का प्रारंभ समणी वृन्द की प्राकृत भाषा की श्रुत अभिवंदना से हुआ। भीलवाड़ा महाविद्यालय के प्रवक्ता

डा० डी० सी० जैन ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में जैन विद्या परिषद् का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। परिषद् के संयोजक श्री गेलड़ा ने स्वागत-भाषण किया। समणी सुप्रज्ञा ने २५ अक्टूबर को उदयपुर में हुए राजस्थान व्याख्याता संघ के समापन समारोह की चर्चा की। राजस्थान के ग्रामीण विकास एवं पंचायत राजमंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने इस कार्यक्रम को महत्त्वपूर्ण बताते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

तीन दिनों में आठ सत्रों के अन्तर्गत इस पहले सत्र में सुखाड़िया विश्वविद्यालय के व्याख्याता डा० प्रेमसुमन जैन ने 'भगवती सूत्र में प्रतिपादित धार्मिक उदारता' विषय पर अपना शोध प्रबन्ध पढ़ा।

युवाचार्यश्री ने इस उद्‌घाटन सत्र में कहा—'भगवती सूत्र का मूल नाम व्याख्या प्रज्ञप्ति है। इस का गाथा परिमाण है २०,००० पद्य। इस सूत्र में समागत 'जाव' शब्द की संपूर्ति की जाये, तो सवा लाख पद्य परिमाणकी बन जाती है इसलिए इसको 'सवालक्खी' भी कहा जाता है। संवाद शैली का ग्रन्थ होने से इसको 'व्याख्या-प्रज्ञप्ति' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। इस सूत्र में श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार ३६,००० प्रश्नोत्तर, जबकि दिगंबर मान्यता के अनुसार ६०,००० प्रश्नोत्तर है। इस ग्रन्थ में तत्त्वों तथा सिद्धान्तों का सुन्दर विवेचन है ही, साथ में दुनिया के ज्ञान-विज्ञान का शायद ही कोई विषय अछूता रहा हो, जिसका थोड़ा-बहुत वर्णन इस महान् ग्रंथ में न हुआ हो। इस ग्रंथ में कई विषय ऐसे हैं, जो पर्याप्त वैज्ञानिक खोज मांगते हैं, जिनसे दुनिया को एक नूतन आलोक मिल सकता है।'

तेरापंथ के चतुर्थ आचार्यश्री जयाचार्य ने राजस्थानी भाषा में इस गूढ़ ग्रंथ को पांच सौ एक गीतिकाओं में आबद्ध किया है। 'भगवती री जोड़' नामक गेय काव्य ८०,००० पद्य परिमाण है। इसका जिक्र करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—जयाचार्य ने इस सूत्र के गूढ़ रहस्यों का मार्मिक वर्णन किया है। आज अगर पांच-दस जयाचार्य जन्म लें तब कहीं जाकर इस भगवती सूत्र के थोड़े-बहुत रहस्यों का आधुनिक संदर्भ में उद्‌घाटन हो सकता है।'

आचार्यवर ने अपने आशीर्वचन में कहा—'भगवती एक ऐसा आगम ग्रंथ है, जिसमें अढाई हजार पूर्व ही असाम्प्रदायिक धर्म की विवेचना दी है। उसके पुष्ट प्रमाण हैं—मिथ्यादृष्टि का देशाराधकत्व, असोच्चा केवली का प्रकरण आदि।'

आज के कार्यक्रम में महन्तश्री जयरामदास भी उपस्थित थे। इस तरह यह प्रथम सत्र सानंद संपन्न हुआ। मध्याह्न के सत्रों को छोड़कर शेष सभी सत्र खुले चले। प्रत्येक सत्र की अध्यक्षता पृथक्-पृथक् विद्वानों ने की और उन अध्यक्षों ने अपने-अपने सत्र की कार्यवाही का कुशल संचालन किया। विद्वज्जनों ने पूर्व निर्धारित विषयों पर शोधपत्र पढ़े। समस्त सत्रों का विवरण इस प्रकार है—

सत्र-२, मध्याह्न २ से ४.३०,

अध्यक्ष—डा० नथमल टांटिया, निदेशक, शोध विभाग, जैन विश्व भारती, लाडनूं

वक्ता	विषय
१. मुनिश्री श्रीचंद्र 'कमल'	पर्व तिथियों में हरियाली खाने का निषेध क्यों ?
२. साध्वीश्री कनकश्री	महावीर की अनुशासन-पद्धति
३. साध्वीश्री निर्वाणश्री	लोकस्थिति के मूल-तत्व एवं प्रदूषण
४. श्री रमेशचंद जैन (उज्जैन)	भगवती में गणित एवं उपमेय

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के शिक्षा एवं चिकित्सा मंत्री श्री हीरालाल देवपुरा ने भी अपने विचार रखे। युवाचार्यश्री ने अपने सत्रान्त भाषण में कहा—यह आश्वासन देना 'हम तुम्हें ज्यादा सुविधा देंगे' एकदम गलत है। यह आश्वासन दिया जा सकता कि हम तुम्हें मरने नहीं देंगे, आजीविका के साधन उपलब्ध करायेंगे। अनावश्यक सुविधाओं की प्राप्ति, सुविधावाद को बढ़ावा, शस्त्रों का निर्माण—प्रदूषण को बढ़ाने में अधिक मददगार साबित हो रहे हैं।' इस अवसर पर आचार्यवर का भी उद्बोधन हुआ।

सत्र-३, रात्रि—८ से ६.४५

अध्यक्ष—डा० प्रेमसुमन जैन

१. श्री कमलेश कुमार जैन (बनारस)	श्रमण परम्परा में संवर
२. मुनिश्री उदित कुमार	श्वास-प्रेक्षा: प्राचीन और आधुनिक संदर्भ में
३. डा० प्रेमचंद रांका (जयपुर)	जैन दर्शन में शरीर-निरूपण
४. मुनिश्री धनन्जयकुमार	सार्वभौम धर्म का घोषणापत्र
५. आचार्यश्री, युवाचार्यश्री	उद्बोधन

सत्र—४, २७ अक्टूबर, प्रातः ९ से ११.३० बजे

अध्यक्ष—डा० महावीर राज गेलड़ा।

१. मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' — महावीर का सम्प्रदायातीत दृष्टिकोण
२. समणी कुसुमप्रज्ञा — गर्भ प्रज्ञप्ति

इस सत्र में 'विदेशों में जैन धर्म' विषय पर विदेश-यात्रा करने वाले विद्वानों ने अपने विचार रखे। वे विद्वान थे—डा नथमल टांटिया, डा० प्रेमसुमन जैन (उदयपुर), डा० महावीर राज गेलड़ा, समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञाजी। अंत में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक प्रवचन हुए।

सत्र—५, मध्याह्न २ से ४.३०

अध्यक्ष—साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

१. साध्वीश्री जिनप्रभा — महावीर चौवीसवें तीर्थंकर क्यों ?
२. साध्वीश्री अशोकश्री — 'माहण' शब्द : एक विमर्श
३. समणी स्मित प्रज्ञा — चेतन और अचेतन का संबंध कैसे ?
४. डा० नन्दलाल जैन (रींवा) — सूत्रों में लम्बाई की ईकाई
५. आचार्यश्री, युवाचार्यश्री — उद्वोधन

सत्र—६, रात्रि ८ से ९.४५

अध्यक्ष—डा० रमेशचंद जैन

१. डा० प्रेमचन्द जैन (जयपुर) — जमाली और बहुतरवाद
२. डा० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' (बनारस) — भगवती में उल्लिखित पार्श्वस्थल एवं पार्श्वापत्यीय श्रमण।
३. मुनिश्री प्रशान्तकुमार — ज्ञान और चरित्र का संबंध

डा० नथमल टांटिया ने शोध के अनुभव सुनाये। युवाचार्यश्री एवं आचार्यश्री के उद्वोधन हुए।

सत्र—७, २८ अक्टूबर, प्रातः ९ से ११

अध्यक्ष—श्री नन्दलाल जैन

१. मुनिश्री राजेन्द्रकुमार — क्या आत्मा शरीर-परिमाण है ?
२. साध्वीश्री मधुस्मिता — भगवती में मैत्री के तत्त्व
३. डा० महावीर राज गेलड़ा — क्या चन्द्रमा में देवता हैं ?
४. समणी अक्षयप्रज्ञा — देवता भी बूढ़े होते हैं ?
५. समणी मुदित प्रज्ञा — भगवान महावीर: एक परामनोवैज्ञानिक

६. समणी सुप्रज्ञा	सुख:दुख की अवधारणा
७. मुनिश्री मुदित कुमार	आगम की व्याख्या पद्धति और नयवाद
८. साध्वीश्री विमलप्रज्ञा	कर्म-फल भोगना अनिवार्य-एक विमर्श पर
९. साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा	पर्याय की अपेक्षा नास्तित्व: स्रोत की खोज।

सत्र-८ ; मध्यान्ह २ से ४
अध्यक्ष—श्री डी० सी० जैन

इस सत्र में जैनविद्या परिषद का समापन-कार्यक्रम था। श्री डी०सी० जैन ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। श्री फूलचंद जैन, डॉ० प्रेमसुमन जैन, श्री नंदलाल जैन, डॉ० नथमल टॉटिया ने अपने अनुभव सुनाये, साथ ही कुछ सुझाव भी दिये। आचार्यवर, युवाचार्यश्री तथा साध्वी प्रमुखाश्री के भी दीक्षांत भाषण हुए। डॉ० महावीरराज गेलड़ा ने आभार प्रदर्शन किया। बीकानेर के श्री अनूपचंद बोथरा की ओर से समागत विद्वानों को साहित्य भेंट किया गया।

तीन दिवसीय इस जैन विद्या परिषद के आठ सत्रों में २६ शोधपत्रों का वाचन हुआ। उन शोध पत्रों को प्रस्तुत करने वाले थे—६ मुनि, ६ साध्वी ५ समणी, ८ विद्वान। प्रत्येक शोध-पत्र के वाचन के बाद प्रश्नोत्तर का क्रम चलता। शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता उन प्रश्नों का पूरी कोशिश के साथ समाधान देते। युवाचार्य श्री उन समाधानों को सजाने, संवारने, विस्तार देने, विवेचना प्रस्तुति का महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित करते। इस जैन विद्या परिषद् के समायोजन से साधु-साध्वियों व समणियों में नये उत्साह का संचार हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्रों में आचार्यवर का आशीर्वाद, सतत प्रेरणा व प्रोत्साहन तथा युवाचार्यश्री का निरन्तर मार्गदर्शन व परिश्रम स्पष्ट बोल रहा था। युवाचार्य श्री ने अपना पूरा समय ही साधु-साध्वियों व समणियों के लिए समर्पित कर दिया। शोध पत्र के बिन्दु, कच्चा चिट्ठा, अंतिम रूप सब कुछ युवाचार्यश्री की दृष्टि में होकर गुजरे। श्री गेलड़ा व श्री डी० सी० जैन ने परिषद् की संपूर्ण कार्यवाही का सांगोपांग संचालन किया।

जीवन-विज्ञान पर शिक्षा संगोष्ठी

अमृत-महोत्सव का यह ऐतिहासिक वर्ष जीवन-विज्ञान वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष आचार्यवर के सान्निध्य में तथा युवाचार्यश्री के निर्देशन में जीवन-विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुआ। इस कार्यक्रम

से राजस्थान सरकार प्रभावित हुई और उसने भीलवाड़ा तथा आमेट में दो जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये। ४० स्कूलों के दो-दो अध्यापकों को जीवन-विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया।

जीवन-विज्ञान के संदर्भ में ७ नवम्बर को आचार्यवर की पावन सन्निधि में युवाचार्य श्री के निर्देशन में एक प्राथमिक एवं औपचारिक शिक्षा संगोष्ठी आयोजित की गई। यह संगोष्ठी ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा समायोजित थी। जिसके अध्यक्ष थे राजस्थान के ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय। संगोष्ठी में पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री प्रख्यात शिक्षाविद् श्री कालूलाल श्रीमाली, मेवाड़ मण्डलेश्वर मुरलीमनोहर शरण, पंचायती राज राज्य मंत्री श्री महेन्द्र कुमार परमार, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज निदेशक श्री लक्ष्मीचंद गुप्ता, विकास आयुक्त श्री तेजकुमार, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के निदेशक श्री भंवरलाल शर्मा, उदयपुर की विधायिका गिरिजा व्यास तथा पंचायत समितियों के पंच, सरपंच एवं जिला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया।

साध्वी वृन्द के मंगलाचरण से प्रातः कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। डॉ० डी० सी० जैन के संजोयकीय वक्तव्य के पश्चात् श्री लक्ष्मी गुप्ता ने कहा—शैक्षिक जगत् में प्राथमिक शिक्षा विकास की आधारभूत नींव है। उस शिक्षा से बच्चे अधिक से अधिक लाभान्वित हों, यह ग्राम पंचायतों का लक्ष्य है। मैं आचार्यजी से राजस्थान के शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए मार्गदर्शन देने का निवेदन करता हूं।"

डॉ० श्रीमाली ने प्रत्येक नागरिक को साक्षर बनाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। गिरिजा व्यास ने इक्कीसवीं सदी में नैतिक, आध्यात्मिक, एवं सांस्कृतिक, गति-प्रगति के साथ प्रवेश करने की बात कही।

श्री मुरली मनोहर शरण ने कहा—"वर्तमान में शिक्षा से आनन्दानुभूति होने का एक मात्र कारण है कि हमने परमात्मभाव की लौ को बुझा दिया है। प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में आवश्यक है कि पहले माताओं को शिक्षित बनाया जाय, तब घर सरस्वती का मंदिर बन जाएगा।"

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में कहा—"प्राथमिक शिक्षा बीज वपन का अवसर है, संस्कार निर्माण और व्यक्तित्व निर्माण का समय है। मनोवैज्ञानिकों ने जीवन के निर्माण में शिशु अवस्था को महत्वपूर्ण माना है।

व्यक्तित्व का निर्माण उसी समय होता है। आज बच्चों पर पुस्तकों का भार ज्यादा है। अपेक्षा है पुस्तकों के भार को कम कर शिक्षा को रुचिकर और आकर्षक बनाया जाये। शिक्षा के साथ श्रम, स्वास्थ्य, बुद्धि और चरित्र विकास को जोड़ दिया जाए तो वह संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती है।" युवाचार्य श्री ने विस्तार से जीवन-विज्ञान पर प्रकाश डाला।

आचार्यश्री ने अपने समापन-भाषण में कहा—"शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को जीवन-निर्माण के लिए प्रायोगिक उपक्रम सिखाये जाएं, जिससे ज्ञान के साथ चरित्र का विकास होगा। इसलिए शिक्षा नीति में जीवन-विज्ञान का समावेश किया जाये। साइन्स में जैसे पढ़ने के साथ प्रयोग करने होते हैं। ऐसे ही जीवन-विज्ञान में पढ़ना कम और प्रयोग अधिक हैं। प्रायोगिक शिक्षा से ही हमारी शिक्षा संपूर्ण बनेगी।"

मध्यान्ह में विचार-संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें शिक्षा सचिव सहित अनेक जिला अधिकारी तथा अध्यापक बंधुओं ने भाग लिया। इस विचार-संगोष्ठी का संयोजन मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने किया। बोलने के लिए एक-एक अधिकारी आ रहे थे। उनके पैरों में चप्पल देखकर मंत्री महोदय ने कहा—"आज की यह संगोष्ठी सचिवालय या किसी होटल में नहीं हो रही है, एक महान् आचार्य की सन्निधि में हो रही है। हमें हमारी संस्कृति का ख्याल रखना होगा। मैंने तो अपनी चप्पल पहले से ही कार में छोड़ रखी है। कृपया, आप भी अपने चप्पल, जूते खोलकर बोलने को आये। देखते-देखते सबके जूते खुल गये। तीन घंटे चली यह विचार संगोष्ठी काफी महत्वपूर्ण रही। शैक्षिक संस्थान के निदेशक श्री भंवरलाल शर्मा ने आभार ज्ञापन किया। जीवन-विज्ञान पाठ्यक्रम को गतिशील बनाने के लिए यह गोष्ठी एक मील का पत्थर बनी।

अहिंसा सार्वभौम दिवस

१४ नवम्बर/आज कार्तिक शुक्ला द्वितीया थी। आचार्यवर आज ७२ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे थे। आज का दिन पूरे देश में अहिंसा सार्वभौम दिवस के रूप में मनाया गया। प्रातः ५ बजे सभी साधुओं की उपस्थिति मे श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने समूचे धर्म संघ की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए कहा—

शतशाखो यतो जातः संघः कल्पतरुर्महान् !
शतजीवी चिरं भूयात्, आचार्यस्तुलसीप्रभो ! ॥१॥

सोच्छ्‌वासा विजयोल्लासा, सापेक्षा सुसमन्विता।
सायासा सहजानन्दा, श्री धी कीर्तिः प्रवर्धताम् ॥२॥

आशुकविता से रचे श्लोकों की व्याख्या करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"आचार्यश्री ने इस संघ को अनेकों क्षेत्रों में प्रगति का अधिकार दिया है। उनके प्रयत्न, पुरुषार्थ और आशीर्वाद से ही संघ वहु आयामी गति कर पाया है। विद्या, साहित्य, संस्कृति, कला और योग आदि क्षेत्रों में संघ ने अभूतपूर्व प्रगति की है। धर्मसंघ रूपी कल्पतरु को आचार्यश्री ने शतशाखी वनाया है। इस शुभ अवसर पर हम कामना करते हैं कि आचार्यश्री शतजीवी वनें और उन्होंने संघ को जो विशिष्टता प्रदान की है, उसे हम निरंतर बढ़ाते रहें।"

युवाचार्य श्री ने आगे कहा—"आचार्यश्री ने धर्मसंघ को नए-नए उन्मेष दिए हैं। उन उन्मेषों और सपनों को क्रियान्वित कर धर्मसंघ को अपूर्व प्रतिष्ठा और विजय के उल्लास से भरा है। उनके सारे कदम सुसमन्वित और सापेक्ष हैं। नए-नए आयामों को मूर्त रूप देने में आचार्यश्री ने अनथक श्रम किया है। फिर भी वे सहजानन्द से परिपूर्ण हैं। इसीलिए उन्होंने श्री, बुद्धि और कीर्ति के अप्रतिम शिखर को छुआ है हम यह अभ्यर्थना करते हैं कि उन-का यह जन्म दिन हमारे धर्मसंघ की तेजस्विता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो।"

धर्मसंघ के अभिनन्दन को हृदय से स्वीकार करते हुए परमाराध्य आचार्य प्रवर ने कहा—अभी हम सव महाप्रज्ञजी को सुन रहे थे। उन्होंने मेरे अवदानों की चर्चा की। अनेक मनीषियों ने संघ की प्रगति का सारा श्रेय मुझे दिया है। पर मैं मानता हूं कि मैंने जो कुछ किया है, उसमें (युवाचार्यश्री और साध्वीप्रमुखाजी का) यह विरल योग कार्यकारी रहा है। विनीत, प्रवुद्ध और समर्पित साधु-साध्वी, श्रावक,-श्राविका परिवार ने मुझे वहुत कुछ कर गुजरने का साहस और आधार दिया है। इन सवके सहयोग से मैं अपने जीवन के क्षणों का सार्थक उपयोग कर पाया हूं। मैंने कभी यह नहीं चाहा कि मैं अकेला आगे वढ़ूं। यह मेरी अभिप्सा रही कि मैं भी आगे वढ़ूं और संघ भी आगे वढ़े।"

प्रातः प्रभात जागरिका निकाली गई, जिसमें सैंकडों स्त्री-पुरुषों ने सोत्साह भाग लिया। प्रातः ९.३० वजे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अनेकों ने आचार्यवर को कविता, मुक्तक, गीतिकाओं के द्वारा भावाञ्जलि समर्पित की।

वरिष्ठ श्रावक श्री कजोडीमल बोहरा ने आमेट में अमृत-विद्या-पीठ की स्थापना एवं उसके निर्माण के लिए एक लाख रुपये की राशि आमेट तेरापंथी सभा द्वारा प्रदान करने की घोषणा की। साध्वियों ने आचार्य-अर्चना में सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। समणी कुसुम प्रज्ञा ने आज के इस जन्म दिन पर समण श्रेणी के जन्म की याद दिलाते हुए इस श्रेणी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद मांगा। अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी, मंत्री श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट, महंत श्री जयरामदासजी ने अपने विचार रखे।

राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति श्री जनार्दनराय नागर ने कहा—"गांधी के बाद अहिंसा के क्षेत्र में आचार्यश्री तुलसी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। गांधीजी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग बताया, पर व्रत नहीं। आचार्यश्री ने उसे जीवन में उतारने के लिए व्रत की बात कही।"

साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने विचारों की प्रस्तुति के बाद एक कलात्मक डिब्बा श्री चरणों में भेंट किया। उस डिब्बे में आचार्यश्री का एक भोजन पात्र (तासक) माला आदि आवश्यक वस्तु थी। इन उपहारों का साध्वी प्रमुखाश्री ने परिचय दिया तथा आज के दिन प्रदत्त आचार्यवर के विशेष संदेश का भी वाचन किया।

युवाचार्यश्री ने आज के दिन को पवित्र व पुलकन का दिन माना। उन्होंने कहा—"आचार्यश्री की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे विकास के पथ पर अकेले नहीं बढ़े, पूरे संघ को साथ बढ़ाया। आचार्यश्री ने अपने मंगल-संदेश में कहा—"मैंने इन साठ वर्षों में दो प्रमुख कार्य किये हैं। मूर्च्छा का परित्याग और ज्ञान की आराधना। मूर्च्छा के परित्याग के कारण ही निंदा और प्रशंसा दोनों स्थितियों में समान रूप से गति कर सका।"

श्री गुलजारीलाल नन्दा को अणुव्रत पुरस्कार

जय तुलसी फाउन्डेशन द्वारा विगत कुछ वर्षों से नैतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। इस वर्ष का यह पुरस्कार निःस्वार्थ देश सेवा में लगे, दो बार भारत के प्रधानमंत्री रह चुके, साफ-सुथरे व्यक्तित्व के धनी श्री गुलजारीलाल नन्दा को प्रदान करने की घोषणा की गई।

उक्त घोषणा आचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित इस जन्म दिन समारोह में फाउन्डेशन के उपाध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया ने की। इससे पूर्व

यह पुरस्कार विख्यात वैज्ञानिक स्व० डा० आत्माराम, साहित्यकार एवं चिन्तक श्री जैनेन्द्र कुमार, शिक्षा सेवी श्री दौलत सिंह कोठारी एवं सादगी की प्रतिमूर्ति श्री शिवाजी भावे को मिल चुका है। अणुव्रत पुरस्कार एक पुरस्कार न होकर समाज एवं राष्ट्र सेवा में लगे मूक एवं समर्पित व्यक्तित्व के पुरुषार्थ का अंकन मात्र है। अणुव्रत आन्दोलन पिछले सैंतीस वर्षों से नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों के प्रसार में लगा एक रचनात्मक आन्दोलन है, और अणुव्रत पुरस्कार भी इन्हीं भावनाओं को कार्यरूप देने वालों का एक भावनात्मक सम्मान है। यह पुरस्कार मर्यादा-महोत्सव पर प्रदान किया जाता है।

श्री नन्दा अणुव्रत आन्दोलन के बहुत निकट रहे हैं। उन्होंने आचार्य तुलसी से मिलकर इस आन्दोलन को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। श्री नन्दा जैसे व्यक्ति ही वास्तविक अणुव्रती कहलाने के पात्र हैं। दो बार प्रधानमंत्री बनने के बावजूद चाहे कुछ दिनों के लिये ही सही, वह अपने लिए एक ऐश्वर्य पूर्ण जीवन का इंतजाम नहीं कर पाये। दो-दो बार गृहमंत्री, योजनामंत्री और रेलमंत्री रहे। श्री नन्दा आजकल मात्र साढे सात सौ रुपये में नई दिल्ली में अपना गुजारा कर रहे हैं। ढाई सौ रुपये स्वतंत्रतासेनानी पेंशन और पांच सौ रुपये सांसद पेंशन ही मात्र उनकी आय के साधन हैं। बड़े ही सादगी एवं समर्पण भाव से अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व द्वारा राष्ट्र एवं समाज की सेवा रहे हैं। उनके कार्यों एवं विचारों पर गांधीजी की अमिट छाप है, गांधीवादियों की असली नस्ल के गिने-चुने लोगों में श्री नन्दा प्रमुख हैं।

१८ नवम्बर/चातुर्मास में चल रही 'जैन विद्या ८५' की परीक्षा स्थानीय हायर सैकेण्डरी स्कूल में हुई, इस परीक्षा में कुल ८२ परीक्षार्थी थे। रात्रि में संस्कार निर्माण शिविर के समापन का कार्यक्रम था। शिविर में ६२ छात्र-छात्राएं थीं। शिविर-संचालक श्री हस्तीमल सेठिया ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

२० नवम्बर/मध्याह्न दीक्षार्थिनी बहिनों की शोभायात्रा निकाली गई। भव्य एवं विशाल यह शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई पुनः अमृत-समवसरण में पहुंची। शोभायात्रा में कई झांकियां भी थीं। रात्रि में दीक्षार्थिनी बहिनों का विदाई-कार्यक्रम था। मुमुक्षु बहिनों के संचालन में चलने वाले इस कार्यक्रम में दीक्षार्थिनी बहिनों के पारिवारिक जनों, मुमुक्षु बहिनों के प्रासंगिक भाषण एवं गीतिकाएं हुई।

दीक्षा समारोह

२१ नवम्बर/प्रातः ९ बजे समायोजित दीक्षा कार्यक्रम का प्रारंभ समणी वृन्द के मंगलाचरण से हुआ। इस शुभ समारोह में श्री कन्हैयालाल हीरावत ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार लिया। युवासंतों के गीत के बाद 'दीक्षा क्या है?' विषय पर साध्वीश्री जिनप्रभा का वक्तव्य हुआ। श्री कन्हैयालाल कच्छारा द्वारा स्वागत भाषण, मुमुक्षु लेखा द्वारा दीक्षार्थिनी बहिनों का परिचय प्रस्तुत किया गया। दीक्षार्थिनी बहिन मुक्ता के वक्तव्य के बाद मंहत श्री जयरामदास ने बहिनों को शुभकामनाएं दीं। श्री अर्जुन बाफणा ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। चंद पुस्तक समर्पण के बाद मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' का नया मोड़ पर वक्तव्य हुआ। मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' के वक्तव्य के पश्चात् युवाचार्यश्री का मंगल उद्बोधन हुआ। आचार्यवर की पावन सन्निधि में युवाचार्यश्री ने आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए पांचों दीक्षार्थिनी बहिनों का दीक्षा-संस्कार संपन्न किया। लगभग दस हजार की विशाल उपस्थिति में आचार्यश्री ने नव दीक्षित साध्वियों को कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षायें दीं। सिंघी परिवार से कुमारी स्नेहलता की तेरापंथ में प्रथम दीक्षा है। दीक्षार्थिनी बहिनों का परिचय इस प्रकार है।

क्र० सं०	पूर्व नाम	साध्वी नाम	अध्ययन	संस्था में
१.	श्रीमती दीपमाला (धूलिया)	साध्वीश्री दीपयशा	स्नातक द्वितीय वर्ष	४ वर्ष
२.	श्रीमती लक्ष्मी (रतननगर)	साध्वीश्री लोकयशा	प्राग् स्नातक 'क'	१ १/४ ,,
३.	कुमारी मुक्ता (गांधीधाम)	साध्वीश्री मंगलयशा	स्नातक तृतीय वर्ष	५ ,,
४.	कुमारी माधुरी (गंगाशहर)	साध्वीश्री मधुरयशा	स्नातक प्रथम वर्ष	४ १/२ ,,
५.	कुमारी स्नेहलता (धूलिया)	साध्वीश्री सौम्ययशा	स्नातक द्वितीय वर्ष	३ ,,

२२ व २३ नवम्बर को प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारम्भ में साध्वियों की गीतिकाएं हुईं। साध्वीश्री विमलप्रज्ञा के प्राग् वक्तव्य के बाद आचार्यवर का उद्बोधन हुआ। २२ को 'बासठिया', 'बावन बोल' थोकड़ों का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-

छात्राओं को पुरस्कार दिया गया।

२४ नम्बर/आज रविवारीय प्रवचनमाला के अन्तर्गत 'रूढ़ि मुक्त समाज और धर्म' विषय रखा गया, जिसमें प्रमुख वक्ता थे भीलवाड़ा भारतीय जनता पार्टी के संयोजक श्री पारसमल रांका। आचार्यवर ने अपने उद्‍बोधन में कहा—'धर्म व्यक्तिगत होता है, पर उसका प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। व्यक्तिगत धार्मिक जीवन का सही प्रशिक्षण तो समूह में ही होता है। आज समाज में अनेकों विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं। उनको समूल मिटाना नितान्त अपेक्षित हैं क्योंकि रूढ़ि मुक्त समाज ही आसानी से धर्म का आचरण कर सकता है।'

मध्याह्न में जैन विश्व भारती द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली जैन विद्या परीक्षाओं का दिन था। आमेट की अनेकों छात्र-छात्राओं ने परीक्षायें दी। आमेट कस्बे के तीन भाग हैं—स्टेशन, जहां चातुर्मासिक प्रवेश के पूर्व एक दिवसीय प्रवास हो चुका था। दूसरा भाग लक्ष्मीबाजार, जहां आचार्यवर का चातुर्मास है। तीसरा भाग—गांव, जहां आचार्यवर का रात्रिकालीन प्रवास अभी तक हुआ नहीं था। गांववासियों के विशेष निवेदन पर आचार्यवर का आज रात्रिकालीन प्रवास गांव में हुआ। पहले सायं चार बजे श्री कजोड़ीमल बोहरा के मकान में पधारे। इनके मकान में बहुत लंबे अर्से से साधु-साध्वियों के चातुर्मास होते रहे हैं। पूरा परिवार निष्ठाशील है। रात्रि कार्यक्रम रावले में हुआ। विषय था 'बदलता युग-राष्ट्रीय चरित्र'। विषय प्रवेश किया मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने। खचाखच भरे रावले के मैदान में युवाचार्यश्री ने उपस्थित जनसमूह से आन्तरिक परिवर्तन पर बल दिया। आचार्यश्री ने प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। कंवर प्रतापसिंह ने आचार्यवर के रावला पधारने पर हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

२५ नवंबर/प्रातः आचार्यवर अखाडा पधारे। महंतश्री जयरामदास ने भावभीना स्वागत किया। करीब आधा घंटे सौहार्दपूर्ण वातावरण में बातचीत हुई। उन्होंने अपने को अणुव्रत कार्यक्रम में समर्पित रहने का वचन दिया। महंतजी आचार्यश्री तुलसी स्वागत समिति के अध्यक्ष हैं। उनके मन में आचार्यश्री के प्रति गहरी आस्था है। पूरे चातुर्मास में उन्होंने भरपूर सहयोग दिया। प्रत्येक कार्यक्रम में वे निष्ठा के साथ शामिल होते। उनकी भाषण शैली रोचकता एवं माधुर्य लिये हुए थी।

जोधपुर से श्री इन्द्रचंद सिंघी के नेतृत्व में पूरा सिंघी परिवार शोक

विमुक्ति हेतु आया। उनके पिता श्री हणूतराज सिंघी का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। मध्याह्न में पूरा परिवार आचार्यवर के उपपात में बैठा था। बातचीत के बीच श्री मनोहरमल लोढा ने आचार्यवर से निवेदन किया—गुरुदेव ! इस परिवार में बटवारे को लेकर झंझट चल रहा है। एक भाई तो चल बसे, पर झगड़ा समाप्त नहीं हुआ। आप कुछ मार्गदर्शन करें, जिससे इनमें पुनः सामंजस्य स्थापित हो जाये।' आचार्यवर ने सारी बात सुनी। शिक्षा फरमाई। दोनों ओर परिवर्तन आया। भाई पारसमलजी तथा श्री इन्द्रमल के पुत्रों ने जमीन आदि मामलों को वहीं सलटाया और वर्षों से चले आ रहे विवाद का चंद क्षणों में शमन हो गया।

मध्याह्न २ बजे एक विशेष कार्यक्रम आयोजित था। वह कार्यक्रम था—अमृत स्तंभ व तुलसी अमृत विद्यापीठ का शिलान्यास। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त डा० दौलतसिंह कोठारी इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि थे। अमृत-स्तम्भ का शिलान्यास श्री शंकरलाल कोठारी तथा अमृत विद्यापीठ का श्री गुलाबचंद लोढा ने किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी, श्री के० एल० कोठारी, श्री सोहन लाल चंडालिया, श्री कन्हैयालाल बाफणा, महंतश्री जयरामदास ने अपने विचार रखें। श्री डी० एस० कोठारी ने शिक्षा का मूल आधार संयम बताते हुए शिक्षा को सद्-संस्कारों की जननी बताया।

अपने उद्बोधन में आचार्यवर ने कहा—'रचनात्मक कार्यक्रम का अपना महत्त्व होता है। ऐसे कार्यक्रमों से हमारा कोई सीधा संबंध नहीं होता। शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने प्राथमिक कार्यक्रम की बात हाथ में ली है। यह कार्य बच्चों को संस्कारी बनाने की दृष्टि से उपयोगी है। ऐसे संस्थानों में संस्कार देने के लिए जीवनदानी कार्यकर्ताओं की महती आवश्यकता है।'

२६ नवंबर/आज चातुर्मासिक चतुर्दशी थी। लोगों की महती उपस्थिति में बड़ी हाजरी का नयनाभिराम दृश्य देखने को मिला। श्री रायचंद गादिया (रामसिंहजी का गुड़ा) ने सपत्नीक ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। आचार्यवर ने मर्यादा की महत्ता पर प्रकाश डाला। सभी साधु-साध्वियों ने आचार्यश्री के आह्वान पर खड़े-खड़े मर्यादाओं में समागत संकल्पों का उच्चारण किया।

नाम काम आया

दक्षिण के वरिष्ट कार्यकर्ता श्री सोहनराज चंडालिया द्वारा मद्रास

से प्रेषित एक पत्र मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने परिषद् में सुनाया। उस पत्र में लिखा था—तेरापंथ सभा भवन में १४ नववंर को साध्वी श्री किस्तुरांजी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का जन्म दिन मनाया गया। इस कार्यक्रम में तमिलनाडु के खाद्य मंत्री श्री सुन्दरराजन् उपस्थित थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में आचार्यश्री को महान् तपस्वी वताते हुए उनके जन-हितकारी कार्यों की सराहना की। जव मंत्रीजी वोल रहे थे, उस समय वाहर मूसलाधार वरसात हो रही थी। आकाश वाणी का उद्घोषक वार-वार घोषणा कर रहा था—समुद्री तूफान मध्याह्न दो वजे तमिलनाडु में प्रवेश कर रहा है। मंत्रीजी इस व्यथा को कहे विना नहीं रह सके। उन्होंने भाव-विभोर होकर कहा—"आचार्य तुलसी जी! आप महान् हैं आप ही तमिलनाडु को आज तूफान से वचा सकते हैं। महापुरुष की अनन्त अनुकम्पा से हम त्राण पा सकेंगे। सभा में उपस्थित सोहनराज चंडालिया ने कहा—उस महापुरुष की अनुकंपा से जरूर संकट टलेगा। इस कथन के मात्र आधा घंटा वाद वर्षा थम गई। सुहावनी धूप निकल गई और रेडियो से यह उद्घोषणा हो गई—तूफान आंध्र-प्रदेश की ओर मुड़ गया है। इस तरह तमिलनाडु समुद्री चक्रवात से वच गया।

यह घटना सुनाने के वाद आचार्यवर ने अपने प्रवचन में चारभुजा से समागत मन्दिर के पुजारी श्री नाथूजी का जिक्र करते हुए कहा—"उन्होंने मुझे भेंट स्वरूप रुपयों के नोट चढ़ाये। इस पर मैंने कहा—नाथूजी! हमें नोट नहीं, खोट दो। तत्काल उन्होंने ध्रूम्रपान का यावज्जीवन परित्याग कर कीमती भेंट दी। ज्ञात रहे कि पुजारी नाथूजी ध्रूम्रपान के पक्के आदी थे।

२७ नवंबर/आज कार्तिक पूर्णिमा थी। आचार्यवर की पावन सन्निधि में चातुर्मास का केवल एक दिन शेष था। आमेटवासियों के लिए रात्रि में विदाई समारोह का कार्यक्रम रहा। अनेकों भाई-वहिनों ने कविता, मुक्तक, भाषण व गीतिकाओं के द्वारा भावपूर्ण विदाई दी।

२८ नवंबर/प्रातः आचार्यवर, युवाचार्यश्री ससंघ श्री देवीलाल कच्छारा के सदन "हैप्पी होम" पधारे। वहां आचार्यवर ने कुछ भिक्षा भी ग्रहण की और पुनः तेरापंथ भवन पधार गए। ठीक ११ वजे मेवाड़ के महाराणा श्री महेन्द्रसिंह जी आचार्यश्री से मिले तथा एकान्त में कुछ वातचीत की। ११.४५ वजे पांच साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र (वड़ी दीक्षा) दिया गया, जिनकी दीक्षा २१ नवंवर को हुई थी।

विदाई-समारोह का द्वितीय चरण मध्याह्न १ बजे शुरू हुआ। पूरा अमृत समवसरण लोगों से खचाखच भरा था। इस अवसर पर महन्तश्री जयरामदास का अभिनन्दन किया गया। महन्तजी बड़े ही श्रद्धानिष्ठ और विनम्र व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने भाषण में इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बताया। अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के मंत्री श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट, श्री नन्दलाल मेहता, आदि ने अपने विचारों को प्रस्तुति दी। मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" आदि मुनियों ने एक सुमधुर गीत गाया। मधु गेलडा व रेखा छाजेड़ ने परिसंवाद प्रस्तुत किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के कार्याध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा ने आचार्यवर की विदाई के इस प्रसंग पर आमेट की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए आचार्यवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

युवाचार्यश्री ने संतों के आगमन को दृष्टिकोण के बदलाव में योगभूत मानते हुए कहा—२४ जून से २८ नवंबर का यह कालखण्ड अमृत-महोत्सव के द्वितीय चरण के रूप में आमेट नगर को प्राप्त हुआ। मात्र तेरह हजार की आबादी वाले इस छोटे कस्बे ने करीब चालीस हजार लोगों की एक साथ व्यवस्था का कुशलता से निर्वाह कर लोगों को आश्चर्य में डाल दिया।" "युवाचार्यश्री ने केशीकुमार श्रमण व राजा प्रदेशी के कुछ रोचक प्रसंग भी सुनाये।

महाराणा महेन्द्रसिंह जी ने मेवाड़ी भाषा में बोलते हुए कहा— "आचार्यश्री मेवाड़ पधारे। अमृत महोत्सव का अवसर मेवाड़वासियों को दिया। यह आपश्री की विशेष कृपा है। वैसे उदयपुर राजघराने के साथ तेरापंथ का पुराना संबंध है। आपके श्रावक हमारे यहां वफादारी से काम किया करते थे। मुझे खुशी है आज मैं दर्शन कर सका। आप जनता का भला कर रहे हैं, इसलिए जनता के संत बन गए हैं। केवल मेवाड़ या राजस्थान पर ही नहीं, पूरे भारत पर आपका असीम उपकार है।"

आचार्यवर ने अपने विदाई संदेश में कहा—"आचार्य केशीकुमार श्रमण को विदा देने के लिए श्वेतांबिका नगरी से राजाप्रदेशी आया था और आज हमें इस आमेट कस्बे में विदा देने के लिए मेवाड़ के महाराणा समुपस्थित हैं। मेवाड़ के राजवंश का भारतीय संस्कृति की सुरक्षा में उल्लेखनीय योगदान रहा है।" उन्होंने आगे कहा—"चरैवेति-चरैवेति" के सिद्धान्त को लेकर चलने वाले मुनि हमेशा सबको उबारने का सलक्ष्य प्रयास करते हैं।

आमेट सदा अध्यात्म से अनुप्राणित रहे, हरा-भरा रहे, गहरा रंग रहे। यह रंग कभी भी फीका न पड़े। समय-समय पर हम भी इसे सिंचित करने का प्रयत्न करेंगे।"

कार्यक्रम के तत्काल बाद विशाल-जुलूस के साथ अमृत-समवसरण से विहार किया। आज दो विरोधी दृश्य देखने को मिले। एक ओर हजारों-हजारों स्त्री-पुरुषों के अविरल अश्रुधारा बह रही थी। दूसरी ओर संतों के चेहरों पर सहज मुस्कान बिखर रही थी। लक्ष्मी बाजार होते हुए भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर सुनीलबाल निकेतन पहुंचे। वहीं रात्रिकालीन प्रवास किया। साध्वी प्रमुखाश्री समेत सभी साध्वियां श्री देवीलाल कच्छारा के मकान "हैप्पी होम" में ठहरीं।

कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों का वर्षावास

आमेट के इस पंचमासा वर्षावास को कार्यक्रमों का वर्षावास कहा जा सकता है। अनेक उपलब्धियों के लिए यह वर्षावास यादगार बन गया है। समय-समय पर यहां अनेकविध कार्यक्रम समायोजित हुए। उन कार्यक्रमों में स्थानीय तथा बाहर के हजारों-हजारों लोगों ने प्रफुल्लमना भाग लिया। आमेट के श्रद्धालु लोगों ने अपनी पूरी जिम्मेदारी का परिचय दिया। तेरह हजार की आबादी वाले इस कस्बे में चालीस हजार लोगों की आवास आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था करना बड़ा दुरूह था। आमेट के श्रावकों ने यह सिद्ध कर दिया कि उत्साह एवं निष्ठा के साथ लग जाने पर बड़े से बड़ा कार्य सुगमता से किया जा सकता है। आचार्यश्री तुलसी चातुर्मास व्यवस्था समिति ने अपने दायित्व को खूब निभाया। साथ ही बाहर से समागत यात्रियों ने भी भरपूर सहयोग किया। वातानुकूलित बंगलों में रहने वाले तथा सांगोपांग व्यवस्था से संपन्न सदनों में निवास करने वाले लोग भी प्रसन्नता पूर्वक तंबूओं में ठहरे। बरसात ने उनकी परीक्षा ली, फिर भी उनके चेहरों पर मुस्कान थिरक रही थी।

राजीव-लोंगोवाल के बीच हस्ताक्षरित समझौते में आचार्यश्री तुलसी की भूमिका के लिए इस आमेट चातुर्मास की स्मृति चिरस्थायी बन गई है। अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंदसिंह लोंगोवाल पंजाब समस्या के समाधान के लिए सरकार से बातचीत के लिए कतई तैयार नहीं थे। आचार्यश्री के प्रयास से ही सरकार से बातचीत करने के लिए राजी हुये और कुछ ही दिनों में उनका सरकार से समझौता हो गया। समझौता होने के तुरन्त बाद गृह-

मंत्री का आमेट आगमन एक नये इतिहास की सृष्टि कर गया है।

समस्त मानव जाति के हितों की रक्षा के लिए तेरापंथ के जरिये आचार्यश्री ने कई आयाम प्रस्तुत किए हैं—अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान। अमृत-महोत्सव के संदर्भ में इस वर्ष आहूत अणुव्रत-अधिवेशन में नई शिक्षा नीति पर काफी महत्वपूर्ण परिचर्चा चली। इस परिचर्चा में देश के जाने-माने शिक्षाविदों ने भाग लिया। इस चातुर्मास में दो प्रेक्षाध्यान शिविर लगे, जिसमें सैकड़ों लोग लाभान्वित हुए। श्रद्धेय युवाचार्यश्री का सतत सान्निध्य व मार्ग-दर्शन शिविरार्थियों को मिलता रहा। जीवन-विज्ञान की दृष्टि से शिक्षकों का शिविर लगा, जिसमें उनको जीवन-विज्ञान की सैद्धांतिक व प्रायोगिक पृष्ठ-भूमि से अवगत कराया। ७ नवंबर को ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्रालय द्वारा आयोजित जीवन-विज्ञान-शिक्षा संगोष्ठी मे पूरे राजस्थान के अनेक जिलों के शिक्षाधिकारी, शिक्षाविद्, तथा शिक्षा सचिव ने भाग लिया। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के सान्निध्य में संपन्न इस संगोष्ठी का पूरा संचालन ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने किया।

इस चातुर्मास में आचार्यवर के दर्शनार्थ बोहरा मुसलमानों का आवागमन काफी रहा। वैसे तो आमेट में सैकड़ों घर बोहरा मुसलमानों के हैं। आचार्यवर से भेंट कर वे काफी प्रसन्न होकर लौटते। विशाल तेरापथ भवन व पण्डाल को विस्मय से निहारते। शोक विमोचन हेतु आने वाले यात्रियों की संख्या में वृद्धि हुई है। एक समय था बारह-बारह महीने कोने में महिलायें सिसकती रहती थीं। न जाने कितनी रूढ परपराओं से समाज जकड़ा हुआ था, पर आचार्यश्री की वर्षों की मेहनत अब रंग ला रही है। थली में इन परम्पराओं में परिवर्तन आ गया था, किंतु सबसे ज्यादा रूढ़ समझे जाने वाले मेवाड़-मारवाड़ मे भी भारी अन्तर आया है। इस प्रकार एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण हुआ है। आमेट चातुर्मास में अनेकों परिवार शोक विमुक्ति के लिए आये।

अमृत-महोत्सव के संदर्भ में अनेक नूतन कार्य संपादित हुए। उनमें मुमुक्षु बहिनों का वैयक्तिक शिविर, साधु-साध्वियों का नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग, पर्युषण पर्व के दिनों में उपासक दीक्षा आदि मुख्य है। श्रावकों के बारह व्रतों का पुनः संपादन हुआ। अमृत-महोत्सव गीत, जीवन-विज्ञान गीत, अहिंसा-सार्वभौम-गीत आदि अनेक गीतिकाओं की रचना हुई। रात्रि में निष्पादित उन कार्यों में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री तथा कुछ चुने हुए संत मौजूद

रहते। भगवती सूत्र पर आधारित त्रिदिवसीय जैन विद्या परिषद् भी एक विशेष उपलब्धिपूर्ण कार्य था।

भगवान महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी पर जैन समन्वय की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। एक ग्रन्थ, एक ध्वज, एक प्रतीक उस समय के उपलब्धिपरक कार्य थे। एक संवत्सरी व एक मंच के लिए भी जी तोड़ कोशिशें हुईं, पर किन्हीं अपरिहार्य कारणों से सफलता नहीं मिली। बाद में इस कार्य में शिथिलता आ गई। अमृत-महोत्सव वर्ष में आचार्यश्री ने एक संवत्सरी व एक मंच के लिए पुनः प्रयास प्रारंभ किया। इस दृष्टि से अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। इस प्रकोष्ठ के संयोजक हैं—श्री कन्हैयालाल छाजेड़, उपसंयोजक श्री भीखमचंद 'भ्रमर' तथा श्री चन्दनमल 'चांद'। इस दल ने तीन यात्रायें की। पृथक्-पृथक् स्थानों में, आचार्यों, प्रवर्तकों, एवं विशिष्ट मुनियों से यह दल मिला। उन्हें आचार्यश्री तुलसी का जैन समन्वय पर प्रदत्त विशेष संदेश भी दिया। वे जहां गए, वहां संवत्सरी एक करने की बात बहुत दिलचस्पी से सुनी। सभी सम्प्रदायों में इसके लिए गहरी तड़फ है। जैन समन्वय के इस माहौल को देखकर यह निर्णय लिया गया कि उदयपुर मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर एक सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमें सभी संप्रदायों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाये और उन्हें खुलकर अपने मन्तव्यों को प्रस्तुत करने का मौका दिया जाये। जैन समन्वय की प्राची दिशा में इस प्रकार एक नया सूर्य उदित हुआ।

जिन स्थानों में सभा-संस्थाए होती हैं, समूह होता है वहां विचारभेद हो सकता है, पर विचारभेद से मनभेद अपेक्षित नहीं है। इस चातुर्मास में अनेक स्थानों पर चल रहे झगड़ों का शमन हुआ। नाथद्वारा में मर्यादा-महोत्सव सानन्द संपन्न होने के तत्काल वहां का तेरापंथी समाज दो गुटों में विभक्त हो गया। दोनों पक्षों ने समय-समय पर अपने विचारों को आचार्यवर के सामने रखा। आखिर आमेट में दोनों पक्षों के प्रतिनिधि आये और इस बात के लिए वचनबद्ध हो गये कि वे केन्द्र के निर्णय को सहर्ष स्वीकार करेंगे। आचार्यश्री के विशेष निर्देश पर मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने दोनों पक्षों की बात सुनकर आचार्यवर को निवेदित की। आचार्यश्री ने जो इंगित किया, उसे दोनों पक्षों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और परस्पर गले मिलकर पूर्व के मनो-मालिन्य को भुला दिया।

ईड़वा में एक सार्वजनिक उपाश्रय को लेकर तेरापंथी समाज में दो दल बन गये थे। एक का नेतृत्व मुराणा तथा दूसरे का नेतृत्व कोठारी लोगों के हाथ में था। सामंजस्य स्थापित न होने से दोनों गुट आचार्यश्री के उपपात में पहुंचे। आखिरकार आचार्यवर के इंगित के अनुसार कोठारी परिवार ने अपना आग्रह छोड़ा, और ईड़वा का विवाद समाप्त हो गया। इस तरह अनेक स्थानों के छोटे-बड़े विवादों का अंत इस चातुर्मास में हुआ।

चातुर्मास में प्रातः, मध्याह्न व रात्रि तीनों समय प्रवचन का कार्यक्रम रहा। प्रातः आचार्यवर का प्रवचन दूसरे अंग सूत्र ठाणं पर होता। आचार्यवर के मुखारविन्द से निसृत गूढ से गूढ विषय भी सामान्य जनता के लिए हृदयंगम हो जाते हैं। आचार्यवर से पूर्व मुनिश्री उदितकुमार उपदेश देते। वैसे तो वे जोधपुर चातुर्मास के बाद प्रातः उपदेश देते आ रहे हैं। चातुर्मास में उन्होंने उपदेश में उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया। प्रति रविवार को एक निश्चित विषय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का महत्त्वपूर्ण भाषण होता। मध्याह्न में चातुर्मास के पूर्वार्द्ध में मुनिश्री कमल कुमार तथा उत्तरार्द्ध में मुनि विजयकुमार ने व्याख्यान दिया। गुरुकुलवास में एक लम्बी अवधि के बाद रात्रि में जैन रामायण पर व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का प्रारम्भ आचार्यवर ने किया। उसके बाद मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने पूरे चातुर्मास में जैन रामायण पर प्रवचन दिया। मुनिश्री विजयकुमार ने रामायण-गायन में सहयोग किया। रात्रि में लोगों की अच्छी उपस्थिति रहती। कभी-कभी रात्रि में विषय विशेष को लेकर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन होते। सायं प्रतिक्रमण के बाद प्रेक्षाध्यान की कक्षा चलती, जिसमें मुनिश्री किशनलाल के प्रशिक्षण में ध्यान के इच्छुक भाई-बहिन भाग लेते।

चातुर्मास में प्रति रविवार मध्याह्न एक तात्विक कक्षा चलती, जिसे 'जैन विद्या ८५' कहा गया। इस कक्षा में सैकड़ों युवक-युवतियां भाग लेते। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पत्राचार पाठमाला के पत्रों को पढ़ा जाता, समझाया जाता और उसमें पूछे गये प्रश्नों का उत्तर विद्यार्थी अगले रविवार को लिख कर लाते। उन पत्रों में जैन सिद्धान्त, इतिहास आदि की अवगति दी जाती। इस कक्षा का संचालन मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने सुचारु रूप से किया। विद्यार्थियों की क्षमता को और पैनी बनाने के लिए मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' उनसे प्रश्न पूछते। पत्र-वाचन मुनिश्री लोकप्रकाश करते। इस कक्षा में आचार्यवर युवाचार्य श्री का निरन्तर सान्निध्य, मार्गदर्शन व प्रोत्साहन

मिलता रहा। इस जैन विद्या कक्षा का प्रारंभ आचार्यवर के राणावास चातुर्मास से हुआ, उस समय मुनिश्री सुखलाल ने संचालन किया। जोधपुर चातुर्मास में मुनिश्री किशनलाल की देखरेख में हुआ।

प्रतिवर्ष हर चातुर्मास में तपस्याओं का क्रम चलता रहता है। तपस्वी भाई-बहिन अपन लक्षित तप की पूर्णाहुति पर आचार्यश्री की पावन सन्निधि में पहुंचते हैं और अपने को कृतकृत्य मानते हैं। इस चातुर्मास में अनेकों तपस्वी भाई-बहिन तप की परिसंपन्नता पर आमेट पहुंचे। उनमें अठाई से लेकर पचपन दिन तक का तप करने वाले थे। इस चातुर्मास में सैंकड़ों भाई-बहिनों ने अठाई तप किया तथा अन्य तपस्याएं कीं। पचास बहिनों ने एकान्तर तप किया। अब तो आमेट चातुर्मास कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों के लिए मात्र यादगार रह गया हैं। इस चातुर्मास में अमृत-महोत्सव का द्वितीय चरण आयोजित हुआ तथा संघीय महत्त्व के अनेक कार्यक्रम समायोजित हुए।

आमेट से विहार

२९ नवम्बर/आचार्यवर आमेट गांव बाहर स्थित सुनील बाल निकेतन से विहार कर लावा सरदारगढ़ पहुंचे। दो वर्ष पूर्व की मेवाड़ यात्रा के दौरान आचार्यवर के प्रवास का सौभाग्य इस क्षेत्र को मिला था। नब्बे श्रद्धालु घरों वाले इस क्षेत्र में स्वल्प समय में पुनः पदार्पण पर आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया। आमेट से हजार से भी ऊपर व्यक्ति आचार्यवर के साथ यहां पहुंचे। स्वागत-गीत के बाद ठाकुर श्री मानसिंह, आमेट पंचायत समिति के प्रधान श्री गिरवर जोशी, न्यायाधीश श्री बसन्तीलाल बावेल ने स्वागत-भाषण किया।

युयाचार्यश्री ने कहा—"आत्मा के प्रति आकर्षण स्थिर हो जाये, तो पुरुषार्थ एक जगह घनीभूत हो सकता है, सुख, आत्म केन्द्रित हो सकता है। आंतरिक आकर्षण के अभाव में सुख केन्द्रित नहीं हो सकता।"

आचार्यश्री ने कहा—"संतदर्शन से पाप पलायित हो जाते हैं जैसे अंजलि का पानी। किन्तु केवल संतदर्शन से ही कल्याण नहीं होगा, इसके लिए संत वाणी को अपने जीवन में अवतरित करना होगा।"

रात्रि में "धर्म की जरूरत खुद को समझने के लिए" विषय पर युवाचार्यश्री का सारगर्भित प्रवचन हुआ। विपय प्रवेश मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने किया। प्रवचन से पूर्व मुनिश्री दिनेशकुमार ने गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय

वरिष्ठ श्रावक श्री नाथूलाल नवलखा ने अपने विचार रखे। समाज के साथ जमीन को लेकर चल रहे झंझट के तहत मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने श्री सोहनलाल ओस्तवाल से बातचीत की। अन्त में झंझट को समाप्त करने हेतु एक तीन सदस्यीय आयोग का गठन हुआ और इस आयोग द्वारा प्रदत्त निर्णय को सबके लिए स्वीकार्य मान लिया गया। केलवा चातुर्मास करने वाली साध्वी श्री यशोमती ने आज आचार्यवर के दर्शन किये।

३० नम्बवर/आज युवाचार्यश्री राजनगर की ओर प्रस्थित हो गये। वहां तुलसी साधना शिखर पर दो शिविरों का कार्यक्रम निर्धारित था। श्रद्धेय युवाचार्यश्री २ दिसम्बर को राजनगर पधार जायेंगे। १६ दिसंबर को दोनों शिविरों की समाप्ति के बाद संभवतः युवाचार्यश्री रेलमगरा में आचार्यवर के दर्शन कर लेंगे।

प्रातः मुखारविन्द के लुचन के बाद आचार्यवर प्रवचन हेतु पधारे। सर्वप्रथम साध्वी प्रमुखा श्री का महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुआ। बाद में आचार्यवर का प्रवचन हुआ। मध्यान्ह साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में महिला मण्डल का कार्यक्रम समायोजित हुआ। रात्रि विदाई समारोह में ठाकुर मानसिंह, श्री चांदमल चौपड़, श्री गिरवर जोशी ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। आचार्यश्री ने कम समय में अधिक कार्य करने पर बल दिया। रात्रि कार्यक्रम के बाद तीन सदस्यीय आयोग-द्वारा प्रदत्त फैसले पर मामूली विचार-विनिमय के बाद दोनों पक्षों में एक लिखित समझौता हो गया। दोनों पक्षों ने आचार्य-वर के सम्मुख खमण-खामना किया। इस झंझट के सफल समाधान के अनन्तर लोगों ने आचार्यवर से आग्रह किया कि इन दोनों भाइयों (दोनों सामने बैठे थे) में बीस वर्षों से अनबन है। एक दूसरे के घर आना, बोलना आदि सारे व्यवहार बन्द कर रखे हैं। आपकी केवल करुणा दृष्टि की अपेक्षा है। आचार्यवर ने उनको समझाया, आखिर आमेट के श्री कन्हैयालाल कच्छारा को पच मानकर यह लिखित दे दिया कि इनके द्वारा दिया गया फैसला हमारे लिए स्वीकार्य होगा। बीस वर्षों से चल रहे उलझाव का इस प्रकार मात्र चंद मिनटों में सुलझाव हो गया।

दिसंबर का पहला दिन आचार्यवर चालीस श्रद्धा के घरों वाले क्षेत्र मोखुन्दा पधारे गये। आज उदयपुर जिला छोड़कर भीलवाड़ा जिला में प्रवेश किया। मार्गवर्ती गांव माहीमपुर में ग्रामवासियों के मध्य आचार्य श्री का उद्बोधन हुआ। उपासना करने वाले भाइयों के मार्ग की पूरी जानकारी

के अभाव में महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री को पांच कि० मी० का अतिरिक्त चक्कर पड़ गया। स्वागत कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक के भाषण के बाद आचार्यवर ने अपने प्रवचन में कहा—"सुख के इच्छुक व्यक्तियों को सुख का ही रास्ता अपनाना चाहिए।" मध्यान्ह में भी आचार्यवर का प्रवचन हुआ। आज बोरियापुर से श्री भैरूलाल खाव्या का परिवार आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुंचा। उनकी पत्नी का ७५ वर्ष की आयु में तिविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया था।

२ दिसंबर/आज प्रातः प्रवचन में आचार्यवर ने मृगापुत्र प्रसंग का सुन्दर विवेचन किया। टॉडगढ़ चातुर्मास करने वाली साध्वी श्री पिस्तांजी ने प्रवचन के समय दर्शन किये। मध्यान्ह में महिलाओं ने साध्वी प्रमुखाश्री की उपासना की। भीलवाड़ा जिले के सहायक जिलाधीश आचार्यवर से मिले। उन्होंने अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान पर बातचीत की। वर्षों से अटके पड़े तेरापंथ सभा के चुनाव भी संपन्न हो गये। श्री कजोड़ीमल अध्यक्ष तथा श्री लक्ष्मीलाल मंत्री चुने गये। रात्रि प्रवचन मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने दिया, जिसमें अनेक लोगों ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। मोखुन्दा में अणुव्रत समिति का भी विधिवत् गठन हुआ। अध्यापक श्री पन्नालाल शर्मा अध्यक्ष व वकील हीरालाल मंत्री बने।

३ दिसंबर/ मोखुन्दा का द्विदिवसीय प्रवास संपन्न कर विहार करते हुए आचार्यवर नव निर्मित तेरापंथ भवन पधारे। वहां से कोसीथल पधार गये। रावले के चौक में स्वागत कार्यक्रम हुआ। स्थानकवासी बहुल इस कस्बे में आचार्यवर ने कहा—"वर्तमान में जैनों में अहिंसा की साधना तो है, पर सत्य और अपरिग्रह से दूर हटते जा रहे हैं।" कोसीथल के ठाकुर व प्रधानाध्यापक ने स्वागत में अपने विचार रखे। इस स्वागत समारोह में बाहर के लोगों की महती उपस्थिति थी। आचार्यवर ने काफी श्रम करके एक तेरा-पंथी परिवार की डगमगाती श्रद्धा को स्थिर किया। गंगापुर चातुर्मास करने वाली साध्वी श्री कंचनप्रभा ने आज दर्शन किये। रात्रि प्रतिक्रमण के बाद आचार्यवर के साथ जैन युवकों का रोचक प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम चला। रात्रि में मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने प्रवचन दिया। आचार्यवर का प्रवास स्थल रावला था। दूसरे दिन ठाकुर साहब के निवेदन पर आचार्यवर ने उनके तथा ठुकरानीजी के हाथ से भिक्षा ग्रहण की।

४ दिसंबर/कोसीथल से विहार कर आचार्यवर देवरिया पधारे।

ागत समारोह में वर्धमान श्रमण संघ के श्री कोठारी ने अपने विचार रखे। नानालाल कोठारी ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। आचार्यश्री ने ने उद्बोधन में कहा—"जातियों का गठन मात्र सुविधा के लिए हुआ, ाई करने के लिए नहीं। जाति की वदौलत कोई ऊंच-नीच नहीं है। प्रत्येक क्ति एक दिन में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र चारों बन जाता है।" प्रवचन बाद जोजावर चातुर्मास करने वाले मुनिश्री उगमराज ने आचार्यवर के ान किये। मध्यान्ह में साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में रूढि उन्मूलन की ष्टि से एक विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। रात्रि में आचार्यवर के न्निध्य में किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुनि सुमेरमल "लाडनूं" प्राग् वक्तव्य दिया। मुनि श्री उगमराज ने अभ्यर्थना में दो शब्द कहे। ाचार्यवर के प्रभावी प्रवचन से प्रभावित ५०० जनों ने शराब, मांस आदि ा परित्याग किया। २०० छात्रों ने धुम्रपान न करने का संकल्प लिया। पस्थिति करीब दो हजार की थी।

रायपुर में कन्हैया लाल सुतरिया की मां का ८० वर्ष की अवस्था में हान्त हो गया। सात दिनों में शोक की रस्म पूरी करके आज आचार्यवर के र्शन किये। वाणी के असंयम व परस्पर गलत फहमी से मीठालाल व शांती-ाल के पुत्र के बीच मनमुटाव चल रहा था। आचार्यश्री के प्रयत्न से उन्होंने ापस में खमण-खामना कर लिया।

५ दिसंबर/आज शोक विमोचन हेतु सूरतगढ़ से नौलखा परिवार ाया। श्री गौरीशंकर के पिता पिच्चासी वर्षीय श्री वनेचंद नौलखा का निधन ो गया था। वे एक दृढधर्मी श्रावक थे। प्रतिवर्ष गुरु दर्शन किया करते थे। ंत समय में उनके भावों में निर्मलता आ गई थी। ऐसा उनके व्यवहार से तीत हुआ। उनको २५ घंटे तिविहार व १ घंटा चौविहार अनशन आया। ातः प्रवचन के बाद आमीन्द चातुर्मास करने वाले मुनिश्री ताराचंद ने दर्शन केये। आमीन्द के सैकड़ों व्यक्ति इस अवसर पर मौजूद थे। मध्यान्ह २.४५ जे देवरिया से विहार कर उलनार्ट पधारे। रात्रि कार्यक्रम में मुनि सुमेरमल "लाडनूं" का प्रवचन हुआ। उपस्थिति १००० थी। रात्रि में गंगापुर से एक ाम दर्शनार्थ आई। साध्वी प्रमुखाश्री का रात्रि कार्यक्रम देवरिया में हुआ। ेवरिया गांव में कई माहेश्वरियों ने जैन धर्म की दीक्षा स्वीकार की। श्री ोहनलाल चपलोत ने शीलव्रत ग्रहण किया।

६ दिसंबर/प्रातः मार्गवर्ती गांव गिरिया में संक्षिप्त उद्बोधन देने के

वाद आचार्यवर भौंर पधारे। खचाखच भरे चौक में आमेट पंचायत समिति के प्रधान श्री गिरिवर जोशी, सरपंच, उपसरपंच आदि ने स्वागत-भाषण किये। आचार्यश्री ने दृढ़ शब्दों में कहा—"इंसानियत के विना कोई भी व्यक्ति धार्मिक नहीं वन सकता। यदि कोई गैर इंसानियत व्यक्ति अपने को धार्मिक कहने का दंभ भरता है, तो वह धर्म के साथ मखौल करता है।" मध्यान्ह में मुनिश्री विजयकुमार के वक्तव्य के वाद आचार्य श्री का प्रवचन हुआ। पार्श्ववर्ती गांवों से लोगों का दिन भर तांता सा लगा रहा। रात्रि में मुनि सुमेरमल "लाडनूं" का प्रवचन हुआ। मांढा (पाली) से दो मेटाडोर लेकर पीतल्या परिवार शोक मुक्ति के लिए भौंर पहुंचा। उनके परिवार के वरिष्ट सदस्य श्री पन्नालाल पीतल्या का ८० वर्ष की आयु में निधन हो गया था। खिवाड़ा निवासी श्री वक्तावरमल कांठेड अपनी पुत्री को लेकर आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुंचे। उनके चालीस वर्षीय दामाद श्री हेमराज गादिया का चिकमंगलूर (कर्नाटक) में देहान्त हो गया।

आम की होड़ आमली नहीं कर सकती

६ दिसंवर/आचार्यवर भौंर से मात्र डेढ कि० मी० का विहार कर नेगड़िया का खेड़ा पधारे। आचार्यवर पहले यहां एक घंटे ही ठहरना चाहते थे, पर कल भौंर गांव में सरपंच समेत इस गांव के सैंकड़ों व्यक्ति आये। आचार्यश्री ने उनको समझाया—कल हमें कई गांवों में जाना है। इसलिए तुम्हारे गांव में घंटा भर रहकर आगे गांवों में चले जायें, तो हमारे सुविधा रहेगी।

लोग वोल उठे—यह कैसे संभव हो सकता है। हम पच्चीस वर्षों से आपकी वाट निहार रहे हैं। कितने घर हैं हमारे गांव में। आप एक घंटे में कैसे जा सकते हैं?

आचार्यश्री—पीछे संतों को छोड़ दूंगा, उनका लाभ लेना, मुझे आगे जाने दो।

इतने में सरपंच वोल पड़े—साधु सती तो हर साल आवै ही है, और आगे भी आसी, पर आम की होड़ आमली कदै नी कर सके। तकलीफ तो हवेसी किंतु पधारणों भी पड़ी और रहणो भी पड़ी।"

गांववासियों की अतिशय भुक्ति को देख आचार्यवर रीझ गये। मध्यान्ह दो वजे तक वहां विराजे। श्री कजोड़ीमल कोठारी ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। नेगड़िया का खेड़ा से विहार कर छापरी, गोवल

खजूरिया होते हुए सायं खांखला पधारे। इन गांवो में सैकड़ों लोगों ने व्यसन, धूम्रपान आदि छोड़ा। खांखला में रात्रि में आचार्यवर से पूर्व मुनि श्री मोहनलाल "आमेट" ने प्रवचन दिया। उसके बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। अनेक लोगों ने विविध त्याग-प्रत्याख्यान किये। खांखला में तेरापंथ के ६ घर है। वणोल निवासी एक तेरापंथी युवा सरकारी कर्मचारी है। अब तक उन्होंने किसी प्रकार की रिश्वत नहीं ली। इस कारण उन्हें एक बार जेल की शिकचों में बंद कर दिया गया। उन्हें पुनः फंसाने की चेष्टा की गई पर उच्च न्यायालय से वे मुकदमा जीत गये। आज उन्होंने आजीवन रिश्वत न लेने संकल्प ले लिया।

८ दिसंबर/प्रातः आचार्यवर सालेरा होते हुए कांगनी पहुंचे। सालेरा में आचार्यवर ने कुछ भिक्षा ग्रहण की तथा प्रवचन दिया। ५० लोगों ने दारू छोड़ी। १०.३० बजे कांगनी में स्वागत गीत, भाषण के बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। प्रवचनोपरान्त १५ व्यक्तियों ने धूम्रपान तथा ६५ जनों ने शराब न पीने का नियम लिया। मध्यान्ह में राजस्थान के ग्रामीण विकास मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने आचार्यवर के दर्शन किये। वे अभी चुरू लोक सभा उपचुनाव में पार्टी के इंचार्ज हैं, फिर भी समय निकाल कर आये। मध्यान्ह २ बजे विहार कर गंगापुर गांव बाहिर "देव रमण" पधारे। स्वागत का संक्षिप्त कार्यक्रम रहा। मेवाड़ के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री देवेन्द्रकुमार हिरण ने अपने घर पधारने पर आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। रात्रि में पुनः श्री रामपाल उपाध्याय आये और कुछ समय बातचीत की।

आचार्य तुलसी अमृत-महाविद्यालय का शिलान्यास

आचार्य श्री तुलसी अमृत महोत्सव वर्ष में मेवाड़ में रचनात्मक कार्यो का नया युग प्रारम्भ हुआ है। मेवाड़व्यापी अमृत कलश पदयात्रा के रचनात्मक अभियान से अमृत महोत्सव का शुभारम्भ हुआ, वहीं दूसरी ओर रचनात्मक संस्थाओं की श्रृंखला भी प्रारम्भ हुई। मेवाड़ के विभिन्न अंचलों से शिक्षात्मक एवं रचनात्मक संस्थाओं का उद्भव हुआ है।

९ दिसंबर/गंगापुर के साड़ोला चौराहे पर आचार्यवर के सान्निध्य में राजस्थान के राज्यपाल श्री वसन्तराव पाटिल ने आचार्यश्री तुलसी अमृत महाविद्यालय की आधारशिला रखी। समारोह में पूर्व कार्यवाहक प्रधानमंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा, पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर, पूर्व सिंचाई मंत्री श्री रामप्रसाद लड्ढा, राजस्थान के ग्रामीण विकास मंत्री श्री रामपाल उपा-

ध्याय, श्री शुभकरण दसाणी, विशेष रूप से उपस्थित थे।

साध्वी परिवार के समूह गान "विद्या के प्रांगण में अब व्यापक जीवन विज्ञान हो, शिक्षा का नव अभियान हो" से समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री सुन्दरलाल मेहता, श्री देवेन्द्रकुमार हिरण एवं श्री रामपाल उपाध्याय ने समागत अतिथिगणों का विनम्र अभिनन्दन किया तथा आगन्तुक अतिथियों को शिरोपाव व आचार्य श्री तुलसी का बड़ा फोटो भेंट किया। भीलवाड़ा कालेज के प्राचार्य महावीर राज गेलड़ा, श्री शिवचरण माथुर, श्री रामप्रसाद लढ्ढा ने भी सभा को संबोधित किया।

स्वागताध्यक्ष श्री रामपाल उपाध्याय ने कहा—"प्रस्तावित महाविद्याय में आध्यात्मिक नैतिक शिक्षा, जीवन-विज्ञान तथा प्रेक्षाध्यान के आयाम होंगे। यह महाविद्यालय अपनी अलग पहचान का होगा।"

राज्यपाल महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा—"आध्यात्मिकता के आधार पर दी जाने वाली शिक्षा से एक आदर्श शैक्षणिक प्रवृत्ति का संचालन हो, जो लोगों में नैतिकता, मित्रता और आदर्श चरित्र की भावना भर कर उसे अच्छा नागरिक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।" उन्होंने आचार्यश्री को महान् व्यक्तित्व का धनी बताया।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा, मुनिश्री सुखलाल ने भी सभा को संबोधित किया। मुनिश्री सुखलाल ने भीलवाड़ा चातुर्मास परिसंपन्न कर गांव-गांव में अणुव्रत की अलख जगाते हुए आज आचार्यवर के दर्शन किये। उन्होंने स्वागत में दो मुक्तक भी बोले। दस हजार की विशाल उपस्थिति में आचार्य प्रवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा—"शिक्षा जीवन का अभिन्न अंग है। जीवन-विज्ञान आज की शिक्षा में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने में सक्षम है। प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान अणुव्रत के कार्य को प्रभावी बनाने में सहयोगी हैं। आज का आयोजन रचनात्मक एवं प्रयोजनात्मक हैं।"

आचार्यश्री तुलसी अमृत महाविद्यालय की योजना के क्रियान्वयन में राज्य के मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय का अपूर्व योगदान प्राप्त हो रहा है। शिलान्यास समारोह का संयोजन श्री देवेन्द्रकुमार हिरण ने प्रभावी ढंग से किया।

आचार्य तुलसी अमृत-महाविद्यालय के लिए आज जो अनुदान घोषित हुआ, वह इस प्रकार है—

११ लाख ५० हजार—अ० मा० रा० स० द्वारा श्री शुभकरण

दसाणी

५ लाख—को-ओपरेटिव मिल, गंगापुर

३ लाख—पंचायत समिति, गंगापुर

२ लाख—नगरपालिका, गंगापुर

१ लाख—कृषि उपज मंडी, गंगापुर

२ लाख—रायपुर व साहड़ा विधानसभा क्षेत्र।

५१ हजार—श्री राजमल सिंघवी (आशाहोली)

इस प्रकार कुल २५ लाख रुपयों की राशि चंद क्षणों में ही हो गई। कार्यक्रम के बाद राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर ने कालू कल्याण कुंज में आचार्यवर के साथ एकान्त में बातचीत की। उन्होंने २२ दिसंबर को रेलमगरा में दर्शन करने की बात कही। कार्यक्रम से कालू कल्याण कुंज लौटते वक्त आचार्यवर गंगाबाई के मंदिर में पधारे। वहां के न्यासियों ने आचार्यप्रवर का स्वागत किया। गंगाबाई ग्वालियर की महारानी थी। वह यहां स्वर्गस्थ हो गई। उसी के नाम पर यह गंगापुर नगर बसा। पूर्व में इस गांव का नाम लालपुरा था।

सत्ता शाश्वत नहीं : इन्सानियत शाश्वत है

मध्याह्न महामहिम राज्यपाल श्री वसन्तराव पाटिल आचार्यवर से मिलने आये। साथ में उपाध्याय जी तथा अनेक कार्यकर्ता थे। आचार्यश्री ने राज्यपाल महोदय से कहा—राजस्थान में सेवा का मौका पहली बार मिला है।

राज्यपाल—हां आचार्यश्री ! पहली बार मिला है। यहां भी मैं महाराष्ट्र की भांति सेवा करता रहूंगा।

आचार्यश्री—महाराष्ट्र की राजनीति कैसी है ?

राज्यपाल—अच्छी नहीं है।

आचार्यश्री—आपको अब नैतिक कार्यों पर बल देना है।

राज्यपाल—अब मेरी शक्ति इसी काम में लगेगी।

आचार्यश्री—हमने एक बिना मजहब का धर्म अणुव्रत चलाया है। हर कौम का व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है। इसमें उपासना गौण है, आचरण मुख्य है। सत्ता शाश्वत नहीं है, इंसानियत शाश्वत है। सच्चा इन्सान बनने वाला महान् है। हमने प्रेक्षाध्यान के जरिये व्यक्ति के भाव परिवर्तन, रसायन परिवर्तन का कार्य प्रारंभ किया है।

राज्यपाल—मैं अणुव्रत कार्यक्रम से संपर्क में हूं। आचार्यश्री! मैं जहां जाता हूं वहां आनन्द पाता हूं। परिस्थितियों को भोग चुका हूं और भोग रहा हूं।

आचार्यश्री—आज आपने जिस कालेज का शिलान्यास किया है। उस के साथ आप जुड़ गये हैं, अब आपको विशेष ध्यान रखना होगा।

राज्यपाल—पूरा ध्यान रखूंगा।

आचार्यश्री—लाडनूं में जैन विश्व भारती नाम का एक विशाल संस्थान है। वहां शिक्षा, शोध, सेवा, साधना का अच्छा कार्य संपादित हो रहा है। हम वहां चले जायेंगे, तो आपको एक बार वहां याद करेंगे।

राज्यपाल—मैं अवश्य वहां आऊंगा।

आचार्यश्री एवं राज्यपाल के बीच करीब ४० मिनट की यह वार्ता आत्मीयपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई।

रात्रि में बालक बालिकाओं की कव्वाली, स्वागत-गीत के बाद आचार्यश्री का प्रवचन हुआ। संयोजन श्री देवेन्द्रकुमार हिरण ने किया। रात्रि प्रवास रंग-भवन में हुआ। यह वही भवन है जहां पचास वर्ष पूर्व पूज्य कालू-गणी का स्वर्गवास हुआ तथा मुनि तुलसी तेरापंथ के भाग्य विधाता बने। उस समय के कुछ संस्मरण आचार्यवर के मुखारविन्द से निसृत होकर बड़े ही रोचक प्रतीत हो रहे थे। मंत्री श्री उपाध्याय ने आचार्यवर से एकान्त में बातचीत की।

१० दिसंबर/प्रातः आचार्यवर का लाखोला के लिए विहार हुआ। मार्ग में रामद्वारा में पधारे। वहां के संतरामजी ने आचार्यश्री से कुछ देर बातचीत की। ये संत राम स्नेही संप्रदाय के हैं। इस संप्रदाय के प्रवर्तक रामचरणदास जी तथा तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु स्वामी दोनों मित्र थे। रामस्नेही संप्रदाय अमूर्तिपूजक है, उनमें आचार्य एक होते हैं। करीब १० बजे आचार्यवर लाखोला पधार गये। प्रधानाध्यापक, सरपंच श्री बहेड़िया ने स्वागत-भाषण किया। आचार्यवर ने अपने भाषण में कहा—"गरीब वह है जो आचारहीन है। आचारवान्-चरित्रवान् व्यक्ति सदैव समृद्ध होता है। ज्ञान अमृत है, रसायन है। ज्ञान को पाना अमृत को पाना है। ब्यावर चातुर्मास संपन्न कर साध्वी श्री सरोजकुमारी (बंबई) ने आचार्यवर के दर्शन किये। आज रात्रि प्रवचन मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने दिया।

११ दिसंबर/प्रातः लाखोला से चलकर सोनियाणा पधारे। वहां के

'वैरवा' जाति के लोग विशेष श्रद्धा रखते हैं। एक घंटे के प्रवास में मुनिश्री कमलकुमार के प्राग् प्रवचन के वाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। सोनियाणा से आचार्यवर रेवाड़ा पधारे गये। रेवाड़ा पधारने के साथ ही भीलवाड़ा जिला की सीमा समाप्त हो गई और चित्तौड़गढ़ जिला की सीमा शुरू हो गई। रेवाड़ा में अपने प्रवचन में आचार्यवर ने ऊंच और नीच का मापदंड जाति नहीं, आचारण को वताया। सायं आचार्यवर मानियास पधार गये। स्वागत में ठाकुर श्री शिवराज सिंह तथा कुंवर श्री राजेन्द्रसिंह ने अपने विचार रखे।

हिन्दू धर्म नहीं, समाज है

रात्रि में कुवर श्री राजेन्द्रसिंह आचार्यश्री की सन्निधि में पहुंचे। कुवर काफी सुलझे हुए विचारों के व्यक्ति हैं। आचार्यश्री की अनुमति लेकर उन्होंने कुछ प्रश्न पूछे और उन प्रश्नों को आचार्यश्री ने समाहित किया। प्रश्नोत्तर इस प्रकार है—

कुंवर—धर्म की परिभाषा क्या है?

आचार्यश्री—आत्मा में स्थिर रहने का नाम धर्म है। धर्म और मजहव पृथक्-पृथक् है।

कुंवर—मैं पहले नास्तिक था। विज्ञान का अध्ययन करते-करते मैं धार्मिक वना।

आचार्यश्री—मजहव का धर्म से वैसे कोई लेन देन नहीं है। झगड़ा धर्म में नहीं, मजहव में है। ईसाई-ईसाई लड़ रहे हैं, वौद्ध-वौद्ध लड़ रहे हैं। मजहव परस्पर में लड़ रहे हैं।

कुवर—थाईलैंड के बौद्ध भिक्षु सामाजिक सेवा में लगे है। जैन मुनियों के लिए भी ऐसा कुछ होना चाहिये। उन्हें स्वास्थ्य का ज्ञान करवाया जाए। गांव-गांव में घूम-घूम कर गरीबों का इलाज करना चाहिये।

आचार्यश्री—वौद्ध भिक्षु हर परिवार से वनते हैं। उनकी संख्या अधिक है। जैन मुनि विशेष विरक्ति मे वनते है, अतः उन्हें आंतरिक शुद्धि में ही लगने दीजिए। वैसे हम आंतरिक वीमारियों को मिटाने का कार्य निरन्तर करते ही हैं।

कुंवर—दीक्षा कव दी जाती है?

आचार्यश्री—जब विरक्ति के भाव जागृत होते हैं, तभी दीक्षा दी जाती है। योग्यता की कसौटी पर खरा उतरने पर ही दीक्षा दी जाती है।

दीक्षा में अवस्था का बंधन नहीं है। जैनों में तेरापंथ की दीक्षा विशेष परीक्षा के बाद ही दी जाती है।

कुंवर—अहिंसा व्यक्तिगत हो सकती है, समाज गत नहीं ?

आचार्यश्री—अहिंसा ही नहीं, धर्म मात्र व्यक्तिगत है, किन्तु धर्म करने वालों का समूह भी बन जाता है।

कुंवर—पहले जैन लोग अपने को हिन्दु कहते थे, अब जैन लिखते हैं।

आचार्यश्री—हिन्दू धर्म नहीं, समाज है। समाज की दृष्टि से कहने में हमें कोई कठिनाई नहीं है। धार्मिक दृष्टि से आप वैदिक हैं, मैं जैन हूं। इस लिए हिन्दू शब्द समाज का सूचक है (प्रसंग बदलते हुए) क्षत्रिय कौम ऊंची कौम है। इस कौम में शराब का आना अवनति का कारण बन गया है।

रात्रि में मुनि सुमेरमल "लाडनूं के वक्तव्य के बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। अनेक व्यक्तियों ने विविध नियम ग्रहण किये।

१२ दिसंबर/प्रातः १० बजे आचार्यवर पहुंना पधार गये। स्वागत में गीतिकाओं के अनन्तर पहुंना के सरपंच श्री शांतिलाल विराणी का वक्तव्य हुआ। स्वागत समारोह में जिला प्रमुख श्री विक्रमसिंह, जिलाधीश श्री धर्मवीर सागर, ब्रिगेडियर श्री जसवंतसिंह, खादी ग्रामोद्योग मंत्री श्री रामस्वरूप अजमेरा आदि उपस्थित थे। उन्होंने अपने मंजे हुए विचार रखे। आचार्यश्री ने धर्म और धार्मिक की विस्तृत व्याख्या की।

पहुंना के कार्यकर्ता व पत्रकार श्री गणेशकुमार कूकड़ा ने आभार प्रदर्शन किया। श्री नाथूलाल गांधी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। रात्रि में मुनि सुमेरमल "लाडनूं" का प्रवचन हुआ।

उद्घाटन एवं शिलान्यास

१३ दिसंबर / पहुंना के इस प्रवास में अणुव्रत विद्यापीठ, लोक कला भारती व तुलसी अमृतायन का उद्घाटन एवं शिलान्यास हुआ। यह सब रचनात्मक कार्यों की श्रृंखला में महत्त्वपूर्ण कदम था। मध्याह्न अणुव्रत विद्यापीठ का उद्घाटन श्री मांगीलाल विनाकिया तथा लोक कला भारती का उद्घाटन श्री शंकरलाल कोठारी तथा श्री देवीलाल कच्छारा ने किया। तीनों ने अपना आर्थिक सहयोग भी घोषित किया। श्री गणेशकुमार कूकड़ा ने दोनों संस्थाओं का परिचय दिया। साध्वी-समुदाय व लोक कला भारती के कलाकर श्री रामपाल शर्मा ने गीत प्रस्तुत किया। प्रमुख अतिथि के रूप में स्थानीय ठाकुर तथा ब्रिगेडियर उपस्थित थे। बयाना वाले नानालालजी छाजेड़ ने

अणुव्रत प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। श्री मोहनलाल हींगड़ ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। मान्य भोजन व्यवस्था का उल्लंघन करने पर आचार्यवर ने कल मध्याह्न का विहार फरमा दिया। पहले वे तीन दिन रात विराजने वाले थे।

१४ दिसंबर / आज आचार्यप्रवर तुलसी अमृतायन स्थल पधारे। जहां एक ऐसे गांव की संरचना करने की योजना है, जो अणुव्रत आदर्शों के अनुरूप होगी। तुलसी अमृतायन की आधार शिला अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के मंत्री श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट ने रखी। स्थानीय सरपंच श्री शांतिलाल विराणी ने अपने विचार रखे। श्री कर्णावट ने कहा—"अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम के साथ रचनात्मक प्रवृत्तियां भी बहुत तेजी से जुड़ती जा रही हैं। मेवाड़ में इस दृष्टि से अब तक तेरह संस्थाएं संस्थापित हो चुकी हैं। आज पहुंना क्षेत्र भी इसी शृंखला में जुड़ रहा है।" मुनिश्री सुखलाल तथा ब्रिगेडियर श्री जसवंतसिंह ने भी अपने विचार रखे।

आचार्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा—"समाज के व्यक्तियों को महत्व देने का जो क्रम प्रारम्भ हुआ है, वह एक शुभ संकेत है। समाज के चरित्र-निष्ठ व्यक्तियों का महत्त्व आंका जाना चाहिए। आज का आदमी जड़ होता जा रहा है। संवेदनशीलता समाप्त होती जा रही है, कुंठा बढ़ती जा रही है। इन परिस्थितियों में प्राण का संचार अपेक्षित है। इस दृष्टि से हमने प्रेक्षाध्यान का उपक्रम चालू किया है।" आचार्यवर ने मेवाड़ क्षेत्र में श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट, श्री मोहनलाल जैन, तथा श्री गणेश कूकड़ा के द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

मध्याह्न में बनास नदी पार करने के बाद मरोली गांव पधारे। ठाकुर, तथा उनके परिवार ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। ठाकुर साहब व उनका परिवार एक श्रद्धालु परिवार है। रात्रि कार्यक्रम में मुनि सुमेरमल "लाडनूं" के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर का उद्बोधन हुआ। अनेक लोग इस अवसर पर व्यसन मुक्त बने।

तुम मेरे गुरु हो ?

प्रवचन के बाद आचार्यवर स्थान पर पधार गये। घड़ी १० बजे की सूचना दे रही थी। आचार्यश्री सोने ही वाले थे, इतने में ही भीमगढ़ से पचासों व्यक्ति आ गए। उनमें प्रमुख श्री चांदमल पीछोल्या मकान में प्रवेश करते ही तेज आवाज में बोले—अगर आचार्यश्री हमारे गांव भीमगढ़ रात्रि

प्रवास नहीं करते हैं, तो मेरे तथा मेरे पूरे परिवार के चारों आहार का त्याग है।

आचार्यश्री ने कड़ाई के साथ कहा—"तुम श्रावक कहलाते हो। वंदना तो की ही नहीं और इधर त्याग करते हो। क्या तुम गुरु के गुरु बन कर आए हो? तुम मेरे गुरु हो या चेले?

श्री चांदमल—हैं तो चेले।

आचार्यश्री—चेले हो, तो त्यागकर तुम मुझे डराना चाहते हो? धमकी देकर खरीदना चाहते हो? यदि ऐसी मूर्खता की, तो हम भीमगढ़ नहीं जायेंगे। ७२ वर्ष की उम्र में इन मेवाड़ी ऊबड़-खाबड़ रास्तों में चलने से क्या मुझे मजा आता है? वैसे भी भीमगढ़ हमारे रास्ते में नहीं था, मैंने जानबूझकर लिया है, फिर भी तुम मेरे पर हावी होते हो। गांवों में कितनी कठिनाइयां होती हैं। थोड़ा बहुत भी तुम्हें विचार नहीं।

श्री चांदमल—लांगच रात्रि प्रवास की बात सुनकर मेरा दिल हिल गया। सारी कौमों के आदमी आए है। आपको भीमगढ़ में रात्रि प्रवास तो करना ही होगा।

आचार्यश्री—फिर वही बात, तेरापंथ की रीति-नीति और व्यवस्था को नहीं जानते। इतना सा भी विवेक नहीं है तुम्हारे में। थोड़ा समझपूर्वक बोलो। तुम्हारे लड़के सामने खड़े हैं। उनमें क्या संस्कार आयेगा।

श्री चांदमल—गुरुदेव! हमारी भावना है। हम एक ट्रैक्टर भर कर लाए हैं।

आचार्यश्री—एक नहीं, हजार ट्रैक्टर ले आओ तो भी भीमगढ़ जाने का भाव नहीं है।

आखिर श्री चांदमल ने मेवाड़ी पगड़ी को आचार्यवर के चरणों में रखा। अपनी गलती के लिए पुनः पुनः क्षमा मांगी। उनकी भक्ति व भावपूर्ण प्रार्थना पर आचार्यवर पसीजे और उन्होंने कहा—चांदमलजी! तुम्हारी इतनी भावना है, तो कल दिन का प्रवास भीमगढ़ करेंगे। दूसरे दिन लांगच से पुनः लौटते वक्त भीमगढ़ आयेंगे। वहां कुछ समय रुककर राशमी जायेंगे, ऐसा विचार है।

"आचार्यश्री तुलसी की जय हो" इस तरह जय-जयकार करते हुए लोग उठे और चले गये। पहले भीमगढ़ में आचार्यवर का १५ दिसंबर का पूरा प्रवास तय था।

१५ दिसंबर / मरोली से भीमगढ़ की दूरी मात्र ६ कि० मी० थी, पर आचार्यवर को १० कि० मी० पड़ गया। उसका निमित्त बना "लसाड़िया" गांव। वहां केवल एक बहिन तेरापंथी है। शादी के चंद दिनों बाद ही उसका पति गुजर गया। उसके बाद उसने गुरु नाम पर अपने आपको समर्पित कर दिया। आचार्यवर को अपने आंगन में पाकर वह बहिन बांसों खिल उठी। उसकी भावना को मद्देनजर रखते हुए ही आचार्यवर लसाड़िया पधारे थे। करीब सात सौ की उपस्थिति में आचार्यवर का प्रवचन हुआ। अनेकों ने विविध संकल्प लिए। वहां से विहार कर आचार्यवर जाड़ाणा पधारे। वहां तेरापंथ के आठ परिवार रहते हैं। वहां भी आचार्यश्री का प्रवचन हुआ। जाड़ाणा से आचार्यश्री भीमगढ़ पधार गये। लसाड़िया के सरपंच भीमगढ़ तक पैदल साथ थे। पहुंना के सरपंच श्री शांतिलाल की अध्यक्षता में आयोजित स्वागत समारोह में अध्यापक श्री देवड़ा ने अपने विचार रखे। कन्या मंडल एवं महिला मंडल के गीत हुए। आचार्यश्री ने अपने सारगर्भित प्रवचन में कहा—"धर्म किसी की बपौती नहीं है। व्यक्ति आत्महित में जो करता है, वही उसका धर्म है।" मध्याह्न २ बजे विहारकर आचार्यवर चटावटी होते हुए लांगच पधार गए।

अडिग आस्था

लांगच मे आयोजित स्वागत समारोह में आचार्यवर ने अपये लांगच आगमन का निमित्त श्री मांगीलाल खाव्या को माना। श्री मांगीलाल पिछले कई दिनों से आचार्यवर को लांगच पधारने की विनती कर रहे थे, किन्तु १४ कि० मी० का अतिरिक्त चक्कर पड़ने से पधारना संभव नहीं था। ३१ दिसंबर तक का पूरा विहार-कार्यक्रम निर्णीत हो चुका था। फिर भी उसने अपनी कोशिश जारी रखी। मरोली गांव में वह गांव के अन्य लोगों को साथ लेकर आया और लांगच पधारने की भावभरी प्रार्थना की। आचार्यश्री ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा—"तुम्हारे गांव मे झंझट है, पहले उसे मिटाओ।" कुछ ही मिनटों में पहुंना के सरपंच श्री शांतिलाल बीराणी आए। उन्होंने आचार्यवर से निवेदन किया कि मांगीलाल जी ने अपने गांव के लोगों से कहा है—"मैं गांव के सब घरों की जूतियां सिर पर धर लूगा, पर आप सब एक होकर गुरुदेव को पधारने की अर्ज करें।" आचार्यश्री को यह अटपटा लगा। उन्होंने लांगच के लोगों को याद किया और मांगीलालजी को अपमान-

जनक शर्त न रखने की शिक्षा दी और साथ में यह भी कहा कि तुम्हारी इतनी तीव्र उत्कंठा है, तो लांगच जाने का भाव है। वातावरण में एक विचित्र मोड़ आ गया। आज लांगच पधारने पर श्री मांगीलाल व उनका पूरा परिवार खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

लांगच गांव में २५ घर स्थानकवासी आम्नाय के हैं। तेरापंथका केवल श्री मांगीलाल खाब्या का घर है। उसने ३२ वर्ष पूर्व तेरापंथ की गुरु धारणा की। यह अन्य जैन भाइयों को अप्रिय लगा। उन्होंने श्री मांगीलाल से सारे सामाजिक व्यवहार वन्द कर दिये। फिर भी वह अपनी आस्था पर अचल रहा। रात्रि में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के प्राग् प्रवचन के वाद आचार्यवर ने बारह सौ की उपस्थिति में कहा—'धर्म करने की आजादी सबको है। उसमें प्रलोभन एवं जवर्दस्ती अनुपयुक्त है। कोई व्यक्ति किसी भी धर्म की मान्य उपासना करता है, उसे लेकर किसी की छींटाकशी करना पाप है।' इस अवसर पर कई व्यक्तियों ने धूम्रपान छोड़ा। रात्रि में आचार्यवर की सन्निधि में स्थानीय जैन लोग इकट्ठे हुए। श्री मांगीलाल के साथ पुनः सामान्य सामाजिक व्यवहार शुरु करने की चर्चा चली। कुछ लोगों के पूर्वाग्रह के कारण वातचीत का कोई नतीजा नहीं निकल सका।

१६ दिसम्बर/लांगच से विहार कर आचार्यश्री चटावटी पधारे। संक्षिप्त उद्‌वोधन के वाद पुनः भीमगढ़ पधारे। वहां भिक्षा की, प्रवचन किया। भीमगढ़ से चलकर १०.३० वजे तहसील क्षेत्र राशमी पधारे। तहसील में आयोजित स्वागत समारोह में तहसीलदार के भाषण के पश्चात् जिला पुलिस अधीक्षक श्री ओ० पी० सक्सेना ने कहा—'आपके चित्तौड़ जिले में पधारने पर हम आपके आभारी हैं। मैं आपके कई वार दर्शन कर चुका हूं। मैंने देखा है आपके हृदय में मानवजाति के प्रति पीड़ा है। यह मैं आपकी महानता मानता हूं। यही वजह है कि आपकी परिषद में सभी वर्गों के लोग समुपस्थित हैं।' पंचायत प्रधान श्री शान्तिलाल तातेड़ ने कहा—आचार्यश्री की जो अमूल्य शिक्षाएं हैं उन्हें अपने जीवन में उतारने का सलक्ष्य प्रयास होना चाहिए। आपके राशमी पधारने पर मैं राशमी पंचायत समिति की ओर से स्वागत करता हूं।

आचार्यश्री ने स्वागत के प्रत्युत्तर में कहा—हम न तो राजनैतिक हैं, न ही सत्ताधीश। हम तो अकिंचन भिक्षु हैं। हमारा स्वागत भी हमारे अनुरूप होना चाहिये। जो व्यक्ति दूसरों को पीड़ा देने में पाप नहीं समझता उसका

सीखा हुआ ज्ञान-अज्ञान है, अर्थहीन है, भारभूत है।'

मध्याह्न करीब १००० की उपस्थिति में आचार्यवर की सन्निधि में पुनः कार्यक्रम चला, जिसमें जिला पुलिस अधीक्षक श्री ओ० पी० सक्सेना ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने जन्मना जैनों की कम तथा कर्मणा जैनों की संख्या ज्यादा बताई। रात्रि में मुनिश्री सुखलाल का वक्तव्य हुआ।

१७ दिसंबर/राशमी से विहार कर आचार्यप्रवर १ घंटे के लिए मातृकुंडिया रुके। राशमी से विहार करते वक्त आकाश में बादल छाये हुए थे। बूंदाबांदी भी शुरु हो गई थी। चित्तौड़ जिले का अन्तिम गांव मातृकुंडिया एक प्राचीन तीर्थ है। कहा जाता है कि परशुरामजी यहां मातृहत्या के पाप से मुक्त हुए थे। पार्श्व में बह रही नदी पर 'मेजा बांध' का निर्माण जोरों से हो रहा है। वहां आचार्यश्री का संक्षिप्त प्रवचन हुआ। वहां से आचार्यवर गिलूंड पधारे। गिलूंड उदयपुर जिले में है। मध्याह्न आयोजित स्वागत-कार्यक्रम में विकास अधिकारी श्री माधव लाल दाधीच, राजसमन्द-रेलमगरा क्षेत्र के विधायक श्री मदनलाल खटीक ने आचार्यश्री को विश्व विश्रुत संत बताया। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में कहा—'मेरा प्रयास हमेशा आदमी को आदमी बनाने का रहा है और रहेगा। धर्म के पीछे विशेषण लगाकर हमने उसे संकीर्ण बना दिया, जबकि धर्म निर्विशेषण होना चाहिये।' आचार्यश्री ने अणुबम के प्रतिकार के लिए अणुव्रत को उपयोगी माना। रात्रि में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के प्राग् वक्तव्य के बाद आचार्यश्री का प्रवचन हुआ। उपस्थिति करीब एक हजार थी। जैन विश्व भारती के कुलपति श्री श्रीचंद रामपुरिया, सर्वोदयी विचारक श्री कृष्णराज मेहता कुछ अमरीकी जनों के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। काफी बातचीत चली।

१८ दिसंबर/प्रातः जूणदा के लिए आचार्यश्री ने विहार किया। मार्ग में पनोतिया गांव आया। वहां के लोगों की बलवती प्रार्थना को देखते हुए आचार्यवर कुछ समय के लिए रुके। ११.१५ बजे जूणंदा पधार गये। वहां सरपंच श्री रूपचंद चौधरी ने स्वागत में दो शब्द कहे। आचार्यश्री का महत्त्व पूर्ण प्रवचन हुआ। आज साध्वीश्री रूपांजी (लाडनूं) ने दर्शन किये।

१९ दिसंबर/आचार्यश्री १६ संतों के साथ कुंवारिया पधारे। कुंवारिया में बस व रेल की सुविधा होने पर केलवा, दिवेर, आमेट, लावा-सरदारगढ़, देवगढ़ आदि क्षेत्रों के सैकड़ों लोग पहुंचे। स्कूल में आयोजित स्वागत-कार्यक्रम में स्थानीय सरपंच व स्थानकवासी समाज के मंत्री श्री

शंकरलाल चंडालिया तथा प्रमुख अतिथि श्री भारतभूषण मूंदड़ा ने अपने विचार रखे। श्री मोतीलाल ने आजीवन सपत्नीक शीलव्रत ग्रहण कर स्वागत किया। दीर्घ तपस्विनी साध्वीश्री पन्नांजी ने आचार्यश्री के दर्शन किये। इस अवसर पर आचार्यश्री का प्रभावी प्रवचन हुआ। मध्याह्न प्रातः काल का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। सायं श्रद्धेय युवाचार्यश्री की सन्निधि व निदेशन में संपन्न शिविर के शिविरार्थियों ने आचार्यश्री के दर्शन किये। रात्रि में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' का व्याख्यान हुआ। गंगापुर से काफी लोग रात्रि में दर्शनार्थ आये।

२० दिसंबर/कुरज/साध्वी प्रमुखाश्री समेत सभी साध्वियां तथा कुछ मुनिजन सीधे रास्ते कुरज पधार गये। आचार्यश्री प्रारम्भ में सड़क-सड़क, फिर कच्चे रास्ते होते हुए पधारे। मार्ग काफी ऊबड़-खाबड़ था। जागोटिया-भवन में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में राजस्थान के पूर्व राज्यमंत्री श्री नाना-लाल बीरवाल ने आचार्यश्री को महान् संत बताया। आचार्यश्री ने उपस्थित जनसमूह को प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। रात्रि में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' का प्रवचन हुआ। प्रवचन के बाद ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने आचार्यश्री के दर्शन किए। वे इन दिनों चूरू लोकसभा उपचुनाव में पार्टी के पर्यवेक्षक थे। उन्होंने वहां के संस्मरण सुनाये।

२१ दिसम्बर/रेलमगरा/आचार्यवर का लंबी अवधि के बाद पधारने पर गर्म जोशी के साथ स्वागत किया गया। जिला विकास अधिकारी श्री जगदीश प्रसाद, स्थानीय सभा के मंत्री श्री गंभीरमल सोनी ने स्वागत में अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में इन्द्रियों को नियंत्रित करने की बात कहीं। कानोड चातुर्मास परिसंपन्न कर साध्वीश्री कमलप्रभा ने आज दर्शन किये।

२२ दिसम्बर/रेलमगरा/आचार्यश्री प्रातः तेरापंथ सभा भवन पधारे। आचार्यश्री ने वहां उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा—'तेरापंथ भवन बन जाना ही पर्याप्त नहीं है, पदाधिकारी बन जाना ही पूर्णता नहीं है। नींव के पत्थर बनकर संगठन को मजबूत बनाने वाला अधिक महत्त्वपूर्ण है। मैं चाहता हूं प्रत्येक तेरापंथी तेरापंथ की मर्यादा एवं व्यवस्था की समुचित जानकारी प्राप्त करें।'

एक मनोहारी दृश्य

श्रद्धेय युवाचार्यश्री राजसमन्द तुलसी साधना शिखर पर दो शिविरों

की सफल समायोजना के बाद आज रेलमगरा पहुंचे। प्रायः सभी संत व सैकड़ों की संख्या में भाई-बहिन युवाचार्यश्री की अगवानी में पहुंचे। गांव के मध्य 'देवली चबूतरे' पर दो महान् आत्माओं का मिलन बड़ा ही मनोहारी लग रहा था। सहस्रों-सहस्रों आंखें यह दृश्य देखकर कृतार्थ हो गईं। विशाल एवं संयत जुलूस के साथ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री विद्यालय प्रांगण पहुंचे।

मेवाड़ क्षेत्रीय तेरापंथ युवक परिषद् का अधिवेशन

रेलमगरा/आज आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के सन्निधि में मेवाड़ क्षेत्रीय तेरापंथ युवक परिषद् का ११वां वार्षिक अधिवेशन आयोजित हुआ। इस अधिवेशन में मेवाड़ के विभिन्न अंचलों से समागत ३०० युवक-प्रतिनिधि सम्मिलित थे। प्रातः सूर्योदय के वक्त परिषद् के अध्यक्ष श्री उत्तमचंद सकलेचा (देवगढ़) के झंडारोहण से अधिवेशन प्रारंभ हुआ। मुनिश्री मोहजीत कुमार ने योगासनों का अभ्यास करवाया।

प्रारम्भिक गीत के बाद श्री भगवती कोठारी ने स्वागत भाषण किया। आज की चर्चा का विषय था—'युवक ऊर्जा स्रोत कैसे बनें' इस विषय पर उदयपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री सुरेश मेहता ने अपने महत्त्वपूर्ण विचार रखे। श्री उत्तमचंद के अध्यक्षीय भाषण के बाद मंत्री श्री अरुण हिरण (गंगापुर) ने परिषद् का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

युवाचार्यश्री ने आचार्यश्री को महान् ऊर्जा स्रोत बताते हुए कहा—'वे हमारे सामने हैं। मैं आज प्रसन्न हूं क्योंकि पिछले कुछ दिनों से मैं इस ऊर्जा स्रोत से दूर था, आज वह भौगोलिक दूरी समाप्त हो चुकी है। यदि युवकों को ऊर्जा स्रोत बनना है, तो उनको समर्पण का गुर सीखना होगा। समर्पण में स्वार्थ स्वयमेव विलीन हो जाता है।'

आचार्यश्री ने युवकों को संबोधित करते हुए कहा—'समाज की वास्तविक शक्ति युवा शक्ति होती है। तेरापंथी युवक तेरापंथ को पाकर गौरव की अनुभूति करे। एक अनुशासित धर्मसंघ की प्राप्ति अपना प्राण होती है।' आचार्यश्री ने तेरापंथ की दो विशेषताओं का विस्तृत विवेचन किया—गुरु व लक्ष्य के प्रति समर्पण। २. लौकिक व लोकोत्तर कार्य की भेदरेखा का निर्धारण। आचार्यश्री ने तेरापंथ की समग्र अवगति हेतु युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा लिखित 'भिक्षु विचार दर्शन' मनन पूर्वक पढ़ने की प्रेरणा दी। दोपहर में मुनिश्री मधुकर के सान्निध्य में युवक प्रतिनिधियों की महत्त्वपूर्ण गोष्ठी

हुई। मुनिश्री ने युवक प्रतिनिधियों को संगठित एवं अनुशासित बने रहने की प्रेरणा दी।

मध्याह्न राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर ने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से एकांत में बातचीत की। उन्होंने वार्तालाप में लाडनूं में स्थापित जैन विश्व भारती व पारमार्थिक शिक्षण संस्था की प्रवृत्तियों की प्रशंसा की। वे अभी-अभी चूरू लोकसभा उपचुनाव में पार्टी का प्रचार कर लौटे हैं। उन्होंने इस दौरान लाडनूं में इन संस्थाओं की गतिविधियों को बारीकी से झांका और उनसे अतिशय प्रभावित हुए। तासोल से बोहरा परिवार शोक विमोचन के लिए आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुंचा। चित्तौड़गढ़ जिले की कपासन तहसील के तहसीलदार श्री शांतिलाल जैन ने आचार्यवर के दर्शन किये, बातचीत की। रेलमगरा के निकट स्थित 'दड़ीबा माइंस' में कार्यरत कुछ जैन लोगों ने रात्रि में आचार्यश्री के दर्शन किये। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के प्राग् वक्तव्य के बाद युवाचार्यश्री का 'जवानी की खोज' विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। आज साध्वीश्री भीखांजी तथा राजनगर चातुर्मास करने वाली साध्वीश्री सोमलता ने दर्शन किये।

२३ दिसम्बर/रेलमगरा से आचार्यवर बनेडिया पधारे। स्वागत कार्यक्रम में आचार्यवर ने लोगों को सौहार्दपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी। करीब ७०० की उपस्थिति में रात्रि कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में हुआ। अनेक साध्वियों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। अंत में साध्वी प्रमुखाश्री का प्रेरक प्रवचन हुआ। ठाकुर गणपत सिंहजी तथा ठुकरानीजी ने आचार्यवर की उपासना की। ठाकुरजी ने मद्य का पीने के रूप में त्याग किया।

२४ दिसंबर/खरताणा पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया। मध्याह्न आचार्यश्री के सान्निध्य में साधु-साध्वियों की एक विशेष गोष्ठी हुई। रात्रि में मुनिश्री मोहजीत कुमार के प्राग् वक्तव्य के बाद मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' का प्रवचन हुआ। वहां तेरापंथ के १६ घर हैं। वहां तेरापंथी सभा का विधिवत् गठन हुआ।

२५ दिसंबर/खरताणा से विहार कर सनवाड होते हुए फतहनगर पधारे। सनवाड में स्थानकवासी समाज के सौ से भी अधिक घर हैं। गांववासियों के विशेष अनुरोध पर वहां कुछ समय के लिए रुकना तय हुआ था। आचार्यवर जहां प्रवचन करने वाले थे, वहां संघ से बहिर्भूत साध्वी फूलकुमारी ने प्रवचन देना प्रारंभ किया। ऐसा करने के पीछे कुछ स्थानकवासी

समाज के दूसरे लोगों का हाथ था, ऐसा विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ। आचार्यश्री सीधे स्थानक में पधारे। मुश्किल से दो मिनट रुके और फतहनगर के लिए विहार कर दिया। इस कार्यवाही की स्थानीय जनता में मिश्रित प्रतिक्रिया हुई।

ठीक ९.३० बजे आचार्यवर भव्य जुलूस के साथ फतहनगर पधारे। मण्डी के रूप में प्रसिद्ध इस आठ हजार की आबादी वाले कस्बे में आयोजित स्वागत समारोह में राजस्थान के पूर्व सहकारिता मंत्री वर्तमान में मावली क्षेत्र के विधायक श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर ने कहा—राजस्थान की धरती का यह सौभाग्य है कि यहां कर्मवीर एवं धर्मवीर दोनों ने जन्म लिया। उन महापुरुषों में एक आप हैं। राजस्थान के इस लाडले सपूत पर न केवल राजस्थान को, बल्कि पूरे भारत को नाज है। आज समाज दिग्भ्रमित है, उसे आप दिशा प्रदान कर हमें कृतार्थ करें।' नगर पालिका अध्यक्ष श्री राम-राय बांगड़ ने नगर की ओर से आचार्यवर को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। महाश्रमणी साध्वी-प्रमुखाश्री ने संक्षेप में आचार्यश्री के जीवन चित्र को विभिन्न कोणों से खींचा।

आचार्यश्री ने उमास्वाति की एक पंक्ति 'इहैव मुक्ति सुविहितानां' का उच्चारण करते हुए कहा—'काम, क्रोध, मद को जीतने वालों की यहीं मुक्ति होती है।' आचार्यश्री ने आगे कहा—आज भारत के वर्तमान हालात संतोष-जनक नहीं हैं। राजनेता पार्टियों में बंटे हुए हैं। समाज के लोग स्वार्थ के दलदल में फंसे हुए हैं। धार्मिक लोग संप्रदायों में विभक्त हैं। इन पेचीदी परिस्थितियों में व्यक्ति को सहनशील बनना अत्यन्त अपेक्षित है। आज हमारे सामने महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, मार्टिन लूथर किंग, आचार्य भिक्षु सहिष्णुता के आदर्श रूप हैं।' चित्तौड़गढ़ से समागत तेरापंथ समाज ने आचार्यश्री के चित्तौड़ पधारने की पुरजोर प्रार्थना की। उपस्थिति करीब २५०० थी। कार्यक्रम के बाद निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल्ल ने आचार्यवर के दर्शन किये। उनका गतवर्ष चातुर्मास बालोतरा था।

मध्याह्न में भीलवाड़ा तेरापंथ समाज के दोनों पक्ष सुलह के लिए आचार्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। सबकी सहमति से श्री गणपतमल हिरण (गंगापुर) तथा श्री चांदमल दूगड़ (आसीन्द) को प्रेक्षक के रूप में नियुक्त किये। सायं 'गांव री खबरां' पाक्षिक पत्र के संपादक आचार्यश्री से मिले। रात्रि में युवाचार्यश्री का 'धर्म की जरूरत है खुद को समझने के लिए'

विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। मुनिश्री सुखलाल ने विषय-प्रवेश किया। उपस्थिति करीब ३००० थी।

२६ दिसंबर / आचार्यवर के आकोला पदार्पण पर स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। इस अभिनन्दन समारोह में चित्तौड़गढ़ जिले के जिलाधीश, उपजिलाधीश, पुलिस उपअधीक्षक, मजिस्ट्रेट, कपासन तहसील के तहसीलदार श्री शांतिलाल जैन, पंचायत प्रधान श्री नाथूलाल मेहता आदि विशिष्ट व्यक्ति मौजूद थे। कुमारी लता चपलोत के स्वागत गीत के बाद स्थानीय प्रमुख कार्यकर्ता श्री शांतिलाल चपलोत ने युवादृष्टि का नूतन अंक आचार्यवर को भेंट किया। आचार्यवर ने अपने प्रवचन में कहा—"आज हम आकोला पचीस वर्षों के लंबे अंतराल के बाद आए हैं। आकोला काफी कुछ बदल गया है, किंतु आदमी को जितना बदलाव चाहिए था, उतना नहीं बदला। यह शोचनीय बात है।" आचार्यवर ने ज्ञान का सार आचार बताया। कार्यक्रम का संयोजन श्री राजकुमार चपलोत ने किया।

रात्रि में करीब २००० की उपस्थिति में साध्वीश्री कनकश्री की निश्रा में साध्वियों का रोचक कार्यक्रम रहा। उधर आचार्यवर एवं युवाचार्यश्री के सान्निध्य में कुछ चुने हुए मुनियों की एक लघु गोष्ठी हुई, जिसमें कानोड़ श्रावक-सम्मेलन के चिंतनीय बिंदुओं पर विचार विमर्श चला।

एक महान् तपस्या

उदासर निवासी श्री रूपचंद मोहनोत की पुत्री उन्नीस वर्षीया कुमारी किरण मोहनोत ने आज ५१ दिनों की लम्बी तपस्या आचार्यवर के सान्निध्य में परिसंपन्न की। कुमारी किरण दो वर्ष पूर्व पारमार्थिक शिक्षण संस्था में उपासिका के रूप में दाखिल हुई। तब से वह साधनामय जीवन जी रही है। उसे कुछ ऐसा आभास हुआ कि पौष कृष्णा १३ को उसकी इहलीला समाप्त हो जायेगी। दो-तीन बार ऐसे संकेत मिलने पर किरण ने तपस्या प्रारम्भ कर दी। तीस दिन की तपस्या में उसे विविध उपसर्ग हुए। इकतीसवें दिन उसे फिर संकेत मिला कि उसे पूर्व में जो कुछ कहा था, वह उसकी परीक्षा मात्र था। वह इस परीक्षा में शत-प्रतिशत सफल रही है। अब वह जब चाहे, अपनी तपस्या पूरी कर ले। आयुष्य समाप्ति की बात केवल उसकी कसौटी करने के लिए कही गई थी। अब वह सभी प्रकार के उपसर्गों से मुक्त थी। परिवार के लोगों का आग्रह रहा कि वह पारणा कर ले, किन्तु बहिन किरण ने कहा—परमाराध्य आचार्यवर का अमृत-महोत्सव

मनाया जा रहा है । इसलिए ५१ दिन की तपस्या कर गुरुदेव के चरणों में अपना अर्घ्य चढ़ाना चाहती हूं ।

उसकी उत्कृष्ट भावना व दृढ़ इच्छा शक्ति देखकर परिवार वाले मौन हो गये । उसने अपनी भावना के अनुरूप तपस्या संपन्न की और उदासर (बीकानेर) से चलकर २५ दिसंबर को फतहनगर में अपने पारिवारिक जनों के साथ आचार्यश्री के दर्शन किए । आज आचार्यश्री के आकोला पधारने पर बहिन किरण ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी तपस्या संपन्न की । आचार्यश्री ने इस तपस्या की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

२७ दिसंबर / आकोला/पश्चिम रात्रि में आचार्यवर के सान्निध्य में सभी साधुओं की उपस्थिति में जैन समन्वय प्रकोष्ठ के उपसंयोजक श्री भीखमचंद कोठारी "भ्रमर" ने विभिन्न जैन आचार्यों, विशिष्ट मुनियों के संस्मरण सुनाये । एक संवत्सरी व एक मंच के उद्देश्य के लिए यात्रा पर निकले श्री भ्रमर विभिन्न आचार्यों एवं मुनियों से मिले थे ।

प्रातः मुनिश्री उदितकुमार के प्राग् प्रवचन के पश्चात् आचार्यवर का प्रवचन हुआ । आचार्यश्री ने कहा—"लक्ष्य के लिए तपने वाले व्यक्ति ही अपने लक्ष्य को पा सकते हैं ।" रात्रि में 'त्याग और भोग' विषय पर युवाचार्य श्री का विशेष वक्तव्य हुआ । मुनि श्री सुखलाल ने विषय की भूमिका पर प्रकाश डाला । प्रवचनोपरान्त सरपंच श्री मोहनलाल शर्मा आदि कुछ व्यक्ति आचार्यवर की सन्निधि में पहुंचे । आचार्यश्री की विशेष प्रेरणा से सरपंच ने खड़े होकर धूम्रपान न करने का त्याग कर दिया । गुरु प्रेरणा से उन्होंने गांव के झगड़े-फसाद कोर्ट में ले जाने के त्याग कर दिए ।

२८ दिसंबर को लोठियाना व २९ दिसंबर को मंगलवाड चौराहा पधारे । वहां से मंगलवाड गांव २ कि० मी० दूर है, जहां जैनों के चालीस घर हैं । आज बाड़मेर चातुर्मास परिसंपन्न करने वाले मुनिश्री रोशनलाल ने दर्शन किए । आज पार्श्ववर्ती गांवों से आचार्यवर के दर्शनार्थ जैन भाइयों का तांता लगा रहा । रात्रि में मुनिश्री कमलकुमार के प्राग् वक्तव्य के बाद मुनिश्री किशनलाल का प्रवचन हुआ ।

चरस आदि से मस्ती

मंगेसरा अखाड़ा के बाबा चन्द्रमनेश्वर स्वामी रात्रि में आचार्यश्री से मिलने आये । उन्होंने कुछ देर बातचीत भी की । उन्होंने कहा—"स्वामी

जी ! आज सांप्रदायिकता इतनी घर कर चुकी है कि उससे ऊपर उठकर चिंतन करना हेय मान लिया गया है। आज का धार्मिक अपने-अपने कठघरे में बंद है। आपका उदार दृष्टिकोण व व्यवहार देखकर मुझे अतिशय प्रसन्नता हुई, तभी मैं संगेसरा से चलकर आपके पास पहुंचा हूं।

आचार्यश्री—आप ठीक कह रहे हैं। आज सांप्रदायिकता का जहर धर्म को लील रहा है। धार्मिकों को उदार एवं आचरणशील बनना चाहिए। आज के सन्यासी धूम्रपान करते हैं, चरस, गांजा, सुलफा आदि पीते हैं। यह उचित नहीं है।

बावाजी—(मुस्कराते हुए) यह तो सब धडल्ले से चलता है। हमारे में एक कहावत है—

यह जूना अखाड़ा, इसमें उठता खूब धूमाड़ा।
रोटी की बचत करो, नोटों का होता यहां कबाड़ा॥

स्वामीजी ! साठ रुपये तोला चरस बिकती है। एक तोले चरस की चार चीलम होती है। चरस पीने वाले की भूख मर जाती है और रुपयों का धुआं उठता रहता है।

आचार्यश्री—ऐसा क्यों करते हैं सन्यासी लोग ?

बावाजी—मस्ती में रहने के लिए ऐसा करते हैं। चरस, गांजा, सुलफा आदि पीने से एक ऐसी मस्ती छाई रहती है, जिसके आलम में वे दुनियादारी की चिंता से मुक्त बन जाते हैं।

युवाचार्यश्री—आज सर्वत्र मस्ती के लिए नशा किया जाता है। यही काम प्रेक्षा-ध्यान से किया जा सकता है। आदमी हर परिस्थिति में शांत, निश्चित बने रह सकता है।

बावाजी ने अखाड़ा की गतिविधि की जानकारी दी।

३० दिसंबर / आचार्यवर तहसील क्षेत्र डूंगला पधारे। वहां स्कूल में आचार्यवर का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। वहां स्थानकवासी समाज के १८४ घर हैं। विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"जैन धर्म बहुत ही व्यावहारिक व वैज्ञानिक है। हम ऐसे धर्म को पाकर गौरवान्वित हैं। जैन धर्म में साधुओं व श्रावकों के बीच एक निश्चित सीमांकन है, जो जरूरी भी है।" मध्याह्न में मुनिश्री विजयकुमार के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। रात्रि में युवाचार्यश्री का प्रवचन हुआ। प्राग् प्रवचन मुनि सुमेरमल "लाडनूं" तथा प्रेक्षा अभ्यास मुनिश्री

किशनलाल ने करवाया। रात्रि में बैंगलूर तेरापंथ समाज के एक घटक ने आचार्यश्री के सम्मुख अपना पक्ष रखा। आचार्यश्री ने उनकी वार्ता को धैर्य से सुना।

कानोड़ में भव्य स्वागत

सन् १९८५ का अंतिम दिन ३१ दिसंबर/आचार्यवर के कानोड़ पदार्पण पर स्थानीय जनता द्वारा भव्य स्वागत किया गया। रावले में आयोजित स्वागत-समारोह में राजस्थान के सिंचाई व अकाल राहत मंत्री श्री गुलाबसिंह शक्तावत ने कहा—"देश में चारित्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए आचार्यश्री ने जो कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है। आज देश एवं समाज को संतों के सही मार्ग दर्शन की आवश्यकता है।" साध्वी प्रमुखाश्री तथा प्रदेश कांग्रेस महामंत्री व विधायक श्री सी० पी० जोशी ने भी सभा को संबोधित किया।

आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में कहा—"आज धार्मिक आदमी के जीवन में जो परिवर्तन आना चाहिये, वह दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। इसका कारण स्पष्ट है—धर्म अनुभूति शून्य बन गया है। केवल ग्रन्थों पर भरोसा रह गया है। इसलिए हर क्रिया के पीछे प्रयोग जरूरी है।" उपस्थिति करीब २५०० थी।

मध्याह्न स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। आचार्यवर का महत्त्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। रात्रि में करीब ५००० की उपस्थिति में युवाचार्यश्री का महत्त्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। विषय था—नया सवेरा दस्तक दे रहा है। विषय की भूमिका पर प्रकाश डाला मुनिश्री मुखलाल, मुनिश्री किशनलाल ने। कल से प्रारम्भ हो रहे श्रावक सम्मेलन की रूपरेखा के लिए कुछ चुने हुए साधुओं एवं श्रावकों की महत्त्वपूर्ण बैठक हुई।

पंच दिवसीय श्रावक सम्मेलन

१ जनवरी / सन् १९८६ की सुरम्य मंगलवेला मे विराट् अखिल भारतीय श्रावक सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन का निर्णय आमेट चातुर्मास में ही ले लिया गया था। भौगोलिक दृष्टि से कानोड़ एक तरफ होते हुए भी आहूत लोग समय पर पहुंच गये। आचार्यश्री की दृष्टि को ध्यान में रखकर नेपाल असम, बंगाल आदि उत्तरी पूर्वी राज्यों, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा दक्षिणी भारत आदि सुदूरवर्ती क्षेत्रों के आमंत्रित श्रावकों ने बड़े ही उत्साह के साथ इस सम्मेलन में भाग लिया। सौभाग्य से आज आचार्यवर का ६१ वां

दीक्षा दिवस था, जो प्रतिवर्ष "युवा दिवस" के रूप में मनाया जाता है। षष्टीपूर्ति दीक्षा-दिवस के कार्यक्रम का प्रारम्भ मुनिश्री विजयकुमार की सुमधुर गीतिका से हुआ। साध्वीश्री कनकश्री ने आचार्यश्री के व्यक्तित्व को बहु आयामी बताया। मुनिश्री मोहनलाल "शार्दूल" जिनका इस वर्ष चातुर्मास बारडोली था, आचार्यवर के दर्शन किए। उन्होंने अपनी दक्षिण-यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए "युवा दिवस" पर आचार्यवर का अभिनन्दन किया।

साध्वी प्रमुखाश्री जी ने इस अवसर पर कहा—"हिंसा, अराजकता और आतंक के माहौल में आज अहिंसा, मैत्री और प्रेम की अपेक्षा है। इस परिस्थिति में आचार्यवर का लक्ष्य है शांति और अहिंसा के नए-नए स्रोतों की खोज करना, उन्हें प्राप्त करना और जनता को बांटना। इस ढलती उम्र में जो उत्साह, क्षमता, सृजनशीलता और नित नए स्वप्न लेने की वृत्ति है वह हम सबके लिए अनुकरणीय है।"

शक्ति, भक्ति और अभिव्यक्ति-इन तीन प्रमुख तत्वों का उल्लेख करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"कौन कैसा है, इसकी कसौटी व्यक्ति की शक्ति है। शक्तिहीन व्यक्ति को जीने का कोई अधिकार नहीं है जीने का मूल स्रोत है शक्ति। शक्ति को सही दिशा में नियोजित करना भक्ति है। भक्ति के अभाव में शक्ति संपन्न आदमी खूंखार साबित हो सकता है। शक्ति और भक्ति का योग ही अभिव्यक्ति है। आज आचार्यवर का दीक्षा दिवस है। मैं मानता हूं कि शक्ति, भक्ति और अभिव्यक्ति का माध्यम दीक्षा है।"

युवाचार्यश्री ने आगे कहा—"आचार्यश्री ने हर स्थिति में शक्ति का जीवन जीया। आप हर स्थिति में आशावान बन सपने संजोते रहते हैं, कल्पना के लोक में विचरण करते रहते हैं, श्रम के माहात्म्य को समझते हैं, आप जिस अदम्य उत्साह व प्रसन्नता के साथ श्रम को आह्वान करते हैं, युवा कहलाने वाले भी उस श्रम से कतराते हैं।"

आचार्यवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा—"मैं बहत्तर वर्ष का होने के बावजूद भी अपने आपको बूढ़ा नहीं मानता। अवस्थावान बन जाना ही बुढ़ापा नही है। जहां उत्साह है, श्रम है, कल्पना है वहां बुढ़ापा कहां? मेरे साथ कुछ विसंगतियां भी पल रही हैं। प्रशंसा और निंदा दोनों में सम रहने का अभ्यास किया है और आगे भी समत्वशील बनने का प्रयास करता रहूंगा।"

पिछले कुछ अर्से से यह महसूस किया जा रहा था कि कुछ कार्य ऐसे

हो रहे हैं जो दर्शाते हैं कि हमारे धार्मिक आयोजनों में प्रदर्शन एवं फिजूल खर्ची बढ़ती जा रही है। हमारी भावी पीढ़ी तेरापंथ के मौलिक सिद्धांतों से परे हटती जा रही है। प्रचलित रूढ़ियां हमारे सामाजिक जीवन को घुण की तरह खाये जा रही हैं। धर्मसंघ से संबंधित श्रावकीय व्यवस्थाओं को आज स्वयं बोझिल बना दिया है। इन परिस्थितियों में सुधार, परिष्कार, परिवर्तन हेतु इस सम्मेलन का समायोजन हुआ।

जिस तरह हजारों मीलों की यात्रा की शुरुआत एक छोटे से कदम उठाने से होती है, उसी तरह इस सम्मेलन ने भी अपनी परंपराओं को अपने वर्तमान में सन्तुलित रखते हुए एक नन्हा सा कदम उठाया है। यह पहला मौका है, जब समाज के सामूहिक निर्णयों को संघीय-सभा संस्थाओं ने अपना परम कर्तव्य समझकर क्रियान्वित करने का दायित्व स्वीकार किया है।

इस सम्मेलन में देश के कोने-कोने से समागत ३३१ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में कुल १२ गोष्ठियां हुई, जिसमें कुल समय २१ घंटे लगा। इन १२ गोष्ठियों में पृथक्-पृथक् विषय रखे गये थे। उन निर्धारित विषयों के मानक बिंदुओं पर संतों और साध्वियों का महत्त्वपूर्ण वक्तव्य होता। उस पर उपस्थित प्रतिनिधि अपने बहुमूल्य सुझाव देते। उन सुझावों एवं मानक बिंदुओं के आधार पर एक मसौदा तैयार करने हेतु एक उपसमिति का गठन होता और वह अगली गोष्ठी होने तक अपनी पूरी रिपोर्ट सम्मेलन में रखती। उस रिपोर्ट को पुनः पढ़ा जाता और मामूली संशोधनों के साथ उस पर मोहर छाप लग जाती। इस सम्मेलन की आयोजक संस्थाएं थीं—जैन विश्व भारती, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, नियोजन मण्डल, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कानोड़), तेरापंथ भवन में आयोजित पंच दिवसीय इस सम्मेलन में सम्पन्न विभिन्न गोष्ठियों के मुख्य विषय इस प्रकार हैं—

१. भावी पीढ़ी और संस्कार निर्माण, २. भावी पीढ़ी और तत्त्व ज्ञान, ३. धार्मिक आयोजन और व्यवस्थाओं का सरलीकरण, ४. हमारा संगठन। ५. अमृत महोत्सव पर संपादित होने वाले कार्य, ६. जैन समन्वय, ७. सामाजिक रूढ़ियों का परिष्कार, ८. सांस्कृतिक व शैक्षणिक विकास आदि। श्रावक सम्मेलन द्वारा इन विषयों पर पारित प्रस्ताव[1] समाज पर प्रभावी हो गये।

---

१. नियोजन मण्डल द्वारा प्रकाशित विज्ञप्ति "कानोड़-प्रस्ताव" शीर्षक से विस्तृत विवरण देखें।

इन प्रस्तावों को लागू करने हेतु अलग-अलग धाराओं की क्रियान्विति की जिम्मेवारी विभिन्न संस्थाओं की होगी।

इस अखिल भारतीय श्रावक-सम्मेलन का भविष्य में क्या नाम होगा ? क्या स्वरूप होगा ? इन पर यह निर्णय लिया गया कि इस सम्मेलन का नाम "तेरापंथ अमृत संसद" रहेगा। इसका गठन व संचालन नियोजन मण्डल करेगा। नियोजन मंडल के संयोजक श्री धरमचंद चोपड़ा हैं।

अणुव्रत के कार्य को गतिशील बनाने की दृष्टि से एक समिति श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट के संयोजन में बनी। वृहत् आयोजनों में प्रबन्ध एवं व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाने की दृष्टि से "वृहत् आयोजन परामर्श समिति" बनी। इसके संयोजक श्री खेमचंद सेठिया होंगे। दोनों समितियों में अन्य अनेक सदस्यों को भी नामजद किया गया।

पांच दिवसीय यह अखिल भारतीय श्रावक सम्मेलन बड़े ही हर्ष एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट, श्री पन्नालाल बांठिया, श्री माणकचंद बांठिया, मुनिश्री किशनलाल ने समापन के अवसर पर अपने विचार रखे। युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में श्रावकों को दिशादर्शन दिया। आचार्यश्री ने सम्मेलन को अभूतपूर्व बताते हुए कहा—'सभी गोष्ठियों में महत्त्वपूर्ण विषयों पर गहन चर्चाएं हुईं। कानोड़ आगमन के बाद समय पर सो भी नहीं सके। बहुत व्यस्त कार्यक्रम रहा, फिर भी हमें प्रसन्नता का अनुभव हुआ क्योंकि हमने यह समय जन-जागरण के लिए लगाया। भौतिक विकास के सभी संसाधनों से अध्यात्म उत्कृष्ट होता है। इसे मुख्य मानकर चलने वाला आदमी सदा आनन्द को हस्तगत कर सकता है।'

मध्याह्न में राजस्थान के मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय, विधायक सुश्री गिरिजा व्यास भी उपस्थित थीं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचंदजी सेठिया ने सुन्दर व्यवस्था के लिए कानोड के श्रावकों को बधाई दी। श्रावक सम्मेलन को सफल बनाने में श्री सेठिया का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। श्रावक सम्मेलन में समागत प्रतिनिधियों को यह सूचना दी गई कि काठमांडु, नेपाल सरकार ने श्री हंसराज गोलछा को नेपाल का सर्वोच्च अलंकरण प्रदान किया है।

६ जनवरी/प्रातः प्रवचन में पंडित गिरजाशंकर व्यास ने संस्कृत पद्यों के माध्यम से आचार्यवर का गुणगान किया। आचार्यवर के उद्गार— 'आजकल 'जीओ और जीने दो' का नारा बुलन्द है, पर इसमें गांभीर्य नहीं है।

जीना और मरना महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्वपूर्ण है गिरते हुए व्यक्ति को ऊंचा उठाना। महत्त्वपूर्ण है जीने का सही तौर-तरीका। वर्तमान का यही ज्वलन्त प्रश्न है कि कैसे जीया जाए।" जीने का यथार्थ ढंग कोई भी हमारे से सीख सकता है। हमारे पास ऐसे साधन विकसित हैं।"

दोपहर युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ कॉलेज में पधारे। विद्यार्थियों के बीच युवाचार्यश्री का प्रेरक उद्बोधन हुआ। मध्याह्न एक अमरीकी पार्टी आई, जो पूरे विश्व का दौरा कर रही है। उसका उद्देश्य एक ऐसी फिल्म का निर्माण करना है जिसमें अहिंसा के लिए काम करने वाले व्यक्तियों, संस्थाओं का अंतरंग चित्रण हो। अणु अस्त्रों की विभीषिका से त्रस्त इस जगत् को अहिंसा की बात कहना इस अमरीकी पार्टी का मुख्य ध्येय है। इस पार्टी ने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के इन्टरव्यू लिए। सायं आचार्यवर कानोड़ नगर बाहिर जवाहिर विद्यापीठ पधारे। कानोड़ नगर की ओर से आचार्यवर को विदाई दी गई।

५ जनवरी को प्रातः प्रवचन के मध्य मुनिश्री सुमनकुमार आचार्यवर को अपना "मुक्ति-पत्र" देकर चला गया और संघ से अपना संबंध तोड़ लिया। काफी समय से उसकी प्रकृति का संघीय व्यवस्थाओं के साथ तालमेल नहीं हो पा रहा था। उसकी प्रकृति को रूपान्तरित करने का प्रयास किया गया, पर वह असफल रहा। आखिर उसकी परिणति संघ से बहिर्गमन के रूप में हुई।

कानोड़-प्रवास के दौरान शोक विमुक्ति हेतु एक परिवार आया। श्री दुलीचंद बांठिया (संगरिया मंडी) का जीप दुर्घटना में देहान्त होने पर उनके पारिवारिक लोग दर्शनार्थ पहुंचे। कई स्थानों के अर्वाचीन व प्राचीन झंझट समाप्ति की दिशा में कुछ उपयोगी कार्य संपादित हुए। बैंगलूर का झंझट जो काफी पुराना था, समाप्त हो गया। इसी तरह विराटनगर (नेपाल) तथा जयपुर निवासी श्री चन्दनमल दूगड़ की पत्नी की संपत्ति लेकर चल रहा तयालीस वर्ष पुराना झंझट दूर हो गया। यह शमन आचार्यवर के सान्निध्य में तथा वरिष्ट श्रावक श्री खेमचंद सेठिया की मध्यस्थता में हुआ।

६ जनवरी/आचार्यवर का कानोड़ से विहार। २५ संतों के साथ बिलोदा आगमन। श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने आचार्यश्री से पृथक् सीधे कानोड़ से भीण्डर, वल्लभनगर होते हुए मावली की ओर विहार किया। आचार्यवर के चित्तौड़गढ़ यात्रा के आकस्मिक निर्णय से सारे यात्रा कार्यक्रम में फेरबदल हो

गया। जो मार्ग पूर्व में आचार्यवर के लिए निर्णीत था, उसी रास्ते से युवाचार्यश्री ठाणा १६ से प्रस्थित हो गये। प्रातः व रात्रि विलोदा में आचार्यवर का प्रवचन हुआ।

८ जनवरी/वीलोदा से आचार्यवर भादसोड पधारे। आज मार्ग लंवा, ऊवड़-खावड़ व कष्टप्रद था। आचार्यवर के कमर में दर्द होने से रास्ते में कई जगह विश्राम लेना पड़ा। रास्ते में मोखण गांव आया। पैंतीस जैन घरों वाले इस गांव में आचार्यवर कुछ देर रुके, प्रवचन दिया। भादसोड में करीव ७०० की उपस्थिति में आचार्यवर का प्रवचन हुआ। रात्रि में मुनिश्री मुनि सुव्रत के संक्षिप्त वक्तव्य के वाद मुनिश्री रोशनलाल का प्रवचन हुआ।

९ जनवरी/प्रातः वानसेन, सायं हाज्यांखेड़ी तथा १० जनवरी को प्रातः देवारी सायं वोजूंदा प्रजनन केन्द्र के मुख्यालय में विराजे। वहां देश-विदेश की विभिन्न किस्मों की भेड़ें हैं। रात्रि में वहां के अधिकारियों ने आचार्यवर से वातचीत की।

देश में चारित्रिक संकट गहराया

वोजून्दा/आचार्यवर कल चित्तौड़गढ़ पधार रहे हैं, इसलिए रात्रि में राजस्थान प्रदेश के कुछ पत्रों के संवाददाता आचार्यवर से मिले और उन्होंने कुछ प्रश्न पूछे। दूसरे दिन कई प्रमुख पत्रों में इस वार्ता की अच्छी चर्चा रही। आचार्यवर ने संवाददाताओं के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा—"देश में आजादी के वाद लोगों में स्वाभिमान जागा है और स्वतंत्रता की भावना पैदा हुई है। नैतिक पतन के कारण चारित्रिक संकट गहराया है। मैंने पिछले साठ वर्षों में लगभग ६० हजार कि० मी० से भी ज्यादा पैदल यात्रा कर आजादी के पहले और उसके वाद लगभग सारे भारत को नजदीकी से देखा है और पाया है कि आजादी के वाद भौतिकवाद के प्रवाह में इतने अधिक वह गये हैं कि नैतिकता, प्रामाणिकता और धर्म को भूल गये। चारित्रिक संकट का यह माहौल समाज के सभी वर्गों में व्याप्त है, पर ऐसे संकट के समय में धर्माचार्य भी अपना कर्त्तव्य भूल गए और चरित्र के स्थान पर उपासना पद्धति को ही प्रमुख मान लिया। जवकि उपासना भी उसी व्यक्ति को करने का अधिकार है जो चरित्रवान् हो। पर आज हो यह रहा है कि चरित्रहीन लोग उपासना कर रहे हैं।

आचार्यश्री ने कहा कि देश में कई एक योजनाओं के माध्यम से विकास की गति को तेज करने का प्रयास किया जा रहा है पर उसका प्रतिफल इस-

लिए पूरा नहीं मिल पा रहा है कि सर्वत्र चारित्रिक संकट विद्यमान है। जब तक हम मानवीय आचार-संहिता को जीवन और व्यवहार में स्वीकार नहीं करते हैं तब तक न तो योजनाओं का लाभ मिलेगा, न हम गरीबी से मुक्ति पा सकते हैं।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि इसी भावना को लेकर देश में अणुव्रत आंदोलन प्रारम्भ किया है जिसमें उपासना को गौण और चरित्र को प्रमुख, मजहब और सम्प्रदाय को गौण और मानव धर्म को मुख्य माना है तथा परलोक की चिंता न कर इस लोक को सुधारने पर बल दिया है। अणुव्रत आंदोलन मानवीय आचार-संहिता के रूप में आज काफी लोकप्रिय हो रहा है और एक नया वातावरण बना है।

राजनीति और शिक्षा पर पूछे गये प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि कोई भी नीति हो, वह अध्यात्म के बिना अधूरी है। ऐसी राजनीति देश के लिए घातक होगी जो इन्सान को इन्सानियत के रास्ते से ही हटा दे और वह शिक्षा नीति बेकार होगी जो जीवन को जीने का ज्ञान नहीं दे सके। उन्होंने कहा कि एक जीवन-विज्ञान कार्यक्रम प्रारम्भ किया है जिसमें जीवन के सर्वांगीण विकास की पद्धति के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। उसके अनुकूल साहित्य तैयार कर सरकार को दिया जायेगा। ताकि वह शिक्षण संस्थाओं में इसे भेज सके। राजस्थान विद्यापीठ के तत्वावधान में अगले माह उदयपुर में इसी विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

विदेशों में जैन धर्म और मानवता का संदेश देने के लिए साधु और श्रावक के बीच की श्रेणी तैयार की गई है, जो विदेशों में जाकर मानव धर्म का प्रचार कर रही है। इसके उत्साह जनक परिणाम सामने आये हैं। कई देशों से बराबर मांग आ रही है कि समणियों को प्रचार कार्य हेतु भेजा जाए। आचार्यश्री ने कहा कि साधु की अपनी मर्यादाएं है और श्रावक से इतनी अपेक्षा नहीं की जा सकती, इसीलिए यह नया वर्ग तैयार किया है जिसका आम स्वागत किया गया है।

जैन समाज के विभिन्न घटकों में एकता के बारे में पूछे गये प्रश्न के उत्तर में आचार्यश्री ने कहा कि इन्हीं दिनों जैन समन्वय प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है, जो इस दिशा में प्रयास कर रहा है। इसकी एक बैठक अगले माह उदयपुर में रखी गयी है जिसमें सभी घटकों के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

उन्होंने आगे कहा कि जैन समाज को एक मंच पर लाने और संवत्सरी

पर्व एक मनाने की दिशा में जो प्रयास इन दिनों हो रहे हैं, उससे उनको आशा है कि निकट भविष्य में जल्दी ही सफलता मिल जायेगी। जैन धर्म के सभी संप्रदायों के धर्माचार्य भी अब इसकी आवश्यकता महसूस करने लगे हैं और इस प्रकार से एक मंच के पक्ष में हैं।

देश में अलगाववादी प्रवृत्तियों के सिर उठाने के बारे में पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि एक तो देश में गरीबी के कारण यहां का इन्सान भूख के मारे जल्दी आक्रोश में आ आता है फिर विदेशी ताकतें इसका लाभ उठाती हैं और इस देश में अलगाववादी ताकतों को पैसा व प्रोत्साहन देती है जिससे यह समस्या उत्पन्न हुई है। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों स्व-हरचंदसिंह लोंगोवाल की उनसे जो मुलाकात हुई उस दौरान बातचीत में स्व० लोंगोवाल ने यह स्वीकार किया था कि वह संविधान को मानते हैं और भारत की अखंडता के पक्ष में हैं।

ऐतिहासिक चित्तौड़गढ़ में

११ जनवरी/आचार्यवर का चित्तौड़ प्रवेश। सेंथी से विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर मीरा मार्केट पहुंचे। इस विशाल और भव्य जुलूस को देखने के लिए सड़क के दोनों ओर हजारों-हजारों लोग खड़े थे। ज्योंही आचार्यश्री पास से गुजरते, लोगों के हाथ जुड़ जाते। आचार्यश्री का प्रवास-स्थल बना नवनिर्मित विशाल जैन स्थानक। मीरा मार्केट में आयोजित स्वागत कार्यक्रम का प्रारम्भ कन्या मंडल के गीत से हुआ।

लगभग ५००० की महती उपस्थिति में आयोजित इस स्वागत कार्यक्रम में सभी धर्मों की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया गया। अंजुमन कमेटी के अध्यक्ष सैयद बरकत अली, गुरुसिंह सभा की ओर से श्री सतपाल सिंह, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण इनाणी, ब्राह्मण समाज की ओर से श्री शिवशंकर व्यास, महावीर जैन संघ की ओर से श्री बसंतीलाल पोखरना, तेरापंथी समाज की ओर से श्री शंभूसिंह सुराणा ने स्वागत किया और उन्होंने चित्तौड़गढ़ के लिए इसे शुभ दिन माना। जिला कलेक्टर श्री धर्मसिंह सागर ने आचार्यवर को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया, जिसका वाचन श्री बी० एल० खाव्या ने किया। इस अवसर पर मुनिश्री बुद्धमल तथा साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के भाषण हुए। आर्य कन्या गुरुकुल के संचालक विजयानंद सरस्वती ने स्वरचित कविता भेंट की।

आचार्यश्री ने अपने मंगल संदेश में कहा—"आज हम धर्म को गौण

मानकर मजहब को प्रमुख मानने लग गये हैं जिसका ही परिणाम है कि आज मजहब धर्मविहीन होता जा रहा है।"

उन्होंने आगे कहा—"भारत की माटी से अध्यात्मवाद मरा नहीं, अपितु मूर्च्छित हुआ है। जिसे पुनः सचेतन करने की आवश्यकता है और वह तभी सचेतन होगा जब हम मजहब के स्थान पर धर्म को अर्हता देंगे। अणुव्रत नैतिक जीवन की आचार-संहिता है। उसका संबंध किसी मजहब से नहीं, जीवन से है। मानवता का संदेश लेकर घूमता-घूमता आज आपके ऐतिहासिक नगर में आया हूं।"

सत्ताधीशों का संतो से सम्पर्क जरूरी

मध्याह्न दैनिक भास्कर के विशेष संवाददाता श्री सुभाष ओझा आचार्यवर से मिले। उन्होंने आचार्यवर से विभिन्न विषय संबंधी प्रश्न पूछे। यह भेंट वार्ता १६ फरवरी के दैनिक भास्कर में प्रकाशित हुई। करीब तीस मिनट तक धर्म, सेक्स, अध्यात्म, राजनीति, धार्मिक आडम्बर आदि विभिन्न मुद्दों से जुड़े सवालों का आचार्यश्री ने जवाब दिया। वार्ता का सार संक्षेप इस प्रकार है—

प्रश्न—भारत जैसे नैतिकता प्रधान व संतों की परंपरा वाले देश में ही सर्वाधिक नैतिक पतन दिखाई देता है। इस विसंगति के लिए आप किसे दोषी ठहराते हैं?

उत्तर—देखिए, कोई भी देश न मात्र नैतिक होता है और न मात्र अनैतिक। देश, काल व परिस्थितियों के बदलाव से उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

भारत भी कभी अनैतिकता प्रधान देश था। भारत में कब क्या नहीं हुआ? आप देखिए रावण जैसा राजा सीता का अपहरण कर ले गया। आगे देखिए द्रोपदी को उसके पति ने ही जुए में दांव पर लगाया। उसके नातेदारों ने भरी सभा में उसको निर्वसन करने की कुचेष्टा की। ऐसा तो आज भी नहीं होता। कहा जाता है कि भारत अच्छा था। ठीक है। पर देश काल के कारण उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

यह कहा जाता है कि आज पूर्व की तुलना में अधिक पतन है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आज मनुष्य अच्छे के लिए कोशिश नहीं करता, केवल चर्चा करते हैं, सोचते हैं, करते नहीं। भारत में यदि लोगों के सोच, कथनी व करनी में एकरूपता कायम हो जाए तो आज देश का नैतिक उत्थान हो सकता है।

दूसरी सबसे बड़ी बात यह हुई है कि भारतीय लोगों की आस्था बड़ी क्षीण हुई है। एक समय था जब यह माना जाता था कि सत्य और नीति से काम चल सकता है। आज यह धारणा बन गई है कि सत्य से काम चल नहीं सकता। नीति से काम चल नहीं सकता क्योंकि आस्था नहीं रह गई है। इस आस्था का निर्माण किया जाए तो भारत में नैतिकता फिर आ सकती है।

प्रश्न—आचार्य रजनीश के इस आरोप में कितनी सच्चाई है कि भारत में धार्मिक पतन के लिए धर्मगुरुओं का समूह ही सबसे ज्यादा दोषी है ?

उत्तर—दोष देना सहज है। ऐसे कोई भी किसी को दोष दे सकता है। रजनीशजी ने जो बात कही है, हो सकता है खुद के जीवन को उदाहरण के रूप में सामने रख कर कही हो। वो खुद शायद धर्म में अनैतिकता पैदा करने वाला बर्ताव करते हो, मुझे मालूम नहीं। मेरी राय में नैतिक पतन के लिए धर्म गुरु भी दोषी हो सकते हैं। इसलिए कि कुछ धर्म गुरुओं ने नैतिकता की रक्षा करने का फर्ज पूरा न किया हो।

प्रश्न—सेक्स और अध्यात्म-समन्वय के रजनीशी नजरिए के बारे में आपका मत क्या है ? क्या संभोग से समाधि का जन्म संभव है ?

उत्तर—सेक्स और अध्यात्म को एक रूप देने की कल्पना निरी मूर्खतापूर्ण है। सेक्स पर धर्म का, अध्यात्म का अंकुश रहना चाहिए, ऐसा हम मानते हैं पर दोनों में समन्वय का कोई प्रश्न नहीं है।

दूसरी बात सेक्स से समाधि का सवाल ही नहीं। ऐसा प्रचार करना सिरफिरे लोगों का काम है। जो प्रलोभनकारी बातें कर जनता को भुलावा देते रहते हैं।

प्रश्न—समय और मानवता की मांग के अनुसार क्या धर्म गुरुओं को बाबा आमटे व मदर टेरेसा जैसे सेवा कार्यों का दौर नहीं अपनाना चाहिए ?

उत्तर—निःसंकोच और अवश्य ऐसे कार्य करना चाहिए। मैं तो मानता हूं कि सभी धर्माचार्यों को अपनी सीमा में रहते हुए ऐसे काम अक्सर करने चाहिए जिससे राष्ट्र की, संसार की एवं मानवता की हर समस्या का समाधान हो।

प्रश्न—आचार्य के रूप में आपने पचास वर्ष पूरे कर लिए। इन पचास वर्षों में आम भारतीय नागरिक के सोच में क्या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आपने महसूस किया ?

उत्तर—पचास वर्षों में मैंने देखा कि भारतीयों में नैतिक व चरित्र

पतन का दौर गहराया है। राष्ट्रीय एवं चारित्रिक मूल्यों में आस्था भी कमजोर हुई है। फिर भी मेरा विश्वास है कि भारतवासियों की चेतना मरी नहीं है, मूर्च्छित है। आज उसको जागृत किया जा सकता है अगर सब धर्मगुरु, धार्मिक लोग व राजनीतिक मिलजुल कर ईमानदारी से प्रयत्न करें तो भारत का बड़ा भला हो सकता है।

प्रश्न—प्रयत्नों का स्वरूप कैसा होना चाहिए ?

उत्तर—प्रयत्न का स्वरूप यही हो सकता है कि स्वयं मर्यादाओं में रहें और अपने-अपने अनुयाइयों को मर्यादा में रखने का तीव्र प्रयत्न करें। स्पष्टतः कहें कि अगर तुम मेरे अनुयायी हो, तो भ्रष्टाचार व अनैतिकता नहीं कर सकते। बुरा काम नहीं कर सकते। अगर सभी यह बात बल देकर कहें तो मेरा विश्वास है कि अनुयायीगण अवश्य मानेंगे और भारत का नक्शा बदल सकता है। पर ऐसा तभी संभव है जब प्रत्येक जन खुद नैतिक, चारित्रिक राष्ट्रीय व धार्मिक मर्यादाओं में रहें।

प्रश्न—देश के बड़े संतों में सत्ता से रिश्ते जोड़ने की परपंरा विकसित हुई है। आपके आयोजनों में भी नेता व मंत्री प्रायः दिखाई देते हैं। इससे संतों की तटस्थता प्रभावित नहीं होती ?

उत्तर—संतों को सत्ता से रिश्ता जोड़ने की जरूरत नहीं है। घबराना नहीं चाहिए। सत्ता के लोगों से संपर्क जरूर रखना चाहिए। रिश्ते और संपर्क जरूर रखना चाहिए। रिश्ते और संपर्क में बहुत फर्क है। जब हम अन्यान्य लोगों से संपर्क रख सकते हैं तो सत्ता के लोगों से संपर्क रखने में क्या आपत्ति है ?

फिर सत्ता के लोगों से क्या एलर्जी है ? संतों के पास तो कोई भी आए, स्वागत है। हमारे पास आएंगे तो हमको देने के बजाए कुछ लेकर ही जाएंगे। हमारा तो कहना है कि राजनीतिज्ञों को भी संतों के पास आना चाहिए। इसीलिए कि यहां आकर कुछ सीखें, वे कुछ ग्रहण करें, अन्यथा उनको संतों के सिवाए कौन सीख दे सकता है।

एक उदाहरण है—मोरारजी भाई ने एक बार मुझसे कहा,—पंडित नेहरू आपके पास आते हैं। आप उनमें आध्यात्मिक चेतना जगा दीजिए। बड़ा कल्याण होगा। हम नहीं कह सकते। आप कह सकते हैं।

उसके कुछ रोज बाद मोरारजी भाई मिले। बोले—आपसे मैंने जो कुछ कहा था वह काम हो गया। आजकल हर भाषण में पण्डितजी अध्यात्म

की चर्चा करते हैं। इस प्रकार संतों के पास आने का फायदा हुआ न ?

प्रश्न—लोकतंत्र की वर्तमान स्वरूप से क्या आप संतुष्ट हैं ?

उत्तर—लोकतंत्र की प्रणाली तो निर्विवाद रूप से अच्छी है, किंतु लोकतंत्र को चलाने वाले राजनीतिज्ञ अच्छे नहीं हैं। प्रणाली क्या करे ? धर्म अच्छा है पर व्यक्ति की नियत साफ न हो तो धर्म क्या करे ? राजनेता अच्छे होंगे तब ही देश में लोकतंत्र का स्वरूप अच्छा होगा। वर्तमान में राजनीतिज्ञ सही नहीं है इसलिए लोकतंत्र का मौजूद ढांचा संतोषप्रद नहीं है।

प्रश्न—क्या भारत में समाजवाद का स्वप्न साकार होगा ?

उत्तर—राजनीति जिस प्रकार स्वार्थनीति बन रही है उससे तो समाजवाद संभव नहीं है। आज राष्ट्र की किसी को चिंता नहीं है। समाज की किसी को चिंता नहीं है। चिंता अपनी पार्टी की है, अपने घर की है, कुर्सी की है। इन हालातों में समाजवाद कैसे आएगा ? समाजवाद के लिए राष्ट्र व समाज हित को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति अपनानी होगी। ऐसा नहीं किया गया तो समाजवाद केवल स्वप्न बन कर ही रह जाएगा।

प्रश्न—देश की गरीबी कैसे दूर की जा सकती है ?

उत्तर—ऐसा है कि देश की गरीबी भी सापेक्ष है। गरीबी किसे कहें हम लोग ? आदमी शराब पीता है। भांग पीता है। तंबाखू खाता-पीता है। नशा करता है। अफीम खाता है। सिनेमा देखता है। जूआ सट्टा खेलता है। इन कामों में लाखों रुपयों का अपव्यय करता है। गरीब कहां है ?

दूसरी बात गरीब देश में क्या कोई आदमी निठल्ला रह सकता है ? भारत में लाखों आदमी निठल्ले बैठे रहते हैं। काम नहीं करते वो आवारा लोग ! उनको भान भी नहीं कि हम गरीब हैं। अजीब विरोधाभास है यह। अगर देश में गरीबी का भान कराया जाए। नशा व निठल्लापन छुड़ाया जाए। मुफ्तखोरी छुड़ाकर परिश्रम करने का महत्त्व समझाया जाए तो देश की गरीबी समाप्त हो सकती है।

प्रश्न—युवा पीढ़ी में बढ़ती हिंसा, नैतिक पतन व अनुशासनहीनता को कैसे दूर किया जा सकता है ?

उत्तर— युवा पीढ़ी को सही मार्गदर्शन प्राप्त नहीं है। सही मार्गदर्शन युवा पीढ़ी का हो तो मेरा विश्वास है कि युवा लोग सच्चे नागरिक सिद्ध हो सकते हैं। उनके सामने सच्चा लक्ष्य हो तो वह निश्चय ही उनको पाने की क्षमता रखते हैं।

इसके अलावा देश में विलासिता व परामुखता की भावना बढ़ रही है। यह आत्मघाती है। भारत जैसे देश में विलासिता के जितने भी साधन हैं। उनको कम करना चाहिए। इससे युवा पीढ़ी में भटकाव कम होगा।

प्रश्न—१९८६ शांति वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे क्या प्रयास होने चाहिए जिससे यह वर्ष महज औपचारिकता सिद्ध न हो?

उत्तर— हमारी राय में जन-जन को अणुव्रती बनाया जाए और आदतें बदलने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया जाए। अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान—दो चीजें ऐसी हैं जिनमें विश्व शांति स्थापित की जा सकती है।

चितौड़गढ़ किले में

१२ जनवरी/आज १६ संत व २३ साध्वियां ऐतिहासिक चित्तौड़गढ़ किला देखने गये। पूर्व में इस नगर का नाम चित्रकूट था, जो अपभ्रंश होते-होते चित्तौड़ हो गया। जैन परम्परा के विख्यात आचार्य श्री हरिभद्र सूरि की यह जन्मभूमि है। जैन-शासन की विभिन्न घटनाओं से यह क्षेत्र जुड़ा हुआ है। धवलाकार श्री वीरसेन की शिक्षा भूमि, सिद्धांत चक्रवर्ती नेमिचन्द की तपोभूमि होने का गौरव इस क्षेत्र को प्राप्त है।

किले के सात अभेद्य द्वारों को पार करने के बाद किले के मूल क्षेत्र में प्रवेश होता है। प्रथम रामद्वार के बाहर एक शिलालेख उल्लिखित है, जिसमें यह लिखा था कि चार सौ वर्ष पूर्व चित्रकूट (चित्तौड) पराधीन हो गया। उस समय वहां के योद्धाओं ने पांच प्रतिज्ञा ली—(१) इस दुर्ग पर नहीं चढ़ेंगे (२) घर बनाकर नहीं रहेंगे (३) खाट पर शयन नहीं करेंगे। (४) दीपक प्रज्ज्वलित नहीं करेंगे (५) कुएँ से पीने का पानी निकालने के लिए रस्से का उपयोग नहीं करेंगे। देश आजाद होने के बाद चार सौ वर्ष पुरानी प्रतिज्ञा पूरी हुई ६ अप्रैल १९५५ को। उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू, बम्बई, मध्यप्रदेश, मध्यभारत, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, अजमेर, भोपाल, राजस्थान के मुख्यमंत्री आये और उन्होंने उन योद्धाओं के वंशजों को किले में प्रवेश करवाया।

सात दरवाजे पार करने के बाद एक छोटी सी बस्ती आ जाती है। जिसमें जैनों के ५५ घर रहते हैं। उस जमाने के महाराणा कुंभा, वीर योद्धा जयमल पत्ता, दानवीर भामाशाह, रानी पद्मिनी आदि के महल हैं। इनमें कई खंडहर प्रायः हैं। पुराना तोपखाना, नौलखा भंडार, गोमुख झरना,

मीरा मंदिर, ऋषभदेव मंदिर, विजय स्तंभ, कीर्ति स्तंभ, हिरणों का अभयारण्य आदि किले के आकर्षक बिंदु हैं।

विजय स्तंभ ६०० वर्ष पुराना है, राणा कुंभा ने विजय-प्राप्ति की यादगार में इस स्तंभ का निर्माण करवाया। कीर्ति स्तंभ जो १२ वीं शताब्दी में निर्मित है, उस समय की जनों की सक्रियता, कीर्ति व प्रभाव का प्रतीक है। ७५ फीट ऊंचे इस स्तंभ के पास प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर है। विजय स्तंभ व कीर्ति स्तंभ से दूर-दूर तक हरा-भरा मनोहारी व लुभावना दृश्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

चित्तौड़गढ़ किले के साथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यह इतिहास जुड़ा हुआ है कि जब अरब बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने किले पर हमला बोला, उस समय राणा पराजित हो गये। पहले दो बार खिलजी को राणा ने हराया पर तीसरी बार मात खा गये।

इस लड़ाई में वीर योद्धा पत्ता काम आया। जिसकी समाधि दूसरे व तीसरे द्वार के बीच बनी हुई है। उस समय महारानी पद्मिनी शीलरक्षा के लिए सैंकड़ों सहेलियों के साथ चिता में कूद पड़ी। रानी पद्मिनी की यह जौहर प्रसिद्ध भूमि चित्तौड़ मेवाड़ की ६०० वर्ष तक राजधानी रही। उसके बाद चारों ओर उत्तुंग पर्वतमालाओं के बीच महाराणा उदयसिंह जी ने उदयपुर बसाया, तब से चित्तौड़ से उदयपुर राजधानी स्थानान्तरित हो गई। साधु-साध्वियां प्रातः ८.३० बजे मीरा मार्केट से चले और दोपहर १.३० बजे पुनः स्थान पर पहुंचे। किले की इस परिक्रमा में १८ मि० मी० का विहार हो गया। किले की ऐतिहासिक प्रामाणिक अवगति देने हेतु जैन श्रावक श्री मांगीलाल पोखरना निरन्तर साथ रहे।

उधर प्रातः कालीन कार्यक्रम में मुनिश्री रोशनलाल, निकायव्यवस्था, प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल के प्राग् अभिभाषण के बाद करीब ५००० की उपस्थिति में आचार्यवर का प्रेरक प्रवचन हुआ।

रोटरी क्लब में व लायन्स क्लब में

मध्याह्न २ बजे मीरा मार्केट के विशाल मीरा हाल में आचार्यवर की सन्निधि में रोटरी क्लब की ओर से भव्य कार्यक्रम समायोजित हुआ। सर्वप्रथम क्लब के उपाध्यक्ष श्री रामचन्द्र पंचोली ने क्लब की ओर से स्वागत किया। मुनिश्री बुद्धमल ने आचार्यवर का परिचय प्रस्तुत करते हुए कार्य व

उत्साह को यौवन व निठल्लापन को बुढ़ापा बताया।

आचार्यश्री ने खचाखच भरे मीरा हॉल में अपने उद्बोधन में कहा—"आज सर्वत्र मानवता गहरी नींद में है। ऐसे विषम समय में मानवता को जगाने के लिए शक्ति के विनियोजन की बड़ी अपेक्षा है, मानवीय मूल्यों की स्थापना जरूरी है, धर्म की मौलिक अवगति अपेक्षित है।"

आचार्यवर ने मानव मूल्यों के उन्नयन के लिए श्रम के मूल्यांकन को आवश्यक तथा सुविधावाद को त्याज्य माना। उन्होंने इस विचार धारा को परिवर्तित करने की बात कही कि शराब या अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन सभ्यता का प्रतीक है। श्रोताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों को मुनि श्री बुद्धमल ने समाहित किया।

इस कार्यक्रम के तत्काल बाद आचार्यवर लायन्स क्लब द्वारा आयोजित नेत्र-चिकित्सा शिविर के समापन समारोह में पधारे। लायन्स क्लब के मंत्री श्री आर० सी० डाड ने आचार्यश्री का स्वागत किया तथा क्लब की गति-विधियों से लोगों को अवगत कराया। रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महा-विद्यालय उदयपुर के सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ श्री एस० पी० माथुर, वेगूं के विधायक श्री पंकज पंचोली ने अपने विचार व्यक्त किये। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने आचार्यश्री का परिचय दिया।

आचार्यवर ने इस अवसर पर कहा—'डाक्टर लोगों को जहां नेत्र-दृष्टि प्रदान करते हैं वहां हम भी लोगों को ज्ञान-दृष्टि देने में अहर्निश प्रयत्नशील रहते हैं। शरीर के समस्त अंगों में आंख का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज आदमी सम्पत्ति और सत्ता को महत्त्व दे रहा है, तभी चारों ओर अव्यवस्था, तनाव, आतंक पनप रहा है। अगर राष्ट्र का, स्वयं का उत्थान करना है तो अन्तर्दृष्टि को खोलना होगा, इन्सानियत को महत्त्व देना होगा।'

रात्रि में करीब ५००० की उपस्थिति में महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में साध्वियों का मनभावना कार्यक्रम रहा। साध्वियों ने भाषण गीतिका, मुक्तकों आदि के माध्यम से अपने विचार रखे। साध्वी प्रमुखाश्री ने शांति, संतुष्टि, पवित्रता और आनन्द को सफल जीवन के चार बिन्दु बताते हुए कहा—'इन चारों की जिस व्यक्ति के जीवन में अनुभूति की विद्यमानता है, तो वह निश्चित ही सुखी है। स्वयं की पहचान के अभाव में ही आदमी दुःखी बनता है, अशांत होता है।'

आज भीलवाड़ा, पुर, राजनगर, नाथद्वारा आदि अनेक क्षेत्रों से सैंकड़ों

लोग दर्शनार्थ आये। आज दिनभर लोगों का मेला-सा लगा रहा। रात्रि में स्थानीय कार्यकर्ताओं ने आचार्यवर की नजदीकी से उपासना की।

१३ जनवरी / प्रातः चित्तौड़गढ़ के अन्य उपनगर कुंभानगर, शास्त्रीनगर, प्रतापनगर पधारे। प्रवचन में आचार्यवर ने अणुव्रत के नियमों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला, फलतः अणुव्रत समिति का गठन हुआ। दादा हनुमंत सिंह भण्डारी को समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। प्रवचनोपरांत दादा की स्कूल में आचार्यवर ने छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया। दादा ने इस मौके पर शीलव्रत ग्रहण किया। माण्डल क्षेत्र के विधायक श्री बिहारीलाल पारिख आचार्यवर से मिले, बातचीत की।

सैनिक स्कूल में

मध्याह्न १-३० बजे आचार्यवर ने जैन स्थानक मीरा मार्केट से विहार किया। ठीक २ बजे सैनिक स्कूल पधार गये। सैनिक स्कूल के प्रिंसिपल श्री के०पी० सिंह ने अपने पूरे स्टाफ के साथ मुख्य गेट पर आचार्यवर की अगवानी की। स्कूल के विशाल हाल में प्रवेश करते ही अपने गणवेश में अनुशासित लड़कों ने एक सुमधुर गीत शुरु किया। प्राचार्य श्री के०पी० सिंह ने आचार्यवर को मानवता का पुजारी बताते हुए विद्यालय में पधारने पर भावभरा स्वागत किया। प्राचार्य महोदय एवं उनकी पत्नी ने आचार्यवर का दो बार प्रवचन सुना। आचार्यश्री के मानवतावादी दृष्टिकोण से दोनों प्रभावित हुए। उनके विशेष आग्रह पर ही आचार्यश्री स्कूल में पधारे। यह स्कूल सेवानिवृत्त सैनिकों द्वारा संचालित है। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने आचार्यवर का परिचय दिया। मुनिश्री श्रेयांसकुमार ने अनुशासन गीत प्रस्तुत किया। निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

शांत एवं अनुशासित ढंग से बैठे विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा—'मैं अनेक बार विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में गया हूं, किन्तु एक सैनिक स्कूल में जाने का यह पहला अवसर है। हमारे सैनिक बच्चों को न केवल किताबी ज्ञान देते हैं, अपितु अपने जीवन एवं व्यवहार से प्रशिक्षण देने का यत्न करते हैं। इसका स्पष्ट उदाहरण है बच्चों का अनुशासन।'

आचार्यवर ने आगे कहा—'डंडे या कानून के बल पर किया जाने वाला अनुशासन लंबे समय तक नहीं टिकता। आत्मा से स्वीकृत अनुशासन

ही व्यक्ति के जीवन में कारगर बन सकता है। अनुशासित व्यक्ति ही राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। मैं चाहता हूं कि सैनिक स्कूल के विद्यार्थी अणुव्रत-आचार-संहिता को समझें और उन्हें स्वीकार कर चरित्रनिष्ठ नागरिक बनें।'

तुलसी की बदौलत

सैनिक स्कूल से विहार कर आचार्यवर पांडोली (शांतला माताजी की) पधारे। रात्रि प्रवास वहीं हुआ। चित्तौड़गढ़ का तीन दिनों का प्रवास बहुत प्रभावशाली रहा। इस प्रवास में जहां डाक्टर, वकील, अध्यापक तथा बुद्धिजीवी लोग सम्पर्क में आए, वहां नगर के विभिन्न वर्गों के लोग आचार्यवर की वाणी सुनने आए। प्रातः-सायं की प्रवचन सभाओं में हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति होती। आचार्यवर के पदार्पण से नगर में अजीब-सा माहौल पैदा हो गया। राजस्थान के कई पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि पिछले कई महीनों से मीरा मार्केट में कचरे व गन्दगी का साम्राज्य था, पर आचार्य तुलसी के चित्तौड़ आगमन एवं मीरा मार्केट में प्रवास करने से सारी गन्दगी हट गई। पूरी सफाई हो गई। इस बाबत कई पत्रकारों ने मार्केट के अनेक दुकानदारों से इस अनायोजित सफाई के बारे में पूछा, तो दुकानदारों ने कहा—यह सब आचार्य तुलसी की कृपा है। महीनों से नगरपालिका अधिकारियों के समक्ष शिकायतें भेजीं, पर उनके सिर पर जूं तक नहीं रेंगी। आचार्य तुलसीजी के आगमन से दो-तीन दिन पूर्व नगरपालिका के कर्मचारियों का पूरा दल आया और पूरी मुस्तैदी के साथ मार्केट की सफाई कर दी। इसलिए हम इसके लिए आचार्य तुलसीजी के शुक्रगुजार हैं।

१४ जनवरी / प्रातः आचार्यवर सिंहपुर पधारे। पदार्पण के तत्काल बाद प्रवचन हुआ। मध्याह्न मुनिश्री विजयकुमार तथा रात्रि में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने प्रवचन किया। रात्रि में आचार्यवर भी पधारे। प्रवचन से प्रभावित होकर अनेकों ने धूम्रपान त्याग दिया। गांव के सरपंच ने तम्बाकू का डिब्बा फेंकते हुए तम्बाकू को सदा के लिए अलविदा कह दिया।

१५ जनवरी / पाण्डोली स्टेशन आगमन। प्रधानाध्यापक ने आचार्यवर का स्वागत किया। मध्याह्न कपासन के तहसीलदार श्री शांतिलाल जैन तथा चित्तौड़गढ़ के डिस्ट्रीकलेक्टर तथा विकास अधिकारी आचार्यवर से मिले। पांडोली के मादरेचा परिवार की आस्था में शिथिलता आ गई थी।

आचार्यवर ने पुनः प्रयास कर उसे स्थिर किया और गुरु धारणा करवाई। रात्रि में लगभग ८०० की उपस्थिति में आचार्यवर का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

कपासन में ऐतिहासिक स्वागत

१६ जनवरी / कपासन पधारने पर आचार्यवर का हार्दिक स्वागत। स्थानकवासी समाज के १२५ घरों वाले इस क्षेत्र के सैंकड़ों-सैंकड़ों जैन-जैनेतर काफी दूर तक आचार्यवर की अगवानी करने पहुंचे। एक भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर ने नगर में प्रवेश किया। स्वागत-समारोह में ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष श्री विष्णुशंकर व्यास, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री लड्ढा, मुस्लिम समाज के श्री वली मोहम्मद, नगरपालिका उपाध्यक्ष श्री भैरूलाल, उपजिलाधीश श्री नाथूलाल वर्मा, तहसीलदार श्री शांतिलाल जैन, पूर्व जिला प्रमुख श्री भंवर की प्रेरणास्पद उपस्थिति थी। स्वागताध्यक्ष श्री घीसूलाल कोठारी ने अभिनन्दन पत्र अर्पित किया। इस अवसर पर आचार्यवर का महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुआ। उपस्थिति करीब ४००० की थी। कार्यक्रम का संयोजन श्री नाथूलाल चंडालिया ने किया। दोपहर में मुनिश्री किशनलाल कन्या पाठशाला गये। वहां अध्यापकों एवं छात्रों को जीवन-विज्ञान-पाठ्यक्रम से अवगत कराया। मध्याह्न में साध्वी प्रमुखाश्री का कार्यक्रम रहा। शाम को अध्यापकों की एक महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी हुई। इस संगोष्ठी में अध्यापकों द्वारा उठाये गये सवालों का आचार्यवर ने सटीक जवाब दिया।

रात्रि ७.४५ बजे मुनिश्री उदितकुमार के वक्तव्य के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। राशमी क्षेत्र के विधायक श्री अमरचंद्र वीरवाल के भाषण के बाद मुनिश्री बुद्धमल का ओजस्वी वक्तव्य हुआ। करीब ८००० की विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा—"मेरी सभा में सभी जाति एवं कौम की उपस्थिति रहती है। मैं ऐसा ही चाहता हूं। एक वर्ग विशेष की उपस्थिति मुझे रुचती नहीं है। वर्तमान उलझाव के सुलझाव के लिए धर्म ही एकमेव रास्ता है। वह धर्म है समता का।" इस यात्रा में गांवों या कस्बों में इतना विशाल जनसमूह पहली बार देखने को मिला। प्रवचन के बाद स्थानीय जैन-जैनतर लोगों ने कल का प्रातः प्रवचन कपासन में करने का भाव-भरा निवेदन किया। उनके विशेष आग्रह एवं भावना को मद्देनजर रखते हुए आचार्यवर ने कल के प्रातः प्रवचन का कार्यक्रम कपासन में ही करने का निर्णय लिया।

१७ जनवरी/कपासन/प्रातः नौ बजे कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मुनि सुमेरमल "लाडनूं" के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ। १०.२० बजे एक विशाल जन समूह के साथ कपासन से विहार कर १ बजे भोपाल सागर पधारे। ऐतिहासिक एवं प्राचीन जैन मंदिर के पार्श्व स्थित धर्मशाला में आचार्यवर का प्रवास हुआ। आचार्यवर इस मंदिर का निरीक्षण करने पधारे। मंदिर के ट्रस्टी ने मंदिर की ऐतिहासिक अवगति दी।

सायं आचार्यवर ६ मुनियों के साथ वूल ग्राम में पधारे। मुनिश्री बुद्धमल सहित १७ मुनि तथा साध्वी प्रमुखाश्री ने भोपाल सागर में रात्रि प्रवास किया। वूल गांव विधायक श्री अमरचंद वीरवाल की जन्मभूमि थी। आचार्यवर उनकी विशेष विनती पर अतिरिक्त चक्कर लेकर पधारे। आचार्यश्री के स्वागत में पूरे गांव ने व्यसन मुक्ति का संकल्प लिया और गांव के नाम को परिवर्तित कर "तुलसी पुरम्" कर दिया। श्री अमरचंद स्थानकवासी समीर मुनिजी से तत्त्व समझ जैन वीरवाल बने थे। वैसे मेघवाल, खटीक हैं। आचार्य श्री के प्रति वे विशेष आस्था रखते हैं। पिछले पचीस वर्षों से रात्रि चौविहार तथा नियमित सामायक करते हैं।

१८ जनवरी/आचार्यवर करवा होते हुए फतेहनगर पधार गये। एक माह के भीतर फतहनगर दूसरी बार पदार्पण हुआ। फतहनगर पधारने के साथ ही चित्तौड़गढ जिला समाप्त, उदयपुर जिले की सीमा प्रारम्भ हो गई। वहां आयोजित स्वागत कार्यक्रम के बाद उदयपुर क्षेत्र की सांसद श्रीमती इन्दुबाला सुखाडिया ने आचार्यवर के दर्शन किए। मध्याह्न का कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में चला।

दो आचार्यों का सुखद मिलन

आचार्यवर के सान्निध्य में आयोजित रात्रि कार्यक्रम में रामस्नेही संप्रदाय के आचार्यश्री रामकिशोर महाराज विशेष रूप से उपस्थित थे। निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल ने इस अवसर पर कहा—रामस्नेही संप्रदाय और तेरापंथ का संबंध आज का नहीं, बल्कि दोनों संप्रदायों के उदय से पहले का है। आचार्य भिक्षु एवं संत रामचरणदास जो गृहस्थ अवस्था में घनिष्ठ मित्र थे। दोनों ही आगे जाकर संत बने और नये संप्रदाय का प्रवर्तन किया। संत रामचरणदासजी ने रामस्नेही संप्रदाय व आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ संप्रदाय का सूत्रपात किया। तब से आज तक दोनों संप्रदायों का सात्विक संबंध चला आ रहा है।" सनातन और जैन होते हुये भी मूर्ति पूजा आदि विषयों अद्भुत

साम्य है।

आचार्य रामकिशोर जी महाराज ने कहा—"संत मिलन हमेशा सुख-दायी होता है। आज आचार्य तुलसी से मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हूं। यहां आकर मैंने कोई नया कार्य नहीं किया। मात्र अपने पूर्वाचार्यों की जो परंपरा रही है उसका निर्वाह किया है। आचार्य तुलसी जी और हम सब विश्व शांति के लिए काम कर रहे हैं, प्राणी मात्र के कल्याण में यत्किंचित् योगभूत बन रहे हैं।"

आचार्यवर ने कहा—"हम दोनों का मिलन आज पहली बार हुआ है। वैसे हमारा संबंध बहुत पुराना है। दोनों संप्रदायों के प्रवर्तक, जो घनिष्ट मित्र थे, अपने उपदेशों से जन मानस को प्रभावित किया है।" आचार्यश्री ने आगे कहा—"अहिंसा, संयम व तप की त्रिवेणी में स्नान करने वाला व्यक्ति पवित्र बन जाता है। अपने द्वारा अपना कल्याण करो। स्वयं सत्य का संधान करे। कथनी-करनी की समानता रखो।"

१६ जनवरी/आचार्यवर मावली गांव एक घण्टा विराजकर मावली स्टेशन पधारे। विद्यालय में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में सांसद इंदुबाला सुखाड़िया, मावली क्षेत्र के विधायक व पूर्व मंत्री श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर उपस्थित थे। श्रीमती सुखाड़िया ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा—"श्रद्धेय आचार्यश्री तथा सुखाड़ियाजी के बीच बहुत ही घनिष्ट संबंध रहे हैं। आचार्यश्री के प्रति सुखाड़िया जी के मन में बहुत श्रद्धा थी। जब भी उन्हें अवसर मिलता, वे आपके दर्शनों के लिए पहुंच जाते थे। मेरे मन में भी आपके प्रति असीम श्रद्धा है। मैं समय-समय पर आपके श्रीचरणों में उपस्थित होती रहूंगी।" इस मौके पर श्री प्रभाकर भी बोले। करीब २००० की उपस्थिति में आचार्यवर का प्रेरक प्रवचन हुआ। बीकानेर संभाग से समागत साध्वीश्री राजीमती, साध्वीश्री कानकुमारी आदि कई साध्वी संघाटकों ने आचार्यवर के दर्शन किए। रात्रि कार्यक्रम साध्वियों का हुआ। आचार्यवर का रात्रि प्रवास पूर्व पंचायत प्रधान श्री हीरालाल सोनी के मकान में हुआ।

आस्था की विजय

आज मावली में बम्बई से श्री दिनेश मेहता (वाव वाले) आचार्यवर के दर्शनार्थ आया। वाव के प्रसिद्ध श्रावक भोगी भाई का वह पौत्र है। बम्बई में उसके हीरों का व्यापार है। २ जनवरी को एक लाख मूल्य हीरों के पांच पैकेट उनके एक थेले में से गुम हो गये। अपनी लड़की के जन्म दिन के

उत्सव में लगा रहने से ध्यान नहीं गया। रात्रि को जब ध्यान गया तो हीरे मिले नहीं। खूब दौड़ धूप की, पर सब कुछ व्यर्थ रहा। तब उसने यह संकल्प किया—यदि हीरे मिल जायेंगे तो उसी दिन गुरु-दर्शन के लिये रवाना हो जाऊं। दूसरे दिन प्रातः मार्केट हॉल में बोर्ड पर सूचना भी लिखा दी, पर उसकी पुनः मिलने की आशा टूट चुकी थी। उन हीरों के पांच पैकेटों का थैला एक व्यक्ति को मिला उसने उस थैले को एसोशियेसन में जमा करा दिया। पूछताछ के अनन्तर वह थैला दिनेश को यथावत् मिल गया। आज वह संकल्प की संपूर्ति पर गुरु-दर्शन करने के लिए आया। पूर्व मंत्री श्री नानालाल बीरवाल आचार्यवर के दर्शनार्थ आए। अपनी पत्नी के निधन के सदमे को झेलने के लिए वे यहां आए। वे जैन श्रावक हैं। उन्होंने आचार्यवर से जैन तत्त्वों पर चर्चा भी की। श्री उदयचंद चपलोत ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। भारत जैन महामंडल के महामंत्री समन्वय प्रकोष्ठ के सदस्य श्री चंदनमल चांद ने दर्शन किये। उदयपुर में होने वाले जैन सम्मेलन के बारे में चर्चा चली।

थामला में

२० जनवरी/मावली स्टेशन से विहार कर आचार्यवर थामला पधारे। श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने २ कि० मी० आगे पधार कर आचार्यश्री की अगवानी की। आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के इस भव्य मिलन को सैकड़ों लोगों ने देखा। स्कूल में आयोजित स्वागत-समारोह में युवाचार्यश्री ने अपने बहुमूल्य विचार रखे। स्थानीय संस्थाओं की अभिवंदना के बाद आचार्यवर का उद्-बोधन हुआ। रात्रि में मुनिश्री श्रेयांस कुमार, मुनि सुमेरमल "लाडनूं" के प्रवचन के बाद आचार्यश्री ने लोगों को संबोधित किया। अनेकों ने इस अवसर पर व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया।

२१ जनवरी/प्रातः पलाणाकलां, सायं धासा पधारे। वहां श्रद्धा का एक मात्र घर श्री गेहरीलाल का है। अनेक सामाजिक कठिनाइयों व दिक्कतों के बावजूद तेरापंथ की आस्था पर वे अडिग रहे। आचार्यवर ने ग्राम प्रवेश करने से पूर्व उनके घर पर अपने चरण रखे, भिक्षा ली। श्री गेहरीलाल की वर्षों की संजोई भावना साकार हो गई। रात्रि में हजारों की उपस्थिति में शानदार कार्यक्रम रहा। प्राग् वक्तव्य मुनिश्री सुखलाल ने दिया। आज पलाणाकलां में लाडनूं का बैंगानी परिवार शोक विमोचन हेतु आया। उनके पारिवारिक सदस्य श्री भंवरलाल बैंगानी का हैदराबाद में निधन हो गया।

वे एक श्रद्धालु श्रावक थे। रात्रि में जैन समन्वय प्रकोष्ठ के सहसंयोजक श्री भीखमचंद 'भ्रमर' ने दर्शन किये। उन्होंने अपनी इन्दौर यात्रा के संस्मरण सुनाये।

२२ जनवरी / चंदेसरा गांववासियों द्वारा आचार्यवर का भावासिक्त अभिनन्दन। उदयपुर से साध्वीश्री सोहनांजी (छापर), जयपुर से साध्वीश्री मोहनांजी ने आचार्यवर के दर्शन किये। अध्यापक श्री श्रेणीदान ने कविता पाठ किया। रात्रि में मुनिश्री किशनलाल के वाद युवाचार्यश्री का प्रवचन हुआ। उदयपुर के दुर्गाभक्त, कम वोलने वाले आध्यात्मिक व्यक्ति श्री लालसिंह ने आचार्यवर के दर्शन किए, वातचीत की।

२३ जनवरी / आचार्यवर प्रातः गुडली, देवारी होते हुए धाऊजी की वावड़ी स्थित "पुष्प वाटिका" पधारे। अपनी भव्य एवं हरी-भरी पुष्प वाटिका में पधारने पर श्री यशवंत कोठारी तथा श्रीमती पुष्पा कोठारी ने आचार्यवर का स्वागत किया।

इसी वाटिका में गंगाशहर से मुनिश्री राजकरण तथा सूरत से साध्वी श्री फूलकुमारी "लाडनूं" ने आचार्यवर के दर्शन किये। दोपहर विहार कर फैक्टरी एरिया में कई जगह पधार कर अरविंद नगर पधारे। यह उदयपुर का ही साफ-सुथरा, शांत उपनगर है। दूसरे दिन २४ जनवरी को दर्शनपुरा स्थित उदयपुर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रोफेसर श्री कुन्दन लाल कोठारी के घर पधारे। वहां से राजस्थान पत्रिका कार्यालय पधारे। जहां पत्रकारों, अधिकारियों को संवोधित किया। वहां से विहार कर आचार्यवर आयड़ पधारे। रात्रि में मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" के वाद युवाचार्यश्री का प्रवचन हुआ। २५ को श्री निकेतन होते हुए अशोक नगर स्थित श्री लक्ष्मीलाल डागलिया के नये मकान में विराजे। इन तीन-चार दिनों में साधु-साध्वियों के वीस-पचीस संघाटकों ने आचार्यवर के दर्शन किए।

उदयपुर में उत्साह

२५ जनवरी / दिन के ठीक ११ वजे आचार्यवर ने साधु-साध्वी श्रावक-श्राविकाओं के विशाल एवं भव्य जुलूस के साथ अशोक नगर से प्रस्थान किया। ६ कि० मी० की यह मौन अमृत-यात्रा नगर के मुख्य मार्गों शास्त्री-सर्कल, देहली गेट, मोती चोहट्टा, हाथीपोल होते हुए मीरां गर्ल्स कॉलेज के विशाल प्रांगण में विशाल सभा के रूप में परिणत हो गयी। उदयपुर के जैन इतिहास में इस तरह के मौन जुलूस पहला अवसर था। सड़क के दोनों किनारों

पर खड़े हजारों-हजारों लोग इस जुलूस को निहार रहे थे, आचार्यवर का अभिवन्दन कर रहे थे।

मेवाड़ की ४०० वर्ष तक राजधनी रहा यह उदयपु नगर झीलों की नगरी के रूप में विश्व विख्यात है। विदेशी विशिष्ट अतिथियों एवं हजारों-हजारों पर्यटकों के लिए यह स्वर्ग तूल्य है। चारों ओर उत्तुंग पर्वतमालाओं से घिरे इस शहर में गुलाब बाग, पीछोला झील, स्वरूप सागर, उदयसागर, मोती मगरी, भारतीय लोक कला मंदिर, आयड पुरातत्व केन्द्र, सहेलियों की बाड़ी, आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। इस नगर में से सर्व सुविधा सम्पन्न होटले हैं। रेल्वे स्टेशन व हवाई अड्डा है। रेलवे ट्रेनिंग सेन्टर, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, राजस्थान राज्य शैक्षिक व अनुसंधान परिषद् आदि अनेक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक गतिविधियों का केन्द्र है। पूर्व मुख्यमंत्री स्व० श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने उदयपुर को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी।

ऐतिहासिक, रमणीय व पर्यटक केन्द्र में आचार्यवर के स्वागत में हजारों लोगों ने पलक पावडे बिछा दिये। मीरां गर्ल्स कॉलेज में आयोजित स्वागत समारोह में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री के० एल० कोठारी, साध्वी श्री कंचनकुमारी (उदयपुर) मर्यादा एवं अमृत-महोत्सव समिति के स्वागताध्यक्ष श्री भंवरलाल डागलिया, साध्वीश्री सोहनांजी (छापर) ने अपने विचार रखे।

महन्त श्री मुरली मनोहर शरण ने आचार्यश्री के उद्बोधन को महत्त्वपूर्ण बताया। महन्तजी ने अमृत पुरुष की व्याख्या करते हुए इसे बुद्धि और हृदय का नगर में एक साथ प्रवेश माना। उन्होंने आचार्यश्री को हृदय व युवाचार्यश्री को बुद्धि से संबोधित करते हुए बुद्धि और हृदय का समन्वय बताया।

साध्वी प्रमुखाश्री ने मौन अमृत-यात्रा को आकर्षण का बिंदु मानते हुए आचार्यवर के प्रवास का पूर्ण उपयोग करने का आव्हान किया। उदयपुर की विधायक डा० गिरिजा व्यास ने आचार्यवर के पदार्पण को महत्त्वपूर्ण माना। कार्यक्रम के अध्यक्ष सुखाडिया विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० के० एल० नाग ने आचार्यश्री के आगमन को इसलिए महत्त्वपूर्ण माना कि आपके सान्निध्य में नई शिक्षा नीति पर हमें एक दिशा मिलेगी।

युवाचार्यश्री ने उदयपुर के आर्थिक, सामाजिक व बौद्धिक विकास को तब तक अधूरा माना, जब तक अनुशासन का विकास नहीं होता, मर्यादा का

विकास नहीं होता। युवाचार्यश्री ने आचार्यवर के आगमन को प्रकाश का आगमन माना। आचार्यवर ने अपने आगमन को एक अकिंचन संत का आगमन वताया। आचार्यश्री ने इस वात पर दुःख व्यक्त किया कि हम दूसरों को देखते हैं। अपने अन्तःकरण को नहीं देखते। हमें सवसे पहले अपनी ओर देखना चाहिए।" स्वागत-समारोह में स्थानीय जनता के अतिरिक्त वाहर से भी हजारों लोग आये। आज की मौन अमृत-यात्रा की राजस्थान के प्रमुख पत्रों में अच्छी चर्चा रही।

समारोह के वाद आचार्यवर मयुर काम्पलेक्स पधार गये। उदयपुर प्रवास के दौरान आचार्यवर का आवास स्थल यहीं काम्पलेक्स वना। हजारेश्वर महोदव कालोनी में स्थित विशाल मयुर काम्पलेक्स पूर्व में मेवाड़ शूगर मिल का गेस्ट हाऊस था। विशाल एवं भव्य गेस्ट हाऊस को कुछ श्रद्धालु व्यक्तियों ने खरीद कर इसका नाम मयुर काम्पलेक्स रख दिया। साध्वी प्रमुखाश्री समेत सैंकड़ों साध्वियां कच्छारा-भवन तथा महिला छात्रावास में ठहरीं। रात्रि में स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला।

धार्मिक विविधता मे राष्ट्रीय एकता—सम्मेलन :

२६ जनवरी/राष्ट्रीय संविधान की क्रियान्विति का यह प्रथमदिन २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में प्रतिवर्ष हमारे सामने आता है। इस वर्ष भी यह ऐतिहासिक दिन आचार्यवर की सन्निधि में मनाया गया। प्रातः प्रवचन नहीं हुआ। मध्याह्न १ वजे आचार्यवर की पावन निश्रा में "धार्मिक विविधता में राष्ट्रीय एकता" विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई। इस संगोष्ठी में जैन, सिख, वैदिक, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मो के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

महन्त श्री मुरली मनोहरशरण ने कहा—"विविधता भी रहेगी और एकता भी रहेगी। मनुष्य की आकृति व प्रकृति में भेद रहेगा ही, लेकिन सवका आधार सत्य होना चाहिए, यही धर्म हैं।" पादरी ए० वी० ए० मसीह ने प्रेम, सेवा और सादगी को मानव का सवसे वड़ा गुण वताया व आचार्यश्री के सान्निध्य मे होने वाले ऐसे कार्यों की प्रशंसा की। सुखाड़िया विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डा० के० सी० सोगानी ने अहिंसा को जैन धर्म का मूल तत्व वताया। सिख समाज के प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र लाखेरी ने त्याग, सेवा और ज्ञान को गुरु वाणी के तीन महत्त्वपूर्ण तत्त्व वताये तथा पंजाव समस्या के समाधान में आचार्यश्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। इस अवसर

पर निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल, साध्वीश्री कनकश्री, थियोसोफिकल सोसायटी के प्रमुखश्री अहमद अख्तर, वोहरा-मुस्लिम समाज के श्री मोहम्मद हैदरी ने अपने महत्त्वपूर्ण चिन्तन से जनता को अवगत कराया।

युवाचार्यश्री ने कहा—"धर्म एक अनुभूति है। अनुभूति शून्य धर्म भी केवल संप्रदाय रह जाता है। और संप्रदाय भी अनुभूति के साथ धर्म बन जाता है। आज सर्वत्र केवल संप्रदाय की चर्चा की जा रही है। धर्म के साथ अहंकार व ममकार जुड़ने से वह समस्या बन गया है।" आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा—"राष्ट्रीयता व सामाजिकता के बिना राष्ट्र व समाज निरर्थक है, उसी प्रकार धार्मिकता के बिना धर्म निरर्थक है।" कार्यक्रम का संयोजन श्री वी० पी० जोशी ने किया। रात्रि में मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" ने जनता को संबोधित किया।

रेलवे ट्रेनिंग स्कूल में

२६ जनवरी/मध्याह्न आचार्यश्री, युवाचार्यश्री रेलवे ट्रेनिंग स्कूल पधारे। "अध्यात्म और जीवन यात्रा" विषय पर प्रवचन देते हुए आचार्यवर ने कहा—"इंसान वास्तव में इन्सान बन जाये, तो सारी सामाजिक बुराइयों का अंत हो जायेगा। मैं भगवान् बनना नहीं चाहता, इन्सान बनकर रहना चाहता हूं। सच्चा इन्सान कभी भी धोखाधड़ी, मिलावट, व हिंसा नहीं करता।"

स्कूल के खचाखच भरे सभागार में प्रशिक्षणार्थियों व अध्यापकों को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने आगे कहा—"जीवन एक बहुत बड़ी यात्रा है। इसे धर्म के सहारे ही तय करना उत्तम है। अपनी वृत्तियों पर नियंत्रण करना ही धर्म है।" उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वे जैन बने या न बने, गुडमैन अवश्य बने।"

इससे पूर्व युवाचार्यश्री ने कहा—"अज्ञानी सदा सोता रहता है और ज्ञानी नींद में भी जागता रहता है। जिस दिन आदमी को अपने अज्ञात का पता चल जाता है, वह सबसे बड़ा आदमी होता है।" युवाचार्यश्री ने आगे कहा—"आज समस्या भीतर है, समाधान बाहर खोजा जा रहा है। आज सहिष्णुता का अभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। वर्तमान की यह अपेक्षा है कि उपासना प्रधान धर्म के बजाय आचरण प्रधान धर्म की महत्ता बढ़े।"

कार्यक्रम के प्रारंभ में रेलवे ट्रेनिंग स्कूल के प्राचार्य श्री के० सी० सिंह ने आचार्यश्री का स्वागत किया। श्री चन्द्रप्रकाश आर्य ने आभार ज्ञापन की

"प्रत्येक व्यक्ति मंगल चाहता है। मंगल बाहर से नहीं, व्यक्ति के भीतर से प्रकट होता है। मंगल के लिए मंगलसूत्रों का लयबद्ध उच्चारण जरूरी है। किसी महान् व्यक्ति की शरण में जाने वाला सदा सुरक्षित रहता है।"

मध्याह्न १ बजे कानोड़ के राव श्री प्रतापसिंह ने सपरिवार आचार्य वर के दर्शन किये, बातचीत की। २ बजे चलने वाली साधु-साध्वियों की अंतरंग गोष्ठी का विषय था—व्याधि, आधि उपाधि से समाधि की ओर। गोष्ठी में युवाचार्य का महत्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। सांय ५.३० बजे राजस्थान पत्रिका के संपादक श्री कपूरचंद कुलिश आचार्यवर से मिले। भारतीय संस्कृति आर्य संस्कृति, प्रेक्षाध्यान आदि के बारे में विस्तृत चर्चा चली। रात्रि में सर्व प्रथम मुनिश्री राजकरण का भाषण हुआ।

यूरोप में पागलों की संख्या में वृद्धि

रात्रिकालीन बोध सत्र के दूसरे दिन "भोग बड़ा या त्याग" विषय पर अपना प्रवचन देते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"भोग इन्द्रियों की मांग है। त्याग आत्मा की मांग है। इन्द्रिय चेतना में जीने वाले लोग त्याग की भाषा नहीं समझ सकते। वे तो ज्यादा से ज्यादा पदार्थ में ही जीना चाहेंगे। भोग से यूरोप में ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि वहां आदमी तनावग्रस्त हैं, इस लिए वहां पागलों की संख्या में भी बहुत तीव्रता से वृद्धि होती जा रही है। इन परिणामों को देखकर लोगों की फिर से त्याग के प्रति भावना बढ़ रही है।"

आचार्यश्री ने करीब २५०० की उपस्थिति में अपने उद्बोधन संदेश में कहा—"जीवन के दो विकल्प है एक महारंभ और दूसरा अनारंभ। अनारंभ मार्ग पर तो कुछ ही लोग चल सकते हैं। अधिक लोगों के लिए तो अल्पारंभ ही एक मात्र विकल्प है।" प्रारंभ में मुनिश्री किशनलाल ने विषय प्रवेश के रूप में अपने विचार प्रकट किये।

३० जनवरी/प्रातः प्रवचन का विषय था—स्तव और स्तुति। साध्वी श्री कनकश्री ने विषय प्रवेश किया। आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए। मैसूर चातुर्मास परिसंपन्न कर आज साध्वी श्री जयश्री ने आचार्य वर के दर्शन किये। मात्र ६४ दिनों में १८०० कि० मी० लंबा मार्ग तय करना स्वयं में कीर्तिमान है। पांच वर्षों के बाद गुरू दर्शन करने वाली साध्वी श्री जयश्री समेत पांचों साध्वियों ने सुमधुर गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचार्यश्री ने उनकी दक्षिणयात्रा को प्रभावशाली बताया और उनके कार्यों की सराहना की। दौलतगढ़ चातुर्मास करने वाले मुनिश्री बालचंद

"आसीन्द" ने भी आज दर्शन किये। गोगुन्दावासियों की विशेष प्रार्थना पर आचार्यवर ने वहां दीक्षा महोत्सव की स्वीकृति प्रदान की।

मध्याह्न साधु-साध्वियों की गोष्ठी में "शांत सहवास कैसे हो ?" विषय पर चर्चा चली। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री ने साधु की तीन भूमिका—परानुशासन, स्वानुशासन व संवर भूमिका पर विवेचन किया। सायं सुखाड़िया विश्व विद्यालय के रजिस्ट्रार, डीन, प्रोफेसर युवाचार्यश्री, आचार्यश्री से मिले। बातचीत की।

जीवन-सूत्र—कम खाना, गम खाना

बोध सूत्र के तीसरे दिन विषय था—"कैसे जीएं"। विषय को स्पष्ट करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"यों तो जीवन के दरवाजे पर मृत्यु दस्तक देती ही है, पर जो आदमी जीने की कला सीख जाता है वह अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। गलत तरीके से खाना, सांस लेना और गलत रहन-सहन असमय में मौत को बुलाना है। धर्म हमें सही जीना सीखाता है। जो धर्म सही जीना नहीं सीखाता, वह परम्परा मात्र है।

आचार्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा—"कम खाना और गम खाना "कैसे जीएं" का सूत्र रूप में तरीका है। प्राकृतिक जीवन जीने वाला अकाल मृत्यु वरण नहीं करता।"

३१ जनवरी/प्रातः कार्यक्रम विशेष रूप से साध्वियों के लिए आरक्षित था। इस कार्यक्रम का आकर्षण था—साध्वियों द्वारा उपहार-समर्पण। बहिर्विहारी साध्वियों ने अमृत-महोत्सव के संदर्भ में कुछ विशेष कलाकृतियां आचार्यवर को समर्पित की। ४२ संघाटकों द्वारा समर्पित उपहारों में नूतन रजोहरण, प्रमार्जनी, पात्र, कल्प, अमृत-कलश तथा अन्य मनोहारी वस्तुएं अर्पित की। साध्वीप्रमुखाश्री ने इस अवसर पर हर संघाटक (ग्रुप) को एक लघु गृह उद्योग केन्द्र की संज्ञा दी। आचार्यवर ने साध्वियों की कला की प्रशंसा की तथा साध्वी श्री कमलूजी (जयपुर) जो गुरुकुलवास की साध्वी है, की कला की विशेष रूप से सराहना की। उन्होंने कहा-कला केवल कला के लिये नहीं, एकाग्रता, उपयोगिता युक्त तथा यश: कामना मुक्त हो।

मध्याह्न दन्त विशेषज्ञ डॉ० भार्गव ने आचार्यवर की दाढ़ निकाली जो घिस चुकी थी। कांकरोली में श्री रोशनलाल पगारिया का निधन हो गया, इसलिए उनके सगे-संबंधी आज दर्शनार्थ पहुंचे। प्रतिक्रमण के बाद परम्परा

की जोड़" का वाचन शुरू हुआ। मुनिसुमेरमल "लाडनूं" के निर्देशन में प्रारम्भ इस वाचना में मुनिश्री विजयकुमार से कनिष्ठ मुनि सम्मिलित हुए।

रात्रिकालीन बोध सत्र के चौथे दिन का विषय था—अतीन्द्रिय चेतना कैसे जागे। मुनिश्री सुखलाल के विषय की भूमिका पर प्रकाश डालने के बाद युवाचार्यश्री ने कहा—"बुद्धि खतरनाक होती है, वह उलझाव की जनक है। सुलझाव के लिए अन्तर्दृष्टि का जागरण अपेक्षित है। आचार्य भिक्षु की अन्तर् दृष्टि यानि अतीन्द्रिय चेतना जागृत थी। तर्क से कभी अन्तर्चेतना नहीं जागती, क्योंकि तर्क स्वयं लंगड़ा है। तर्क सत्य उपलब्धि का अंतिम साधन नहीं है।" इस अवसर पर करीब २००० की उपस्थिति में आचार्यवर का प्रेरक प्रवचन हुआ।

१ फरवरी/प्रातःप्रवचन के समय "स्थूल से सूक्ष्म की ओर" विषय पर एक परिचर्चा प्रारंभ हुई। विषय पर बोलते हुए, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री पानाचद जैन ने कहा—"आपके दर्शनों का अवसर मुझे पहली वार मिला है, इसलिए अब मैंने स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रस्थान कर दिया है। श्रमण संस्कृति का अर्थ है—श्रम करो। श्रम से ही व्यक्ति सूक्ष्म जगत् की ओर प्रयाण कर सकता है। यदि हमें आत्मा की सूक्ष्मता का दर्शन करना है, तो अध्यात्म को अपनाना होगा।" न्यायाधीश श्री दिनकरलाल मेहता ने कहा—"सुख-दुःख का बंटवारा ही विश्व बंधुत्व है। जो लोग सूक्ष्म की खोज में चल पड़ते हैं। वे स्वार्थ से लिप्त नहीं रह सकते।"

युवाचार्यश्री ने इस विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए कहा—"हमारी दुनिया में ऐसे बहुत कम लोग है, जो परिपूर्ण हैं। हर आदमी के अन्दर शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष दोनों रहते हैं। आवश्यकता यही है कि हम अपने अंदर बैठे देवत्व को जगायें। यह तभी हो सकता है जब हम सूक्ष्म की ओर बढ़े। आगम की भाषा में औदयिक भाव से क्षायोपशमिक भाव की ओर जाना स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना है।" अपने आशीर्वचन में आचार्यवर ने कहा—"आदमी ज्यों-ज्यों सूक्ष्म में उतरता है त्यों-त्यों अधिक तेजस्वी बनता जाता है। अणुव्रत इसलिए तेजस्वी है कि वह सूक्ष्म है। अंकुश छोटा होता है, पर स्थूलकाय हाथी को वश में रखता है।"

मध्याह्न १.३० बजे स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा एक वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गई जिसका विषय था—२१ वीं सदी में विश्व शांति का विकल्प-विज्ञान या अध्यात्म। उदयपुर की अनेक शिक्षण संस्थाओं के

छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। छात्रा नवनीत एवं कीर्ति ने क्रमशः प्रथम व द्वितीय, छात्र राजेश कोठारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंत में आचार्यवर ने आशीर्वचन में दो शब्द कहे। विशेष स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

रात्रिकालीन बोध सत्र के पांचवें दिन—"भारतीय संस्कृति में राम" विषय पर बोलते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—सभी धर्मों में मान्य श्री राम की पूज्यता का कारण है—निर्मोलता। राम सत्य के प्रतीक थे, समता के प्रतीक थे। उनके असाधारण त्याग के कारण ही हजारों वर्षों के बाद भी उनका "रामराज्य" एक आदर्श बना हुआ है।" आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में कहा—"राम व्यक्ति ही नहीं, पूरी संस्कृति है। उन्होंने हमारे भारतीय परिवेश को विविध रूपों में प्रभावित किया था। उनका जीवन-चरित्र पढ़ना ही पर्याप्त नहीं, अपितु उसे जीवन में उतारने की आवश्यकता है।"

धर्म और विज्ञान में समन्वय आवश्यक

२ फरवरी/प्रातः कार्यक्रम में "विज्ञान के बढ़ते चरण" विषय पर बोलते हुए सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्रीजे० वर्मा ने विज्ञान की प्रगति पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा—"विज्ञान बहुत सारे क्षेत्रों में विकास कर रहा है, उससे पूरी मानव जाति को लाभ मिल रहा है। इसका सदुपयोग न करने पर दुनियां पूरी तरह नष्ट हो सकती है। ऐसी स्थिति में धर्म ही इसे बचा सकता है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—'वैज्ञानिक बिना देखे नहीं मानता, धार्मिक कभी बिना अनुभूति के नहीं मानता, किंतु आज का धार्मिक बिना अनुभव के मान रहा है और लोग बिना स्वयं देखे विज्ञान की बातें मान रहे हैं। आज हम वैज्ञानिक उपकरणों को प्रयोग में तो लाते हैं, किन्तु यथार्थ की जानकारी नहीं रखते। विज्ञान ने अपने आविष्कारों से आध्यात्मिक तथ्यों को प्रकट करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।' आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में धार्मिकों के लिए विज्ञान की जानकारी आवश्यक बताते हुए धर्म को परम विज्ञान बताया। उन्होंने धर्म और विज्ञान को परस्पर विरोधी न बताकर एक दूसरे का पूरक बताया। प्राध्यापक श्री सुरेश मेहता ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

प्रवचन के वक्त मुनिश्री मागरमल 'श्रमण', मुनिश्री हंसराज, मुनिश्री राकेशकुमार, मुनिश्री विनयकुमार ने आचार्यवर के दर्शन किये। मुनिश्री

राकेशकुमार एवं मुनिश्री प्रमोद कुमार ने इस मौके पर अपने भावपूर्ण विचार रखें। मध्याह्न साध्वियों की विशेप गोष्ठी में आचार्यवर ने शिक्षा फरमाई। रात्रि वोध सत्र के छठे दिन 'निष्काम कर्म' विपय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक प्रवचन हुए।

३ फरवरी/प्रातः व्याख्यान में वंदना विपय पर साध्वीश्री सुव्रता की प्रारंभिक प्रस्तुति के वाद आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के सारपूर्ण वक्तव्य हुए। मध्याह्न १.३० वजे अग्रणी (ग्रुप लीडर) मुनियों की एक गोष्ठी आचार्यवर के सान्निध्य में चली जिसमें आन्तरिक अनुशासन पर चिन्तन चला। २.३० वजे साधु-साध्वियों की संयुक्त परिपद में अनुशासन और सहिष्णुता पर चर्चा चली। साध्वीश्री पानकुमारी ने जोधपुर चातुर्मास पूर्ण कर आज दर्शन किये। सायं अधिकार पत्र के संपादक आचार्यश्री से मिले, वार्तालाप किया।

रात्रि वोध सत्र के सातवें व अन्तिम दिन का विपय था—भगवान महावीरः जीवन दर्शन। मुनिश्री राकेशकुमार के प्राग् प्रवचन के वाद आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के उद्वोधन हुए।

अतिक्रमण का प्रतिक्रमण

४ फरवरी/प्रातः प्रवचन का विषय था—प्रतिक्रमण। साध्वीश्री यशोमति के वक्तव्य के वाद युवाचार्यश्री ने कहा—भूल किसी से हो सकती है। अन्तर इतना ही है कि साधु-प्रतिक्रमण कर जागरूक वन जाता है, प्रतिक्रमण से व्रत छिद्र रूकते हैं, सफाई होती है।'

आचार्यश्री ने कहा—छद्मस्थ साधक के अतिक्रमण होता रहता है, अतः प्रतिक्रमण निरन्तर करना होगा। हमें अधिक से अधिक सातवें गुणस्थान में रहने की कोशिश करनी चाहिए।' आचार्यवर ने समन्वय का अर्थ अश्लथता करते हुए कहा—'अपनी मान्यता व परम्परा के प्रति पूर्ण दृढ़ रहना चाहिए। शिथिलाचार के साथ समन्वय कैसे हो सकता है? समन्वय का भी एक निश्चित सीमांकन होता है। यह उचित है कि हम किसी की निन्दा न करें, छींटाकशी से वचें।'

मध्याह्नकालीन साधु-साध्वियों की अंतरंग गोष्ठी में तपस्या, तत्त्वज्ञान स्वास्थ्य विवेक आदि विंदु चर्चित रहे। रात्रि में 'इकीसवीं सदी में कैसे प्रवेश हो' विषय पर युवाचार्यश्री, आचार्यश्री के प्रभावोत्पादक भाषण हुए। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने विषय की प्राग् प्रस्तुति दी। उपस्थिति करीव २५०० थी।

कृषि महाविद्यालय में

५ फरवरी/उदयपुर प्रवास के इतने दिनों में सभी कार्य प्रवास-स्थल मयुर काम्पलेक्स के सटे मर्यादा-समवसरण में संपादित हुए, किन्तु कुछ कार्यक्रम मर्यादा समवसरण से बाहर भी आयोजित हुए, जिनकी अपने क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अर्हता थी। उसी शृंखला में प्रातः कालीन कार्यक्रम राजस्थान कृषि महाविद्यालय में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री की युगपत् सन्निधि में संपन्न हुआ।

'*नैतिकता की समस्या और अध्यात्म*' विषय पर महाविद्यालय के शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'हमारे शिक्षक इस बात को समझें कि वे पहले अपने जीवन में एक सूत्र आत्मसात् करें—निज पर शासन, फिर अनुशासन। अनुशासन की बात तब तक समाज में नहीं आ सकती, जब तक हम स्वयं उस दिशा में कदम न उठाये। अध्यापकों की वाणी नहीं, जीवन बोलना चाहिए।' इससे पूर्व युवाचार्यश्री ने कहा—'आज व्यक्ति धार्मिक बन रहा है पर नैतिक नहीं। क्या नैतिकता के बिना धर्म का कोई अस्तित्व हो सकता है। नैतिक चेतना को विकसित करने के लिए हम अपने ग्रन्थितंत्र और नाड़ीतंत्र को विकसित करें।' युवाचार्यश्री ने कृषि के साथ ऋषि परम्परा का होना जरूरी बताया। मुनिश्री किशनलाल ने सभी को प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया।

उधर मर्यादा-समवसरण में साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में साध्वियों का कार्यक्रम रहा। प्रारम्भ में साध्वीश्री मधुरेखा, साध्वीश्री कनकश्री, साध्वीश्री रतनश्री (डूंगरगढ़) के भाषण हुए। साध्वी प्रमुखाश्री का 'समाज के निर्माण में महिलाओं का योगदान' विषय पर सारगर्भित वक्तव्य हुआ।

मेडिकल कॉलेज में समता-संगोष्ठी

मध्याह्न २ बजे रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज में आचार्यवर की सन्निधि में समता संगोष्ठी समायोजित हुई। इस संगोष्ठी में विविध पहलुओं पर विचार चला। इस विषय पर आर्थिक दृष्टि से डा० वी० सी० मेहता तथा राजनैतिक दृष्टि से डा० सी० एम० जैन ने विवेचना प्रस्तुति की। दोनों विषयों का स्पर्श करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'हम आर्थिक और राजनैतिक संदर्भों में जिस समता शब्द को प्रयुक्त करते है। उसके भावों का ठीक प्रतिनिधित्व करने वाला शब्द है—नियंत्रण। समानता निश्चय के स्तर पर हो

सकती है, किन्तु व्यवहार के स्तर पर हो, यह जरूरी नहीं है।' आचार्यश्री ने तेरापंथ को समानता का उत्कृष्ट प्रतीक बताया। उन्होंने समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण के साथ हुई अपनी मुलाकात का जिक्र करते हुए कहा— तेरापंथ के समाजवाद को समाज व राष्ट्र में संक्रान्त किये जाने की बात कही। समाजवाद को व्यावहारिक बनाने का एक पक्ष जहां अर्थतंत्र और राजतंत्र है वहां अध्यात्म पक्ष कम मूल्यवान नहीं है।' प्रो० के० सी० सोगानी ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

रात्रि में 'अंतरिक्ष यात्रा और अध्यात्म' विषय पर युवाचार्यश्री, आचार्यश्री के प्रभावी प्रवचन हुए। मुनिश्री सुखलाल ने विषय की भूमिका पर विवेचन प्रस्तुत किया।

६ फरवरी/पश्चिम रात्रि में आचार्यवर की सन्निधि में अग्रगण्य साधुओं की गोष्ठी संपन्न हुई। इस गोष्ठी में कुछ चिंतनीय बिन्दुओं पर चिन्तन चला। प्रातः कालीन प्रवचन में आचार्यवर ने साधु-साध्वियों के लिए विशेष शिक्षा फरमाई। पड़ासलीवासी श्री हर्षलाल बड़ाला एक दुर्घटना में काल कवलित हो गये। उनका परिवार आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुंचा व आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया।

मध्याह्न २ बजे मेडिकल कॉलेज में युवाचार्यश्री के सन्निधि में समता संगोष्ठी का द्वितीय चरण परिसंपन्न हुआ। इस संगोष्ठी में प्रोफेसर डी० वी० शर्मा, श्री के० सी० सोगानी ने भाग लिया। हृदय विशेषज्ञ डा० अरूण बोर्दिया ने अध्यक्षीय भाषण दिया। युवाचार्यश्री का प्रभावी उद्बोधन हुआ। रात्रि में 'ध्यान और चिकित्सा' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ।

प्रातः प्रवचन के समय साध्वी श्री यशोधरा ने सुदूर बंगाल, बिहार की यात्रा परिसंपन्न कर दर्शन किए। उनका पिछला चातुर्मास भागलपुर था। साध्वीश्री ने बंगला भाषा में अभिनन्दन करने के पश्चात् सामूहिक रूप में एक गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचार्यवर ने साध्वियों की निर्भयता के साथ सुदूर प्रांतों की यात्राओं को विशेष आत्मबल का प्रतीक बतायी। उन्होंने साध्वीश्री की बंगला भाषा में अस्खलित वक्तव्य व लेखन शैली की अर्हता प्राप्त करने को महत्त्वपूर्ण बताया। मुनिश्री जंवरीमल ने भी आज दर्शन किए। शरीर से दुर्बल और अवस्था से प्रौढ़ होते हुए भी वे जवानों की भांति त्वरित गति से चलकर आये।

जीवन-विज्ञान द्वारा सर्वाङ्गीण विकास संभव

६ फरवरी/दोपहर ११-३० बजे देश के विभिन्न भागों से आये माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्षों एवं सचिवों की एक विचार गोष्ठी मर्यादा समवसरण में आयोजित हुई। गोष्ठी को संबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"हमारी शिक्षा नीति से बौद्धिक विकास जरूर हुआ, मगर चारित्रिक विकास नहीं हुआ। हमारी शिक्षा नीति अच्छी है तभी देश में इन्जीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक हुए है, पर इसमें जो चारित्रिक कमी है, उसे जीवन-विज्ञान द्वारा दूर किया जा सकता है।" उन्होंने आगे कहा—"समाज बौद्धिक होने के साथ संवेदनशील बने, मस्तिष्क एवं हृदय के दोनों भाग समता वाले हों, जो हमारी भावना का आधारभूत है।"

आचार्यश्री ने कहा—"आज आदमी में चिंतन की कमी है। चिंतन के समय राष्ट्र, समाज ओझल हो जाता है। वहां पार्टी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इसके लिए निश्चित नीति व स्पष्ट चिंतन होना चाहिये। मजहब धर्म की रक्षा के लिए है, किन्तु धर्म पर मजहब छा गया है।" इस अवसर पर राज० रा० शै० एवं अनुसंधान परिषद् के निदेशक श्री भंवरलाल शर्मा ने बताया कि जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान के प्रयोग हेतु २७ विद्यालयों का चयन कर प्रयोग भी चालू कर दिया है।

मेवाड़ स्तरीय महिला मंडल द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता "नारी कल, आज और कल" में सुश्री मंजु बाफना (कांकरोली) प्रथम, श्रीमती मंजु चौधरी (उदयपुर) द्वितीय तथा सुश्री मंजु भण्डारी तृतीय स्थान पर रही। यह घोषणा मंडल की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा कोठारी ने की।

रात्रि में मुनिश्री राकेशकुमार के सान्निध्य में काव्य संध्या चली, जिसमें १३ युवा संतों ने मुक्तक, कविता, व गीतिकाओं से जनता-जनार्दन को सराबोर कर दिया। कार्यक्रम का संयोजन मुनिश्री लोकप्रकाश ने कुशलता पूर्वक किया। इस अवसर पर मुनिश्री राकेशकुमार ने भी अपनी कविताएं पेश की।

८ फरवरी / आज चतुर्दशी होने से हाजरी का वाचन हुआ। साधु-साध्वियों ने इस अवसर पर मर्यादा-शपथ को दुहराया।

जीवन-विज्ञान परिचर्चा

मध्याह्न जीवन-विज्ञान परिचर्चा चली, परिचर्चा में राजस्थान के मुख्य-

मंत्री श्री हरिदेव जोशी, शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा, ग्रामीण विकास मंत्रीश्री रामपाल उपाध्याय, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशश्री रंगनाथ मिश्र, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गुमानमल लोढ़ा, न्यायाधीश श्री दिनकर लाल मेहता उपस्थित थे। परिचर्चा से पूर्व मुख्यमंत्री ने आचार्यवर से वातचीत की।

परिचर्चा में बोलते हुए मुख्यमंत्री ने कहा—"आचार्यश्री तुलसी आदमी को आदमी वनाने का काम कर रहे हैं। यह महत्वपूर्ण है। इनके साहित्य में उपासना-आराधना की वात से अधिक आचरण की वात है। मैं इनके पास समय-समय पर आता रहता हूं। ये सांप्रदायिकता मुक्त सोच वाले आचार्य हैं।" इस अवसर पर श्री मिश्र, श्री लोढ़ा तथा युवाचार्यश्री के वक्तव्य हुए। आचार्यश्री ने अपने संवोधन में कहा—अज्ञान के तमस् को मिटाना जरूरी है उसे केवल पुस्तकों से नहीं, आंतरिक प्रयोगों से ही मिटाया जा सकता है।

सायं ४ वजे प्रेस-कान्फ्रेंस हुई, जिसमें विभिन्न पत्रों एवं संवाद एजेंसियों के करीव २० संवाददाता उपस्थित हुए। संवाददाताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों का आचार्यवर ने सुन्दर समाधान दिया। उसके वाद लॉ कॉलेज के डीन आये। अध्यात्म के वारे में आचार्यवर से वातचीत की। वातचीत से वे काफी संतुष्ट नजर आये। रात्रि में महावीर इन्टरनेशनल के कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी हुई। गोष्ठी में आचार्यश्री ने महावीर के सिद्धान्तों के वारे में वताया। १० फरवरी को प्रारम्भ हो रहे जैन समन्वय सम्मेलन के लिए कुछ लोग आज वम्बई से आये। जिसमें आंचलगच्छ व तीन थुई (मूर्तिपूजक) के अध्यक्ष श्री किशोरचंद वर्धन, टोकरसी भाई, खीमजी भाई ने आचार्यवर से वात की और कहा—"हजार मंदिर वनाने के पुण्य से जैन एकता का कार्य करना अधिक पुण्यपरक है।"

६ फरवरी/आज कला प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। इसमें आचार्यश्री के पचास वर्षीय शासन की एक-एक वर्ष महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के प्रतीक चित्र थे। साधु-साध्वियों द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुएं इस प्रदर्शनी की आकर्षण विन्दु थीं। मध्याह्न सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों, प्रोफेसरों की नई शिक्षा नीति पर एक महत्त्वपूर्ण गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी में अन्य बुद्धिजीवी लोग भी उपस्थित थे। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के इस अवसर पर प्रभावोत्पादक वक्तव्य हुए। रात्रि में मुनि सुमेरमल "लाडनूं" का प्रवचन हुआ।

जैन समन्वय सम्मेलन :

भगवान् महावीर का सिद्धांत स्याद्वाद भेद की दुनिया में अभेद की ओर बढ़ने का संदेश देता है। कठिनाई यह है कि उन्हीं का अनुयायी जैन समाज स्वयं ही अनेक भेद-प्रभेदों में बंटा हुआ है। प्रसन्नता की बात यह है कि पिछले कुछ वर्षों में समाज का चिंतन फिर भेद से अभेद की ओर मुड़ने लगा है। महावीर निर्वाण शताब्दी का पुण्य अवसर इसका कारण बना और प्रबुद्ध नेतृत्व कुछ बिन्दुओं पर एक मत हुआ। एक ध्वज, एक प्रतीक और एक ग्रन्थ निर्णीत हुए। फिर भी कुछ विषय ऐसे रह गए कि जिनकी असहमति आज भी हर समझदार जैन की आख की किरकिरी बनी हुई है।

उपरोक्त दोनों महत्त्वपूर्ण मुद्दों को सामने रखते हुए ही आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति ने जैन समाज के प्रमुखों का यह सम्मेलन आयोजित किया है। प्रश्न यह भी आ सकता है कि इस आयोजन को किसी वैयक्तिक उत्सव के साथ क्यों जोड़ा गया है? सचाई यह है कि व्यक्ति-व्यक्ति की पीड़ा ही कहीं जाकर सामूहिक पीड़ा बनती है। अभी पिछले दिनों हैदराबाद से भी इस पीड़ा को लेकर एक प्रतिनिधिमण्डल आमेट में आचार्य श्री तुलसी के सामने पहुंचा था। आचार्यश्री ने उन्हें इस पुण्य कार्य में पूर्ण समर्थन दिया था और और भी जहां-जहां से आवाज आई है, सबको सबका समर्थन मिला है। कार्यकर्ताओं ने हजारों किलोमीटर यात्रा करके अनेक धर्माचार्यों, मुनिजनों और समाज प्रमुखों से संपर्क किया है। बहुतों से हार्दिक सहयोग मिला है। अमृत महोत्सव का भी यह एक संयोग बना और उदयपुर में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

"हम एक है; हमें एक रहने दो" इस भावनात्मक वातावरण में आचार्य श्री तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोष्ठ द्वारा उदयपुर में दिनांक १०,११ फरवरी को आयोजित जैन समन्वय सम्मेलन एक बहुत ही उज्ज्वल वातावरण में सम्पन्न हुआ। जैन समाज के चारों संप्रदायों के गणमान्य प्रतिनिधियों की भव्य उपस्थिति में मर्यादा समवसरण में अमृत पुरुष आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में आयोजित यह आयोजन चार चरणों में सम्पन्न हुआ।

१० फरवरी को प्रातः ६.३० पर उद्घाटन भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री दीपचन्द गार्डी की अध्यक्षता में बंबई से समागत स्था० कांफ्रेंस के मंत्री श्री पुखराज लूंकड़ द्वारा किया गया।

प्रथमतः मंगलाचरण के पश्चात् मुनिश्री मधुकर द्वारा समन्वय गीत प्रस्तुत किया गया। आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव समिति उदयपुर के स्वागत अध्यक्ष श्री भंवरलाल डागलिया ने स्वागत-भाषण किया। भारत जैन महामंडल के मंत्री श्री चन्दनमल "चांद" ने संयोजकीय वक्तव्य दिया। श्री श्रीरामनंद कोठारी "भ्रमर" ने जैनाचार्यों, संतों के दर्शन कर समन्वय हेतु जो यात्राएं की, उसका विवरण प्रस्तुत किया। श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने इस अवसर पर प्राप्त आचार्यों, सन्तों, विद्वानों व सुश्रावकों के संदेश व सुझावों का संक्षेप में वाचन किया।

श्री पुखराज लूंकड़ द्वारा सम्मेलन के उद्घाटन के बाद युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा — "आज जैन धर्म को पुनः महावीर की अपेक्षा है। हमें तनाव को दूर करना होगा। महावीर की दृष्टियों के पालन का यह स्वर्णिम युग है। उन्होंने आगे कहा—"शाखाओं का होना विकास का चिह्न है। विचारों के विकास को रोका नहीं जाना चाहिए। आज सामूहिक प्रयोग की आवश्यकता है।"

भारत जैन महामंडल के उपाध्यक्ष श्री नृपराज जैन, अंचलगच्छ के अध्यक्ष वम्बई से समागत श्री किशोरचन्द्र वर्धन के वक्तव्यों के उपरान्त साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने दिशा निर्देश दिया। सरल गुजराती भाषा में प्रस्तुत श्री दीपचन्दजी गार्डी के अध्यक्षीय वक्तव्य ने सबका मन मोह लिया। उन्होंने उद्घोष किया—हम एक हैं, हमें एक रहने दो हमें किसी भी तरह से जैन समन्वय के कार्य में समर्पण भाव से जुट जाना है।"

आचार्यश्री तुलसी ने अपने मंगल प्रवचन में अनेक जैनाचार्यों के उदारतापूर्ण रुख का वर्णन करते हुए सब लोगों से इस शुभ कार्य में योगदान देने की वात कही। उन्होंने कहा—"जैन एकता आज प्रासंगिक है। हमें अनेकता में एकता स्थापित करनी है।"

द्वितीय चरण रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल हॉल में एक गोष्ठी के रूप में दोपहर २.३० वजे प्रारम्भ हुआ। इसका संयोजन श्री चन्दनमल 'चांद' ने बड़ी ही कुशलता पूर्वक किया। जोधपुर के श्री रिखवराज कर्णावट, व्यावर के श्री लालचन्द सिंधी, उदयपुर के डा० प्रेमसुमन जैन, हैदरावाद के श्री उगमचंद सुराणा, वम्बई के श्री टोकरसी भाई, सिकन्दरावाद के श्री हस्तीमल मुणोत, लाडनूं के श्री श्रीचन्द रामपुरिया, वोलारम-हैदरावाद के श्री पारस भाई जैन, दिगम्बर सम्प्रदाय के प्रमुख साहू श्रेयांसप्रसाद जी जैन,

इन्दौर के श्री फकीरचन्दजी मेहता, आदि ने जैन समन्वय के संदर्भ में सार-गर्भित सुझाव रखे।

आचार्यश्री तुलसी ने अपने उद्‌बोधन में वातावरण की गौरवमयता का उल्लेख किया। पश्चात् कई महानुभावों ने अपने वक्तव्य प्रकट किये जो सहज वार्तालाप के रूप में चले।

तृतीय चरण में आचार्यश्री के सान्निध्य में जैन समन्वय के प्रतिनिधियों की एक अन्तरंग गोष्ठी दिनांक १०, रात्रि को हुई जिसमें विचारों का खुलकर आदान-प्रदान हुआ। गरिमामय शब्दों में अत्यन्त विनम्रता पूर्वक संशय भी उठाये गये। किये गये कार्यों का व्योरा भी प्रस्तुत किया गया और क्या किया जा सकता है, क्या किया जाना चाहिए, इस पर खूब खुलकर चर्चा हुई। निष्कर्ष रूप में तब एक समिति का निर्माण किया गया और समग्र जैन समाज की मान्य संस्था भारत जैन महामण्डल के अन्तर्गत इस समिति को कार्य करने का निर्देश सर्वसम्मति से दिया गया। जैन समन्वय सम्मेलन ने पांच प्रस्ताव पारित किए। स्थापित समिति के जिम्मे विभिन्न आचार्यों से मिल-कर व उनको अपनी ओर से एक प्रतिनिधि इस समिति में देने का निवेदन करने का कार्य दिया गया।

११ फरवरी / ६.३० बजे आयोजित चतुर्थ चरण समारोह का प्रारंभ मुनिश्री श्रेयांसकुमार के गीत से हुआ। मुनि श्री राकेशकुमार के वक्तव्य के बाद मुनिश्री बुद्धमल ने कहा—"धर्म में असंतोष रहना भी काम का है। जो हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। नदी का रुख चाहे किधर भी हो मगर लक्ष्य तो समुद्र ही है। कागजों पर प्रस्ताव लेने से उस पर अमल नहीं होता। उसकी क्रियान्विति मन के द्वारा होनी चाहिए।" इस अवसर पर राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री चन्दनमल वैद, श्री नाथूलाल चंडालिया (कपासन) श्री विजयेन्द्र कर्णावट (हैदराबाद), श्री जौहरीलाल पारिख (जोधपुर), श्री शांतिलाल पोखरना (भीलवाड़ा), श्री हस्तीमल मुणोत (हैदराबाद) आदि के वक्तव्य हुए।

आचार्यश्री ने समापन-चरण में कहा—"आदमी का दिमाग स्वतंत्र एवं चिंतनशील होना चाहिए।" उन्होंने कहा—"बिना त्याग किए किसी चीज को पाना बहुत कठिन है। उसके लिए जब तक जैन एकता यानि सम्वत्सरी एक न हो तब तक प्रतिदिन आधा घण्टे खड़े रह कर ध्यान जप करने के साथ चीनी तथा चीनी की बनी चीजों को प्रयोग में न लेने का मैंने संकल्प लिया

है। युवाचार्यश्री को प्रतिदिन एक घंटा खड़े-खड़े ध्यान करने का निर्देश दिया।

कार्यक्रम के संयोजक श्री चन्दनमल "चांद" ने रात्रि को संपन्न गोष्ठी में पारित प्रस्ताव का पाठ किया। प्रस्ताव को उपस्थित जनमेदिनी ने हाथ उठाकर सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की। श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने जैन समन्वय प्रकोष्ठ की ओर से व श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट ने अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति की ओर से आभार ज्ञापन किया।

सम्मेलन की सफलता के लिए जिनके महत्त्वपूर्ण संदेश प्राप्त हुए उनके नाम इस प्रकार हैं—आचार्य आनन्द ऋषिजी, आचार्य नानालालजी, आचार्य हस्तीमलजी, आचार्य विजयेन्द्र सूरिजी, आचार्य विजयप्रेम सूरीश्वरजी, आचार्य विजय प्रसन्नचन्द्र सूरिजी, आचार्य उदयसागर सूरिजी, आचार्य दुर्लभसागर सूरिजी, एलाचार्य विद्यानन्दजी, आचार्य आनन्द सूरिजी, आचार्य हेमचन्द्र सूरिजी, मेवाड़ प्रवर्तक अंबालालजी, पंडित रत्न, मुनि कन्हैयालाल जी "कमल" श्री महेन्द्र मुनिजी, वात्सल्यदीपजी, पदमचन्दजी महाराज, रूपचन्दजी महाराज, रमेश मुनि जी, धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्रजी हेगडे, भट्टारक चारुकीर्तिजी महाराज, श्री मानव मुनिजी, उद्योगपति श्री अरविन्द भाई सिंधवी आदि।

सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

(१) सम्मेलन के लिए प्राप्त २७ आचार्यों एवं मुनियों तथा सैंकडों जैन नेताओं के संदेशों में संवत्सरी पर्व भिन्न-भिन्न तिथियों के लिए चिंता व्यक्त करते हुए एक तिथि की आवश्यकता महसूस की गई। इसके लिए अनेक आचार्यों ने उदारता के साथ अपने समर्थन का आश्वासन भी दिया है। सन्देशों की इस भावना एवं सम्मेलन की तीन बैठकों में प्रतिनिधियों के विचार मंथन के बाद यह सम्मेलन सर्वसम्मति से निर्णय करता है कि महापर्व संवत्सरी एवं महावीर जयन्ती की पूरे जैन समाज में सर्वमान्य एक ही तिथि हो। इस एक तिथि के लिए हम पूज्य जैन आचार्यों, साधु-साध्वियों से विनम्र अपील करते हैं कि वे इसमें पूर्ण समर्थन और आशीर्वाद दें।

(२) संवत्सरी एवं महावीर जयन्ति की एक ही तिथि निर्धारण के कार्य को सुव्यवस्थित आगे बढ़ाने के लिए यह सम्मेलन समग्र जैन समाज की

अखिल भारतीय संस्था भारत जैन महामंडल से निवेदन करता है कि मंडल के अन्तर्गत जैन समन्वय समिति गठित की जाय; जिसके संयोजक बंबई के किशोरचंद एम० वर्धन रहें और मंडल के अध्यक्ष तथा मंत्री इसके पदेन सदस्य रहें। समिति में निम्नलिखित सदस्य रहें—

१. श्री दीपचंद एस० गार्डी	बंबई
२. श्री किशोरचंद एम० वर्धन	बंबई
३. श्री हस्तीमल मुणोत	
४. श्री उगमचन्द सुराणा	
५. श्री पारसभाई जैन	बोलारम
६. श्री पुखराज एस० लूंकड़	
७. श्री चन्दनमल 'चांद'	बंबई
८. श्री कन्हैयालाल छाजेड़	कटक : श्रीडूंगरगढ़
९. श्री भीखमचन्द कोठारी 'भ्रमर'	टॉटगढ़
१०. श्री संचियालाल बाफना	औरंगाबाद
११. श्री रवजी भाई छेड़ा	
१२. श्री चन्दूलाल गांगजी प्रेमवाला	बंबई
१३. श्री टोकरसी मूला भाई वोरा	

इसके अतिरिक्त जैन समन्वय समिति आवश्यकतानुसार अतिरिक्त सदस्यों को मनोनीत कर सकती है।

(३) अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव वर्ष के अवसर पर यह सम्मेलन उनको जैन शासन एवं मानवता के क्षेत्र में की गई सेवाओं के सन्दर्भ में उनका श्रद्धा भरा अभिनन्दन करता है और जैन समन्वय सम्मेलन में आपके सान्निध्य एवं मार्गदर्शन के लिए विनम्र आभार व्यक्त करता है।

(४) यह सम्मेलन उन पूज्य आचार्यों और साधु-साध्वियों के प्रति भावभरी कृतज्ञता व्यक्त करता है जिन्होंने अपने संदेशों द्वारा समन्वय सम्मेलन को बल दिया और संवत्सरी की एक तिथि तथा जैन समन्वय के कार्य में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है।

(५) आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति एवं आचार्य तुलसी मर्यादा एवं अमृत-महोत्सव समिति, उदयपुर द्वारा सुन्दर, सुखद आतिथ्य और व्यवस्था के लिए यह सम्मेलन हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित

करता है।

राजस्थान प्रदेश जीवन-विज्ञान शिक्षा सम्मेलन

आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव के तृतीय चरण पर १२-१३ फरवरी को उदयपुर में अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति एवं राजस्थान विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में 'राजस्थान प्रदेश जीवन-विज्ञान शिक्षा सम्मेलन' का आयोजन हुआ। आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव को जीवन-विज्ञान वर्ष (मूल्य परक शिक्षा) के रूप में मनाया जा रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में इस सम्मेलन का आयोजन हुआ।

सम्मेलन की विविध गोष्ठियों की अध्यक्षता श्री श्रीचन्द रामपुरिया, श्री मोतीलाल एच० रांका, श्री डॉ० एम० वी० माथुर, प्रो० एल० के० ओड ने की।

शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के भू० पू० सदस्य डॉ० एम० वी० माथुर एवं राजस्थान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० आर० पी० भटनागर सम्मेलन के प्रमुख अतिथि एवं प्रमुख वक्ता थे।

श्री सोहनलाल गांधी, डॉ० देव कोठारी, डॉ० (श्रीमती) प्रभा वाजपेयी ने विविध गोष्ठियों का सुगठित संयोजन किया।

सम्मेलन में समागत शिक्षाविदों का स्वागत करते हुए स्वागत प्रमुख राजस्थान विद्यापीठ के उपकुलपति पं० जनार्दनराय नागर ने कहा—'हमें शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिये जीवन-विज्ञान के प्रयोग पर ही भारतीय शिक्षा का चेतनशील, गत्यात्मक, ज्ञान प्रेरणा से भरा तथा विज्ञान प्रतिपादित प्रारूप आविष्कृत करना ही होगा। भारतीय जन के चरित्र-निर्माण और विकास तथा समष्टि के जीवन मूल्यों की समुचित प्रतिष्ठा के लिए मनोविश्लेषणात्मक एवं प्रेक्षाध्यान से संप्रेरित जीवन-विज्ञान योग्य तथा यथेष्ठ है।'

उद्घाटन समारोह में मुनिश्री बुधमल, समणी श्री स्मितप्रज्ञा, साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के वक्तव्य के बाद युवाचार्यश्री तथा आचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण दिशादर्शक वक्तव्य हुए।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री श्रीचंद रामपुरिया ने की। श्री रामपुरिया ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा—'जीवन-विज्ञान जीवन को जीने की कला का क्रमानुसार अध्ययन है। विद्यार्थियों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

प्रथम गोष्ठी के प्रमुख अतिथि राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा थे। श्री देवपुरा ने कहा—'आज शिक्षा में व्यापक परिवर्तन की बात चल रही है। शिक्षा क्षेत्र में अनेकों प्रयोग चल रहे हैं। जीवन-विज्ञान भी एक प्रयोग है। मुझे विश्वास है जीवन-विज्ञान के द्वारा छात्रों में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो सकेगी।'

सम्मेलन में आयोजित विविध गोष्ठियों में मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री सुखलाल, साध्वीश्री राजीमती, साध्वीश्री कनकश्री एवं समणी श्री कुसुमप्रज्ञा ने 'जीवन-विज्ञान' विषय पर विशेष प्रकाश डालते हुए शिक्षा में इसकी उपयोगिता प्रतिपादित की।

डॉ० सी० एल० तलेसरा एवं श्री सोहनलाल गांधी ने 'शिक्षा और जीवन-विज्ञान' विषय पर विशेष प्रकाश डाला।

सम्मेलन में निम्न शिक्षाविदों ने पत्र वाचन किया—

१. प्रो० के० के० वशिष्ठ
वर्तमान में भारतीय शिक्षा आयोजन की भूमिका और समस्याएं
२. डॉ० के० के जेकब
एज्यूकेशन फोर सोशियल डेवलेपमेंट
३. प्रो० एल० के० ओड
जीवन-विज्ञान शिक्षा का तात्त्विक परिप्रेक्ष्य तथा कुछ प्रश्न
४. डॉ० जे० पी० वर्मा
जीवन-विज्ञान आधारित शिक्षा दर्शन
५. प्रो० श्यामसुन्दर जैन
शिक्षा का प्रायोगिक आयाम जीवन-विज्ञान

सम्मेलन में ८० शिक्षाविदों ने भाग लिया एवं जीवन-विज्ञान आधारित शिक्षा के संदर्भ में अपनी जिज्ञासा का समाधान प्राप्त किया।

१३ को मध्याह्न में जीवन-विज्ञान संगोष्ठी के साथ ही राजस्थान विद्यापीठ की ओर से आचार्यवर को 'भारत ज्योति' अलंकरण कार्यक्रम का प्रथम चरण मनाया गया। विद्यापीठ के उपकुलपति श्री नागर ने कहा—'विद्यापीठ के इतिहास में आज का दिन स्वर्णाक्षरों अंकित किया जायेगा, क्योंकि उसके द्वारा आज एक ज्योति पुरुष को अभिनन्दन समर्पित किया जा रहा है। विद्यापीठ के कुल प्रमुख श्री भवानी शंकर गर्ग ने संस्था का परिचय दिया। आचार्यवर का इस अवसर पर महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुआ।

आज राजस्थान की उपमंत्री मीना कागा ने आचार्यवर के दर्शन किये, बातचीत की। कम उम्र में वे मंत्रिमंडल में शामिल हुई हैं। आचार्यश्री के प्रति उनके मन में विशेष आस्था का भाव है। पूर्व विधायक श्रीमती लक्ष्मी-देवी चूंडावत ने भी आचार्यवर के दर्शन किये। मध्याह्न आचार्यवर अकस्मात् अस्वस्थ हो गये। रात्रि में पूर्ण विश्राम किया। रात्रि में युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। इससे पूर्व मुनिश्री राकेशकुमार ने विषय प्रवेश किया। आज बाहर से हजारों-हजारों व्यक्ति मर्यादा एवं अमृत-महोत्सव में शामिल होने के लिए पहुंच गये।

आचार्यश्री तुलसी 'भारत ज्योति से अलंकृत

१४ जनवरी/आज आचार्यश्री के सान्निध्य में तीन महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुए—१२२ वें मर्यादा महोत्सव एवं अमृत-महोत्सव के तृतीय चरण का उद्‌घाटन, भारत ज्योति अलंकरण एवं अणुव्रत पुरस्कार समर्पण। समारोह के विशिष्ट अतिथि थे—राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिंह। इनके अतिरिक्त पूर्व कार्यवाहक प्रधानमंत्री श्री गुलजारीलाल नंदा, शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा, ग्रामीण विकास मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय, सांसद श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया, सांसद श्री रामचन्द्र विकल, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महामंत्री श्री रघुनन्दन लाल भाटिया, पूर्व वित्तमंत्री श्री चन्दनमल वैद आदि की महत्त्वपूर्ण उपस्थिति थी।

राजस्थान के प्रमुख सार्वजनिक संस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर द्वारा आचार्यश्री तुलसी को संस्था के सर्वोच्च सम्मान भारत ज्योति से संबोधित किया गया। अलंकरण की प्रस्तुति संस्था के संस्थापक पं० जनार्दन-राय नागर ने करते हुए कहा—'पिछले पचास वर्षों में आचार्यश्री तुलसी ने समग्र देश में पांव-पांव चलकर मानव जाति के अभ्युदय के लिए जो कार्य किया है वह ऐतिहासिक उपलब्धि है। पग-पग पर संघर्षों को झेल कर अपने आचार्यत्व के पचास वर्षों में भारतीय मानवता की अन्तरात्मा को शुद्ध करने का संग्राम आपने किया है। आपने भारत राष्ट्र की राजनैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा आध्यात्मिक दृष्टियों को नव उद्‌बोधन देकर समूचे भारत ही नहीं, विश्व में भारत ज्योति का अपने दिव्य जीवन का दीप जलाकर प्रकाश किया है।"

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने भारत ज्योति "अलंकरण और अभिनंदन पत्र" विद्यापीठ परिवार की ओर से आचार्यश्री को समर्पित किया।

सन् ८५ के अणुव्रत पुरस्कार की प्रस्तुति जय तुलसी फाउन्डेशन के अध्यक्ष श्री धर्मचन्द चोपड़ा ने की। राष्ट्रपति ने श्री गुलजारीलाल नंदा को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया। निष्काम सेवी श्री नंदा को यह पुरस्कार-मानवीय एकता में विश्वास, चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं अणुव्रत आदर्शों के निर्वहन के संदर्भ में दिया गया।

राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा—"आज विभिन्न मत-संप्रदायों में तथाकथित मुखिया एवं अन्य लोग धर्म की आड़ में अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। वे धर्म की गलत व्याख्या कर जहां धन कमा रहे हैं वहीं सामाजिक कटुता के बीज भी बो रहे हैं। धर्म के साथ खिलवाड़ करने वाले ये लोग धर्म परायण होने का स्वांग करते हैं। हमें इनसे सावधान रहना होगा। भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहां सभी अपने धर्म के प्रचार व प्रार्थना करने को स्वतंत्र है। लेकिन देश की अखण्डता बरकरार रखने के लिए आज जरूरत इस बात की है कि विभिन्न धर्माचार्य, संत एक मंच पर बैठकर विचार करें, वे कहें कि हम एक हैं, भारत एक है। इस दिशा में उन्होंने आचार्यश्री तुलसी से पहल करने का आग्रह किया।

भंडारी दर्शक मण्डप में उपस्थित करीब पचीस हजार जनता को अपनी सरल एवं उन्मुक्त भाषा शैली से मंत्रमुग्ध रखते हुए राष्ट्रपति ने कहा—"आचार्य तुलसी मानवता की सेवा से जुड़े हैं। आपने अणुव्रत के जरिये देश को अनुशासन के धागे में पिरो कर एक नई जागृति पैदा की है। राजस्थान विद्यापीठ द्वारा "भारतज्योति" अलंकरण से सम्मानित करना उसे उनके प्रति हमारी श्रद्धा एवं भावना को अभिव्यक्त करना है।"

राष्ट्रपति ने आचार्यश्री की ओर उन्मुख होते हुए कहा "वे बता दें कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, उसे हमारे देश के ऋषि-मुनि अच्छी तरह से कर सकते हैं। क्योंकि वे मार्ग दर्शक हैं तपस्वी हैं। मैं चाहता हूं कि सत्य, अहिंसा और विश्व बन्धुत्व का मंत्र दोहराते हुये वे हमें प्रगति पथ पर ले जाए। जैन मुनियों का जीवन बहुत संयमी और सादा होता है। परन्तु उनके अनुयायियों से यह कहना चाहता हूं कि वे अपने आपको दौलत का ट्रस्टी समझें, उसका संग्रह करने के साथ-साथ वितरण भी करें। जनता के बीच ही उन्हें भगवान के दर्शन होंगे उन्होंने एक शेर सुनाते हुए कहा—"जुल्म दिखा तो शहंशाहों की बस्ती में, खुदा देखा तो गरीबों की बस्ती में।" राष्ट्रपति ने श्री नंदा को अणुव्रत के सिद्धान्त पर चलने वाला बताते हुए कहा कि श्री नंदाजी

की ईमानदारी हम सबके लिए एक मिसाल है। उनका समूचा राजनीतिक जीवन निष्कलंक रहा है। उन्हें पुरस्कृत करने के जय तुलसी फाउण्डेशन के निर्णय की राष्ट्रपति ने सराहना की। चारित्रिक महत्ता के अंकन के इस उपक्रम से राष्ट्रपति प्रभावित हुए। राष्ट्रपति ने आगे कहा—"आचार्यश्री तुलसी का काम अभी समाप्त नहीं हुआ है उन्हें अब समाज में आए विभिन्न मतभेदों एवं दुराव को खत्म करने के लिए अपने प्रयास जारी रखने होंगे।"

अणुव्रत पुरस्कार विजेता श्री गुलजारीलाल नंदा ने अपने संबोधन में कहा—"आचार्यश्री तुलसी एवं उनके धर्मसंघ ने मुझे जिस उच्च सम्मान के योग्य समझा है, उसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। मैं अपनी कमियों पर विजय प्राप्त करने का संघर्ष कर रहा हूं। मैंने जो कुछ हस्तगत किया है, वह मेरी आकांक्षाओं से कम है। फिर भी मैं इस पुरस्कार को स्वीकार करता हूं। ऐसा प्रतीत होता है कि आप जिस नैतिक श्रेष्ठता का प्रसार करना चाहते हैं, मेरे नम्र प्रयास को उसका प्रयास मान लिया है। इससे मुझे उस स्तर पर पहुंचने के लिये प्रयास करने की प्रेरणा मिलेगी, जिसकी आप मुझसे अपेक्षा करते हैं।"

साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा ने कहा—"आचार्यश्री के पचास वर्षों का यह सफर लोक चेतना को जागृत करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। उनमें लोकतान्त्रिक जीवन शैली के साथ नैतिक मूल्यों को ढालने की गहरी तड़फ है। समूचे साध्वी समाज के द्वारा इस महान् अलंकरण के समय उनका अभिनन्दन करती हुई मैं कामना करती हूं कि आचार्यश्री भारत ज्योति के रूप में ही नहीं, विश्व ज्योति के रूप में प्रतिष्ठित हो।"

युवाचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा—"आचार्यश्री को "भारत ज्योति" का अलंकरण श्रद्धा का एक पुष्प के रूप में समर्पित है। श्रद्धा का पुष्प कोई छोटा नहीं होता है, अपने आप में महान् होता है। आज इस योग को देख कर मेरा स्वप्न साकार हो रहा है। राज सत्ता और धर्मसत्ता का यह संतुलित योग हमें नई गति देने वाला है। इस संतुलन के साथ हमने कदम बढ़ाया तो निश्चित रूप से देश का नया नक्शा सामने उभरेगा।"

आचार्यश्री तुलसी ने अपने संदेश में कहा—"आज मनुष्य अपनी पहचान खो चुका है। उसे उसकी पहचान देने की जरूरत है। देश में धार्मिक लोग बहुत हैं, मगर नैतिक व्यक्तियों की कमी है। आज धर्म और धोखा एकसाथ चल रहे हैं।"

उन्होंने राष्ट्रपति को वास्तव में ज्ञानी की संज्ञा देते हुए कहा कि सभी धर्म के संतों को एक मंच पर लाने के लिए उनके सुझाव की दिशा में पूरे प्रयास करने का आश्वासन दिया। आचार्यश्री ने आगे कहा—"नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए सभी को अपरिग्रह का जीवन जीना सीखना होगा। श्री नंदाजी इसके उदाहरण हैं। इनका जीवन श्रेष्ठ चारित्रिक मूल्यों का परिचायक है। इस सम्मान द्वारा अणुव्रत पुरस्कार स्वयं सम्मानित हुआ है।"

आचार्यश्री ने कहा—"राजस्थान विद्यापीठ ने मुझे "भारत ज्योति" अलंकरण से सम्मानित किया है। पर मैं चाहता हूं कि मैं आत्म-ज्योति बनूं और यही मेरा लक्ष्य है। इस अवसर पर श्री देवपुरा, श्री भाटिया, श्री विकल, श्री धर्मचंद चोपड़ा ने अपने विचार रखे। श्री भंवरलाल डागलिया ने मर्यादा महोत्सव समिति की ओर से एक एल्यूमीनियम की कृति स्मृति स्वरूप भेंट की। कार्यक्रम का संयोजन श्री गणेश डागलिया ने किया।

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के उद्‌घाटन प्रसंग पर आचार्यवर ने तेरापंथ धर्मसंघ में चल रहे सभी केन्द्रों में नए संघाटकों की नियुक्ति की। कार्यक्रम के बाद राष्ट्रपति के साथ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री की सौहार्दपूर्ण वातावरण में बातचीत हुई। बातचीत करीब आधा घंटा चली।

इसी कार्यक्रम का द्वितीय चरण आचार्यवर के अभिनंदन के रूप में २.३० बजे साध्वियों एवं समणियों द्वारा मनाया गया। साध्वी श्री राजीमती साध्वी श्री प्रेमलता, श्रीमती तारादेवी सुराणा ने आचार्यवर के संबंध में अपने विचार प्रकट किये। साध्वी श्री जयश्री ने आचार्यवर की अभ्यर्थना में अपनी कविता प्रस्तुत की। सरदारशहर की साध्वियों, गुजरात प्रान्त की साध्वियों, हरियाणा प्रान्त की साध्वियों तथा समणीवृन्दने इस अवसर पर अपने समूह-गीत प्रस्तुत किये।

सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा आचार्यश्री का अभिनंदन

आज रात्रि में उदयपुर की कई सार्वजनिक संस्थाओं में सेवा मंदिर विद्यापीठ, संगीत नाट्य निकेतन, साहित्य अकादमी, आलोक विद्यालय के साथ नेशनल तथा विहार एवं कई संस्थाओं ने भारत ज्योति आचार्यश्री का मानव क्षेत्र में किए गए कार्यों की प्रशंसा करते हुए अभिनंदन किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए भारत सरकार के भूतपूर्व विदेश सचिव श्री जगत मेहता ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज धार्मिकों में

आचार्यश्री तुलसी ही ऐसे सक्षम व्यक्ति हैं जो राजनैतिकों को मोड़ दे सकते हैं। श्री मेहता ने कहा कि आज हमने जो सभा देखी, ऐसी विशाल एवं शालीन सभा अपने जीवन में कभी नहीं देखी।

१५ फरवरी/प्रातः ९.४५ साध्वियों के समूहगीत से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। यह कार्यक्रम आचार्यवर के आगामी चातुर्मास की प्रार्थना के लिए आर-क्षित था। प्रार्थना करने वाले क्षेत्र थे—पाली, पचपदरा, बगड़ी, अहमदाबाद, राजसमन्द, लाडनूं, श्री डूंगरगढ़।

ऐतिहासिक शांति यात्रा

भण्डारी दर्शक मण्डप से आज एक विशाल शांति यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें करीबन २५-३० हजार नर-नारी एवं बच्चों ने हाथों में बेनर ले रखे थे जिन पर लिखा था तनाव, हिंसा एवं युद्ध बन्द हो, विश्व में शांति हो तथा शस्त्रों की होड़ बन्द हो। यह पैदल रैली करीबन ३ किमी० लंबी थी जो नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई पुनः भण्डारी दर्शक मण्डप जाकर सभा के रूप में परिवर्तित हो गई।

इस शांति यात्रा में आगे जैन ध्वज, शांति यात्रा का बैनर, सबसे आगे नेपाल, बिहार, पूर्वाञ्चल में आसाम, उड़ीसा, तथा बंगाल, पश्चिम भारत में गुजरात, महाराष्ट्र, तथा सौराष्ट्र मध्य भारत में रतलाम, उज्जैन, इन्दौर उत्तरी भारत में उत्तरप्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, मैसूर, तामिलनाडु, मद्रास, मारवाड़, थली तथा मेवाड़ के हजारों नर नारियों, बच्चों के साथ मुमुक्षु बहिनें, समणियां, साध्वीप्रमुखाश्री आदि साध्वियां तथा साधु भी चल रहे थे। जुलूस के प्रारंभ में युवाचार्यश्री ने नेतृत्व किया।

इस शांति यात्रा में राजस्थान महिला विद्यालय, महावीर विद्या मंदिर, महिला मंडल, आलोक ब्रह्मपुरी आश्रम संस्थाओं ने भाग लिया।

शान्ति यात्रा समाप्ति पर हुई आमसभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया। आचार्यश्री के सान्निध्य में राजस्थान खेल परिषद् के अध्यक्ष श्री नन्द-लाल कच्छारा ने शांति प्रस्ताव रखा जिसका पूर्व मंत्री श्रीचन्दनमल वैद ने समर्थन करते हुए संपूर्ण समाज से विश्व मे शांति के लिए सभी को सजग रहने एवं प्रयास करने का आह्वान किया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर भारत सरकार, संयुक्त राष्ट्र संघ एवं राष्ट्राध्यक्षों को भेजने का निर्णय लिया गया। प्रस्ताव के पक्ष में बोलते हुए युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इस शांति यात्रा को एक

ऐतिहासिक यात्रा बताते हुए कहा "विश्व शांति के लिए यह एक बेजोड़ कदम है इससे अधिक कोई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम नहीं हो सकता। अमरीका तथा रूस में शस्त्रों की होड़ चल रही है जो विश्व शांति के लिए एक खतरा है जिसे रोका जाना चाहिए। सर्वप्रथम इसी समाज ने इस प्रकार का प्रस्ताव लेकर विश्व शांति प्रयास करने का कदम बढ़ाया है।" शांति यात्रा समिति के अध्यक्ष श्री नंदलाल कच्छारा एवं संयोजक डॉ० करण तोतावत थे। तेरापंथ युवक परिषद् के सदस्यों ने इस यात्रा का संचालन किया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में विविध कार्यक्रमों के अन्तर्गत "कानोड प्रस्तावों" की पूरी जानकारी दी गई। इसी संदर्भ में युवाचार्यश्री का उद्बोधन भाषण हुआ जिसमें उन्होंने प्रस्तावों की क्रियान्विति और सफल परिणति के लिए प्रेरणा दी। उसके बाद महिला मंडल, उदयपुर द्वारा महिला मंडलों के समूह गान हुए। प्रथम द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त मंडलों को पुरस्कृत किया गया।

वृहद् मर्यादा महोत्सव संपन्न

१६ फरवरी/उदयपुर की धरती पर १२२ वें मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ मध्याह्न १२.४५ बजे हुआ। सर्व प्रथम आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यश्री ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। मुनिश्री सुव्रतकुमार, मुनिश्री मोह-जीत कुमार ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। श्री बी० एल० धाकड़ ने संयोज-कीय वक्तव्य दिया। मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने त्रिपदी वंदना कराई। पारमार्थिक शिक्षण संस्था की मुमुक्षु बहिनों ने एक सुन्दर गीतिका प्रस्तुत की। दिल्ली तेरापंथी सभा के मंत्री श्री रमेशचंद जैन ने आगामी चातुर्मास दिल्ली में करने की प्रार्थना की। श्रीमती तारादेवी दूगड़ (कलकत्ता) ने अपने महत्त्व-पूर्ण वक्तव्य में नारी-जाति का समुचित मार्गदर्शन के लिए आचार्यवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। समणीवृन्द तथा साधिका बहिनों ने सामूहिक रूप में एक भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर व्यक्तिगत एवं सभा संस्थाओं द्वारा प्रकाशित व अप्रकाशित कृतियां आचार्यवर को भेंट दी गई। अ० भा० ते० महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सज्जन देवी चोपड़ा ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। नारी रत्न श्रीमती सूरज देवी बैंगानी ने आजीवन प्रतिवर्ष पन्द्रह हजार रुपये महिला मण्डल के माध्यम से सेवा कार्य में लगाने की घोषणा की।

मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" के नेतृत्व में बाल साधुओं ने एक शानदार राजस्थानी गीत प्रस्तुत किया। आचार्यवर गीत से प्रभावित होकर उसके लेखक मुनिश्री मोहनलाल को इक्कीस कल्याणक तथा साथ में गाने वाले सभी संतों को पांच-पांच कल्याणक से पुरस्कृत किया।

मैसूर के लोकप्रिय कार्यकर्ता श्री भंवरलाल मेहरा ने ६३२१ प्रतिज्ञा पत्र अमृत कलश में डाले तथा जयसिंहपुर की वरिष्ठ श्राविका श्रीमती पारसी बाई रूणवाल ने ५००० पांच हजार प्रतिज्ञा पत्र अमृत कलश में डाले। इस कार्यक्रम का संयोजन मुनिश्री सुखलाल ने किया।

साध्वियों ने सामूहिक रूप में शानदार गीतिका प्रस्तुत की। मुनिश्री बुद्धमलजी ने इस अवसर पर अपने महत्त्वपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किये।

देश के कोने-कोने से आये करीब ३५ हजार व्यक्तियों की मर्यादित सभा को संबोधित करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा—"आज मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे धर्म का केन्द्र बन रहे हैं पर वस्तुतः धर्म की धुरी व्यक्ति का जीवन है। हमारे तीर्थंकरों ने तीर्थ की स्थापना कर इस क्रम को प्रस्तुत किया। हम गणाधिपति आचार्य भिक्षु के अनन्त-अनन्त आभारी हैं, जिनकी दीर्घ दृष्टि से हमें यह अनुशासित व्यवस्थित, मर्यादित और संगठित धर्मसंघ मिला। वि० सं० १८१७ में क्रान्ति का सिंहनाद करने वाले आचार्य भिक्षु ने न जाने कितने विरोधी प्रलय प्रभंजनों को चीरकर भी ज्योतिर्वलय की तरह चमकते रहे। अभिनिष्क्रमण के समय श्मशान की छतरियों में अपना पहला प्रवास कर वे सदा-सदा के लए अमर हो गए। हमारा संघ और अधिक तेजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी हो, इसके लिए मैं कुछ महत्त्वपूर्ण घोषणाएं आज करना चाहता हूं।

महत्त्वपूर्ण घोषणाएं

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आगे कहा—"आज हमारे धर्मसंघ के सामने बहुमुखी प्रवृत्तियां हैं। उनकी व्यापकता को दृष्टि में रखते हुए समयोचित निर्णय लेना चाहता हूं। मैंने कनकप्रभा को जब से साध्वीप्रमुखा के पद पर नियुक्त किया तब से ये बराबर आशा और कल्पना से अधिक मेरी दृष्टि की आराधना करती रही है। इसकी कार्य कुशलता से मैंने सदैव प्रसन्नता की अनुभूति की है। ये भविष्य में भी साध्वीप्रमुखा के स्थान पर कुशलतापूर्वक कार्य करती रहेगी। इनके सामने संस्कार-निर्माण और साहित्य सृजन के गुरुतर कार्य हैं। अतः इनके कार्य भार को हल्का करने की दृष्टि से साध्वी

समाज की व्यवस्था के लिए साध्वी यशोधरा को नियोजिका के रूप में नियुक्त कर रहा हूं। मेरे दूसरे निर्देश तक यह नियोजिका का कार्य करती रहेगी।

युवाचार्य महाप्रज्ञ के आन्तरिक कार्य में योग देने के लिए मुनि मुदित कुमार को उनके व्यक्तिगत सहयोगी के रूप में नियुक्त करता हूं।"

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आगे कहा—"सेवाकेन्द्र में सेवारत साध्वियां हमारी परंपरा के अनुसार फाल्गुन कृष्णा पंचमी को सेवा-निवृत्त हो जाती है और नया सिंघाड़ा (ग्रुप) अपने दायित्व में जुड़ जाता है। इससे एक कठिनाई होती है कि दोनों ही ओर की साध्वियां मर्यादा महोत्सव के भव्य समारोह से वंचित रह जाती है। मैं इस क्रम में कुछ परिवर्तन करना चाहता हूं। सेवा की अवधि फाल्गुन शुक्ला पंचमी को परिसंपन्न होगी।"

श्रद्धास्पद आचार्यवर की नई घोषणाओं का मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से अभिनंदन किया।

युवाचार्यश्री ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा—"हमारे धर्मसंघ की प्रगति को मैं चार स्तम्भ में देख रहा हूं। प्रकाश, नियंत्रण अमृत और पुरुषार्थ।" युवाचार्यश्री ने इन चार बिन्दुओं का विस्तृत विवेचन किया। युवाचार्यश्री ने सभी साधु-साध्वियों को जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासित एवं मर्यादित रहने के साथ मानव-मानव के साथ अच्छे व्यवहार पर जोर दिया। उन्होंने कहा—जो समाज संगठित तथा जिस धर्मसंघ के साधु-साध्वियां हुशियार एवं संगठित है उस धर्मसंघ का समाज मजबूत होगा, उसका आचार्य तेजस्वी होगा। युवाचार्यश्री ने साध्वी प्रमुखाश्री की निस्पृहता की सराहना करते हुए आस्था का केन्द्र एक होने की बात कही।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने आचार्यवर के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा—"आचार्यवर की नई घोषणा को सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई है पर पूरी नहीं, क्योंकि मुझे सर्वथा दायित्व से मुक्त कर देते तो मैं और संतोष का अनुभव करती। फिर भी जो अनुग्रह आचार्यवर ने किया है, उसकी अभिव्यक्ति के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है। हमारी साध्वियों से मुझे जो आत्मीयता मिली है, वह भविष्य में भी उससे अधिक मिलती रहेगी, आचार्यवर के सपनों को पूरा करने में हमारा समय और शक्ति लगे, इसी आह्वान के साथ मैं अपनी बात को विराम देती हूं।"

इस अवसर पर साधु-साध्वियों ने दीक्षा-क्रमानुसार खड़े होकर लेख-पत्र व मर्यादाओं को दुहराया। आचार्य भिक्षु के हाथ से लिखे हुए मर्यादा

पत्र की साक्षी से अपने संकल्पों को दोहराते हुए सबको गौरव की अनुभूति हो रही थी। बाहर से आए हुए भाई-बहिनों का स्वागत डा० के० एल० कोठारी ने किया। इस प्रकार मर्यादा-महोत्सव का कार्यक्रम सानन्द संपन्न होने पर उदयपुर के लोगों ने प्रसन्नता की अनुभूति की। उन्हें कार्य करने का एक मौका मिला था। पूरी जिम्मेदारी और निष्ठा के साथ लोगों ने अपने दायित्व का निर्वाह किया।

आचार्यवर ने आज अपना आगामी चातुर्मास जैन विश्व भारती लाडनूं घोषित किया। इसके साथ ही उन्होंने अनेक साधु-साध्वी-संघाटकों के चातुर्मासों की नियुक्तियां की। अक्षय तृतीया ब्यावर घोषित हुई।

१७ फरवरी/मर्यादा महोत्सव के अवशिष्ट कार्यक्रम का प्रारम्भ गंगाशहर क्षेत्र की साध्वियों के गीत से हुआ। साध्वीश्री काव्यलता ने तमिल भाषा में अपने विचार रखे। महासभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल छाजेड़ तथा अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोतीलाल रांका ने अपने विचार व्यक्त किये। पेटलावद महिला मंडल की मंत्रिणी ने ५० बारह व्रतधारियों की सूचि आचार्यवर को भेंट की। करीब आठ हजार की उपस्थिति में आचार्यवर का प्रभावी प्रवचन हुआ। कार्यक्रम के अनन्तर आचार्यवर मूलस्थान मयूर काम्पलेक्स पधार गये। मर्यादा-महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम भंडारी दर्शक मण्डप में समायोजित हुआ था।

रात्रि में भारतीय लोक कला मंडल का कार्यक्रम तय था। यह संस्थान विविध रूपों में भारतीय संस्कृतिजन्य लोकनृत्य तथा कठपुतली के खेलों का निदर्शन कराता है। आज मानवीय गुणों को उजागर करने वाला कठपुतली कार्यक्रम पूर्व से तय था, पर आपसी समझ के अभाव एवं गलतफहमी से इस संस्थान ने कुछ ऐसे कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जो हमारी परंपरा एवं संस्कृति के विरुद्ध पड़ते थे। तत्काल आचार्यश्री कार्यक्रम के मध्य पधारे और यह कार्यकम बीच में ही बंद कर दिया। आचार्यश्री ने इस कार्यक्रम को ऐसे धार्मिक मंचों से प्रस्तुति करने को गलत बताया। कठपुतली कार्यक्रम देखने आये कुछ मुनिजनों ने भी यह लोकनृत्य का कार्यक्रम देखा। आचार्यश्री ने उन मुनिजनों को प्रायश्चित्त स्वरूप एक-एक उपवास दिया। इस अधूरे कार्यक्रम के बाद कवि सम्मेलन चला। उत्साही युवक श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट के संचालन में अनेक कवियों ने अपनी रचनाएं पेश की।

उदयपुर प्रवास के दौरान कई परिवार शोक विमुक्ति हेतु आचार्यवर

की पावन सन्निधि में पहुंचे। सूरत के वरिष्ठ श्रावक 'शासन प्रभावक' श्री कुसुमचंद भाई जवेरी का पक्षाघात की बीमारी में स्वर्गवास होने पर उनका परिवार दर्शनार्थ आया। आचार्यश्री के उद्‌गार—"कुसुमचंद भाई सूरत के ही नहीं, पूरे गुजरात तेरापंथी समाज के स्तंभ थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। संघ प्रभावना के विषय में उनकी अनूठी सूझबूझ थी। सूरत जाने वाले हर तेरापंथी भाई बहिनों ने सदा उनके जीवन व्यवहार में साधर्मिक वात्सल्य का अनुभव किया। संघ एवं संघपति के प्रति उनकी प्रगाढ़ आस्था थी। संघ-प्रभावक कुसुम भाई ने हमारे संघीय साहित्य को गुजराती विद्वानों तक पहुंचाने में भी श्लाघनीय श्रम किया। अंतिम समय में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बच्चू बहिन और पुत्र शैलेश ने उन्हें अच्छा आध्यात्मिक सहयोग प्रदान किया।"

भगवतगढ़ निवासी श्री मिश्रीलाल परम भक्त और तपस्वी श्रावक थे। वे वर्षों से एकान्तर तप कर रहे थे। उनके स्वर्गवासी होने से उस क्षेत्र में एक निष्ठाशील श्रावक की कमी हो गई।

श्रीमती कुन्दनमलजी सेठिया का दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। वह श्री मांगीलाल की माता थी। आचार्यवर ने श्रीमती सेठिया को 'दृढ़ धर्मिणी' के रूप में संबोधित करते हुए कहा – श्रीमती सेठिया ८५ वर्ष की उम्र में भी अपने स्वीकृत नियमों में अत्यन्त दृढ़ थी। गुरु-दर्शन के लिए वह हर समय लालायित रहती थी। अन्त में उसने हाथ में माला लिए जप करती हुई समाधिमृत्यु को प्राप्त किया।

भगवतगढ़ निवासी श्री नाथूलाल जैन 'जिज्ञासु' का रक्त कैंसर में स्वर्गवास हो गया। आचार्यश्री के उद्‌गार—"नाथूलालजी एक तत्वज्ञ श्रावक थे। स्वामीजी की कृतियों एवं जैन दर्शन का उन्होंने अच्छा अध्ययन किया था। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में उन्होंने जीवन के आखिरी समय तक अध्यापन का कार्य किया। उनके पुत्र श्री महेन्द्र जैन आदि ने उनको अच्छा आध्यात्मिक सहयोग प्रदान किया।'

जसोल निवासी श्री हरखचंद बोहरा का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वे धार्मिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टि से संपन्न व्यक्ति थे। उनके उनके पारिवारिक जनों ने आचार्यवर के दर्शन कर आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया।

उदयपुर में गुरु प्रवचन सभा में श्री विष्णुदयाल गोयल तथा श्री

रामकुमार सरावगी को उनकी सेवाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें 'संघ सेवी' अलंकरण से अलंकृत किया ।

तेरापंथ महिला मंडल, बंबई ने अमृत-महोत्सव के संदर्भ में जनसेवा का एक महान् कार्य संपादित किया । उनके सहयोग से विकलांग व्यक्तियों को नया जीवन मिला है । मंडल की पदाधिकारिणी श्रीमती जयश्री बांठिया तथा श्रीमती मीनादेवी सुराणा के साथ कुछ विकलांग व्यक्ति आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुंचे ।

आमेट चातुर्मास के बाद उदयपुर मर्यादा महोत्सव तक आचार्यवर, युवाचार्यश्री तथा मुनियों के प्रवचन से पूर्व कुछ चुने हुए गायक मुनियों की स्वर लहरियां जन-जन के मानस को झकझोरने वाली होती थी । मधुर एवं सामयिक गीतिकाओं के मुख्य गायक थे—मुनिश्री विजयकुमार, मुनिश्री श्रेयांसकुमार, मुनिश्री मोहजीत कुमार, मुनिश्री सुव्रतकुमार, मुनिश्री दिनेश-कुमार आदि । प्रातः उपदेश मुनिश्री उदितकुमार, मध्याह्न प्रवचन मुनिश्री विजयकुमार, मुनिश्री कमलकुमार देते थे ।

तेरापंथ दिग्दर्शन वर्ष जोधपुर चातुर्मास की परिसमाप्ति के बाद ८ नवम्बर १९८४ को प्रारंभ हुआ था, जो १७ फरवरी १९८६ को समाप्त हो गया । पूर्व चिंतन के अनुसार आमेट चातुर्मास की समाप्ति के साथ दिग्दर्शन वर्ष समाप्त होना था, पर बाद के निर्णय से मर्यादा-महोत्सव से मर्यादा-महोत्सव का समय दिग्दर्शन के लिए निश्चित हुआ ।

८ नवंबर १९८४ से १७ फरवरी, १९८६ के मध्य चार सौ सिड़सठ दिनों में विविध महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न हुए । वे कार्य जहां संघीय महत्त्व के थे, वहां सामाजिक व राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य भी सफलता के साथ निष्पादित हुए । यह वर्ष अमृत-महोत्सव वर्ष है । पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को यत्किंचित प्रस्तुति देने हेतु इस समारोह की संकल्पना की गई । आचार्यवर के पचास वर्षीय सफल एवं प्रभावी धर्म शासना के चंद स्फुलिंग जन-जन के लिए प्रेरणादायी बने, इस दृष्टि से युवाचार्यश्री के निदेशन में अमृत-महोत्सव को चार चरणों में मनाने का निर्णय हुआ । जिसमें तीन चरण संपन्न हो गये । प्रथम चरण गंगापुर, द्वितीय आमेट, तृतीय उदयपुर में संपन्न हुए, तथा चतुर्थ चरण राजसमन्द में होना है । इस वर्ष को युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान वर्ष घोषित किया है । बहोत्तर वसन्त पार करने के बाद भी आचार्यश्री में जो तारूण्य व स्फूर्ति है वह हम सबके लिए अनुकरणीय है । हमेशा दस-पन्द्रह किलोमीटर

चलना, प्रतिदिन दो-तीन भाषाओं को संबोधित करना स्थानीय जैन, जैनेतर लोगों को बुराइयों से मुक्त करना, श्रद्धालु श्रावकों की श्रद्धा में नया संचार करना आदि इतने कार्य हैं, जिन्हें उन्हें हमेशा करना होता है। उनकी दिनचर्या का अधिकांश समय व्यक्ति-व्यक्ति के आत्मिक उत्थान में लगा रहता है। ऐसे महान् आचार्य के महान् कार्यों के प्रति पूरा मानव समाज प्रणत है।

अमृत-कलश पद यात्रा

अमृत-कलश पदयात्रा एक रचनात्मक अभियान है। इससे वर्तमान की बुराइयों को मिटाने का एक नया संकल्प जगा है। आचार्यश्री तुलसी ने वर्तमान की समस्याओं को समझा है और उन्हें सुलझाने का प्रयत्न किया है। आजकल अधिकतम आयोजनों में अर्थ की दृष्टि मुख्य होती है, अमृत कलश की योजना इससे सर्वथा भिन्न है। 'अमृत कलश' दूसरे शब्दों में समर्पण की भावना से प्रेरित 'संकल्प-कलश है। मद्य निषेध, मिलावट-निरोध, दहेज-उन्मूलन, अस्पृश्यता निवारण एवं भावात्मक एकता—इन संकल्पों से प्रेरित इस अमृत-कलश पदयात्रा का प्रारंभ गंगापुर से हुआ। अमृत-महोत्सव के प्रथम चरण पर प्रारंभ अमृत-कलश अभियान कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी थे।

२६ अप्रैल १९८५ की प्रातःकालीन वेला। हाईस्कूल के विशाल अमृत पंडाल में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के सान्निध्य में अमृत-कलश पदयात्रा अभियान का प्रारंभ हुआ। पदयात्रा अभियान की अध्यक्षता श्री मानव मुनि ने की। एक खुली जीप में अमृत-कलश रखा हुआ था। अमृत-कलश पदयात्रा उद्घाटन में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री पदयात्रियों के साथ करीब सौ कदम से भी अधिक चले।

'अणुव्रत आन्दोलन' के माध्यम से आचार्यश्री ने जीवन भर नैतिक मूल्यों को राष्ट्रव्यापी स्तर पर सुप्रतिष्ठित करने का कार्य एक अभियान की तरह किया है। अमृत-महोत्सव के महानतम अवसर पर उसी कार्य को अग्रसर करने के लिए यह यात्रा आयोजित हुई।

युवाचार्यश्री के दिशादर्शन एवं श्री पूर्णचंद बडाला के संयोजन में प्रारम्भ इस पचास दिवसीय पदयात्रा का समापन १७ जून १९८५ को हुआ। सात चरणों में संपन्न व ५६० कि० मी० की इस यात्रा में ११६ पदयात्री शामिल हुए, जिनमें १६ समणियां ३२ पदयात्री तथा ७१ सहयात्री थे।

पद-यात्रा का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

चरण	क्षेत्र	दल संयोजक	संकल्प पत्र
प्रथम	गंगापुर से भीलवाड़ा	श्री पूर्णचंद वड़ाला	३३५६
द्वितीय	भीलवाड़ा से आसीन्द	श्री मोहनलाल जैन	४४१८
तृतीय	आसीन्द से देवगढ़	श्री पारसमल मेहता	५६१३
चतुर्थ	देवगढ़ से रींछेड़	श्री उग्रसिंह मेहता	३२४२
पंचम	रींछेड़ से गोगुन्दा	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	१३११
षष्टम	गोगुन्दा से राजसमन्द	श्री मानमल आंचलिया	४०६३
सप्तम	राजसमन्द से आमेट	श्री देवेन्द्रकुमार हिरण	२६३४
	अमृत कलश समर्पण समारोह, आमेट में समर्पित		१००६३
	संकल्प-पत्रों का योग		३५४६०

इस पदयात्रा में चार समणियों के दल शामिल थे, जिनका नेतृत्व कर रही थी—समणी कुसुमप्रज्ञा, समणी मधुरप्रज्ञा, समणी परमप्रज्ञा, समणी सुप्रज्ञा। श्री मानमल आंचलिया (सरदारशहर) ने, जो वर्षीतप कर रहे हैं, सर्वाधिक छत्तीस दिन इस यात्रा में साथ रहे। पदयात्रा संयोजक श्री पूर्णचंद वड़ाला इकतीस दिन, श्री जीतमल जैन (लायरा) इक्कीस दिन तथा श्री चंदनमल सिंघवी (पुर) चौदह दिन साथ रहे। अमृत कलश पदयात्रा का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। कई जगहों पर तोरण द्वार बांधे गये। हजारों लोगों ने अपनी-अपनी बुराइयों को छोड़ा।

अमृत-कलश समर्पण समारोह २४ जून को आमेट में मध्याह्न २.३० बजे आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री शुभकरण दसाणी ने की तथा प्रमुख अतिथि राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा थे। समारोह के पूर्व बोइंग विमान दुर्घटना पर हार्दिक संवेदना एवं दुःख व्यक्त करते हुए सभा ने दिवंगत आत्माओं के सम्मान में दो मिनट मौन रखा। मंच पर पदयात्रा के संयोजक, नेता प्रमुख के साथ साधक श्री मानमल आंचलिया भी उपस्थित थे। पदयात्रा के संयोजक श्री पूर्णचंद वड़ाला की अस्वस्थता के कारण उप संयोजक श्री राजेन्द्रकुमार कावड़िया ने पदयात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। श्री सीताशरण शर्मा एवं समणी कुसुमप्रज्ञा ने पदयात्रा के अनुभवों के साथ सभा को संबोधित किया।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन के साथ

पद-यात्रियों को साधुवाद दिया। आचार्यप्रवर को आठों संयोजकों द्वारा ३५,४६० संकल्प-पत्र समर्पित किये गये, जिन्हें स्वीकार करते हुए आचार्यप्रवर ने अमृत-कलश पदयात्रा को रचनात्मक अभियान की संज्ञा दी। पदयात्रा के सभी संयोजकों को श्री देवपुरा ने सम्मानपत्र भेंट किये।

अमृत-कलश समर्पण के बाद भी पूरे देश से संकल्प पत्रों का भरना जारी रहा। १७ फरवरी १९८६ तक करीब ८० हजार संकल्प-पत्र भरे जा चुके थे।

अमृत-महोत्सव के सन्दर्भ में अन्य कई रचनात्मक प्रवृत्तियां प्रारंभ हुईं। उनका विवरण निम्नोक्त है।

आमेट-तुलसी अमृत विद्यापीठ, अमृत स्तम्भ
राजसमन्द—तुलसी साधना शिखर, अणुव्रत विश्व भारती
गंगापुर—कालू कल्याण कुंज, तुलसी अमृत महाविद्यालय
केलवा—भिक्षु चिकित्सालय
पहुंना—अणुव्रत विद्यापीठ, अणुव्रत लोक कला भारती, तुलसी अमृतायन

घर-घर तपः घर-घर जप

आमेट में अमृत-महोत्सव के द्वितीय चरण पर भारत के अनेक छोटे-बड़े पत्र-पत्रिकाओं में आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को उजागर करने वाले लेख प्रकाशित हुए वे लोग युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री, साधु-साध्वियों, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों द्वारा लिखे गये।[1] अमृत-महोत्सव प्रसंग पर 'घर-घर तपः घर-घर जप' की योजना प्रारंभ हुई। तप में आयंबिल तथा जप में 'अभीराशिको नमः' मंत्र निर्णीत था। सतरह महीने चलने वाले इस अमृत-महोत्सव में हजारों-हजारों लोगों ने आयंबिल व जप का क्रम प्रारम्भ किया। बहिर्विहारी साधु-साध्वियों के विशेष प्रयत्नों से इस कार्यक्रम को गति मिली। उसका विवरण खण्ड-२ में यत्र-तत्र मिल सकेगा। गुरुकुलवास में इस कार्यक्रम को बढ़ावा देने हेतु मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' तथा मुनिश्री कमलकुमार ने सश्रम प्रयास किया, तभी हजारों श्रावक-श्राविकाओं में इस अनुष्ठान का व्यवस्थित रूप बन सका। आचार्य-अर्चना में यह एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम साबित हुआ है।

---

१. देखें परिशिष्ट—९

तत्त्वज्ञान

अमृत-महोत्सव वर्ष में यह चिंतन चला कि चतुर्विध धर्म-संघ में तात्विक ज्ञान के प्रति अभिरूचि कैसे जागृत हो, कैसे विकास हो ? इस दृष्टि से पांच थोकड़े कण्ठस्थ करने का एक उपक्रम प्रारंभ हुआ। आमेट चातुर्मास में केन्द्र से साधु-साध्वियों को नामोल्लेख पूर्वक इंगित किया गया था। उस इंगित के अनुरूप अनेक साधु-साध्वियों ने सोत्साह, सलक्ष्य उन थोकड़ों को याद किया और आचार्य-अभिवन्दना में अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाये। इसी तरह श्रावक-श्राविकाओं में भी इस उपक्रम को प्रचारित किया गया। साधु-साध्वियों के विशेष प्रयास से अनेक स्थानों पर इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित हुआ। तेरापंथ की जनसंख्या के आधार पर अधिक थोकड़े कण्ठस्थ करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय, क्षेत्र को पुरस्कृत करने का आमेट चातुर्मास व्यवस्था समिति ने निर्णय लिया। जिसमें प्रथम बोरावड़, द्वितीय वाव तथा तृतीय मोमासर रहा। सैंकड़ों-सैंकड़ों छात्र-छात्राओं तथा युवक-युवतियों ने परिश्रम कर थोकड़ों को कण्ठस्थ करने का स्तुत्य प्रयास किया है व कर रहे हैं।

अमृत-महोत्सव वर्ष में आचार्यश्री दो महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित हुए। पहला 'भारत-ज्योति' अलंकरण, जो राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर द्वारा १४ फरवरी, १९८६ उदयपुर में महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के हाथों प्रदान किया गया। दूसरा राजाजी मंच, जयपुर द्वारा 'राजाजी रत्न' अलंकरण दिया गया। प्रतिवर्ष यह मंच कला, पत्रकारिता, संगीत, नैतिकता आदि विभिन्न ग्यारह क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को इस अलंकरण से अलंकृत करता है। पंजाब-समस्या के शान्तिपूर्ण समाधान में आचार्यवर की महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए यह अलंकरण दिया गया।

अमृत-महोत्सव की समायोजना, आचार्यश्री के कार्यक्रमों की अवगति, विविध मुखी प्रवृत्तियों से परिचित कराने हेतु आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ। श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट डॉ० महेन्द्रकुमार कर्णावट इस संस्था के जन्म के साथ जुड़े हुए हैं। उनकी सूझबूझ एवं सक्रियता से आचार्यश्री के जीवन एवं उनकी प्रवृत्तियों से संबंधित अनेकों फोल्डर तथा छोटी-छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित हुईं।[1]

---

१. देखें परिशिष्ट—१०

अमृत-महोत्सव वर्ष के चुनिन्दा महत्त्वपूर्ण पत्र

पूज्यपाद श्रद्धेय आचार्यप्रवर,

सादर साष्टांग प्रणाम !

मेरे शरीर की हालत ठीक नहीं है। अतः इस पत्र द्वारा मन से ही श्री चरणों में उपस्थित हो रहा हूं। डॉ० देव कोठारी विगत अर्ज करेंगे।

आपके अमृत-महोत्सव पर राजस्थान विद्यापीठ कुल, उदयपुर आप श्रीमद् को 'भारत ज्योति' संबोधन से पुकारना चाहता है। नवीन भारत के आध्यात्मिक तथा सामाजिक नव-नवोन्मेष तथा उत्थान के लिये 'अणुव्रत' सुदर्शन ही नहीं, शक्ति, संयम तथा सौन्दर्य प्रदान करवाने वाला शिक्षात्मक आन्दोलन और प्रवृत्ति है। महात्मा गांधीजी और महर्षि दयानन्दजी के पश्चात् आप श्रीमद् ने ही अणुव्रत द्वारा भारत ही नहीं, विश्व मानव को शान्ति, संयम तथा आत्म-ज्योति प्राप्त करने का मंत्र दिया है।

सौभाग्य से आप श्रीमद् का अमृत-महोत्सव राजस्थान विद्यापीठ कुल की स्वर्ण-जयन्ति के ही वर्ष में पड़ा है। अतः सोना और सुगन्ध स्वरूप इस ऐतिहासिक अवसर पर हम सब आपको 'भारत-ज्योति' के सर्वोच्च संबोधन से पुकारेंगे। 'भारत-ज्योति' संबोधन से हमने श्रीमान् डॉ० दौलतसिंहजी कोठारी तथा श्रीमती इन्दिराजी को (मरणोपरान्त) पुकारा है।

कृपया आशीर्वाद सहित स्वीकृति प्रदान करें ताकि हम उसकी तैयारी में अभी से लगें। प्रभावशाली 'आचार्य तुलसी भारत-ज्योति संबोधन समिति' आपश्री की स्वीकृति प्राप्त होते ही गठित कर अखिल भारतीय स्तर पर कार्य आरम्भ किया जायेगा। श्रीमान् देवेन्द्र कर्णावटजी को हमारा योग करने के लिये आज्ञा प्रदान करें।

श्रीचरणों का विनीत
(जनार्दन राय नागर)
संस्थापक उपकुलपति
राजस्थान विद्यापीठ
उदयपुर

पूज्य आचार्यश्रीजी,

सादर वन्दन !

आशा एवम् पूर्ण विश्वास है कि आप धर्म परिवार सहित सुखसाता

में विराजमान होंगे। मैं पिछले कुछ दिनों से विदेश से भारत आया हुआ हूं और आपके दर्शन करने की प्रवल भावना रखता हूं। भाई श्री चांदजी से आपके दर्शन की चर्चा भी की थी, किंतु सौराष्ट्र के छोटे-छोटे गांवों में चलने-वाले सेवा कार्यों के लिए उधर चले जाने से दर्शनार्थ नहीं पहुंच सका। अब पर्युषण पर्व लंदन में करने का कार्यक्रम होने के कारण शीघ्र वापस जा रहा हूं। इसलिए इस बार दर्शन से वंचित रहूंगा, किंतु दिसम्वर में भारत लौटने के बाद कभी समय निकालकर आपके दर्शनार्थ आने का विचार है।

आप वर्तमान युग के जैनाचार्यों में महान् तेजस्वी है और जैनधर्म को जन-जन तक पहुंचाने का महान् कार्य करने के साथ ध्यान, योग, साहित्य एवं अणुव्रत की विभिन्न प्रवृत्तियों का संचालन भी कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में भगवान् श्री महावीर की अहिंसा को उपयोग में लाकर पिछले माह स्व० संत लोंगोवाल का जो मार्गदर्शन दिया, वह प्रशंसनीय था। आपकी प्रेरणा से श्री राजीव गांधी एवं संत लोंगोवाल के बीच पंजाव समस्या के समाधान का समझौता हुआ। जैन समाज के लिए यह गौरव का विषय है और हम इसके लिए आपका अभिनन्दन करते हैं।

यह वर्ष आपके आचार्यकाल का अमृत महोत्सव वर्ष है। आचार्यकाल के पचास वर्षों में आपने जैन संघ की महान् प्रभावना के साथ-साथ राष्ट्रीय चरित्र के उत्थान में महान् योगदान किया है। मैं व्यक्तिगत रूप से एवं भारत जैन महामण्डल की ओर से आपके अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में हृदय-पूर्वक अभिनन्दन करता हूं। आपका मार्गदर्शन सतत हमें मिलता रहे और अहिंसा, मैत्री, प्रेम का वातावरण वने, यही मंगलकामना है।

आपके प्रत्यक्ष दर्शनों की अभिलाषा है और विश्वास है कि कभी अवश्य श्रीचरणों में उपस्थित होकर मार्गदर्शन प्राप्त करूंगा।

आपका विनम्र

दीपचंद एस-गार्डी

अध्यक्ष, भारत जैन महामंडल

वम्वई

एलाचार्यश्री विद्यानंदजी,

आपके अध्यात्म अनुप्राणित स्वास्थ्य के प्रति मंगल भावना।

आपका मैत्रीभाव सदा स्मृति में रहता है। आपकी गुणग्राहिता भी उल्लेखनीय है। जैनशासन की सुषमा—वृद्धि में आपके योग को मैं मूल्यवान्

मानता हूं।

आपकी षष्टिपूर्ति मनाई जा रही है, यह समाज के लिए प्रेरणा बनेगी। इस वर्ष आचार्यश्री तुलसी आचार्यत्व काल के ५० वर्ष संपन्न कर रहे हैं। पूरी जैन परंपरा में इतने दीर्घकाल तक आचार्य पद पर आसीन आचार्य विरल ही हुए हैं।

आचार्यप्रवर ने अध्यात्म के क्षेत्र में अनेक नए आयाम उद्घाटित किए है। आध्यात्मिक अनुशासन के ५० वर्ष की संपन्नता के अवसर पर अध्यात्म के अग्रणी पुरुषों द्वारा आचार्यश्री का अभिनन्दन किया जाए, ऐसी योजना बनी है। इस कार्य में मैं आपका योगदान चाहता हूं। परोक्षतः समर्थन तो प्राप्त है ही, माघ शुक्ला सप्तमी के आस-पास (फरवरी ८६) उदयपुर में मैं आपकी साक्षात् उपस्थिति चाहता हूं। मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं—मर्यादा महोत्सव के अवसर पर एक बार आपका मिलन चाहिए, यह चर्चा चली थी और आपने ऐसा चाहा भी था, इससे बढ़िया अवसर और कब मिलेगा ?

मेरा विश्वास है आप अपना भावी कार्यक्रम इस स्थिति को ध्यान में रखकर बनाएंगे। हम प्रतीक्षा करेंगे उदयपुर में फिर एक बार सौहार्दपूर्ण सम्मिलन की।

समदड़ी —युवाचार्य महाप्रज्ञ

८ फरवरी, ८५

युवाचार्य महाप्रज्ञजी,

आपका समदड़ी से प्रेषित ८ फरवरी ८६ का पत्र यथासमय मिल गया था, किंतु विहार में होने के कारण तुरन्त ऐसा कोई सुयोग नहीं बना कि आपके इस महत्वपूर्ण पत्र का उत्तर दे पाता।

मैंने देखा कि विगत आधी शताब्दी में तेरापंथ ने अपने साधु-साध्वियों के माध्यम से एक काफी सशक्त/स्वस्थ/सुखद भूमिका संरचित की है। संस्कृति, राष्ट्र, सदाचार, चिन्तन में गतिशीलता ध्यान और योग के क्षेत्र में नये क्षितिजों का उद्घाटन आदि कुछ ऐसी जीवन्त उपलब्धियां हैं, जिनके लिए आचार्यश्री तुलसीजी को भुलाया नहीं जा सकेगा। सामाजिक और नैतिक क्रान्ति का जो बीजारोपण उन्होंने किया है, यदि उसे पूरी अप्रमत्तता के साथ सींचा-पोसा गया तो समाज, राष्ट्र का अपूर्व कायाकल्प संभव है। साहित्य-प्रकाशन के क्षेत्र में भी आचार्यश्री तुलसीजी के साधु परिकर ने कुछ नये

आयाम उन्मुक्त किये हैं। आगम-प्रकाशन तथा कोश-संपादन-जैसे दुःसाध्य कार्यों को, अपनी दैनंदिन आध्यात्मिक साधना पर अविचल रहकर करना, कराना सचमुच एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। मुझे विश्वास है स्वाध्याय और प्रकाशन की यह अनुकरणीय/प्रशस्त परंपरा तेरापंथ में अविच्छिन्न बनी रहेगी।

यह गौरव-गरिमा का विषय है कि आचार्यश्री तुलसीजी अपने जयवंत आचार्यत्व की अर्द्धशती संपन्न कर रहे हैं। मैंने उन्हें सदैव एक पराक्रमी, साहसी, तेजोमय, उदारचेता, असंकीर्ण साधु मनीषी के रूप में देखा है। वस्तुतः जो परंपराएं उन्होंने प्रवर्तित की हैं तथा उनके इस प्रवर्तन में से जो नव नूतन संदर्भ प्रकट हुए हैं, वे निखिल मानवता के लिए हितकारी हैं। मैं महत्व के इन क्षणों में उनका अभिनन्दन करता हूं और साधुवाद देता हूं।

इन्दौर में गोम्मटगिरि जैन तीर्थ जिस तरह विकसित हो रहा है वह हम सबके लिए/जैनमात्र के लिए गौरव का विषय है। मैं इसे विश्वधर्म के वैश्विक केन्द्र के रूप में परमोत्कर्ष देना चाहता हूं। इन्दौर और उदयपुर की दूरी काफी है: अतः आचार्यश्री तुलसी जी के इस अध्यात्म पर्व के महत्क्षणों में मेरा वहां पहुंच पाना संभव नहीं है तथापि मुझे आशा है कि ये क्षण सबके लिए मंगलमय सिद्ध होंगे और उनका आचार्यत्व दिनों-दिन यशस्वी होगा। और इस समारोह में से अहिंसा एवं व्यसनमुक्त जीवन के लिए एक ऐसी उद्दीप्त/रचनात्मक ज्योति जन्म लेगी, जिसके फलस्वरूप प्राणीमात्र के कल्याण के लिए आशा की कोई उज्ज्वल किरण सामने आयेगी। वैसे उन-जैसे साधुओं के जीवन का तो एक-एक पल ही महोत्सव है, क्योंकि वे पल-पल पग-पग प्राणिमात्र के कल्याण के निमित्त कटिबद्ध हैं और कामना कर रहे हैं कि सब सुखी हों; निरापद, निर्विघ्न और मंगलमय हों।

—ऐलाचार्य विद्यानन्द मुनि
गोम्मटगिरि, इन्दौर (म० प्र०)



युवाचार्य महाप्रज्ञ



आलोच्य वर्ष में महाप्रज्ञ

संघ का विकास तब ही अबाध रूप से चल सकता है, जब युवा साधु-साध्वियां हर क्षेत्र में निष्णात बनें। जब तक विद्या, कला, साधना आदि में साधु-साध्वियां रुचि नहीं लेते, उन आयामों को अपनी प्रगति का आधार नहीं मानते, उन क्षेत्रों में विशिष्टता प्राप्त करने के लिए अपनी संपूर्ण शक्ति का नियोजन नहीं कर पाते तब तक हमें धर्म संघ के उज्ज्वल भविष्य का स्पष्ट आश्वासन नहीं मिलता। युवा साधु-साध्वियां धर्मसंघ की रीढ़ है। उन्हें तैयार करना धर्मसंघ के निश्चिन्त और देदीप्यमान भविष्य का निर्माण करना है। यह दायित्व सहज रूप से युवाचार्यश्री के कंधो पर आ जाता है। उन्होंने इस महान् कार्य को प्राथमिकता दी। युवाचार्यश्री ने संघीय संपदा को निरन्तर बढ़ाते रहने के अपने इस दायित्व को बखूबी निभाया है।

अध्यापन

आलोच्य वर्ष में युवाचार्यश्री ने साधु-साध्वी समाज के बौद्धिक विकास के लिए कुछ सार्थक प्रयत्न किए हैं। मर्यादा महोत्सव जसोल से युवाचार्यश्री ने अपनी पाठशाला के विद्यार्थियों को तर्क और न्याय के प्राचीनतम ग्रंथ सन्मतितर्क को प्राचीन और अधुनातन संदर्भों में पढ़ाया। जैन-योग और पातंजल योग दर्शन का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन भी उसके साथ कुछ महीनों तक व्यवस्थित रूप से चला।

भगवती सूत्र

अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर प्रस्तुत अध्यनन क्रम में एक नया मोड़ आया। आचार्यश्री के सान्निध्य में जैन परंपरा के प्रसिद्ध आगम भगवती का वाचन शुरु हुआ। वाचन के साथ-साथ पाठसंशोधन, अनुवाद, टिप्पण लेखन कार्य भी अपनी गति से चलता रहा। इस विशाल आगम के गहनतम रहस्य संवादशैली में गुंथे हुए हैं। स्पष्टीकरण, समीक्षा, जिज्ञासा-समाधान तथा आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ आदि अनेक प्रकार से उन रहस्यों का प्रतिदिन स्पर्श, उन्हें सुलझाने, परत-दर-परत अनावृत करने में सफल सिद्ध हुआ। गूढ़तम तात्त्विक और दार्शनिक तथ्यों की सरस, सरल और युगीन शैली में प्रस्तुति महाप्रज्ञ की प्रज्ञा का अकथ्य अवदान कहा जा सकता है।

भगवती की इस वाचना में आचार्य तुलसी की प्रासंगिक टिप्पणियां, भगवती जोड़ का सराग-संगान एवं साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा की उपस्थिति का भी स्वयंभू मूल्य रहा है।

अध्ययन की इस शृंखला में युवाचार्यश्री ने उत्तराध्ययन के उनतीसवें अध्ययन को भी सम्मिलित किया। यह अध्ययन साधना की दृष्टि से कितना महत्वपूर्ण है, कितने गहन तत्त्व इसमें समाए हुए हैं इस दृष्टि से यदि इस अध्ययन का विस्तृत और समग्र रूप से विवेचन किया जाए तो एक स्वतंत्र ग्रंथ बन सकता है। वैज्ञानिक दृष्टि से आज के संदर्भों में इस अध्ययन की मूल्यवत्ता का बोध पा साधु-साध्वी समाज एक नई दृष्टि और आलोक से संपन्न बन गया।

शोध पत्र

अध्यापक का काम केवल इतना ही नही होता कि वह विद्यार्थियों को पाठ पढ़ा दें, उसका अर्थ समझा दे उसका कार्य तब पूर्ण कहलाता है, जब विद्यार्थी उस पाठ के भीतर आवद्ध रहस्यों को समझ पाए। अध्यापक का यह दायित्व उसके अध्यापन की महत्वपूर्ण कसौटी होती है। युवाचार्यश्री ने अपने विद्यार्थियों की ग्रहण-क्षमता को बढ़ाने, परखने के लिए भी कुछ उपक्रम किए।

अध्ययन का एक चेप्टर (विभाग) पूर्ण होने पर अध्ययनरत सभी साधु-साध्वियों को युवाचार्यश्री एक निश्चित विषय देते। साधु-साध्वियां उस विषय पर आचार्यश्री के सान्निध्य में भाषण देते। कौन विषय को कितना छू पाया है ? किसने विषय का समग्रता से विवेचन किया है ? आदि-आदि मानदंडो से प्रत्येक विद्यार्थी के भाषण की समीक्षा की जाती है। वह विषय का कैसे प्रतिपादन करता तो ज्यादा अच्छा रहता। उसने कहां, क्या त्रुटि की या नहीं की ? आदि से उसके गृहीत ज्ञान को परिभाषित और परिष्कृत करते। युवाचार्यश्री कभी-कभी मौखिक परीक्षा से भी विद्यार्थियों की बुद्धि और ग्रहण क्षमता को पैनी बनाते।

अध्ययन के इस क्रम को प्रभावी बनाने और विद्यार्थी साधु-साध्वियों के भीतरविद्यमान साहस, क्षमता और शक्ति को जगाने का एक और सशक्त कदम था भगवती सूत्र के आधार पर शोध-पत्र का लेखन। जैन विद्या परिषद् द्वारा आयोजित विद्वत् परिषद् में प्रवुद्ध जैन विद्वानों ने अपने-अपने शोध पत्र पढ़ें। आचार्यश्री की प्रेरणा और युवाचार्यश्री के निदेशन से विद्यार्थी साधु-

साध्वियों की सुप्त प्रतिभा को झकझोरा। उन्होंने जैसे-तैसे अपनी समग्र शक्ति जुटाकर इस कार्यक्रम में भाग लिया। युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त विषय, सुझाव और मार्ग-दर्शन के आधार पर साधु-साध्वियां अपने-अपने शोध पत्र को पूरा करने के लिए जुट पड़े। पन्द्रह-बीस दिन तक अनवरत श्रम और शक्ति को नियोजित कर साधु-साध्वियों ने अपने-अपने शोध पत्रों को एक कच्चा रूप दे दिया। युवाचार्यश्री ने अपने अत्यन्त व्यस्त क्षण उन्हें अंतिम रूप देने में लगाए। परिणामस्वरूप साधु-साध्वियों ने जैन विद्या परिषद् में अपने-अपने शोध पत्रों को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया। जैन विद्या परिषद् या किसी भी शोध संगोष्ठी में इतने युवा साधु-साध्वियों के शरीक होने और शोध पत्र पढ़ने का यह प्रथम अवसर कहा जा सकता है और इसका सारा श्रेय आचार्यश्री के आशीर्वाद तथा युवाचार्यश्री की आंतरिक प्रेरणा और संकल्प को जाता है।

अध्ययन के इस समग्र क्रम में युवा साधु-साध्वियों को शरीक होने का अवसर मिला। यह उनके भावी विकास में, उनकी दृष्टि को पैनी और सर्वतोमुखी बनाने में सक्षम कदम सिद्ध हुआ है। मुनिश्री राजेन्द्र कुमार, मुनिश्री उदितकुमार, मुनिश्री मुदितकुमार, मुनिश्री धनंजयकुमार, मुनिश्री प्रशांतकुमार, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वी कल्पलता, साध्वीश्री अशोकश्री, साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा, साध्वीश्री विमलप्रज्ञा, साध्वीश्री निर्वाणश्री, साध्वीश्री वर्धमानश्री, साध्वीश्री मधुस्मिता, समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञा आदि साधु-साध्वियों, समणियों को अध्ययन के इस कल्याणकारी-क्रम से लाभान्वित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आगम संपादन

आचार्यश्री तुलसी ने आगम-संपादन का जो गुरुतर कार्य अपने समर्पित एवं प्रबुद्ध साधु-साध्वियों के बलबूते पर झेला था, उसे मूर्तरूप देने में युवाचार्यश्री की अर्ह भूमिका सदा रही है। इस वर्ष भी वह महत्त्वपूर्ण कार्य अपनी गति से चला है। युवाचार्यश्री ने सूत्रकृतांग सूत्र के द्वितीय खंड के संपादन, अनुवाद, प्राक्कथन, टिप्पण लेखन, आमुख आदि कार्य को प्राथमिकता देकर उन्हें अंतिम रूप दिया। मुनिश्री दुलहराज का इस कार्य में अनवरत संपूर्ण सहयोग युवाचार्यश्री को सहज रूप से प्राप्त रहा है जिसे पा यह सूत्र प्रकाशन के योग्य बन पाया है।

आगम साहित्य की अनवरत साधना, आराधना में आचारांग भाष्य का लेखन भी आलोच्य वर्ष की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। आयारो के पांच

अध्ययन संस्कृत भाष्य से अलंकृत हो चुके हैं। प्रारंभ में मुनिश्री महेन्द्रकुमार इस कार्य में संलग्न थे अब मुनिश्री मुदित कुमार को इस कार्य में सहभागी बनने का अवसर प्राप्त हुआ।

पाठ संशोधन

आगम को सर्वांगपूर्ण बनाने में सबसे जटिल और दुरूह कार्य होता है पाठ निर्धारण। विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों में आए हुए अनेक पाठों में से किसी एक उचित पाठ का चयन निश्चित ही जोखिम भरा कार्य है। हालांकि बत्तीस आगमों का पाठ-निर्धारण कुछ समय पूर्व हो चुका था, किन्तु उनका पुर्ननिरीक्षण अत्यन्त अपेक्षित रहता है। आलोच्य वर्ष में जीवाजीवाभिगम के निर्धारित मूल पाठ का अधिकांश पुर्ननिरीक्षण कार्य युवाचार्यश्री ने संपादित किया। मुनिश्री हीरालाल उनके इस कार्य में सदा सहयोगी रहे हैं।

पाठ निर्धारण के साथ-साथ एक महत्त्वपूर्ण कार्य होता है प्रत्येक सूत्र की शब्द सूचि का निर्माण। प्रत्येक शब्द की संस्कृत-पर्याय और उस शब्द के सारे आधार-स्थल दिए जाते हैं। युवाचार्यश्री के निदेशन में रायपसेयणीय, पन्नवणा इन दोनों सूत्रों की शब्द सूचियों का कार्य मुनिश्री हीरालाल, मुनिश्री श्रीचन्द्र द्वारा संपादित हुआ। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित हो रहे नव-सुत्ताणि के प्रूफ निरीक्षण का कार्य मुनिश्री सुमेरमल "सुदर्शन", मुनिश्री हीरालाल, साध्वीश्री जिनप्रभा, समणी कुसुमप्रज्ञा ने संभाला। इस ग्रन्थ में नौ आगम है—आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, अनुयोगद्वार, नन्दी, निशीथ, व्यवहार, वृहत्कल्प व दशाश्रुतस्कन्ध।

आचार्य तुलसी : जीवन गाथा

आगम साहित्य के अतिरिक्त आचार्य तुलसी के संपूर्ण जीवन का आलेखन भी युवाचार्य को करना था। 'आचार्य तुलसी : जीवन गाथा' नामक पुस्तक के प्रकाशित होने के बाद आचार्यश्री की वृहद् जीवनी का निर्माण भी उन्होंने प्रारम्भ किया। अमृत-महोत्सव के इस पावन प्रसंग पर आचार्यश्री के बहु-आयामी व्यक्तित्व का स्थायी अंकन अत्यन्त अपेक्षित था और उसे पूर्णरूप युवाचार्यश्री ही दे सकते हैं। युवाचार्यश्री ने इस कार्य को भी मुख्यता देकर काफी अंशों में पूरा किया है। इस विशाल लेखन कार्य में मुनिश्री सुमेरमल, "सुदर्शन", मुनिश्री श्रीचन्द सहयोगी बने हैं।

साहित्य

साहित्य समाज का आधार है, भविष्य है। साहित्य विहीन समाज का

न कोई आधार होता है, न भविष्य होता है। तेरापन्थ के साहित्य से उसका आधार और भविष्य सुदृढ़ बना है, आलोकित बना है। युवाचार्य महाप्रज्ञ की साहित्यिक साधना ने तेरापंथ साहित्य के क्षेत्र में कुछ कीर्तिमान गढ़े हैं। मौलिक एवं युगीन साहित्य का सर्जन उनकी अप्रतिम मेधा से संभव हुआ है।

आलोच्य वर्ष में कुछ नयी साहित्यिक कृतियां—अर्हम्, कर्मवाद, उत्तरदायी कौन; प्रेक्षा-ध्यान : कायोत्सर्ग, प्रेक्षा-ध्यान : चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा आदि जनता के हाथों में पहुंची हैं। मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता, आभामंडल, मैं कुछ होना चाहता हूं, भिक्षु-विचार दर्शन, जीवन-विज्ञान, कैसे सोचें, एकला चलो रे, एसो पंचणमुक्कारो, महावीर की साधना का रहस्य, मैं : मेरा मन : मेरी शान्ति आदि अनेक पुस्तकों के नवीन संस्करण भी प्रकाश में आए हैं।

प्रस्तुत वर्ष में युवाचार्यश्री के साहित्य पर अनेक विद्वानों ने अपनी सम्मतियां भेजी है। अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने उनके साहित्य का मूल्यांकन किया हैं। उदाहरण के रूप में हम यहां दैनिक नवभारत के इन्दौर संस्करण में छपी एक पुस्तक की समीक्षा उद्धृत करना चाहते हैं।

समीक्ष्य पुस्तक हैं—मेरी दृष्टि : मेरी सृष्टि

समीक्षक हैं—रत्नेश 'कुसुमाकर'

आत्मार्थियों का दीपक—मेरी दृष्टि : मेरी सृष्टि

जैन जगत् में युवाचार्य महाप्रज्ञ का नाम बहुश्रुत है। उस बहुश्रुतता के पीछे उनकी साधना का तेजोवलय, उनके तप की चन्द्रिका, उनका क्रान्त और विज्ञानपरक चिन्तन तथा उनकी दार्शनिकता की बुलन्दगी प्रमुख है। जैनियों की तेरापंथ शाखा के वह एक अलौकिक पुष्प हैं, जिनके सौरभ संसार में मनुष्य को देवत्व की ओर आगे बढ़ाने और उसका आमूल रूपान्तरण कर देने की ऊर्जा छिपी हुई हैं। तेरापंथ के वर्तमान आचार्य और अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने उन्हें अपने उत्तराधिकारी के रूप में मनोनीत किया है। उन्होंने युवाचार्य महाप्रज्ञ की गुणवत्ता और प्रभामंडल को एक रत्नपारखी की दृष्टि से देखा-परखा है। यही कारण है कि आज जैन श्वेताम्बर को आत्मोदय की एक ओर उन्मुख और अनुप्रेरित करने का एक गहन गंभीर दायित्व महाप्रज्ञ के ज्योतिर्मय कन्धों पर है। इस दृष्टि से युवाचार्य महाप्रज्ञ की प्रत्येक कृति आत्मदेव के साक्षात्कार को सुलभ बनाने का एक ऐसा माध्यम है, जिसके बिना जीवन की मंगल यात्रा कभी पूर्ण नहीं हो सकती।

मेरे समक्ष उनकी अमूल्य कृति 'मेरी दृष्टि : मेरी सृष्टि' उपस्थित है, जिसके अन्तराल में वैठने का मुझे अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ। लेकिन इसके लिए एक शर्त है, पाठक को, जिज्ञासु या अभिप्सु को सर्वप्रथम पूर्वाग्रहों से मुक्त होना होगा। इसके विना वे इस कृति को न आत्मसात् कर पाएंगे और न ही इसके अन्तर्निहित तथ्यों, प्रभावों और इसकी वैज्ञानिक, आध्यात्मिक संपदा से अवगत हो सकेंगे।

युवाचार्य ने अपनी इस कृति के महद् उद्देश्य का उद्घाटन करते हुए कहा—'मेरी दृष्टि है—हम अपने निर्मल चैतन्य को देखने का प्रयत्न करें, उसमें जो प्रतिविंव होगा, वह वास्तविक होगा। लेकिन साथ ही वह यह भी कहते हैं कि जिसे देखना चाहिए, वहां दृष्टि नहीं जाती। जिसे देखना चाहिए, वहां देखने का प्रयत्न होता है। यह कैसा विपर्यय ! कांच में मनुष्य अपने-आपको ही देखता है। कव किसने कांच की निर्मलता को देखा ? इस लिहाज से जिसे वास्तव में हमें देखना है, वहां तक दृष्टि-प्रसार कैसे हो, हम वही देखना चाहते हैं, जो कि हमारा अभीष्ट है। लेकिन उस तक नजर नहीं जाती, यह भौतिक धरातल पर एक ऐसी विवशता है, जो कि आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में एक वड़ी वाधा वन जाती है। निर्मल चैतन्य को देखना है, किंतु दृष्टि धूमिल या कहरिल है तो वास्तविक देखना कैसे संभव होगा—एक कठिन पहेली है। इसके लिए 'महाभारत' के संजय की दृष्टि चाहिए या अर्जुन की दृष्टि, जिसने जगदीश्वर के विराट स्वरूप को देखा था। युवाचार्य ने जीवन और जगत् से साक्षात्कार करने के लिए उसी दिव्य दृष्टि का एक अमोघ फार्मूला प्रस्तुत किया है। यह वह फार्मूला है जो व्यक्ति, साधक, जिज्ञासु या अभीप्सा करने वाले तथ्यान्वेपी की सहायता करता है।

जहां तक सर्जन या दृष्टि का संवंध है, वतौर युवाचार्य, सर्जन का मूलमंत्र है—सतत जलते रहना, कभी नहीं वुझना। यह है—अप्रमाद का सूत्र तुम कभी मत वूझो, निरन्तर जलते रहे·······वही सृष्टि प्रिय हो सकती है जो नए-नए उन्मेष पैदा कर सके, उन्हें संभाल सके, उनका संरक्षण और पोपण कर सके। इसके अलावा महाप्रज्ञ ने सृष्टि का आदि और चरमविन्दु आत्मा माना है। उन्होंने आत्मोपलव्धि होने तक पुरुषार्थ करते रहने पर पूरा वल दिया है। पुरुषार्थ विरहित होने का अर्थ उन्होंने सर्जन का चुक जाना माना है—इसी निकष पर इस कृति का मूल्यांकन सम्भव हुआ है।

महाप्रज्ञ की यह कृति वहुआयामी है। सैंतीस शीर्पकों में इसका

निबन्धन हुआ है। जिनमें युवाचार्य ने समुद्र-मंथन का देवोपम पुरुषार्थ किया है। परंपरित तरीकों से हटकर दार्शनिक और आध्यात्मिक पीठिका पर महाप्रज्ञ का जो नवोन्मेष हुआ है, वह एक अनूठी उपलब्धि है।

समीक्ष्य पुस्तक एक गंभीर ग्रंथ है। इसमें दर-पर्त-दर उघाड़ कर उन्होंने जिन तत्त्वों/तथ्यों का साक्षात्कार किया है, वह सब पाठकों के लिए ज्यों का त्यों परोस दिया गया है। अतल स्पर्शी है। विज्ञानसम्मत है। उनमें रूढ़ि, आग्रह और आडम्बर नहीं—यह सब चिन्तन उनकी इस कृति में प्रतिफलित हुआ है। पुस्तक आत्मार्थियों के लिए एक ऐसा दीपक है, जिसकी बाती पूर्वाग्रहों, तर्कों-कुतर्कों और मत-वैभिन्य की आंधियों में भी निष्कंप बने रहने की क्षमता से संपन्न/समृद्ध है।

प्रेक्षा-ध्यान

प्रत्येक व्यक्ति धर्मसंघ में आत्म कल्याण के उद्देश्य से दीक्षित होता है। दीक्षा के माध्यम से वह अपने इस लक्ष्य को शीघ्र पा सकता है। दीक्षा यानि साधना। साधना के क्षेत्र में बिना मार्गदर्शन गति हो पाना कठिन है। साधना शून्य जीवन मात्र वेशधारी साधुत्व को बढ़ावा देता है। साधु के भीतर साधुता जगाने में उसे अपनी आन्तरिक शक्तियों का अहसास कराना होता है, उसके लिए साधना के क्षेत्र में गति आवश्यक होती है। युवाचार्यश्री ने प्रेक्षा-ध्यान को संघ के प्रत्येक साधु-साध्वी तक पहुंचाने का अनथक प्रयत्न किया है। साधुता का पेरामीटर है चरित्र। साधना का यह उपक्रम चारित्रिक निष्ठा को बनाये रखने एवं बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण साबित हुआ है।

बीता हुआ यह वर्ष इस दृष्टि से भी कुछ अमिट रेखाएं खींचने में सफल रहा है। तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा आयोजित होने वाले सार्वजनिक शिविरों के अतिरिक्त मुमुक्षु बहिनों, अध्यापकों, प्रशिक्षकों तथा साधु-साध्वियों के शिविरों ने कुछ नई आशाओं को जन्म दिया है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के शिविर से मुमुक्षु बहिनों को एक नई दिशा मिली है, बोध मिला है, अपने भविष्य को सुखद और जागृत बनाने का मार्ग मिला है। साधु-साध्वियों के एकांतवास शिविर का अभिनव प्रयोग भी उनकी तेजस्विता और अध्यात्म निष्ठा को बढ़ाने में उपयोगी बना है।

जसोल मर्यादा महोत्सव से लेकर उदयपुर तक युवाचार्यश्री से अनेक साधु-साध्वियों ने सम्पर्क किया है, अपनी कठिनाइयों, उलझनों का जिक्र किया

है, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं को एक बच्चे की भांति सरलता से रखा है। युवाचार्यश्री ने उन साधु-साध्वियों को प्रेक्षा-अनुप्रेक्षा के अनेक प्रयोग बतलाएं हैं, उनकी समस्याओं के समाधान के मार्ग सुझाये हैं, एकांतवास के विशिष्ट प्रयोग के दौरान भी अनेक साधु-साध्वियों ने अपनी जटिल आदतों को मिटाने के लिए युवाचार्यश्री का मार्गदर्शन प्राप्त किया। साधु-साध्वियों ने श्रद्धा के साथ उन प्रयोगों को अपना कर अपनी समस्याओं, उलझनों को काफी अंशों में सुलझाया है।

जीवन-विज्ञान

प्रेक्षाध्यान से संबद्ध एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है जीवन-विज्ञान। अमृत-महोत्सव के इस वर्ष को जीवन-विज्ञान वर्ष घोषित किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम के रूप में जीवन-विज्ञान चर्चित हुआ है। अनेक सम्मेलन और संगोष्ठियों के माध्यम से जीवन-विज्ञान ने जन चेतना और राजस्थान सरकार को प्रभावित किया। इस वर्ष के अन्त तक यह उपक्रम व्यापक रूप से चर्चित हुआ है। इसकी उपयोगिता मूल्यवत्ता और प्रयोग-धर्मिता पद्धति ने भारतीय समाज का ध्यान अपनी ओर खींचा है। जीवन-विज्ञान से प्राप्त परिणामों से सम्पूर्ण शिक्षा जगत् में तहलका-सा मचा दिया है। शिक्षा के सन्दर्भ में आज उस कार्यक्रम को उपयोगी और ग्राह्य माना जाता है जिससे ३३ प्रतिशत सफलता हासिल हो जाए। जीवन-विज्ञान ने ५० से ६० प्रतिशत पोजिटिव (विधायक) परिणाम को प्राप्त कर शिक्षा क्षेत्र के नियंताओं को हतप्रभ-सा कर दिया है। शिक्षा-मंत्रालय, शैक्षिक संगठनों आदि से सम्बन्ध विद्वानों को जीवन-विज्ञान में एक नये दर्शन, सत्य का आभास हुआ है। वे जीवन-विज्ञान प्रणाली को शिक्षा के क्षेत्र में लागू कराने के लिए कृतसंकल्प बने हैं। अनेक शिक्षा शास्त्रियों, उद्भट्ट मनीषियों, शिक्षकों का जीवन-विज्ञान के साथ जुड़ना उसे प्रभावी और सफल बनाने में योग भूत बनना आलोच्य वर्ष की उल्लेखनीय उपलब्धि बन गई है।

महत्त्वपूर्ण घटना

जीवन-विज्ञान का महान् वातावरण निर्मित करने के लिए आलोच्य वर्ष में कुछ सार्थक प्रयत्न हुए हैं। अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अधि-वेशन पर नई शिक्षा नीति और जीवन-विज्ञान पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य और युवाचार्यश्री के निदेशन में

हुए इस कार्यक्रम में गुजरात युनिवर्सिटी के उपकुलपति श्री चिनुभाई नाईक, श्री यशवंत भाई शुक्ल, जोधपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष दयानन्द भार्गव आदि ने विशेष रूप से हिस्सा लिया। उस परिचर्चा के संयोजक भागलपुर युनिवर्सिटी के प्रोफेसर, गांधीवादी विचारक डा० रामजीसिंह ने चर्चा के निष्कर्षों से एक अनुशंसा तैयार की। जिसे भारत सरकार, राजस्थान सरकार तथा अनेक शिक्षा शास्त्रियों के विचारार्थ प्रेषित किया गया।

६ नवंबर को पंचायती राज विभाग राजस्थान सरकार द्वारा 'अनौपचारिक शिक्षा और जीवन-विज्ञान' पर आयोजित सेमिनार का आशातीत सफल होना भी आलोच्य वर्ष की एक महत्त्वपूर्ण घटना है, इस सेमिनार में पंचायत राज मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय राज्यमंत्री महेन्द्र परमार, प्रमुख शिक्षाविद् कालूलाल श्रीमाली, शिक्षा उपसचिव श्री तेजकरण, विधायिका गिरिजा व्यास, मेवाड़ मंडलेश्वर मंहत श्री मुरली मनोहरशरण आदि अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने आचार्यश्री तुलसी, युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत जीवन-विज्ञान को एक सशक्त, रचनात्मक और अपूर्व अभिक्रम के रूप में स्वीकार किया।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का पन्द्रहवां राष्ट्रीय सम्मेलन, उदयपुर (राजस्थान) में आयोजित हुआ। इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी में दूसरा दिन जीवन-विज्ञान की परिचर्चा के लिए निर्धारित था। ७ फरवरी को पूरे देश से आए हुए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के चेयरमेनों एवं सचिवों की मीटिंग में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का वक्तव्य हुआ। नई शिक्षा नीति के संदर्भ में जीवन-विज्ञान की उपयोगिता पर युवाचार्यश्री के विचार सुनने के बाद अनेक प्रान्तों के शिक्षा बोर्डों के अध्यक्षों, सचिवों ने जीवन-विज्ञान से संबंधित सामग्री की मांग की। उन्होंने कहा—'शिक्षा नीति पर ऐसे प्रभावी और इस प्रकार के विचार सर्वप्रथम सुनने को मिले हैं।'

१२-१३ फरवरी उदयपुर में ही राजस्थान विद्यापीठ एवं अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति द्वारा जीवन-विज्ञान शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। शिक्षा मंत्री हीरालाल देवपुरा द्वारा उद्घाटित इस सम्मेलन के पांच सत्रों में अनेक विद्वानों द्वारा जीवन-विज्ञान पर शोध पत्र पढ़े गए। जीवन-विज्ञान के उद्देश्य, कार्यक्रम आदि समस्त पक्षों पर युवाचार्यश्री के विचार मुख्य रूप से सामने आए।

जीवन-विज्ञान : वर्तमान स्थिति

राजस्थान सरकार द्वारा चयनित २७ स्कूलों में सम्प्रति जीवन-विज्ञान

का क्रम चल रहा है। राजस्थान शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर एवं तुलसी अध्यात्म नीडम् जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में इस कार्य की व्यवस्था तथा गति-प्रगति का जायजा निरंतर लिया जा रहा है। इन दोनों संस्थाओं द्वारा इस कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अध्यापकों के दो शिविरों का आयोजन भी किया। आचार्यश्री के सान्निध्य तथा युवाचार्यश्री के निदेशन में लगे इन शिविरों में प्रत्येक विद्यालय से दो-दो अध्यापकों ने भाग लिया। इन शिविरों में प्रशिक्षित अध्यापक अपनी-अपनी स्कूल में चुने गए विद्यार्थियों में जीवन-विज्ञान के प्रयोग चला रहे हैं। विद्यार्थी में होने वाले प्रभावों, परिणामों की रिपोर्ट भी प्रतिमास दे रहे हैं। इन स्कूलों में जीवन-विज्ञान कार्यक्रम लगभग आठ महीनों से चल रहा है। इन आठ महीनों के दरम्यान युवाचार्यश्री का कुछेक विद्यालयों में सहज रूप से पदार्पण हुआ। उदयपुर, भीण्डर, वल्लभनगर राजसमंद आदि क्षेत्रों के बच्चों ने जीवन-विज्ञान के प्रयोगों से होने वाले अनुभवों का जिक्र किया।

जीवन-विज्ञान का प्रभाव

युवाचार्यश्री से वार्तालाप के अनन्तर विद्यार्थियों ने कहा—हमें यह कार्यक्रम थोपा हुआ जैसा नहीं लग रहा है। जीवन-विज्ञान के प्रयोग हमें बहुत ही अच्छे लगते हैं।' कुछ विद्यार्थियों ने कहा—'हमारी विस्मृति की आदत कम हुई हैं। हमारा क्रोध कम हुआ है तनाव नहीं रहता है पढ़ने में मन पहले से ज्यादा लगता है, एकाग्रता पहले से ज्यादा बढ़ी है।' आदि-आदि।

कुछ उग्र प्रकृति के विद्यार्थियों के अभिभावकों ने अध्यापकों से कहा—मास्टर साहब! क्या बात है? पहले हमारे बच्चे घर आते थे उससे पूर्व पांच-सात शिकायतें पहुंच जाती थी, आजकल एक भी नहीं आती, आपने उन पर क्या जादू कर दिया है?' अध्यापकों का सविस्मय उत्तर था—यह सब जीवन-विज्ञान का प्रभाव है।

विद्यार्थी अभिभावक के बाद अध्यापकों की प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार रही। उन्होंने कहा—'जीवन-विज्ञान के प्रयोग से बच्चें कितना क्या भला कर पाएंगे? हम नहीं कह सकते किंतु इन प्रयोगों से हमें जो राहत मिली है शान्ति का अनुभव हुआ है वह रोमांचक है। इन प्रयोगों से गुजरने के बाद हमें हमारा परिवार, हमारा स्वास्थ्य, हमारी आदतें सब कुछ बदला-बदला सा नजर आ रहा है, हमें विश्वास है कि हमारा भविष्य निश्चित ही शान्ति और आनन्द

से भरा-पूरा होगा।'

महाप्रज्ञ का अवदान

विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक इस त्रिकोण को संतुष्ट एवं प्रभावित कराने वाला यह उपक्रम युवाचार्यश्री की एक महत्त्वपूर्ण देन बनकर उभरा है। आचार्यश्री तुलसी के शासनकाल के पचासवें वर्ष की इस अनुपम उपलब्धि का मूल्यांकन अभी शेष है। बुद्धिजीवियों, वकीलों, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों एवं नास्तिकों की आस्था को प्राप्त करने वाला यह उपक्रम युग के लिए वरदान बना है। अनेक असहाय, दुःखी, तनावग्रस्त व्यक्तियों को सुखद नियति का सृजन करने वाला यह संजीवन तेरापंथ की धरोहर-थाती बन गया है। महाप्रज्ञ का यह अवदान महाप्रज्ञ का नहीं समूचे संघ का है। महाप्रज्ञ की प्रज्ञा से निःसृत यह अमृत न केवल संघ के लिए अपितु संपूर्ण मानवजाति के लिए है। इसकी रक्षा, वृद्धि एवं विकास में अपने कर्तृत्व को समर्पित करना अपने ही भविष्य को सुरक्षित, विकासी और आनन्ददायी बनाना है।

अमृत-महोत्सव

आचार्यश्री तुलसी ने अपने शासनकाल के पचासवें वर्ष को अमृत-महोत्सव के रूप में मनाने की स्वीकृति इस शर्त पर प्रदान की थी कि मुझे निमित्त बनाकर मनाया जाने वाला उत्सव आयोजन प्रधान नहीं होकर, रचनात्मक होगा। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के नेतृत्व में चतुर्विध धर्मसंघ अपने आचार्य के इंगित को पूरा करने के लिए तत्पर बना। अमृत महोत्सव कहां मनाया जाएं? कैसे मनाया जाएं, उसमें क्या-क्या कार्यक्रम होने चाहिए? आदि का सारा भार युवाचार्यश्री के कन्धों पर था, जिसका उन्होंने कुशलता-पूर्वक निर्वहन किया है।

आचार्यश्री तुलसी की तिलकभूमि गंगापुर में मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी की उपस्थिति में उद्घाटित अमृत महोत्सव का प्रारंभ अमृत कलश पद यात्रा से हुआ। इस रचनात्मक अभिक्रम के तहत हजारों संकल्प पत्र भरे गए। दहेज, मिलावट, अस्पृश्यता, मद्यपान आदि के खिलाफ जन-चेतना जागृत हुई है। सांप्रदायिक सौहार्द का सशक्त वातावरण बना है। स्वस्थ समाज रचना की दृष्टि से इसे महत्त्वपूर्ण उपक्रम कहा जा सकता है।

रचनात्मक अभिक्रम

आचार्यश्री तुलसी के सार्वजनिक, संघीय अभिनन्दन समारोह का

आयोजन भी प्रशस्तिपूर्ण नहीं था किन्तु उससे भी कुछ रचनात्मक अभिक्रमों ने जन्म लिया। तप आराधना की दृष्टि से तपस्याएं, आयंबिल आदि का व्यवस्थित एवं दीर्घकालीन उपक्रम, श्रुत आराधना की दृष्टि से जैन विद्या परिषद् की समायोजना, तत्वज्ञान के विकास का प्रयत्न, चारित्राराधना की दृष्टि से साधु-साध्वियों का नवाह्निक शिविर, आदत परिवर्तन की दृष्टि से प्रेक्षाध्यान के प्रति सघन आस्था को जन्म देना ये सारे उपक्रम अमृत-महोत्सव की रचनात्मक उपलब्धियां बन पाई हैं।

संघीय दृष्टि से श्रावक सम्मेलन का आयोजन भी एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध हुआ है। जैन धर्म के विभिन्न संप्रदायों में सौहार्द, सांवत्सरिक एकता एवं एक मंच के निर्माण की प्राग्-भूमिका बनाने में जैन समन्वय सम्मेलन का महत्त्व भी असंदिग्ध है। विश्वशान्ति की दृष्टि से शान्ति यात्रा, अहिंसा सार्वभौम, अणुशस्त्रों के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान भी अमृत-महोत्सव के रचनात्मक रूप को उभारने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

आचार्य तुलसी के बहुमुखी व्यक्तित्व को निखारने में आचार्य तुलसी जीवन दर्शन प्रदर्शनी एवं उनके कर्तृत्व को अभिव्यक्ति देने में राष्ट्रपति जैलसिंह द्वारा भारत ज्योति का अलंकरण भी उनके प्रति मानव समाज की मात्र श्रद्धाभिव्यंजना है।

आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव के प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय चरण का प्रभावी ढंग से संपन्न हो जाना युवाचार्यश्री की सूझबूझ का निदर्शन है, आचार्य तुलसी की मानवीय, संघीय सेवाओं का सामयिक मूल्यांकन है।

पृथक् यात्राएं

आचार्यश्री महान् परिव्राजक हैं। उन्होंने यात्रा के संदर्भ में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। यात्रा का मुख्य उद्देश्य होता है स्वीकृत व्रत का सम्यक् पालन। स्व-कल्याण और जन-कल्याण दोनों ही दृष्टियों से प्रत्येक साधु परिव्रजन करता है। आचार्यश्री की प्रस्तुत यात्रा का मुख्य उद्देश्य मेवाड़ में व्याप्त बुराइयों के प्रति जन-चेतना जागृत करना और मेवाड़ में रहने वाले जैन परिवारों का सम्यक् मार्गदर्शन करना रहा है। मेवाड़ के २०० ग्रामों में तेरापंथ को मानने वाले परिवार रहते हैं। उन्हें इतने स्वल्प समय में संभालना एक दुष्कर कार्य था। इस कार्य को सहज बनाने के लिए आचार्यश्री ने अनेक ऐसे क्षेत्रों में युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ को भेजा, जहां उनका जाना संभव नहीं हो पाया। युवाचार्यश्री को साहित्य एवं साधना की दृष्टि से भी आचार्यवर से

पृथक् रहना पड़ा है। युवाचार्यश्री की आचार्यश्री से पृथक् यात्राओं का संक्षिप्त लेखा-जोखा यहां प्रस्तुत किया जा रहा है—

देवगढ़—आसींद

अमृत-महोत्सव का ऐतिहासिक अवसर उपलब्ध हुआ है मेवाड़ की पावन भूमि को। तिलकभूमि के नाते निश्चय ही इसका उसे अधिकार भी है। आचार्यवर अपने गौरवशाली शासनकाल के पचासवें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं। ज्यों-ज्यों महोत्सव की समीपता आ रही थी, सभी में कार्य की सक्रियता और उत्कण्ठा बढ़ती जा रही थी, इसलिए युवाचार्यवर कुछ विशेष कार्यों को सम्पादित करने हेतु कुछ समय के लिए देवगढ़ रहे। साहित्य का काम जितनी सुगमता से एक स्थान पर हो सकता है, उतना यात्रा में नहीं होता। युवाचार्यश्री ने मुख्य रूप से आचार्यवर की जीवनी लिखने का कार्य अपने हाथों में लिया है। इस जीवनी के दो रूप हैं—एक संक्षिप्त तो दूसरा विस्तृत। इस प्रवास में उनकी लेखनी द्वारा संक्षिप्त रूप ही लिखा गया है।

इस प्रवास काल में युवाचार्यश्री का प्रातःकालीन समय ज्ञान की आराधना में बीतता, दोपहर का पठन-पाठन तथा जिज्ञासाओं के समाधान में तथा रात्रि का जनता के लिए नए-नए विषय तथा आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत: प्रवचन देवगढ़ की जनता, विशेषकर बौद्धिक वर्ग के लिए आकर्षण के केन्द्र थे। इस प्रवास के दौरान प्रातःकालीन प्रवचन मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन', प्रेक्षा अभ्यास मुनिश्री किशनलाल तथा ज्ञानशाला का कार्य मुनिश्री धर्मेन्द्रकुमार ने संभाला। २० मार्च को मुनिश्री श्रीचंद द्वारा प्रस्तुत अवधान विद्या के प्रयोग बड़े ही प्रभावोत्पादक रहे। स्वयं देवगढ़ के राव साहब श्री नाहरसिंह ने इसमें विशेष दिलचस्पी ली। प्रतिदिन युवाचार्यश्री के रात्रि में निम्न विषयों पर सार्वजनिक प्रवचन हुए।

दिनांक	विषय	विषय प्रवेश
१५ मार्च	हम क्या जीते हैं?	मुनि सुखलालजी
१६ मार्च	मानसिक तनाव कारण और निवारण	मुनि लोकप्रकाशजी
१७ मार्च	भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व	मुनि धनंजयजी
१८ मार्च	वर्तमान युग में शिक्षा	मुनि सुखलालजी
		मुनि किशनलालजी
१९ मार्च	गीता और जैन धर्म	मुनि किशनलालजी

२० मार्च धर्म और विज्ञान मुनि लोकप्रकाशजी
२१ मार्च वर्तमान समाज और राष्ट्रीय चरित्र मुनि राजेन्द्रकुमारजी

देवगढ़ के नवदिवसीय लाभकारी प्रवास पूर्ण कर २३ को युवाचार्यश्री ने भीम के लिए प्रस्थान किया। ताल, कूकरखेड़ा आदि का स्पर्श करते हुए २६ मार्च को भीम पधार गये। भीम में दो दिन रुकने का कार्यक्रम था, पर आचार्यवर की अस्वस्थता (घुटनों में दर्द) और विशेष निर्देश के कारण वैसा संभव न हो सका। जो पथ, आचार्यवर का पहले से निर्धारित था, उस पथ से युवाचार्य की यात्रा का कार्यक्रम बन गया। जो पथ, युवाचार्यश्री के लिए निर्धारित था, उस पथ से आचार्यश्री प्रस्थित हो गये। युवाचार्यश्री के पूर्व मार्ग के बदले जाने तथा परिवर्तित मार्ग से जाने से पचास किलोमीटर का अतिरिक्त चक्कर पड़ा। भीम से मार्गवर्ती ग्रामों में विहार करते हुए २८ को बदनोर पधार गये।

प्राचीन एवं ऐतिहासिक बदनोर क्षेत्र में युवाचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया गया। स्वागत कार्यक्रम का संयोजन श्री पारसमल रांका ने किया। युवाचार्यश्री का दिनभर का प्रवास उच्च माध्यमिक कन्या पाठशाला में रहा। दिनभर लोगों का तांता सा लगा रहा। मध्याह्न में अध्यापक-अध्यापिकाओं के बीच जीवन-विज्ञान के संबंध में चर्चा चली। सभी ने इस विषय में समुचित जानकारी प्राप्त की। रात्रि में जीवन-विज्ञान के प्रयोग और उसके सैद्धान्तिक पक्ष पर विस्तार से चर्चा की गई। २९ मार्च को युवाचार्य-वर का विहार शंभुगढ़ की ओर हो गया। मार्ग में कुछ समय के लिए जैतगढ़ और दुलहपुरा रुकते हुए लगभग ग्यारह बजे शंभूगढ़ पधार गये। रात्रि में युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ, जिसमें धर्म के विविध आयामों पर विस्तृत चर्चा की गई। ३० मार्च को जयनगर और जगपुरा का स्पर्श करते हुए युवाचार्यश्री पड़ासली पधार गये। स्थानीय जनता ने उपासना और धर्म प्रवचनों का पूरा-पूरा लाभ लिया।

३१ मार्च का दिन ऐतिहासिक दिन था। बाईस वर्ष पूर्व आचार्यश्री आसीन्द पधारे थे, किन्तु उस समय मुनि नथमल युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ नहीं थे। आज आचार्यश्री के साथ युवाचार्यश्री को पाकर आसींद की धरती पुनः एक नए इतिहास का सर्जन कर रही थी। आज युवाचार्यश्री छह किलोमीटर का विहार कर ज्यों ही मंजिल के समीप आए, तो देखा आचार्यश्री, युवा-चार्यश्री के सामने आ रहे हैं। कितना मनमोहक था वह दृश्य गुरु और शिष्य

के सम्मिलन का। दोनों महापुरुषों के इस भरत-मिलाप को हजारों नर-नारियों ने देखा। आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री की पीठ थपथपाते हुए उन्हें अपनी छाती से लगा लिया और एक मधुर मुस्कान भरते हुए आने वाले सभी को तरोताजा बना दिया। अपने वात्सल्य को उंडेलते हुए आचार्यवर ने कहा—महाप्रज्ञ! तुम महा यात्रा कर आए। युवाचार्यश्री की इस अघोषित प्रभावी, संक्षिप्त यात्रा से मार्गवर्ती लोगों को प्रेक्षा-ध्यान, अणुव्रत के बारे में सम्यक् अवगति मिली। युवाचार्यश्री के सारगर्भित प्रवचनों से मार्गवर्ती गांवों के लोग केवल प्रभावित ही नहीं हुए अपितु उनके भीतर श्रद्धा एवं आस्था का भाव भी अंकुरित हुआ।

लावासरदारगढ़—रेलमगरा

युवाचार्यश्री, आचार्यश्री से पृथक् विहार कर दिनांक ३०.११.८५ को बणोल पहुंचे। वहां पर तेरापंथी समाज के अतिरिक्त स्थानीय सरपंच आदि संभ्रान्त नागरिकों ने युवाचार्यश्री का स्वागत किया। रात्रि में 'कैसे बदलें' विषय पर युवाचार्यश्री प्रवचन हुआ।

१ दिसम्बर/युवाचार्यश्री सुबह तासोल और शाम को भाणा पहुंचे। दोनों ही ग्राम के नागरिक युवाचार्यश्री के अल्प प्रवास से लाभान्वित हुए।

२ दिसंबर को युवाचार्यश्री आचार्य भिक्षु बोधि-स्थल में पधारे। श्री धर्मेश मादरेचा ने सपत्नीक ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार कर युवाचार्यश्री का स्वागत किया। राजनगर के नागरिकों की ओर से डा० मधुसुदन पाण्ड्या ने युवाचार्य श्री का स्वागत किया। कन्या मण्डल, महिला मण्डल, युवक परिषद् आदि संस्थाओं ने भी कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए। रात्रि को युवाचार्यश्री का प्रेक्षाध्यान पर विशेष प्रवचन हुआ। कार्यक्रम का संयोजन श्री सागरमल कावड़िया ने किया।

युवाचार्यश्री स्थानीय जनता के आग्रह पर अगले दिन भी राजनगर में ही विराजे। रात्रि में कार्यक्रम से पूर्व बाल-साधुओं की एक गोष्ठी आयोजित की। बाल साधु अपने जीवन-स्तर को किस प्रकार प्रभावी और उन्नत बनाए। इसके लिए युवाचार्यश्री ने कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षाएं दी। उसी समय वक्तृत्व कला के विकास के लिए बाल-साधुओं को प्रेरित करते हुए युवाचार्यश्री ने कुछ साधुओं को वक्तव्य, संगीत आदि में गति करने का निर्देश दिया। रात्रि में मुनि श्री किशनलाल, मुनिश्री राजेन्द्र कुमार, मुनिश्री धर्मेन्द्र कुमार,

मुनिश्री धंनजयकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, ने युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त विषय पर अपने-अपने विचार रखे। मुनिश्री विनोद कुमार, मुनिश्री ऋषभकुमार ने संगीत प्रस्तुत किया। सप्तर्षि के कार्यक्रम के पश्चात् युवाचार्यश्री का "धर्म क्यों जरूरी" विषय पर प्रवचन हुआ।

४ दिसंबर को प्रातः राजनगर से विहार कर युवाचार्य ने अणुव्रत प्रवक्ता देवेन्द्रकुमार कर्णावट के निवास स्थान पर कुछ देर प्रवास किया। वहां से प्रातः ८.३० बजे युवाचार्यश्री ने तुलसी साधना शिखर के लिए प्रस्थान किया। राजनगर, कांकरोली के मध्य राजसमंद झील के किनारे पहाड़ी पर स्थित यह सुरम्य स्थान एक अध्यात्म योगी को अपने बीच पा पुलकित, प्रसन्न हो उठा। इस स्थान की रमणीयता, पवित्रता, सुन्दरता और चित्ताकर्षक हवा प्रत्येक व्यक्ति को सहज रूप से आकृष्ट कर रही थी। आस-पास के ग्रामों से आए हुए सैंकड़ों व्यक्तियों के प्रसन्न चेहरे इसके स्वयंभू साक्ष्य थे। एक ओर आदिनाथ भगवान ऋषभ का मंदिर, और आचार्य भिक्षु बोधिस्थल तथा दूसरी ओर कांकरोली में द्वारिकाधीश का पवित्र धाम मध्य में अवस्थित यह साधना शिखर आज युवाचार्य महाप्रज्ञ के आगमन से तपोभूमि जैसा लग रहा था।

स्वागत समारोह कार्यक्रम में तुलसी साधना शिखर पर लम्बे समय से साधनारत मुनिश्री शुभकरण ने कहा—"युवाचार्यश्री इससे पहले दो वर्ष पूर्व भी आचार्यश्री के साथ यहां पधारे थे। लेकिन उस समय इस साधना शिखर का रूप एक नवजात शिशु जैसा था। और आज वह किशोरावस्था में पादन्यास कर चुका है। उसका शारीरिक कलेवर विशाल और सुन्दर लग रहा है लेकिन उसमें प्राण संचार होना अभी शेष है। मेरा विश्वास है कि युवाचार्यश्री का सान्निध्य उसमें आध्यात्मिक प्राण भरने में सफल होगा।"

युवाचार्यश्री ने कहा—"साधना शिखर पर हम एक विशेष प्रयोजन से आए हैं और वह प्रयोजन है समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करना। आज समाज का प्रत्येक घटक विकृत बन गया है। लोग भविष्य की कल्पना मात्र से कांप रहे हैं। आज के विद्यार्थी का चरित्रनिष्ठ न होना इसका मुख्य कारण है। यदि तुलसी साधना शिखर पर एक उपक्रम प्रारम्भ किया जाए, तो विद्यार्थी के चरित्र को उन्नत और प्रभावी बनाया जा सकता है, मेवाड़ का प्रत्येक परिवार यह सोचें कि विद्यार्थी को शिक्षा के साथ अध्यात्म का ज्ञान भी मिले और इसके लिए तुलसी साधना शिखर पर प्रत्येक विद्यार्थी साल में पन्द्रह दिन साधना में बिताए। इस कल्याणकारी क्रम से विद्यार्थी, अभिभावक,

शिक्षक और समाज निश्चित और भयमुक्त भविष्य का आश्वासन पा सकेगा।"

मुख्य अतिथि मेवाड़ मंडलेश्वर मंहत मुरली मनोहरशरण ने कहा—"युवाचार्यश्री का साहित्य आधुनिक युग के लिए वरदान साबित हुआ है। आज के समस्याग्रस्त मनुष्य को उनके साहित्य से दिशा मिली है, समाधान मिला है। मैंने उनके साहित्य को पढ़ा है। युवाचार्यश्री का साहित्य धर्म और विज्ञान की परस्परता को सिद्ध करने में समर्थ हुआ है। संपूर्ण धार्मिक जगत को उनके साहित्य से दृष्टि, आलोक और मार्ग मिला है।

स्वागत के इस समारोह में मुनिश्री विनोदकुमार, तुलसी साधना शिखर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री भंवरलाल कर्णावट, मंत्रीश्री गणेश डागलिया, अणुव्रत विश्व भारती के संस्थापक मंत्री श्री मोहनलाल जैन, श्री धर्मेश डांगी, कन्या मण्डल कांकरोली, लावासरदारगढ़ के ठाकुर श्री मानसिंह आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन श्री शांतिलाल बाफणा ने किया।

५ दिसंबर/राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर तथा तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं के तत्वावधान में जीवन-विज्ञान-शिक्षक प्रशिक्षण शिविर प्रारंभ हुआ। पंचदिवसीय शिविर का उद्घाटन करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"आज व्यक्ति स्वयं को बहुत तनाव और कुण्ठा से घिरा हुआ पा रहा है। कभी-कभी इन परिस्थितियों के कारण वह आत्महत्या तक कर लेता है प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान तनाव मुक्ति के अचूक उपाय सिद्ध हुए हैं।"

इस कार्यक्रम में मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री विनोदकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, नीडम् निदेशक श्री शंकरलाल मेहता आदि ने अपने विचार रखे। संयोजन श्री रसिक मेहता ने किया। जीवन-विज्ञान शिविर में युवाचार्यश्री ने निम्न विषयों पर प्रवचन दिए।

५ दिसम्बर/स्वस्थ समाज रचना का संकल्प।

६ ,, स्वस्थ समाज की रचना आवश्यक है।

७ ,, समाज के आधारभूत तत्व।

८ ,, सत्य।

९ ,, शिविर समापन के अवसर पर शिक्षकों को संबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"आज असंतुलन सबसे बड़ी समस्या है। बौद्धिक विकास बढ़ रहा है, लेकिन भावात्मक विकास नहीं हो रहा है।

बौद्धिकता हमें विनाश की ओर ले जा रही है। आतंकवाद का वातावरण भी इसी की देन है। आतंकवादी मानसिकता में परिवर्तन लाने के लिए बौद्धिक और भावात्मक विकास का संतुलन अपेक्षित है।"

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक श्री भंवरलाल शर्मा के अतिरिक्त शिक्षकों ने जीवन-विज्ञान प्रयोगों के परिणाम तथा उसे लागू करने में आने वाली दिक्कतों का जिक्र किया।

१० दिसम्बर/प्रेक्षाध्यान-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन। विदेशी साधक श्री रोबर्ट का आगमन। 'जागरूकता' विषय पर आयोजित प्रवचन-माला में प्रथम प्रवचन 'जागरूकता सफलता का सूत्र।'

११ दिसम्बर जागरूकता : यथार्थ का स्वीकार और उपचार।
१२ ,, जागरूकता : देखने का अभ्यास।
१३ ,, जागरूकता और संतुलन।
१४ ,, जागरूकता : दिशा परिवर्तन।
१५ ,, जागरूकता जरूरी है समाज को बदलने के लिए।
१६ ,, जागरूकता : प्रयोग और प्रशिक्षण।
१७ ,, जागरूकता और जीवन व्यवहार।
१८ ,, जागरूकता और जीवन विकास।

प्रेक्षाध्यान की पृष्ठभूमि में धर्म नहीं विज्ञान

१३ दिसम्बर/रात्रि ७.३० बजे/विशिष्ट साधक पिट्सबर्ग (अमेरिका) निवासी श्री रोबर्ट चार्ल्स प्रौफ से विशेष भेंटवार्ता। सहज शान्त, शालीन स्वभाव से समृद्ध, अल्पभाषी, धुन के धनी मि० रोबर्ट युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं प्रेक्षाध्यान से प्रभावित हुए। युवाचार्यश्री के साथ उनका वार्तालाप बहुत ही उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक है। चर्चा का अनुवाद मुनिश्री दुलहराज ने कुशलता पूर्वक किया है।

युवाचार्यश्री—आपका ध्यान की ओर झुकाव कैसे हुआ ?

रोबर्ट— पारिवारिक परिस्थियों के कारण मेरा मानस बहुत दुःखित था। मेरा जीवन कष्टों से आक्रान्त था। करीब दस वर्ष पूर्व दुःखद परिस्थितियों के घेरे को तोड़ने के लिये मैं ध्यान की ओर आकृष्ट हुआ।

युवाचार्यश्री—प्रेक्षाध्यान से आपका संपर्क कब हुआ, कैसे हुआ ?

रोवर्ट— मैंने कुछ वर्षों में अनेक पद्धतियों का प्रयोग किया, उन्हें पढ़ा, समझा। लेकिन मुझे उनसे कुछ कमी का अनुभव होता रहा। अमेरिका में मेरे एक मित्र ने प्रेक्षाध्यान के कुछ पुष्प पढ़ने को दिये। शरीर प्रेक्षा, श्वास प्रेक्षा, प्रेक्षाध्यान आधार और स्वरूप आदि पुस्तकों का मैंने अध्ययन किया। मुझे उनमें कुछ नवीनता, अतिरिक्तता का अहसास हुआ। मेरे भीतर इस पद्धति को अच्छे ढंग से जानने, समझने और इसमें डूबने की रुचि जागृत हुई।

युवाचार्यश्री—दस-बारह वर्षों में आपने ध्यान की विभिन्न पद्धतियों को देखा है, पढ़ा है, और उनको प्रायोगिक रूप से जीया है उन पद्धतियों के संदर्भ में प्रेक्षाध्यान आपको कैसा लगा? प्रेक्षाध्यान की किन-किन विशेषताओं ने आप पर प्रभाव डाला है?

रोवर्ट— प्रेक्षाध्यान से मैं तीन कारणों से प्रभावित हुआ हूं।

(१) किसी पद्धति में केवल आसन-प्राणायाम कराया जाता है। किसी में शरीर-प्रेक्षा और श्वास-प्रेक्षा का ही प्रयोग कराया जाता है और कहीं कायोत्सर्ग और श्वासप्रेक्षा ये दो ही प्रयोग चलते हैं। साइकिक सेन्टर (चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा) की विधि भी कुछ ध्यान पद्धतियों में है, लेकिन वह भी पर्याप्त नहीं हैं। प्रेक्षाध्यान में इन सब विधियों का समावेश हैं, यह समग्र दृष्टि से सर्वांग बन पायी हैं। प्रेक्षाध्यान में विभिन्न प्रयोगों की समन्विति ने मुझे आकृष्ट किया हैं।

(२) चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा ग्रंथितंत्र को प्रभावित करती है, प्रेक्षा ध्यान का यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण अन्यत्र मुझे कहीं दिखाई नहीं दिया। ग्रंथितंत्र और चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा को एक साथ जोड़ना प्रेक्षाध्यान की बहुत बड़ी उपलब्धि है। प्रेक्षाध्यान की इस अपूर्व खोज में मुझे सत्य का दर्शन हुआ है।

(३) प्रेक्षाध्यान की तीसरी विशेषता यह कि इसकी पृष्ठिभूमि में धर्म नही हैं, विज्ञान है। इसका संपूर्ण सैद्धांतिक और

प्रायोगिक पक्ष विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। इसमें संप्रदाय, मजहब, जाति, देश की सीमा से हटकर उन्मुक्त चिंतन से प्रस्फुटित, उपयोगी और सार्वजनिक विधि है। मैं इस पद्धति के साथ तादात्म्य की अनुभूति करता हूं।

युवाचार्यश्री—क्या किसी पद्धति में लेश्याध्यान के प्रयोग भी करवाये जाते हैं ?

रोवर्ट— कहीं-कहीं यह जरूर बताया जाता है कि दर्शन-केन्द्र पर प्रकाश का आभास होता है लेकिन इसके सिवाय लेश्या ध्यान (कलर (मेडीटेशन) के बारे में मैंने कहीं नहीं सुना।

युवाचार्यश्री—क्या आपको रंग दिखाई देते हैं ?

रोवर्ट— कुछ रंग दिखाई देते हैं कुछ नहीं (बात को मोड़ देते हुए) युवाचार्यश्री ! कुछ लोग एकाग्रता और ध्यान को एक ही मानते हैं तथा कुछ उन्हें अलग-अलग मानते हैं ? आपका अभिमत क्या है ?

युवाचार्यश्री—एकाग्रता स्वयं ध्यान की एक अवस्था है। एकाग्रता (कांसेन्ट्रेशन) समाधि, (कान्टेम्पलेशन) ध्यान (मेडीटेशन) ये तीनों ध्यान की ही अवस्थाएं है। एकाग्रता ध्यान की पहली स्टेज है, समाधि दूसरी स्टेज और ध्यान तीसरी स्टेज है।

रोवर्ट— हां-हां मुझे आपका कथन ही सही महसूस होता है।

युवाचार्यश्री—हमने प्रेक्षाध्यान में प्रेक्षा के साथ अनुप्रेक्षा को भी जोड़ा है।

रोवर्ट— अनुप्रेक्षा ?

युवाचार्यश्री—अनुप्रेक्षा यानि सजेशन, ऑटोसजेशन। जैसे भय को मिटाने के लिये व्यक्ति अपने आप सुझाव देता है कि भय का भाव मिट रहा है, अभय का भाव पुष्ट हो रहा है। यह प्रयोग आदतों को वदलने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है।

रोवर्ट— यह तो आत्मसम्मोहन का ही एक रूप हैं।

युवाचार्यश्री—हां, व्यवहार परिवर्तन के लिये यही सबसे कारगर उपाय है।

रोवर्ट— आत्मसम्मोहन से ही वृत्तियों का परिष्कार होता है, आपका यह कथन सही है।

युवाचार्यवर—(प्रसंग वदलते हुए) आप यहां कब तक रहेंगे ?

रोवर्ट— शिविर के बाद मैं आचार्यश्री तुलसी के दर्शन करूंगा। फिर कुछ दिन दिल्ली रुक कर अमेरिका चला जाऊंगा। मेरे पास वीसा थोड़े समय का ही है।

युवाचार्यश्री—क्या आप स्थायी रूप से अमेरिका में ही रहेंगे ?

रोवर्ट— हांलाकि मैंने अभी तक कुछ निश्चय नहीं किया है लेकिन अमेरिका में ज्यादा नहीं रहने का फैसला मैंने किया है। (व्यथा भरे स्वरों में) अमेरिका हिंसक देश है वहां लोगों में दया, चरित्र नाम का कोई तत्त्व नहीं है। वे पैसे के लिये सब कुछ करने के लिये तैयार रहते हैं।

युवाचार्यश्री—(विस्मय से) ऐसा क्यों करते हैं ?

रोवर्ट— सारे लोग पैसे के पीछे दौड़ रहे हैं। पैसे के लिये किसी को छलना, मारना तो वे अपना कर्तव्य ही मान बैठे। वे मानते हैं कि बुढ़ापा, हिंसा, भय, तनाव आदि से सुरक्षा का एकमात्र उपाय धन ही है।

युवाचार्यश्री—क्या लोगों के गिरते हुए चरित्र को उठाने के प्रयत्न नहीं हुए ?

रोवर्ट— (अत्यन्त दुःखी होकर) युवाचार्यश्री ! वहां की संस्कृति ही ऐसी है। उनमें कोई परिवर्तन नहीं आता है वहां और व्यवसाय की तरह ही व्यक्ति को ऊपर उठाने वाले प्रयत्न भी व्यवसाय ही बन गये। (बात जारी रखते हुए) भारत में भी अनेक धर्माचार्य, भगवान, मुनि वहां गए लेकिन वे भी उन्हें नहीं बदल सके। अधिकांश धार्मिक प्रचार के अपने दायित्व, धर्म और संस्कृति को भुलाकर वहां की संस्कृति में डूब गए। वे अपने चरित्र को नहीं टिका पाए और पाश्चात्य संस्कृति के चमकीले-भड़कीले वातावरण में अपनी मूल थाती को ही खो बैठे। वे पैसे और सेक्स के चक्कर में फंस गये।

युवाचार्यश्री—(धर्मगुरुओं की बात सुनकर) वहां पर भगवान् रजनीश काफी वर्षों तक रहे थे। क्या आप उनसे कभी मिले ?

रोवर्ट— नहीं। मेरा उनसे मिलने का कोई अवसर नहीं आया। उनके शिष्यों से अवश्य मेरी बातचीत हुई वे भी कन्फ्युजन-भटकाव में लगे, अस्त-व्यस्त दिमाग वाले लगे।

युवाचार्यश्री—(प्रसंग बदलते हुए) आप वहां दिन भर क्या करते हैं ?

रोवर्ट— मैं दिन भर प्रेक्षाध्यान के प्रयोग और साहित्य पढ़ने में व्यस्त रहता हूं। दो-तीन दिन बाद मुझे यहां से जाना है। जाते समय आप पूछेंगे कि आपने क्या सीखा, क्या पाया, क्या समझा तो मैं क्या जवाब दूंगा। इसीलिये मैं प्रेक्षाध्यान को समझने जानने में लगा रहता हूं। (बात आगे खींचते हुए) युवाचार्य श्री ! आपने एक जगह लिखा है कि हम ध्यान सिखाते हैं पर यह कैसे संभव हो सकता है ?

युवाचार्यश्री—ध्यान की विधि (मैथेड) ही सिखायी जाती है। उसे ही ध्यान सीखाना कह देते हैं। यह सही ध्यान स्वतः घटित होता है लेकिन यदि प्रयोग कराने वाला शक्तिशाली और पवित्र आभा-मण्डल से युक्त हो, तो उसका प्राण-बल सीखने वाले के भीतर जा सकता है वह उसे इस प्रकार से एक प्रेरणा कर सकता है।

रोवर्ट— प्रेरणा यानि शक्तिपात ?

युवाचार्यश्री—पाश्चात्य देशों में शक्तिपात का प्रचलित अर्थ यह होता है कि गुरु के पास शिष्य जाता है और गुरु के स्पर्श से उसके सारे केन्द्र सक्रिय और जागृत हो जाते हैं। शक्तिपात का वास्तविक अर्थ पश्चिमी लोगों ने कितना गलत समझा है। उन्होंने अर्थ का अनर्थ कर डाला।

(मूल विषय पर आते हुए)

युवाचार्यश्री—आप दो दिन से शिखर की गुफा में सो रहे हैं उस गुफा में आप को कैसा अनुभव हुआ।

रोवर्ट— जागते हुए सोने का अभ्यास तो मुझे काफी अर्से से है, मेरा पूरा शरीर सोया रहता है और मैं उसे निरन्तर देखता रहता हूं। यह आत्मा और शरीर का भेद-विज्ञान मुझे दो वर्षों से निरन्तर उपलब्ध है। परसों रात्रि को मैं गुफा में सो रहा था, तब मेरा शरीर स्वप्न ले रहा था, और मैं उसका अनुभव कर रहा था, मैंने देखा—समस्या का मूल परिग्रह (प्रोजेशन) है, हिंसा, भय, घृणा, स्वार्थ ये सब उसके उपजीवी हैं। आसक्ति मूल है। यदि व्यक्ति के भीतर मूर्च्छा का प्रवाह मंद हो जाये, तो हिंसा, कषाय आदि सारी विकृतियां स्वतः मिट जाएं। इस बात का मुझे प्रथम दिन बहुत स्पष्ट आभास हुआ। दूसरे

दिन रात्रि में एक विचित्र और अपूर्व अनुभव हुआ।
(ये वाक्य बोलते-बोलते वह प्रसन्नता से घिर गया। कुछ क्षण तक वह कुछ भी नहीं बोल पाया)

युवाचार्यश्री—ऐसा क्या अनुभव हुआ ?

रोबर्ट— मैंने देखा ! मैं अपने सोए शरीर को देख रहा हूं और देखते-देखते एक विशाल सूर्य जैसा चमकता हुआ प्रकाश मेरे शरीर के भीतर से फूटा। वह काफी देर तक चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। बिजली की धारा जैसा वह पदार्थ मेरे शरीर से निकला तब मुझे आभास हुआ कि आत्मा शरीर से भिन्न है लेकिन वह बाहर निकलते हुए भी शरीर से जुड़ी रहती है। आपका इस विषय में क्या मानना है ?

युवाचार्यश्री—आत्मा शरीर से तैजस शरीर के द्वारा जुड़ी रहती है ऐसा हम मानते हैं। तिब्बती दार्शनिक भी उसे सिल्वर कोड से जुड़ी हुई मानते हैं ?

रोबर्ट— मुझे भी ऐसा ही आभास हुआ।

युवाचार्यश्री—उस समय आपकी मनःस्थिति कैसी बनी ?

रोबर्ट— मैं स्तब्ध और आश्चर्यचकित रह गया। मेरे भीतर अपूर्व आनन्द का स्रोत फूट पड़ा।

युवाचार्यश्री—आपने उस तेजस-शक्ति को क्या समझा ?

रोबर्ट— मैं तेजस-शरीर के बारे में सुनता पढ़ता रहा, लेकिन मुझे यह कभी विश्वास नहीं था कि मैं उस शक्ति को साक्षात् देख सकूंगा, मेरी यह धारणा पुष्ट और दृढ़ हो गई कि वास्तव में कुण्डलिनी, तेजस-शक्ति, (तेजोलेश्या) केवल कल्पना नहीं बल्कि एक जीवन्त सचाई है।

युवाचार्यश्री—आप कब तक उस स्थिति में रहे ?

रोबर्ट— मैं निश्चित नहीं कह सकता।

युवाचार्यश्री—आप मूल स्थिति में कैसे आए ?

रोबर्ट— मैं अवाक् निस्पन्द हो गया था। मेरा शरीर सुन्न था। धीरे-धीरे शून्य-सा बना मेरा शरीर चेतनत्व को पाने लगा। शरीर में पूर्ण चेतना और जागरूकता के संचार में काफी समय लगा। मेरे जीवन का यह अद्भुत, रोमांचक, अविस्मरणीय अनुभव बन

गया है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि व्यक्ति की यदि लगन, निष्ठा और आत्म-विश्वास प्रवल हो तो उसे निश्चित लक्ष्य पाने से कोई नहीं रोक सकता है।

युवाचार्यश्री—यह तेजस-शक्ति का चमत्कार है। ऐसा अनुभव अभ्यास के वाद संभव होता है। जिसकी साधना सहज रूप से गहरी हो जाती है, उसे इस प्रकार के अनुभव होते हैं।

रोवर्ट— हां, यह वात भी सही है कि प्रत्येक मेरा अनुभव दूसरों को भी हो, यह जरूरी नहीं है। सव व्यक्तियों की जागरूकता, क्षमता, साधना में निष्ठा समान नहीं होती।

युवाचार्यश्री—स्थान भी आपको सहज ही वहुत अच्छा उपलब्ध हुआ।

रोवर्ट— जिस गुफा में मैं सो रहा हूं, वह शान्त, सुरम्य और दर्शनीय है। युवाचार्यश्री! मुझे तो ऐसा लगता है कि यह गुफा कोई तपोभूमि रही है। यहां पर ऋषि-मुनियों ने लंवे समय तक ध्यान, तप आदि की साधना की है। ऐसा मेरा दिल कहता है। अन्यथा उस गुफा में जाते ही मेरा मन शान्त नहीं होता, मुझे इतनी गहरी नींद नहीं आती। मैंने दो दिनों में जितनी गहरी और मस्ती भरी नींद ली, उतनी मुझे कभी नहीं आई। जितना गहरा ध्यान हुआ, उतना पहले नहीं हुआ। यह सब गुफा के प्रभास्वर, चित्ताकर्षक वातावरण का प्रभाव है।

१७ दिसम्बर राजसमन्द क्षेत्र के विधायक श्री मदनलाल खटीक, इंजीनियर, आयकर अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि ने युवाचार्यश्री से युगीन समस्याओं और जीवन-विज्ञान पर उपयोगी चर्चा की।

१९ दिसम्बर/तुलसी साधना शिखर से कांकरोली पदार्पण। इस अवसर पर प्रखर चिन्तक एवं शिक्षाविद श्री हरिदास शास्त्री ने कहा—"मैं मार्क्सवादी विचारों का समर्थक रहा हूं। जिसमें धर्म को अफीम कहा गया है। धर्म नाम से मुझे नफरत रही है, लेकिन जव से मैंने प्रेक्षाध्यान का शिविर अटेन्ड किया, तव से मेरी धारणा ही वदल गयी। प्रेक्षाध्यान का आधार वैज्ञानिक है। इस पद्धति के साधारण प्रयोगों ने असाधारण वीमारियों पर विजय पाई है। यदि हम इसके प्रयोग निरन्तरता के साथ करें, तो हमारे कर्म और वाणी में अद्भुत साम्य आ सकता है।"

युवाचार्यश्री ने परिषद को संबोधित करते हुए कहा—"आज जितनी भी समस्याएं हैं उनका मूल कारण मानसिक असंतुलन है। मस्तिष्क के दो भाग होते हैं एक बांया और दूसरा दांया। बायां भाग तर्क और बुद्धि के लिए जिम्मेदार है तो दांया भाग अध्यात्म, मैत्री, करुणा नैतिकता के लिए उत्तरदायी है। आज बांया भाग बहुत सक्रिय है, विश्व पर हावी है जबकि दायां भाग सिकुड़ गया है, सुप्त बन गया है। यही कारण है कि आज हिंसा, आतंक, अणुशस्त्रों का माहौल बना हुआ है। व्यक्ति भय और तनाव से ग्रस्त है। अध्यात्म के द्वारा मस्तिष्क के इन दोनों पक्षों में संतुलन स्थापित किया जा सकता है। जब तक बुद्धिवाद का साम्राज्य रहेगा, समस्याओं का समाधान नहीं होगा। अध्यात्म की बुनियाद को मजबूत बनाकर ही हम विध्वंसकारी ताकतों से बच सकते हैं।"

जय किशोर मंडल द्वारा आयोजित हिन्दी निबंध प्रतियोगिता के परिणाम भी घोषित किए गए। "परमाणु युग में अहिंसा की उपयोगिता" विषय पर लिखने वाले युवकों के समारोह में अध्यक्ष विधायक मदनलाल खटीक के हाथों पुरस्कार प्रदान किया गया।

२० दिसंबर को युवाचार्यश्री प्रातः मादड़ी सायं कुआंरिया पहुंचे। दोनों ही ग्रामों में स्थानीय जनता ने युवाचार्यश्री के प्रवास का लाभ उठाया। इस अवसर पर कांकरोली, राजनगर, आमेट आदि क्षेत्रों के सैंकड़ों भाई-बहिन भी ससंघ आए थे। २१ दिसंबर को चौकड़ी पधारे। मार्ग में पींपरी ग्राम वासियों के विशेष आग्रह पर युवाचार्यश्री वहां कुछ देर ठहरे। पींपरी में श्रद्धा के तीन परिवार रहते हैं।

२२ दिसंबर को रेलमगरा में युवाचार्यश्री ने आचार्यश्री के दर्शन कर लिये। मार्गवर्ती शकरपुरा एवं मंदरा ग्रामवासियों की बलवती प्रार्थना को स्वीकृत कर दोनों ही ग्रामों में युवाचार्य श्री थोड़े समय के लिए ठहरे। करीब दस बजे युवाचार्य श्री की यह २५ दिवसीय पृथक् यात्रा परमाराध्य गुरुदेव के चरणों मे आकर सम्पन्न हो गई।

कानोड़-यामला

आचार्यवर से पृथक् विहार कर युवाचार्यश्री प्रातः वड़वई पहुंचे तथा सायं सात किलोमीटर का रास्ता तय कर रात्रि प्रवास भीण्डर में किया। भीण्डर में जैन समाज की काफी अच्छी वस्ती है। स्थानीय वरिष्ठ नेता एवं पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्री रूपलाल मेहता ने युवाचार्यश्री का स्वागत

किया। रात्रि में हजारों लोगों के वीच "जीएं लेकिन कैसे" ? विपय पर प्रवचन हुआ। स्थानीय जैन-अजैन जनता के विशेप आग्रह पर युवाचार्यश्री यहां दो दिन और ठहरे।

अगले दिन युवाचार्यश्री ने भीण्डर हायर सैकण्ड्री स्कूल में जीवन-विज्ञान के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को संवोधित किया। जीवन-विज्ञान के प्रयोगों के प्रति विद्यार्थियों ने अपनी अभिरूचि प्रदर्शित की। उन्होंने वताया कि जीवन-विज्ञान के प्रयोगों से तनाव, क्रोध, विस्मृति आदि आदतों में असाधारण परिवर्तन आया है। रात्रि में 'मानसिक शान्ति का प्रश्न' विपय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। युवाचार्यश्री का भीण्डर में त्रिदिवसीय प्रवास सफल और प्रभावी सिद्ध हुआ। भीण्डर से विहार कर युवाचार्य अमरपुरा पधारे। युवाचार्यश्री को अमरपुरा से भटेवर पधारना था। मध्यवर्ती ग्राम में स्थानकवासी समाज के १०० परिवार रहते हैं, उनके विशेप आग्रह पर युवाचार्यश्री ने वहां प्रातः कालीन प्रवचन किया।

भटेवर से युवाचार्यश्री वल्लभनगर पधारे। स्थानीय स्थानकवासी, दिगम्वर, तेरापंथी समाज ने युवाचार्यश्री का शानदार स्वागत किया। मध्याह्न में वुद्धिजीवी, वकील, उपजिलाशिक्षाधिकारी आदि गणमान्य स्थानीय व्यक्तियों ने युवाचार्यश्री से आज की ज्वलन्त समस्याओं पर चर्चा की। रात्रि में 'क्या आप सुनना चाहते हैं' विषय पर सार्वजनिक वक्तव्य हुआ।

१३ जनवरी को युवाचार्यश्री का मावली ग्राम में भव्य स्वागत हुआ। एडवोकेट श्री सुन्दरलाल चेचानी, श्री भंवरलाल ओस्तवाल ने प्रेक्षाध्यान का जिक्र करते हुए इसे महाप्रज्ञ की संसार को दिव्य देन वतलाया। रात्रि में युवाचार्यश्री का "आप क्या वनना चाहते हैं" विषय पर वक्तव्य हुआ।

१४ जनवरी को प्रातः युवाचार्यश्री का हायर सैकन्ड्री स्कूल के अध्यापकों, विद्यार्थियों के वीच "जीवन विज्ञान" पर वक्तव्य हुआ। स्कूल के अध्यापकों ने जीवन-विज्ञान कार्यक्रम को अपनाने की प्रवल इच्छा व्यक्त की। रात्रि में जनता को संवोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'आज की सवसे वड़ी समस्या है व्यक्तिवादी मनोवृत्ति का विकास। हमारा घोप समाजवाद का है किन्तु हम वन रहे हैं व्यक्तिवादी। कितना स्वार्थ ? परमार्थ से तो हमारा पीछा ही छूट गया है। परमार्थ से कोई संवंध ही नहीं रहा। आज व्यक्ति व्यक्तिवादी वन गया और सारा दृष्टिकोण व्यक्तिवादी वन गया। परमार्थ वहुत पिछड़ गया। इस स्थिति में सवसे वड़ा उपाय है अध्यात्म चेतना

का जागरण। सामाजिक चेतना का जागरण करुणा के बिना संभव नहीं है और अध्यात्म के बिना करुणा का प्रस्फुटन नहीं होता। आज की समस्या है क्रूरता और उसका समाधान है—अध्यात्म चेतना का जागरण।"

प्रवचनोपरान्त सिविल जज, एडवोकेट आदि शताधिक व्यक्तियों ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग में उत्साह के साथ भाग लिया। प्रातः विहार के समय युवाचार्यश्री सिविल जज के आग्रह पर उनकी कोठी पर पधारे। युवाचार्यश्री को पात्रदान देकर सिविल जज कृत-कृत्य बन गए।

१५ जनवरी / थामला में आयोजित स्वागत समारोह में स्थानीय विधायक व पूर्व मंत्री श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर ने कहा—"आज पूरा समाज विकृत हो गया है। राजनीति, व्यापार, आफिसों में कार्यरत व्यक्तियों का चरित्र बेदाग नहीं है। पूरा वातावरण विषाक्त और गंदला बन गया है। ऐसी स्थिति में भी संत कमल की भांति निर्लिप्तता और पवित्रता से ओतः-प्रोत है यह भारत का सौभाग्य है। ऐसे अकिंचन संतों का मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से ही मानव समाज में व्याप्त विकृतियों को दूर किया जा सकता है। युवाचार्य महाप्रज्ञ का आगमन भ्रष्टाचार, रिश्वत, बेईमानी आदि बुराइयों को दूर करने में सहायक सिद्ध होगा। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—'समाज को आज एक नयी करवट देनी है। उसमें व्याप्त प्रदूषण को मिटाना आज का अहं प्रश्न है। इसके लिए सघन और सर्वतोमुखी प्रयत्न की जरूरत है। केवल धर्माचार्य या अध्यात्म इस दृष्टि से सफल नहीं हो सकते। केवल व्यवस्था या कानून के आधार पर भी इस प्रदूषण को मिटाया नहीं जा सकता। समाज में स्वच्छ और सुन्दर वातावरण बनाने के लिए सबका सम्यक् योग होना जरूरी है। एक ऐसे प्रभावी मंच का निर्माण हो, जिसमें प्रमुख धर्मों के नेता, प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, वकील, साहित्यकार, कवि, लेखक आदि वरिष्ठ व्यक्ति सम्मिलित हों। वे समाज को सुधारने का संयुक्त प्रयत्न करें, एक सशक्त वातावरण का निर्माण करें। जिसके द्वारा समाज का कायाकल्प हो सके, उसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया जा सके। आज की ज्वलंत, भयावह और विश्वव्यापी समस्या का यह संयुक्त मंच एक समाधान सिद्ध हो सकता है।'

स्वागत कार्यक्रम में श्री धर्मचन्द जैन, कन्या मंडल, महिला मंडल, युवक परिषद् आदि संस्थाओं के अतिरिक्त अनेक भाई-बहिनों ने अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्यवर थामला में लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व पधारे थे। उस समय आचार्यश्री का प्रवास स्थानीय ठाकुर साहब के यहां हुआ था। ठाकुर सज्जन सिंहजी ने अतीत की चर्चा करते हुए कहा—'आचार्यश्री के सामने मैंने पच्चीस वर्ष पूर्व शराव न पीने की प्रतिज्ञा ली थी। तब से लेकर अब तक मैं उस प्रतिज्ञा को निभा रहा हूं। आचार्यश्री के द्वारा लिए गए उस संकल्प से मेरा स्वास्थ्य, यश, संपत्ति और ईमान निरन्तर बढ़ा है। मेरा परिवार एक प्रतिष्ठित और नैतिक परिवार बन गया है। यह सब आचार्यवर की कृपा का प्रसाद है।' युवाचार्यश्री उनकी अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए उनके घर पर भी पधारे।

थामला में १५ जनवरी को विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने अणुव्रत ग्राम भारती के सम्बन्ध में युवाचार्यश्री से बातचीत की।

थामला के त्रिदिवसीय प्रवास का स्थानीय जनता ने बहुत उत्साह के साथ लाभ उठाया।

१८ जनवरी को युवाचार्यश्री सालोर पधारे। यहां तेरापंथ का एक ही परिवार है। आर्थिक एवं धार्मिक दृष्टि से समृद्ध इस परिवार का पूरे गांव में अच्छा प्रभाव है। संपूर्ण जैन-अजैन समाज युवाचार्यश्री को अपने मध्य पा प्रफुल्ल हो उठा। खमनोर पंचायत समिति के प्रधान श्री गणेशलाल शर्मा इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे।

साध्वीश्री राजीमती, साध्वीश्री कानकंवर एवं साध्वीश्री सुमनश्री आदि पन्द्रह साध्वियों ने आज युवाचार्यश्री के दर्शन किए। स्वागत समारोह में साध्वियों ने युवाचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए एक सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। युवाचार्यश्री से अत्यन्त आग्रहपूर्वक स्वीकृति लेकर समस्त साधु-समुदाय का आतिथ्य सत्कार भी किया। रात्रि में मगनलालजी धींग तथा उनके संपूर्ण परिवार को युवाचार्यश्री ने आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया।

१९ जनवरी युवाचार्यश्री का जावड़ में पदार्पण हुआ। यहां सामोता परिवार के सात घर हैं। व्यापारिक दृष्टि से ये नाथद्वारा, इन्दौर आदि क्षेत्रों में कार्यरत हैं। युवाचार्यश्री के आगमन का शुभ संवाद सुनकर अधिकांश व्यक्ति इस अवसर पर पहुंच गए। नाथद्वारा से सात किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित इस ग्राम में नाथद्वारा के सैंकड़ों संभ्रात व्यक्ति भी युवाचार्यश्री के स्वागतार्थ उपस्थित थे।

नाथद्वारा के मुंसिफ मजिस्ट्रेट श्री सरत्चन्द्र ने कहा—'ध्यानयोग की

महान परम्परा के ज्योतिपुंज साधक युवाचार्यश्री को अपने बीच पा हम प्रफुल्लित हैं। युवाचार्य ने ध्यान के प्रयोगों को जो वैज्ञानिकता प्रदान की है, वह मेरी दृष्टि में केवल इनके द्वारा ही सर्वप्रथम संपन्न हुआ है। युवाचार्यश्री ने ग्रन्थितंत्र और कषाय का जिस ढंग से विवेचन किया है, वह अपूर्व है।'

उन्होंने आगे कहा—'मैं प्रेक्षाध्यान का निरन्तर प्रयोग कर रहा हूं। प्रतिदिन आधा घंटा समय मैं इस कार्य में नियोजित करता हूं। आज साल भर बाद मैं अपने आप में विचित्र परिवर्तन पा रहा हूं। प्रेम, मानवीयता मृदुता आदि गुणों के समुचित विकास ने जहां मेरे मनोबल को मजबूत बनाया है, वहीं क्रोध, भयमुक्ति से परिवार में शान्ति, सौहार्द और सद्भाव का वातावरण निर्मित हुआ है। मेरा विश्वास है कि युवाचार्यश्री का यह स्वस्थ सान्निध्य मेरी इस विकास यात्रा में असाधारण सहयोगी सिद्ध होगा।

इस समारोह में नाथद्वारा-रेलमगरा क्षेत्र के उपजिलाधीश श्री वी० एल० गुप्ता, हायर सैकण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री जयदेव शर्मा, खमनोर पंचायत के प्रधान श्री गणेशलाल शर्मा, पूर्व प्रिंसिपल श्री भंवरलाल शर्मा, लेक्चरार रघुनाथ चित्रेश आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन श्री ईश्वरसिंह सामोता ने किया।

जावद में एक विशेष उद्देश्य से खमनोर के सैंकड़ो युवक जुलूस रूप में आए थे। वे उपजिलाधीश पर शराब का ठेका बंद कराने के लिए दबाव डालना चाहते थे। यह अवसर उन्हें अपने इस लक्ष्य के अनुकूल लगा। युवाचार्यश्री ने उन युवकों के प्रयास को उचित बताते हुए कहा—'शराब का प्रचलन आज अत्यधिक बढ़ रहा है। हिंसा, आतंक, बलात्कार आदि के लिए यह सबसे ज्यादा जिम्मेदार है। पहले व्यक्ति शराब को पीता है, और एक निश्चित अवधि के बाद शराब आदमी को पीने लग जाती है, जिससे मुक्ति पाना व्यक्ति के लिए असंभव सा हो जाता है।'

उन्होंने आगे कहा—'सरकार शराब के ठेकों को इसलिए बंद नहीं करना चाहती है कि उसे इससे आय होती है, ठेके आय के बहुत अच्छे स्रोत हैं। लेकिन जब इसी शराब को पीकर मनुष्य पागल, आतंकवादी और समाज के सिरदर्द बन जाता है, समाज के सामने एक विकट समस्या को पैदा कर देता है, उस सिरदर्द को मिटाने के लिए, आतंक, हिंसा को दबाने के लिए सरकार को प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाने पड़ते हैं।

लेकिन उसकी सरकार को कोई परवाह नहीं है। वह मूल समस्या को मिटाना नहीं चाहती। यदि शराब का प्रचलन सेवन बंद हो जाएं, तो समाज में व्याप्त अधिकांश बुराइयां: स्वतः कम हो जाए, मिट जाए। समाज में शान्ति, अमन-चैन को स्थापित करने के लिए शराब मुक्त समाज की संरचना का होना अत्यन्त आवश्यक है।'

२० जनवरी को युवाचार्यश्री की इस यात्रा को विराम मिल गया। श्यामला से दो किलोमीटर दूर दो अभिन्न आत्माओं का मिलन हुआ और यह मिलन इस वर्ष में आचार्यश्री से युवाचार्यश्री का अन्तिम पृथक् प्रवास सिद्ध हुआ है। यह विवरण युवाचार्यश्री की प्रभावी और महत्त्वपूर्ण यात्राओं का संक्षिप्त आकलन मात्र है।

आदर्श जीवन के उत्तुंग शिखर पर

ऊंचाई पर जलने वाला दीपक बहुतों को प्रकाश देने वाला होता है। ऊपरी सतह पर बैठे हुये व्यक्ति पर ध्यान अनायास चला जाता है, चाहे अच्छा काम करे या गलत काम करे, उनकी ओर सबका ध्यान जाएगा ही। आचार्य, युवाचार्य ऊपरी सतह पर आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होते है। उनकी हर क्रिया का असर उनके शिष्य वर्ग पर होना अवश्यंभावी है। तेरापंथ धर्म-संघ का यह सदैव सौभाग्य रहा है इसके जितने आचार्य हुये, वे सब साधना में बेजोड़, प्रतिक्षण जागरुक, ज्योतिर्मय हुये हैं। उनकी सशक्त साधना से धर्म-संघ में अध्यात्म ऊर्जा का अजस्र स्रोत प्रवाहित होता रहा है।

आचार्यश्री तुलसी उन ज्योतिर्धर आचार्यों की एक सशक्त कड़ी है। उनका प्रतिक्षण जागरुक व्यक्तित्व अलग ही आभास कराता है। प्रवृत्ति प्रधान जीवन में निवृत्तिमय भावधारा आन्तरिक व्यक्तित्व को सतत निखारती रहती है।

बहुजनहिताय प्रवृत्ति करने वाले आचार्य तुलसी अपनी व्यक्तिगत साधना के प्रति अहर्निश जागरुक है। वे हमेशा की भांति प्रातः ४ बजे नियमित रुप से उठते हैं, पर सोने का कोई नियत समय नहीं है। रात्रि में सोने में बारह-एक तक बज जाते हैं। उनका प्रतिक्षण जन-जन के कल्याण हेतु समर्पित हैं। वे जहां इस अवधि में आगम कार्य, साधु-साध्वियों को अध्यापन कराते हैं, वहां समागन्तुक श्रद्धालु लोगों, जैन बंधुओं तथा जैनेतर लोगों से मिलते हैं। उनकी समस्याओं को सुनते हैं और उनको समाधान देते हैं। उनके पास आने वाले आस्तिक-नास्तिक, बौद्धिक-अबौद्धिक सभी प्रकार के लोग होते हैं। अनपढ़, गरीब, दलित, अनुसूचित लोग भी आचार्यश्री के पास बड़ी जिज्ञासा से आते हैं, उनसे मार्गदर्शन पाकर अपने को बदलते हैं, बुरी आदतों को छोड़ कर स्वच्छ जीवन जीने के लिये संकल्पबद्ध बनते हैं। हम आये दिन देखते हैं—आचार्यवर की अमृत वाणी को सुनकर पचास-पचास वर्षों की आदत तत्काल छोड़कर संकल्पशील बन जाते हैं। ध्यान और स्वाध्याय का क्रम आचार्यवर का अविकल रुप से चल रहा है। बहोत्तर वर्ष की उम्र में भी निरंतर खड़े-

खड़े ध्यान और स्वाध्याय करना अपने में एक प्रेरक उपक्रम है। खानपान में सीमित द्रव्यों का उपयोग करना, चीनी तथा चीनी की बनी वस्तु मात्र का परित्याग रखना खाद्य संयम का अनुकरणीय अनुष्ठान है। खाद्य संयम का प्रयोग उनके वर्षों से सलक्ष्य चल रहा है, आमेट चातुर्मास में एक महीने से भी अधिक समय तक छह विगय का वर्जन किया, इस अवधि में आछ (गर्म छाछ के ऊपर का पानी) का प्रयोग करते रहे।

गुरुकुलवास में साधुओं का विवरण

दीक्षित होने के साथ ही साधु-साध्वियां जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि प्रवृत्तियों में संलग्न बन जाते हैं। बहिर्मुखता को त्याग कर अन्तर्मुखता की दिशा में गतिशील बन जाते हैं। उनका तप, जप, स्वाध्याय स्व-हित के लिए होता है। उनमें प्रचार पाने की आकांक्षा नहीं रहती, फिर भी उनकी प्रवृत्तियों से पूरा जनमानस अवगत हो, इससे लोगों को प्रेरणा मिले इस दृष्टि से आचार्यश्री के सान्निध्य में रहने वाले साधुओं के ग्रुप का क्रम से संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. मुनिश्री मधुकर

तपस्या—बेला-३, उपवास-१०, एकान्तर-२ महिना

वाचन (१) आगमसाहित्य-करीब ६०० पृष्ठ (२) आगमेतर-५ हजार पृष्ठ, स्वाध्याय-६० हजार गाथा

जप—प्रतिदिन लगभग आधा घंटा। ध्यान-१५ मिनिट

मौन—चातुर्मास में प्रतिदिन तीन घंटा

वे ख्यात लेखन, युवक परिषद् का कार्य तथा समसामयिक अंतरंग विषयों के लेखन में पूर्व की भांति जुड़े हुए हैं।

मुनिश्री श्रीधर्मरुचि

तपस्या—उपवास-२१, पांच विगय वर्जन करीब आठ महीना तथा सात महीने व्यंजन परिहार। वाचन-फुटकर।

मुनिश्री श्रेयांसकुमार

तपस्या—उपवास-१३, अठाई-१, एकान्तर-१ महीना

जप—प्रतिदिन लगभग आधा घंटा

वाचन—(१) आगम-४०० पृष्ठ (२) आगमेतर-१००० पृष्ठ

स्वाध्याय—१ लाख २५ हजार गाथा परिमाण।

मुनिश्री दिनेशकुमार

वाचन (१) आगम-२००० पृष्ठ (२) आगमेतर-१२५० पृष्ठ

कंठस्थ-६०० गाथा, स्वाध्याय-१ लाख ६० हजार गाथा

जप—नमस्कार महामंत्र का सवा लाख

साधु-साध्वियों की जैन तत्व प्रवेश परीक्षा में प्रथम व साधुओं की तत्वचर्चा परीक्षा में वे प्रथम रहे।

मुनिश्री हीरालाल

तपस्या—उपवास-५३, वेला-३, तेला-२, एकान्तर-२ महिना

जप—प्रतिदिन १ घंटा

आगम कार्य में वे प्रारंभतः संलग्न हैं।

मुनिश्री धनंजयकुमार

जप-ध्यान-प्रतिदिन १ घंटा।

वाचन—(१) आगम-५०० पृष्ठ (२) आगमेतर-२००० पृष्ठ

कण्ठस्थ—१००० गाथा। स्वाध्याय १ लाख ५० हजार गाथा।

अमृत-महोत्सव पर समायोजित निबन्ध एवं कहानी प्रतियोगिता में प्रथम श्रेणी में क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे।

मुनिश्री प्रशांतकुमार

जप-ध्यान—प्रतिदिन १ घंटा, उपवास-४

वाचन-आगम-३०० पृष्ठ, आगमेतर-२००० पृष्ठ, कंठस्थ-५०० गाथा, स्वाध्याय-एक लाख ५० हजार गाथा।

निबन्ध प्रतियोगिता में द्वितीय श्रेणी में प्रथम स्थान पर रहे।

मुनिश्री सुखलाल

६ महिने गुरुकुलवास में रहे। तपस्या-५ आयंबिल

वाचन—४००० पृष्ठ, ध्यान-जप-प्रतिदिन ४ घंटा, विशेष-अणुव्रत कार्यक्रमों की समायोजना, लेखन में विशेष रुप से संलग्न हैं।

मुनिश्री मोहजीतकुमार

उपवास-६, वाचन-२००० पृष्ठ, ध्यान-१ घंटा

स्वाध्याय-२०० गाथा, जप-प्रतिदिन आधा घंटा

मुनिश्री भूपेन्द्रकुमार

वाचन-४००० पृष्ठ, जप-ध्यान-प्रतिदिन आधा घंटा

मुनि सुमेरमल "लाडनूं"

तपस्या-उपवास-१४, जप-प्रतिदिन २ घंटा

सत्ताईस दिवसीय जप अनुष्ठान-४ बार

वाचन-२००० पृष्ठ, संपादन-तेरापंथ दिग्दर्शन १९८४

विशेष-कार्यक्रम-संयोजन का कार्य देखते हैं। आमेट चातुर्मास में रात्रि में जैन रामायण पर प्रवचन दिया।

मुनिश्री विजयकुमार

तपस्या-उपवास १८, आयंबिल-३

वाचन—(१) आगम-२०० पृष्ठ (२) आगमेतर-३००० पृष्ठ

स्वाध्याय-५० हजार गाथा, कंठस्थ-२०० गाथा

जप—सवा लाख जप से अधिक (ॐ भिक्षु ॐ अभीराशिको नमः, नवकार मंत्र) प्रकाशित पुस्तक-मधु कलश (द्वितीय संस्करण) आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन।

विशेष-मध्याह्न का व्याख्यान।

मुनिश्री उदितकुमार

तपस्या—निरन्तर पांच विगय परिहार।

वाचन-आगम-३०० पृष्ठ, आगमेतर-१००० पृष्ठ

स्वाध्याय-६५ हजार गाथा, कंठस्थ-२०० गाथा, जप-प्रतिदिन आधा घंटा

विशेष—प्रातः आचार्यवर से पूर्व उपदेश।

मुनिश्री धर्मेशकुमार

तपस्या-उपवास-१२, तेला-१

वाचन-आगम-५०० पृष्ठ, आगमेतर-२००० पृष्ठ

कंठस्थ-५०० गाथा, स्वाध्याय-९५ हजार गाथा

जप-आधा घंटा, ध्यान १ घंटा, मौन-१ घंटा

विशेष-तत्त्वचर्चा परीक्षा, जैनतत्त्व प्रवेश परीक्षा, श्रमण प्रतिक्रमण (द्वितीय श्रेणी) परीक्षा में क्रमशः द्वितीय, तृतीय व प्रथम रहे।

मुनिश्री अरविन्दकुमार

आगम-वाचन-२०० पृष्ठ, आगमेतर-४०० पृष्ठ, कंठस्थ-१०० गाथा

स्वाध्याय-३० हजार गाथा, जप-१५ मिनट, अनुष्ठान उवसग्गहर स्तोत्र आदि।

विशेष-निबन्ध प्रतियोगिता (द्वितीय श्रेणी) में तृतीय स्थान रहे।

मुनिश्री सुमेरमल सुदर्शन

तपस्या-उपवास-४

विशेष-आगम संपादन कार्य में प्रारंभ से संलग्न ।

मुनिश्री दुलहराज

तपस्या-उपवास-१०, जप प्रतिदिन ३ घंटा, जप के अनेक प्रयोग प्रयोगात्मक अनुष्ठान ।

विशेष-साहित्य संपादन, टीपन लेखन

मुनिश्री श्रीचन्द

वाचन-८०० पृष्ठ, उपवास ५,

विशेष-विद्यार्थी मुनियों को कालू कौमुदी अध्यापन तथा विहार को छोड़कर नियमित योगासन ।

मुनिश्री राजेन्द्रकुमार

तपस्या-आयंबिल ४, उपवास-३०, ध्यान और जप-प्रतिदिन २ घंटा

कंठस्थ-४०० गाथा, वाचन-५०० पृष्ठ, स्वाध्याय १ लाख २० हजार

विशेष-भिक्षु शब्दानुशासन के द्वितीय खंड का संपादन (चालू)

मुनिश्री मुदितकुमार

तपस्या-आयंबिल-५, उपवास ११, ध्यान व जप प्रतिदिन २½ घंटा

वाचन-२०० पृष्ठ, स्वाध्याय-६६ हजार गाथा

विशेष-आगम कार्य में विशेष रूप से संलग्न ।

मुनिश्री ऋषभकुमार

तपस्या-उपवास-२, जप-आधा घंटा, कंठस्थ-१७०० गाथा

मुनिश्री लोकप्रकाश

तपस्या-उपवास-६, तेला-१, कंठस्थ-५०० गाथा, स्वाध्याय-१५०० पृष्ठ

मुनिश्री बालचंद (गंगाशहर)

तपस्या-उपवास १८, बेला ४, एकान्तर-२ महिना, मौन २ घंटा

जप-४ माला प्रतिदिन, स्वाध्याय-३०० गाथा

मुनिश्री कमलकुमार

तपस्या-वर्षीतप, बे० ६, ते० १, वाचन-२००० पृ० कंठस्थ १०० गा० स्वाध्याय-३०० गाथा प्रतिदिन, जप-१५ मिनट, अनुष्ठान-तीन महिने एक

घंटा जप

विशेष—मध्याह्न व्याख्यान।

मुनिश्री लाभरुचि

तपस्या-१५ आछ के आगार से, उप० ८, कंठस्थ-३०० गाथा, वाचन-आवश्यक सूत्र, स्वाध्याय-४०,००० गाथा, जप-१५ मिनट

मुनिश्री किशनलाल

तपस्या-उप० १५, ते० १, वाचन-५००० पृष्ठ

जप व ध्यान-२ घंटा, अनुष्ठान-तीन दिनों का मौन चौविहार तेला

साहित्य प्रकाशन—१. नमस्कार महामंत्र की प्रभावक कथाएं गतिमान प्रकाशन, जयपुर

२. प्रेक्षाध्यान—जीवन का विज्ञान, तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनूं

विशेष—प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान शिविरों में सक्रिय प्रशिक्षण

मुनिश्री धर्मेन्द्रकुमार

तपस्या-उप० २८, बे० १, ते० १, वाचन-५००० पृष्ठ

जप व ध्यान-२ घंटा, अनुष्ठान-त्रिदिवसीय विशेष जप उपक्रम

साध्वियों का विवरण

साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में वक्तृत्व कला विकास एवं संस्कार निर्माण हेतु गोष्ठियां समायोजित होती रहती हैं। भाषण व वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आदि कार्यक्रम होते रहते हैं। आलोच्य वर्ष में साध्वी प्रमुखाश्री जी ने निम्नोक्त ग्रन्थों का अध्यापन कराया—

१. सूत्रकृतांग
२. दशवैकालिक
३. उत्तराध्ययन (कुछ अध्ययन)
४. ईशावास्योपनिषद्
५. विशेषावश्यक भाष्य (चालू)
६. कठोपनिषद्
७. परम्परा की जोड़
८. तेरापंथ: मर्यादा और व्यवस्था
९. स्याद्वादमंजरी

अध्ययनरत साध्वियां—साध्वीश्री सूरजकंवर, साध्वीश्री चंदनबाला, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वीश्री कल्पलता, साध्वीश्री विमलप्रज्ञा, साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा, साध्वीश्री निर्वाणश्री आदि।

साध्वी प्रमुखाश्री द्वारा लिखित पुस्तकें—

१. दस्तक शब्दों की—आदर्श साहित्य संघ
२. बहता पानी निरमला—आदर्श साहित्य संघ

सम्पादित पुस्तकें

१. बूंद-बूंद से घट भरे (द्वितीय संस्करण)
२. अमृत-मंदेश
३. अतीत का विसर्जन: अनागत का स्वागत
४. जैन तत्त्व विद्या
५. झीणी चर्चा

विशेष विवरण

साध्वीश्री सुषमाकुमारी

कण्ठस्थ—६०० गाथा, जप—प्रतिदिन आधा घण्टा
मौन—प्रतिदिन दो घंटा, वाचन—१००० पृष्ठ

साध्वीश्री विमाश्री

कंठस्थ—४०० गाथा, स्वाध्याय—प्रतिदिन ३०० गाथा, जप—१५

मिनट

वाचन—(१) आगम—५० पृष्ठ (२) आगमेतर—१०० पृष्ठ

साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा

जप—प्रतिदिन १५ मिनट, स्वाध्याय—२१ हजार गाथा

वाचन—(१) आगम—१००० पृष्ठ (२) आगमेतर—१५०० पृष्ठ

विशेष—श्रमण प्रतिक्रमण परीक्षा, निवन्ध प्रतियोगिता में क्रमशः प्रथम व तृतीय

साध्वीश्री स्वर्णरेखा

कंठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—४१ हजार गाथा. मौन—एक घंटा

संपादित पुस्तक—अमृत कलश

साध्वीश्री वर्धमानश्री

जप—प्रतिदिन २१ माला (विभिन्न मंत्रों की), स्वाध्याय—५० हजार गाथा, वाचन (१) आगम—४०० पृष्ठ (२) आगमेतर—१००० पृ०

विशेष—जैन तत्त्व प्रवेश परीक्षा में तृतीय

साध्वीश्री विमलप्रज्ञा

जप—प्रतिदिन एक घंटा, स्वाध्याय—५०,००० गाथा

वाचन—आगम—४०० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ

विशेष—निवन्ध प्रतियोगिता में तृतीय

साध्वीश्री जिनप्रभा

जप—सवा लाख (ॐ अभीराशिको नमः), स्वाध्याय—५० हजार गाथा, वाचन—(१) आगम—४०० पृष्ठ (२) आगमेतर—१५०० पृष्ठ

संपादित पुस्तकें—(१) अमृत-कलश (२) उनकी कहानी : मेरी जुवानी

विशेष—भगवती जोड़ के प्रूफ संशोधन में संलग्न। साप्ताहिक विज्ञप्ति संपादन (अक्टूबर ८५ तक)

साध्वीश्री कल्पलता

जप—सवा लाख (पार्श्वनाथ व स्वामीजी का) प्रतिदिन ५ माला (ॐ अभीराशिको नमः)

वाचन—आगम—५०० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ

संपादन—साप्ताहिक विज्ञप्ति

साध्वीश्री निर्वाणश्री

कंठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—२० हजार गाथा

वाचन—(१) आगम—४०० पृ० (२) आगमेतर—२५०० पृष्ठ

लेखन—सोलह सतियों का चरित्र

संपादन—उनकी कहानी : मेरी जुबानी, साप्ताहिक विज्ञप्ति (नवम्बर १९८५ से)

विशेष—निबन्ध व कहानी प्रतियोगिता में क्रमशः द्वितीय व प्रथम

साध्वीश्री अनुशासनाश्री

कंठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—५१ हजार गाथा

मौन—प्रतिदिन २ घंटा, वाचन—१३०० पृष्ठ

साध्वीश्री शारदाश्री

कंठस्थ—४०० गाथा, स्वाध्याय—प्रतिदिन ३०० गाथा

जप—प्रतिदिन—आधा घंटा, मौन—दो घंटा

वाचन—आगम—५० पृष्ठ, आगमेतर—७०० पृष्ठ

विशेष—जैन तत्त्व प्रवेश परीक्षा में तृतीय

साध्वीश्री चित्रलेखा

जप—प्रतिदिन आधा घंटा, स्वाध्याय—२१ हजार गाथा, मौन—एक घंटा, वाचन—८०० पृष्ठ

साध्वीश्री अशोकश्री

जप—स्वाध्याय—प्रतिदिन तीन घंटा

खण्ड-२

अग्रगण्य—निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल

सहयोगी—मुनिश्री रणजीतकुमार, मुनिश्री सुमनकुमार*, मुनिश्री पारसकुमार

चातुर्मास—बालोतरा (राजस्थान)

यात्रा—जसोल से उदयपुर—१०५५ किलोमीटर, क्षेत्र—४५

मुनिश्री रणजीत, मुनिश्री सुमन* एवं मुनिश्री पारस ने केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट छह-छह थोकड़े कण्ठस्थ किये। मुनिश्री सुमन कुमार ने आगम तथा तात्त्विक पुस्तकें, मुनिश्री रणजीत ने व्याख्यानोपयोगी कुछ पुस्तकें पढ़ी।

तपस्या

मुनिश्री बुद्धमल—उप० ३२, मुनिश्री पारस उप० २०, वेला ३, पंचोला, सात, आठ और तेरह—एक-एक

बालोतरा चातुर्मास में भाई-बहिनों की तपस्या का विवरण इस प्रकार हैं—भाइयों में—बारी के उपवास—२, आयंबिल की बारी—३ पचरंगी—२ २/१७, ३/१६, ४/६, ५/५, ८/७, ९/५, १०/१

बहिनों में—बारी के उपवास ७, आयंबिल की बारी ७, श्रावण भाद्र में एकांतर ६३, वर्षीतप १०, बेले-बेले तप ५, तेले-तेले तप ४, नवरंगी १, पंचरंगी ५, २/५०, ३/७३, ४/३४, ५/३७, ६/७, ७/६, ८/१३, १०/२, ११/१

कार्यक्रम एवं संपर्क

जोधपुर—जाटावास में—६ मार्च को कवि सम्मेलन हुआ। इसमें स्थानीय १५ कवियों ने भाग लिया। १० मार्च को विचार परिषद्, २० मार्च को महामंदिर में जनसभा, २२ मार्च को पावटा में विचार-परिषद् तथा २४ मार्च को ईस्ट हॉनक्लब द्वारा सभा आयोजित हुई। रोटरी क्लब में मुनिश्री का प्रभावी भाषण हुआ।

३१ मार्च को सरदारपुरा में 'आज के परिप्रेक्ष में महावीर' विषय पर विचार परिषद् हुई। इसमें पूर्व न्यायाधीश छंगाणी तथा विधायक विरदमलजी सिंघी आदि ने भाग लिया।

---

*वर्तमान में गणबाहर

३ अप्रेल/महावीर जयंती के दिन अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने भाग लिया।

७ अप्रेल/सरदारपुरा में विचार परिषद्। विषय—'आज के परिप्रेक्ष में अहिंसा' जोधपुर आकाशवाणी के उपनिदेशक काजी मुहम्मद अनीस उल हक तथा प्रोफेसर कुमारी डा० रमासिंह (अध्यक्ष हिंदी विभाग, जोधपुर विश्व विद्यालय) आदि ने भाग लिया। यह कार्यक्रम १५ अप्रेल को जोधपुर आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया गया।

२० अप्रेल को जोधपुर आकाशवाणी से 'महावीर' पर मुनिश्री से किये गये प्रश्नों के आधार पर एक वार्ता प्रसारित की गई।

२३ मई से तीन दिनों का पचपदरा में बालकों का तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर लगा।

३० मई को आकाशवाणी जोधपुर से हिंदी कविताओं का प्रसारण हुआ। ये कविताएं जोधपुर में ग्रहण की गई थी।

२० जून को बालोतरा में जूनाकोट के मैदान में स्वागत समारोह समायोजित हुआ। १२ जुलाई को प्रमाण-पत्र वितरण जिला एवं सत्र न्यायाधीश मुहम्मद असगर अली ने किया।

२८ जुलाई को स्थानीय कवियों का सम्मेलन रखा गया, जिसमें हीरालाल कन्नोजिया, लालचंद 'पुनीत', रतन लाल शर्मा (एडवोकेट) जगदीश व्यास, शान्तिलाल, 'शान्त' तथा कमलेश चोपड़ा आदि ने भाग लिया।

११ अगस्त को आयोजित युवक गोष्ठी में मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। १५ अगस्त से २१ अगस्त तक अणुव्रत सप्ताह के कार्यक्रम रहे। उनमें मुख्य अतिथि तथा वक्ता के रूप में भाग लेने वालों के मुख्य नाम इस प्रकार हैं—सनातनधर्मी संत रामचरणदासजी, जिला एवं सत्र न्यायाधीश मुहम्मद असगर अली खान, डा० घनश्यामदासजी, न्यायाधीश मुहम्मद यूसुफ, धारा-शास्त्री रतनलालजी शर्मा, विधायक चंपालालजी वांठिया, जे० सी० सचिव ओमकुमार वांठिया, जे० सी० अध्यक्ष प्रेमकुमार पटवारी, पूर्व न्यायाधीश सोहनराजजी कोठारी।

१० अक्टूबर को महिला मंडल की ओर से संचालित ज्ञानशाला का उद्घाटन हुआ। उसमें प्रायः सवा सौ बालकों तथा की संख्या हुई है।

३१ अक्टूबर को नगर कांग्रेस कमेटी की ओर से मुनिश्री की सन्निधि में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम तेरापंथी सभा भवन में ही रखा गया। उसमें निम्नोक्त व्यक्तियों के भाषण हुए—नगरपालिका अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर खत्री, नगर कांग्रेस महामंत्री श्री केसरीमल जटिया, ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष श्री भंवरलाल एडवोकेट, धाराशास्त्री हस्तीमलजी, न्यायाधीश श्री मुहम्मद यूसुफ, पूर्व न्यायाधीश श्री मूलचंद राठी, नाथूलालजी शर्मा, रामनिवासी शर्मा, सोहनराजजी कोठारी आदि।

१४ नवम्बर को आचार्यश्री का जन्म दिन मनाया गया। उसी समय सभा भवन में 'तुलसी स्वाध्याय कक्ष' चालू किया गया। उसमें वकील श्री डूंगरमल कोठारी द्वारा पुस्तकें प्रदान की गई। वहां पेटी में मूल्य डालकर तथा रजिस्टर में पुस्तक तथा पुस्तक विक्रेता का नाम लिखकर स्वयं पुस्तक खरीदने की व्यवस्था भी रखी गई।

१६ नवंबर को नैनीदेवी कोठारी की स्मृति में 'स्नेहसुमन' स्मारिका का विमोचन मुनिश्री के सान्निध्य में जूनाकोट के ओसवाल भवन में हुआ। उसमें वक्ता के रूप में विशेष भाग लेने वाले व्यक्तियों के नाम निम्नोक्त है।

राजस्थान के लोक आयुक्त श्री मोहनलाल श्रीमाल, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जसराज चौपड़ा, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री मिलापचंद जैन, पूर्व विधान सभा सचिव श्री धर्मेन्द्र परिहार, मारवाड़ चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री चंपालाल सालेचा, डिस्ट्रिक्टजज सवाईमाधोपुर अमरसिंह गोधारा, डिस्ट्रिक्टजज बालोतरा श्री जुगराज वर्मा, प्रोफेसर जोधपुर विश्वविद्यालय श्री शक्तिदान, शायर तथा अध्यापक पारस रोमानी, पूर्व जिलाधीश श्री जगत्प्रकाश माथुर।

इनके अतिरिक्त पर्युषण पर्व के अष्टाह्निक कार्यक्रम घोषित क्रम से होते रहे। पट्टोत्सव तथा चरमोत्सव के कार्यक्रम भी दो-दो चरणों में संपन्न हुए। महिला मंडल तथा कन्या मंडल की समय-समय पर गोष्ठियां हुई। संगीत-गोष्ठिया तथा अन्त्याक्षरी के कार्यक्रम भी अनेक बार हुए।

पर्युषण पर्व के अवसर पर ६९ व्यक्तियों ने श्रमणोपासक साधना में भाग लिया। उनमें २८ भाई तथा ४१ बहिनें थी। उक्त अवसर पर भाइयों तथा बहिनों में पृथक्-पृथक् अखंड जप चला। 'असिआउसा' का जप लगभग ५ करोड़ हुआ।

अग्रगण्य—मुनिश्री सुखलाल

सहयोगी—मुनिश्री मोहजीत कुमार, मुनिश्री भूपेन्द्रकुमार

चातुर्मास—भीलवाड़ा (राजस्थान)

चातुर्मास में संपन्न विविध कार्यक्रम-संघीय कार्यक्रमों के अतिरिक्त रविवासरीय प्रवचनमाला व अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का समायोजन हुआ। भीलवाड़ा जिले में करीब १००० अणुव्रत परीक्षाएं हुईं। अणुव्रत शिक्षक संघ का गठन हुआ। विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा आयोजित संत समागम में करीव चार हजार की महती उपस्थिति में मुनिश्री का प्रभावी प्रवचन हुआ। निरंकारी सत्संग मंडल में भी मुनिश्री का प्रवचन हुआ। अहिंसा सार्वभौम कार्यक्रम, कवि-गोष्ठी, कला प्रदर्शनी, तत्त्व ज्ञान परीक्षाएं संपन्न हुईं।

मुनिश्री का निम्नोक्त रचनात्मक प्रवृत्तियों में अपेक्षित योगदान रहा अणुव्रत साधना सदन विद्यालय, अणुव्रत ग्रामभारती, अणुव्रत ग्राम निर्माण योजना के अन्तर्गत विनयरपुम्, आम्रावली, आदर्शपुरम, आदि गांवों में रचनात्मक कार्यक्रम हुए। छात्रों का एक शिविर भी लगा।

साहित्य—मुनिश्री सुखलाल की प्रकाशित पुस्तकें—(१) कथाओं में पवित्र प्रेम (२) यह है जीने की कला (३) अमृत क्षण (४) नैतिक क्रान्ति (५) अणुव्रत : एक परिचय। नया लेखन (१) गांव-गांव : पांव-पांव (२) जोगी तो रमता भला। मुनिश्री मोहजीत कुमार का नया लेखन—जन-जन की दृष्टि में आचार्यश्री तुलसी।

समाचार—लेख प्रकाशन—(दैनिक पत्रों में) लोक जीवन, प्रभावित, प्रातःकाल, भीलवाड़ा संदेश, जैन समाज, जय भारत, न्याय, नवज्योति, जलते दीप। साप्ताहिक पत्रों, में संघीय पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त अहिंसा, समाज-संदेश, जैन जगत्, कथालोक तीर्थंकर आदि।

अग्रगण्य मुनिश्री राजकरण

सहयोगी—मुनिश्री गुणचंद, मुनिश्री पूनमचंद, मुनिश्री गंगाराम, मुनिश्री पूर्णानन्द, मुनिश्री राजकुमार।

चातुर्मास—गंगाशहर (वीकानेर—राजस्थान)

यात्रा—२८८१ किलोमीटर, क्षेत्र—५५

सन् ८४ का फारविसगंज चातुर्मास परिसंपन्न कर मात्र ७७ दिनों में १९८५ किलोमीटर यात्रा कर जसोल मर्यादा-महोत्सव पर आचार्यवर के दर्शन किये। छह वर्षीय पूर्वोत्तर राज्यों की ९००० कि० मी० की यात्रा मुनिश्री ने

मानन्द संपन्न की है। जसोल में उनकी गंगाशहर सेवा केन्द्र की नियुक्ति हुई।

नाम	तपस्या	कंठस्थ
मुनिश्री गुणचंद	$\frac{२}{३}$	
मुनिश्री पूनमचंद	$\frac{१}{५}$	
मुनिश्री राजकरण	$\frac{१}{८६}$	६ थोकड़े
मुनिश्री गंगाराम	$\frac{१}{८४५}$, $\frac{२}{३}$	
मुनिश्री पूर्णानन्द	$\frac{१}{६६}$, $\frac{२}{८६}$, $\frac{३}{४}$	६ थोकड़े
मुनिश्री राजकुमार	$\frac{१}{६१}$, $\frac{२}{८०}$, $\frac{३}{३}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{८}{१}$	६ थोकड़े, अन्य ४०० गाथा

श्रावक-श्राविकाओं में तपस्या

$\frac{१}{५१०५}$, $\frac{२}{८७५}$, $\frac{३}{७५}$, $\frac{४}{५६}$, $\frac{५}{८३}$, $\frac{६}{८०}$, $\frac{७}{८९}$, $\frac{८}{५७}$, $\frac{९}{८३}$, $\frac{१०}{२}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१२}{२}$, $\frac{१३}{३}$, $\frac{१४}{२}$, $\frac{१५}{७}$, $\frac{१६}{१}$, $\frac{३१}{१}$, $\frac{४१}{१}$ एकान्तर—१५०

३१ श्रीमती मनोहरी आंचलिया तथा ४१ की तपस्या श्रीमती भीखी छाजेड़ ने की।

पंचसूत्रीय संकल्प ५००, मंत्र दीक्षा—२२६, सम्यक्त्व दीक्षा ८००, व्रतदीक्षा—६४, पांच थोकड़ा सीखने वाले—२०, अणुव्रत परीक्षार्थी—८०, श्रमणोपासक दीक्षा—४२, अमृत-महोत्सव पर घोषित तप-जप कार्यक्रम में जप—५० करोड़, तप—८०५१ आयंबिल।

५ मार्च को गंगाशहर प्रवेश। ३ अप्रैल को महावीर जयंती कार्यक्रम। २३ अप्रैल को अक्षय तृतीया पर २२ भाई-बहिनों द्वारा वर्षी तप का पारणा। १७ मई से मुनिश्री के सान्निध्य में तत्त्व ज्ञान प्रशिक्षण शिविर में ८२ विद्यार्थियों ने भाग लिया। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत भावात्मक एकता दिवस पर सभी धर्मों के प्रतिनिधि उपस्थित थे, जिनमें स्वामी रामसुखदासजी भी आये। मुनिश्री गंगाराम का अनशन, महाप्रयाण, शवयात्रा व स्मृति सभा के रोचक कार्यक्रम हुए। आचार्यश्री के ७२वें जन्म दिन के कार्यक्रम में पूर्व महाराजा कर्णीसिंह, विधान सभा के मुख्य सचेतक श्री बुलाकीदास कल्ला विशेष रूप से सम्मिलित हुए। समाज की सभी संस्थाओं ने अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए। वहां संस्कार केन्द्र नियमित चलता है।

मुनिश्री के संपर्क में आने वाले विशिष्ट व्यक्ति थे—स्वामी रामसुख-

दासजी, सींथल के महन्त श्री खेमारामजी, खेड़ापा के महंतजी, ग्रंथी श्री विशनसिंह, फादर बेंजमिन लोयल, जिला शिक्षा अधिकारी श्री आर० के० झा, जिला शिक्षा सहायक निदेशक श्री प्रेमराज मोहनोत ।

समाचार/लेख प्रकाशन—नवभारत टाईम्स, राजस्थान पत्रिका, जनसत्ता, राष्ट्रदूत, दैनिक युगपक्ष, गणराज्य, अधिकार, आधुनिक राजस्थान, नवज्योति, सैनानी आदि ।

समय-समय पर आचार्यवर के दर्शनार्थ अनेक विशाल संघ गये । एक मास या उससे अधिक आचार्यवर की उपासना करने वालों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) श्रीमती मनोहरी आंचलिया—५ महीना (२) श्री मुन्नीलाल सेठिया—५१ दिन (३) श्री सोहनलाल चौपड़ा—५६ दिन (४) श्री ईश्वर चन्द सेठिया—१ माह (५) श्री मोहनलाल मरोटी—१ माह (६) श्री तोलाराम सामसुखा—१ माह (७) श्रीमती रूपा सामसुखा—१ माह (८) श्री जयचंदलाल सामसुखा—१ माह (९) श्री देवचंद पुगलिया—१ माह (१०) श्री नेमचंद डाकलिया—१ माह (११) श्री हरखचंद भंसाली—३६ दिन ।

अग्रगण्य—मुनिश्री राकेश कुमार

सहयोगी—मुनिश्री हर्षलाल, मुनिश्री अभिनन्दन कुमार

चातुर्मास—सी-स्कीम, जयपुर

मुनिश्री	तपस्या	वाचन
राकेश कुमार	१/१	योग, ध्यान, मनोविज्ञान साहित्य
हर्षलाल	१/४९, आयंबिल २२	जैन साहित्य, ध्यान—एक घंटा
अभिनन्दन	१/२४, २/१ आयंबिल–२	

साहित्य-प्रकाशन—१. सत्यम् सुन्दरम् २. निर्माण के बीज ३. स्वर्ण और सुगन्ध—आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन । ये तीनों कृतियां मुनिश्री राकेश कुमार द्वारा लिखित हैं ।

कार्यक्रम—जयपुर में

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्र-संघ की ओर से हिंसात्मक तोड़फोड़मूलक प्रवृत्तियों से दूर रहने का प्रस्ताव पारित किया गया । छात्र-संघ के पदाधिकारियों व कार्य कारिणी के सदस्यों की दो गोष्ठियां आयोजित हुई, जिनमें अणुव्रत के संदर्भ में अहिंसा के महत्त्व पर विस्तार से चर्चाएं हुई ।

राजस्थान शिक्षक महासंघ की ओर से भी अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में इसी प्रकार का एक प्रस्ताव पारित किया गया। राजस्थान के सभी प्रमुख शिक्षक संगठन इस महासंघ के सदस्य हैं। शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रतिनिधियों ने आमेट मे २२ सितम्बर को कार्यक्रम में सम्मिलित होकर आचार्यवर को दोनों प्रस्ताव भेंट किये।

अणुव्रत छात्र संसद व अणुव्रत शिक्षक संसद के संगठन का भी निर्माण हुआ। दोनों ही संगठन शिक्षकों और विद्यार्थियों में अणुव्रत के प्रसार की दृष्टि से सक्रिय हैं।

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में सेन्ट्रल जेल में दो कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रवचन व प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम रहा। बन्दीजनों ने अच्छी रुचि ली।

भारत जैन महामंडल की ओर से सभी जैन सम्प्रदायों के विशेष सम्मेलन आयोजित हुए, जिनमें दिगंबर और श्वेतांबर साधु-साध्वियों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों में हमारे धर्मसंघ की समन्वय नीति पर प्रकाश डाला गया। गणधर गौतम की पच्चीसौवीं निर्वाण समिति के उपलक्ष में भी दो कार्यक्रम आयोजित हुए।

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में जयपुर के दैनिक साप्ताहिक व पाक्षिक प्रायः सभी पत्रों में आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व के संबंध में निबंध प्रकाशित हुए। नवभारत टाइम्स में लगातार चार दिनों तक बहुत विस्तार से सामग्री प्रकाशित हुई।

पर्युषण पर्व के उपलक्ष में आकाशवाणी से दो वार्ताएं प्रसारित हुई। युवाचार्यश्री द्वारा लिखित वार्ता का प्रसारण संवत्सरी के दिन हुआ। स्थानीय कार्यक्रमों के समाचार दैनिक व साप्ताहिक पत्रों में विस्तार से प्रकाशित हुए। राजस्थान पत्रिका में मुनिश्री हर्षलाल द्वारा लिखित भगवद्गीता के सूक्ष्म अक्षरों के पत्र पर निबन्ध प्रकाशित हुआ। राजस्थान पत्रिका में एक भेंट वार्ता भी प्रसारित हुई।

ग्रीन हाउस में राष्ट्रीय एकता पर एक गोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें राज्यपाल श्री ओ० पी० मेहरा ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। जैन बौद्धिक सम्मेलन का एक विशाल कार्यक्रम संपन्न हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में सेवारत बुद्धिजीवी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आचार्यश्री और युवाचार्यश्री के जैन साहित्य के अवदान पर प्रकाश डाला गया तथा वर्तमान के संदर्भ में प्रेक्षाध्यान की महत्ता पर विवेचन किया गया।

आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर अहिंसा सार्वभौम दिवस का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा, उपकुलपति श्री आर० के० अग्रवाल आदि प्रमुख लोगों ने भाग लिया। आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस के उपलक्ष में 'युवा-दिवस' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर अनेक लोगों ने अपने विचार रखे।

सी० स्कीम के निकटवर्ती अन्य संप्रदायों के अनेक परिवारों ने व्याख्यान में नियमित लाभ लिया। तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशासन और आचार व्यवस्था का उनके मन में अच्छा प्रभाव रहा। शिक्षित गुजराती बहिनें व्याख्यान में प्रतिदिन उपस्थित होती थीं। तत्त्वचर्चा व सामूहिक ध्यान के कार्यक्रम भी रहे। एक दिवसीय आध्यात्मिक प्रशिक्षण शिविर में १२५ युवकों व विद्यार्थियों ने भाग लिया।

लाडनूं से जयपुर तक अत्यधिक गर्मी में मुनिश्री की ५०० कि० मी० यात्रा हुई। विहार बड़े-बड़े हुए।

अग्रगण्य—मुनिश्री छत्रमल

सहयोगी—मुनिश्री नगराज, मुनिश्री मोहनलाल 'सुजान' मुनिश्री चौथमल 'छापर'

अग्रगण्य—मुनिश्री दुलीचन्द 'दिनकर'

सहयोगी—मुनिश्री रिद्धकरण, 'सुजानगढ़' मुनिश्री रिद्धकरण 'डूंगरगढ़', मुनिश्री पानमल।

चातुर्मास—(दोनों संघाटकों का संयुक्त) सरदारशहर (राज०)

मुनिश्री छत्रमल की श्रीडूंगरगढ़ से सरदारशहर ७० कि० मी० यात्रा हुई। मुनिश्री दिनकर सरदारशहर ही प्रवासित थे। चातुर्मास में वर्गीय अणुव्रती १५००, शीलव्रत—२ जोड़ों ने, व्रतदीक्षा—१५ तथा शिविर २ लगे। तेरापंथ स्थापना दिवस, अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि विभिन्न कार्यक्रम समायोजित हुए। पत्राचार पाठमाला में १० तथा जैन विद्या परीक्षा में ८० विद्यार्थी सम्मिलित हुए। मुनि श्री छत्रमल के सिंघाड़े में कंठस्थ ८०० गाथा, वाचन (१) आगम—१५०० पृष्ठ (२) आगमेतर—२००० पृ० पढ़े गये तथा तपस्या में उपवास ६२, वेला—२, तेला—३ हुए।

मुनिश्री	तपस्या	वाचन	जप	मौन
दिनकर	$\frac{१}{२०}$	५०० पृष्ठ	२ घंटा	१ घंटा
रिद्ध 'सु'	$\frac{१}{८}$, $\frac{२}{६}$	३०० ,,	१ ,,	१ ,,
रिद्ध 'डू'	$\frac{१}{३६}$, $\frac{२}{६}$, $\frac{३}{६}$			
	एकान्तर–३ माह		२ ,,	२ ,,
पानमल	$\frac{१}{१५}$, $\frac{३}{६}$, $\frac{३३}{१}$	८०० ,,	१ ,,	१ ,,

मुनिश्री पानमल ने विविध संकल्पों व नाना प्रयोगों से युक्त ३३ की प्रभावी तपस्या की, जिसमें मौन के साथ 'असिआउसा' जप का क्रम चला, आचार्यश्री ने उनके तप के उपलक्ष में एक सोरठा फरमाया—

तप तेतीसो तीर्ण मौन ध्यान युत पान मुनि।
अन्तर् मन उत्तीर्ण, दिनकरजी रे सन्निकट॥

पारणे के दिन आचार्यवर ने आमेट में उनके ज्येष्ठ भ्राता मुनिश्री बालचंद को ग्रास देते हुए फरमाया—

पान मुनि रो पारणो, ग्रास लियो मुनि बाल।
अन्तर् मन की एकता, कौन कठे के सवाल॥

चारों मुनियों ने क्रमशः कंठस्थ—८००, ६००, १००, ६०० गाथाएं की। स्वाध्याय क्रमश: ७००, २००, ५००, ५०० गाथाओं की की।

अग्रगण्य—मुनिश्री सुमेरमल 'सुमन'

सहयोगी—मुनिश्री जयचंदलाल 'सुजानगढ़' मुनिश्री बादरमल, मुनिश्री सुरेशकुमार, मुनिश्री रमेशकुमार

चातुर्मास—छापर-सेवाकेन्द्र (राज०)

यात्रा—१२७८* किलोमीटर, श्रमणोपासक दीक्षा—२१, अणुव्रती—१७५

जप—२ करोड़, थोकड़ा—६, प्रतिक्रमण—३

चातुर्मास में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के कार्यक्रम समायोजित हुए। प्रेक्षाध्यान का एक शिविर मुनिश्री के सान्निध्य में तथा समणी स्थितप्रज्ञा व श्री हेमन्तभाई पटेल के निदेशन में हुआ।

*चातुर्मास पर्यन्त यात्रा

अग्रगण्य—मुनिश्री ताराचंद

सहयोगी—मुनिश्री मिश्रीलाल, मुनिश्री सुमतिकुमार

चातुर्मास—आसींद (भीलवाड़ा—राजस्थान)

यात्रा—१५७० किलोमीटर, क्षेत्र—५०

मंत्र दीक्षा—२५०, श्रमणोपासक दीक्षा—४२, ज्ञानशाला का विधिवत् संचालन, स्कूलों में अणुव्रत कार्यक्रम।

विलक्षण अनशन

श्री गणेशलाल कांठेड छिहत्तर वर्षीय दृढ़ संकल्पी श्रावक थे। १२ अक्टूबर को अकस्मात् उनके पेट में दर्द उठा जो क्रमशः असहनीय बन गया, आखिर १५ अक्टूबर को ब्यावर में अमृतकौर चिकित्सालय में मेल सर्जिकल वोर्ड में भर्ती कराया गया और डॉ० आर० के० माथुर ने सफल ऑपरेशन कर दिया। १८ अक्टूबर को मध्याह्न करीब दो बजे वे मौसमी का रस पी रहे थे। पुत्र नौरतनमलजी अंगूर लाने गये। इस दौरान आचार्य भिक्षु के दर्शन का आभास हुआ। भिक्षु स्वामी कह रहे थे—कांई कर रह्यो है? श्री कांठेड—रस पी रह्यों हूं। स्वामीजी—अब कांई पी वोई करी?? कांठेड—अब आप केवो जो करूं। स्वामीजी—छोड़ दे। कांठेड—ओ तो पीलूं। स्वामीजी—पीले, पछ बस जावजीव चारों आहार पाणी रा त्याग। कांठेड—मैं आपने पछाण्यां कोनी, आप कुण हो। स्वामीजी—भीखण हूं। पुत्र अंगूर लेकर आये। श्री कांठेड ने कहा—मैंने चौविहार अनशन कर लिया है। पुत्र-पुत्रवधू, पत्नी, डॉक्टर सभी के आग्रहपूर्ण निवेदन को ठुकरा दिया। उनका असहनीय दर्द क्रमशः ठीक होता चला गया। आग्रहपूर्वक होस्पीटल से छुट्टी ली। ब्यावर में विराजित साध्वीश्री सरोजकुमारी के दर्शन कर वे आसींद पहुंचे। वहां मुनिश्री ताराचंद के दर्शन किये। २० अक्टूबर को आमेट में आचार्यवर की मंगल सन्निधि में पहुंचे, सेवा की, आचार्यवर ने भी अनशन नहीं करवाया और उसके द्वारा कृत अनशन को प्रकट करने का भी निषेध किया। पुनः आसींद आ गये। २६ अक्टूबर को मुनिश्री ताराचंद ने हजारों की उपस्थिति में आचार्यवर के निर्देश से विधिवत् अनशन का प्रत्याख्यान कराया। सदैव सैंकड़ों-सैंकड़ों लोगों का तांता सा लगा। अनशन के उपलक्ष में लोगों ने अनेक विध त्याग-प्रत्याख्यान किये।

इस ग्यारह दिवसीय चौविहार अनशन में कई दैविक उपसर्ग हुए, किन्तु भिक्षु स्वामी के साथ सब शांत होते चले गये। मुनिश्री ताराचन्द आदि

मुनियों ने अच्छा धार्मिक सहयोग दिया। आखिर ८ अक्टूबर को ११.४५ बजे महाप्रयाण कर दिया। २६ अक्टूबर को शोभायात्रा में दस हजार से भी अधिक नर-नारी मौजूद थे। अन्तिम संस्कार जैन विधि से किया गया। अनशन काल में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक संदेश भी मिले।

अनशन-काल में अनेक चामत्कारिक घटनाएं हुईं, जिनमें कुछ इस इस प्रकार है—२५ अक्टूबर, मध्याह्न श्री चांदमल व श्री रंगलाल रांका आदि स्वाध्याय करवा रहे थे। श्री गणेशलाल जी कांठेड़ बोले—वे (पारसजी, सोहनजी, जो आचार्यप्रवर को निवेदन करने गये थे) आमेट पहुंच गये हैं। गुरुदेव के दर्शन कर लिये हैं, किंतु अभी तक बातचीत नहीं हुई है। तत्काल चांदमलजी ने टाईम नोट कर लिया। उस समय घड़ी में १.४० हुए थे। कांठेड़ जी के सम्मुख रात्रि में चर्चा चल रही थी कि अभी तक वे क्यों नहीं पहुंचे? क्या कारण हुआ? कांठेड़ जी ने कहा—वे सभा भवन में पहुंच गये हैं और संतों को समाचार सुना रहे हैं। इतने में श्री शोभालाल आये और सूचना दी कि पारसमल जी और सोहन जी आ गये हैं। संतों के दर्शन कर यहां आने ही वाले हैं। जब वे दोनों कांठेड़ जी के घर पहुंचे तब लोगों ने पूछा—आप आमेट कितने बजे पहुंचे? उन्होंने कहा—१.४० बजे। आचार्यवर की सेवा कब हुई? पारस जी—१ घंटे बाद। जो बातें कांठेड़ जी ने बताई, वे सभी सत्य साबित हुईं।

२६ को रात्रि ८.३० बजे कई श्रावकों की उपस्थिति में श्री कांठेड़ जी ने छह बातें कही—

१. दो दिन बाद मेरा काम सिद्ध हो जायेगा।

२. मैं भीखणजी स्वामी की सेवा में जाऊंगा।

३. उदयपुर में होने वाला मर्यादा-महोत्सव ऐतिहासिक एवं विशेष महत्त्वपूर्ण होगा।

४. आचार्य प्रवर अभी और तपेंगे तथा दुनिया में इनका बहुत यश फैलेगा एवं साथ-साथ विरोध भी चलेगा।

५. परिवार वालों को विशेष शिक्षा दी कि भिक्षु शासन बड़ा जयवंता है, इस पर पूर्ण श्रद्धा रखना।

६. अमृत-महोत्सव विरोध के बावजूद सफल होगा।

२७ को मध्याह्न मुनिश्री मिश्रीलाल कांठेड़ जी को स्वाध्याय कराने गये। पहुंचने में विलम्ब हो गया। वे बोले—संत पधारे नहीं। एक भाई संतों को लाने के लिए जाने लगा तब उन्होंने कहा—तुम जाकर क्या करोगे, संत आ ही रहे हैं। भाई सीढ़ियों से नीचे उतरा ही था कि संत सामने मिल गये। वह आश्चर्यचकित रह गया।

तपस्या

मुनिश्री ताराचंद—१/२, ३/१ आयंबिल—१५

मुनिश्री मिश्रीलाल—१/५८, २/८, ३/२७, ४/१३, ५/५

मुनिश्री सुमतिकुमार—१/२२, ३/१ आयंबिल—१०

श्रावक-श्राविकाओं में—१/३००८, २/८००, ३/३८, ४/१२, ५/२०, ६/१, ८/१२

एक मासिक सेवार्थी—(१) श्री सोहनलाल वाफणा (२) श्री भूरालाल रांका (३) श्री गणेशलाल रांका (४) श्री पन्नालाल दूगड़ (५) श्री तेजमल कांठेड

मुनिश्री मिश्रीलाल की तपस्या पर प्रदत्त विशेष संदेश—

तपस्या हमारे धर्म संघ के भवन की मजबूत नींव है। हमारे साधु-साध्वियों ने अतीत में इसको बहुत सुदृढ़ बनाया है। वर्तमान में भी अनेक साधु-साध्वियां तपस्या कर रहे हैं। अतीत की तरह इस नींव को गहरी से गहरी करते जा रहे हैं। अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में आसींद (मेवाड़) में मुनि ताराचंदजी के सान्निध्य में मुनि मिश्रीमलजी विलक्षण तप कर रहे हैं, वे पहले तेले-तेले की तपस्या करते थे, फिर चोले-२ और वो इस वार पंचोले-पंचोले करके इस तप यज्ञों में एक नयी कड़ी जोड़ रहे हैं। तप के साथ उनका स्वावलंबन स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि का प्रयोग स्वयं की कर्म निर्जरा के साथ हमारे धर्मसंघ की अप्रतिम प्रभावना में योग देने वाला है। ऐसे तप अनुकरणीय हैं। मैं सोचता हूं कि अपना स्वाध्याय और शारीरिक शक्ति को ध्यान में रखकर के तपस्या की जाये।

आमेट —आचार्य तुलसी

२८-६-८५

मुनि ताराचंदजी की सन्निधि में तपस्वी व्यक्तियों का अभिनन्दन किया जा रहा है। तपस्या स्वयं एक अभिनन्दन है। मुनिश्री मिश्रीलाल जैसे तपस्वी साधु हैं, वहां तपस्या स्वयं अभिनंदित हो जाती है। स्वाध्याय, ध्यान युक्त तपस्या बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार की तपस्या को प्रोत्साहन मिलना

चाहिये । आसीन्द में श्रद्धालु भाई-बहिनों ने जो तपस्या की है वह अवश्य ही प्रशंसनीय है ।

आमेट युवाचार्य महाप्रज्ञ

२८-६-८६

अग्रगण्य—मुनिश्री बच्छराज

सहयोगी—मुनिश्री बालचंद, मुनिश्री देवेन्द्रकुमार

चातुर्मास—भटिण्डा (पंजाब)

यात्रा—१००० *किलोमीटर, क्षेत्र-३०

पंचसूत्री-संकल्प—३००, मंत्र दीक्षा—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—१५

व्रत दीक्षा—१२, शीलव्रत-१, जैन विद्या परीक्षा-४१ थोकड़ा कंठस्थ-६

तपस्या—(श्रावक-श्राविकाओं) १/३०, ८/१

मुनिश्री बालचंद १/२३, ३/४, ३/६ निर्धारित थोकड़े सीखे ।

मुनिश्री देवेन्द्र—१/४६, २/१, ३/१

अग्रगण्य—मुनिश्री हनुमानमल (सरदारशहर)

सहयोगी—मुनिश्री शुभकरण (तारानगर) मुनिश्री गणेशमल "लाछूड़ा"

चातुर्मास—रीछेड़ (उदयपुर, राज०)

श्रमणोपासक दीक्षा—३, एक मास या उससे ऊपर सेवा करने वाले

१. श्री भंवरलाल सिंघवी	२. श्री ताराचंद सिंघवी
३. श्री पृथ्वीराज हिंगड़	४. श्री चंपालाल सिंघवी
५. श्री तिलोकचंद सिंघवी	६. श्री हस्तीमल कोठारी
७. श्री मोहनलाल कोठारी	८. श्री किशनलाल कोठारी
९. श्री चुन्नीलाल कोठारी	१०. श्री भंवरलाल राठौड़
११. श्री भीमराज कच्छारा	१२. श्री कुशलमल कोठारी
१३. श्रीमती पानी धींग	

अग्रगण्य—मुनिश्री पूनमचंद (गंगाशहर)

सहयोगी—मुनिश्री देवीलाल, मुनिश्री अमित प्रकाश

चातुर्मास—मेरीन ड्राईव-बंबई

यात्रा—जसोल से बंबई-*१०६६ कि० मी०, क्षेत्र-६१

तपस्या—श्रावक-श्राविकाओं में १ हजारों, २ सैंकड़ों ३/१६, ४/६, ५/२, ६/२, ७/२, ८/१५, ९/५, १०/३, १६/१

कार्यक्रम-मंत्र दीक्षा, प्रमाण पत्र वितरण समारोह, त्रिदिवसीय प्रेक्षा ध्यान शिविर, अमृत-महोत्सव का विशेष समारोह, चन्दनवाड़ी म्युनिसीपल बोर्ड की स्कूल में मुनिश्री का प्रवचन, २६ सितंबर को हिन्दूजा हॉल में भारत जैन महामंडल की ओर से सामूहिक क्षमायाचना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें मुनिश्री के अलावा मंदिर-मार्गी मुनिश्री धुरन्धर विजय, स्थानकवासी साध्वीश्री प्रेमवती उपस्थित थीं। कार्यक्रम संयोजन श्री चन्दनमल "चांद" ने किया। आचार्यवर के जन्म दिन के विशेष कार्यक्रम में हिन्दी ब्लिट्ज के संपादक श्री नंदकिशोर नौटियाल, प्रोफेसर राजम् नटराजन ने भाग लिया। बंबई महिला मंडल ने अमृत-महोत्सव संदर्भ में विकलांग व्यक्तियों को जयपुर पैर प्रदान किये।

मुनिश्री देवीलाल व मुनिश्री अमित प्रकाश ने निर्धारित पांच थोकड़े कण्ठस्थ किए।

अग्रगण्य—मुनिश्री मोहनलाल 'शार्दूल'
सहयोगी—मुनिश्री सुबाहु कुमार, मुनिश्री मधु कुमार
चातुर्मास—बारडोली (गुजरात)
यात्रा—१५००* किलोमीटर, क्षेत्र-७५
अणुव्रती—३५, वर्गीय अणुव्रती-५०, मंत्र दीक्षा-४०, सम्यक्त्व दीक्षा-३०
प्रतिक्रमण—२, जैन विद्या—५४, पंच सूत्री संकल्प—५००
संतों में तपस्या—मुनिश्री मोहन—१/२, मौन—प्रतिदिन एक घंटा, ध्यान १/२ घंटा
मुनिश्री बाहु—१/१०, ३/२ जप—"अभीराशिको नमः" का सवा लाख, मुनिश्री मधु—१/६, ३/८
श्रावक समाज में आयंबिल ५३, बारियां ७२, एकान्तर-१० पचरंगी-२
१/३००, २/२१, ३/१५, ४/४, ५/१५, ६/१, ७/१, ८/४२, ९/१, १०/१, १०/५, १६/२, २१/१
मुनिश्री मोहनलाल की कृतियों का प्रकाशन—१. गीतमाला (द्वितीय संस्करण) २. रूपहली कथाएं (तृतीय संस्करण)

कार्यक्रम

बैंगलोर में २५ नवंबर को तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा प्रकाशित १९८५ की डायरी विमोचन तथा मुनिश्री का विदाई समारोह वल्लभ निकेतन में संपन्न हुआ। भूतपूर्व उपराष्ट्रपति बी० डी० जत्ती ने मुनिश्री को डायरी भेंट की। विधान सभा के सदस्य श्री नारायण राव तथा प्रसिद्ध साहित्कार

अब्दुल कादर, सीताशरण शर्मा आदि ने भावभीनी विदाई दी। संयोजन मनोहर "भारतीय" ने किया।

हिरियुपुर—मुनिश्री के सान्निध्य में १३ सितंबर को युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी का दीक्षा-दिवस "युवा दिवस" के रूप में मनाया गया, जिसमें न्यायाधीश नारायण गोडे एवं डॉ० एम० एन० श्री पेटी ने भाग लिया।

चिकोड़ी-चिकोड़ी कॉलेज एवं हायर सैकण्डरी स्कूल में प्राध्यापकों, विद्यार्थियों में मुनिश्री का प्रवचन हुआ। अणुव्रतों की प्रेरणा दी।

इचलकरंजी—२८ जनवरी को मर्यादा-महोत्सव समारोह संपन्न हुआ। श्रीमती सरोजनी वा खंजीरे—चेयरमेन महिला सहकारी बैंक लि० आमंत्रित थी। जयसिंहपुर के लोग बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

जयसिंहपुर—१० मार्च को "जीवन जीने की कला" विषय पर एक अणुव्रत गोष्ठी व जैन हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन भूतपूर्व नगराध्यक्ष डा० एस० के० पाटिल ने किया। प्रदर्शनी का अवलोकन वकील, डॉक्टर, अध्यापक आदि ने किया।

सिरुवल—दोपहर के समय अध्यापक गोष्ठी हुई। काफी देर तक प्रश्नोत्तर चले। जयसिंहपुर और पूना के मार्गवर्ती कई न्यू इंग्लिश स्कूलों में भाषण हुए। बच्चों ने मद्यपान न करने की प्रतिज्ञा की।

पूना—स्वागत कार्यक्रम तेरापंथी सभा-भवन में हुआ। दो दिन बाद डॉ० संचेती इन्स्टीट्यूट में कारणवश १५ दिन का प्रवास रहा। आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित यह अस्थि चिकित्सा का बहुत विख्यात चिकित्सालय है। डॉ० कांतिलाल संचेती के पास पचासों डाक्टर डॉक्टरनियों का स्टाफ है। पूरे स्टाफ से अच्छा संपर्क हुआ। प्रेक्षाध्यान-अणुव्रत आदि का विस्तृत परिचय दिया गया। डॉ० साहब का खूब सहयोग रहा। २४ अप्रैल को इन्स्टीट्यूट के लाइब्रेरी हॉल में "जैन हस्तकला प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया। डॉ० साहब का परिवार, स्टाफ, सैकड़ों मरीजों और शहर के अनेक व्यक्तियों ने इसका अवलोकन किया। पूरी व्यवस्था स्टाफ के द्वारा की गई। स्टाफ और लोगों के निवेदन पर प्रदर्शनी दूसरे दिन भी रखी गई।

बंबई—२३ को मुनिश्री बंबई पहुंचे। २६ मई को खार में साध्वीश्री सूरजकुमारी से मिलन हुआ। दिनांक २ जून को बंबई के प्रसिद्ध ताराबाई—हाल में "राष्ट्रीय एकता के सूत्र" विषय पर एक विचार गोष्ठी न्यायमूर्ति

आसकरणजी तातेड़ की अध्यक्षता में हुई। प्रमुख अतिथि के रूप में नव निर्वाचित महापौर छगन भुजबल तथा प्रवक्ता के रूप में नगर पार्षद श्री विनोद-गांधी ने भाग लिया।

नवसारी—२३ जून को रात्रि में कॉटन मिल्स के अधिकारियों के बीच प्रवचन हुआ।

बारडोली—दिनांक ३० जून को चातुर्मास प्रवेश पर स्वागत समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें नगरपति श्री प्रबोधभाई व समाज सेवी भगवती भाई पारिख ने स्वागत किया। संयोजन श्री घीसुलाल बाफना ने किया।

अणुव्रत सप्ताह—५ अगस्त को देश के प्रख्यात स्वराज्य आश्रम में उद्घाटन हुआ। मर्यादा मेटल इन्डस्ट्री हाल, गोविन्दाश्रम, जलाराम प्रार्थना समाज मंदिर आदि सार्वजनिक स्थानों में सप्ताह के कार्यक्रम संपन्न हुए।

स्वराज्य आश्रम के मंत्री श्री उत्तमभाई, समाज सेवी भगवती भाई, स्वामी विवेकानन्द ध्यान केन्द्र की संचालिका डॉ० कलाबहन आदि ने भाग लिया।

जन-सम्पर्क

इचलकरंजी—२३ जनवरी को सायंकाल विहार कर इचलकरंजी आ रहे थे। मार्ग में संविग्न संप्रदाय के आचार्यश्री मित्रानन्दजी से मिलन हुआ। उन्हें दूसरे गांव जाना था, फिर भी वे रुके हुए थे। मिलन के प्रसंग पर दोनों संप्रदाय के काफी लोग थे।

कार्यक्रम पूर्व नियोजित था। मुनिश्री को आचार्यश्री मित्रानंदजी ने कहा—'आपका संघ बहुत प्रगतिशील और कर्मठ है। मैं आचार्यश्री तुलसी तथा युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के ग्रन्थ बराबर पढ़ता हूं। जैन विश्व भारती से प्रकाशित तथा योग का काफी सारा साहित्य मैंने मंगाया है।' बहुत सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हुआ।

योगाश्रम के स्वामी योगानंदजी से कई बार वार्तालाप हुआ। वे योगासनों के अच्छे विज्ञाता हैं। इन्होंने दो बार जनता के सामने अधर में उठने का भी प्रदर्शन किया है। सशक्त स्नायु, सघन संकल्प और श्वास प्रक्रिया के आधार पर ऐसा किया जाना संभव होता है। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा—मैं इस प्रयोग की अधिक सार्थकता नहीं समझता।

जसर्सिहपुर—विधायिका सरोजिनी देवी खंजिरे, डॉ० सुभाषचन्द्र आकोले, डॉ० विजय एन० पाटिल होम्योपैथिक, पूना—आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी की शिष्या आदर्श ज्योति जी आदि ने मुलाकात की और प्रेक्षाध्यान प्रक्रिया की जानकारी चाही। वे दोपहर में तीन-चार दिन लगातार प्रक्रिया अभ्यास के लिए आती रहीं।

हस्तकला प्रदर्शनी को भी पूर्ण सामग्री बड़े गौर से देखी और कहा—आपके संघ में कला का उत्तम विकास हो रहा है। अन्य भेंट कर्त्ता संस्कृत शारदा पत्र के संपादक—डॉ० चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी, योगकेन्द्र के संचालक श्री आयंगर, डा० एस० पी० लुणावत, डॉ० एस० डी० मेहता (बंबई), वारडोली के डॉ गांधी, गवर्नर, लायन्स क्लब, दन्त विशेषज्ञ—डॉ० रमेश, डॉ० लक्ष्मी गांधी, डॉ० उर्वी, प्रो० अश्विनी भाई, गोविन्द-आश्रम के संस्थापक ११४ वर्षीय चिदानंद स्वामी, कबीर वाणी (गुजराती मासिक) के संपादक श्री चंपक भाई, समाज क्रांति के संपादक—मांगीलाल देरासरिया, मिरज-एक्सरे विशेषज्ञ मोहन, अस्थि विशेषज्ञ डॉ० एम० आर० कुलकर्णी, अस्थि विशेषज्ञ डॉ० कोरे।

डॉ० कोरे का पूरा परिवार बहुत श्रद्धावाला है। तीन-चार बार पूरे परिवार ने दर्शन किये। विभिन्न प्रकार की आध्यात्मिक जिज्ञासाएं की। अपना पूरा चिकित्सालय मुनिश्री को दिखाया।

आचार्यश्री तुलसी संदेश

प्रसंग—दक्षिण गुजरात तेरापंथी श्रावक सम्मेलन एवं तेरापंथी सभा भवन के उद्घाटन समारोह पर

वारडोली दक्षिण गुजरात का एक केन्द्र है। सरदार वल्लभभाई पटेल की जो कर्मभूमि है। इस वर्ष वहां के श्रावकों के अत्यन्त विनय पूर्वक अनुरोध से मुनि "शार्दूल" का चौमासा करवाया गया।

उस चौमासे में संतों ने काफी श्रम किया। उन्होंने हमारे शासन की गरिमा बढ़ाने का काफी प्रयत्न किया। वारडोली व आस-पास के क्षेत्रों में धर्म की अच्छी जागरणा हुई है। अभी वहां दक्षिण गुजरात तेरापंथी श्रावक सम्मेलन किया जा रहा है, उसमें कुछ बातों पर चिंतन होना चाहिए।

१. समाज संगठन सुन्दर होना चाहिए।

२. सामाजिक कुरूढ़ियों व बेकार रीति-रस्मों को मिटाने का प्रयत्न किया जावे।

३. देखावा, प्रदर्शन, अपव्यय को मिटाकर समाज में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा कैसे हो, इसका चिंतन किया जावे।

४. अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में पांच संकल्पों व चार सूत्री कार्यक्रमों का अधिक से अधिक प्रसार हो।

५. समाज का जो सभा भवन बना है उसको लेकर समाज का कोई व्यक्ति आग्रह-विग्रह नहीं करे, इन बातों को लेकर आग्रह-विग्रह करना अनुचित है। समाज में हर व्यक्ति को अपनी बात करने का अधिकार है, किंतु किसी प्रकार के एकांकी आग्रह की जरूरत नहीं है।

हमारे संत वहां हैं वे जैसी दृष्टि दें, उसको मानकर काम करें। संघ प्रभावक कुसुम भाई जैसे व्यक्ति जहां हो उनके इंगित व संकेत का पालन करना ही समाज के हित की चीज होती है।

विशेष धार्मिक उत्साह बढ़ता रहे।

३१ अक्टूबर, ८५ —आचार्य तुलसी
आमेट

अग्रगण्य—मुनिश्री धर्मचंद "पीयूष"
सहयोगी—मुनिश्री महेशकुमार, मुनिश्री दर्शनकुमार
चातुर्मास—बैंगलूर (गांधीनगर व यशवंतपुर) कर्नाटक
यात्रा—१४६५ किलोमीटर *(हुबली से बैंगलूर), क्षेत्र-५८
वर्गीय अणुव्रती—२९ विद्यालयों के हजारों विद्यार्थियों व शिक्षकों ने वर्गीय अणुव्रत स्वीकार किए, पंच सूत्री संकल्प-६ हजार,

मंत्र दीक्षा—२५०, गुरुधारणा—१०, शीलव्रत—३, प्रेक्षाध्यान शिविर—३, श्रमणोपासक दीक्षा—९, तपस्या—मुनिश्री धर्मचंद—उपवास—२२ श्रावक—श्राविकाओं में—१/१३००, २/९४१, ३/२४१, ४/२९, ५/४९, ६/६, ७/३, ८/६१, ९/१८, १०/४, ११/२४, १३/२, १५/५, १६/१, २१/१, ३०/५ आयंबिल—१००० बेले-बेले—९, वर्षीतप—१८, दो महीने एकान्तर—१०१, बारी के उपवास—६६, अन्य मास खमण करने वाले—१. कुमारी मंजु संचेती (१९ वर्ष) पुत्री श्री घेवरचंद संचेती २. श्रीमती उमराव कोठारी, धर्मपत्नी श्री हेमराज कोठारी ३. श्रीमती लक्ष्मी सामसुखा ४. श्री रूपचंद भंसाली ५. श्रीमती पानी ओस्तवाल धर्मपत्नी श्रीभंवरलाल ६. श्रीमती संतोषदेवी, धर्मपत्नी श्री उत्तमचंद दक।

अमृत-महोत्सव संदर्भ में भाई-बहिनों ने ढ़ाई करोड़ जप व ३,५०,००० पृष्ठों के स्वाध्याय का संकल्प लिया।

कार्यक्रम

१. मर्यादा महोत्सव—मिघनूर (कर्नाटक) मुनिश्री के सान्निध्य में तथा तोन्टदार्य मठ गदग (कर्नाटक) के जगद्गुरु श्री सिद्धलिंगेश्वर महास्वामी, धर्मगुरु श्रीकर वसैय्या स्वामी (हस्तरेखा विशेषज्ञ) विधायक मल्लाप्पा, डा० निजामुद्दीन, म्युनिसिपल पार्टी के चेयरमेन आदि की उपस्थिति में मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम संपन्न हुआ।

२. महावीर जयंति— हिरीयूर महावीर जयंती का प्रान्तीय स्तर पर आयोजन हुआ, जिसमें बीस क्षेत्रों के भाई-बहिनों का आगमन हुआ। विशेष अतिथि के रूप में आर० एच० गुड़वाला एवं कर्नाटक स्टेट चेयरमैन माइनारीटिंग कमीशन बेंगलोर एम० आर गुडवाला, के० बी० दोंडेप्पा। दोपहर में आचार्यश्री तुलसी अमृत महोत्सव के संबंध में विचार चर्चा।

३. अमृत महोत्सव—चिकमंगलोर में २८ अप्रैल प्रातः आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव का प्रथम चरण, प्रातः अमृत-यात्रा, तत्पश्चात् रोटरी हाल में विशाल आयोजन हुआ। आयोजन में विधायक बी० शंकर, कर्नाटक विधान परिषद के उपाध्यक्ष एस मल्लिकार जुनैय्या। जिलाधीश पार्थसारथी, एम० पी० एस० एस० पावटे, जीवराज शास्त्री आदि ने भाग लिया।

४. अणुव्रत सप्ताह—पन्द्रह अगस्त से प्रथम कार्यक्रम गांधी स्कूल सेवाश्रम, गांधी भवन, कुमारा पार्क, टाउन हाल भारतीय संस्कृति विद्यानगर तथा तेरापंथी सभा भवन में विशेष आयोजन हुआ, जिसमें अनेक महानुभावों ने भाग लिया। पन्द्रह अगस्त की रात्रि को शालीन कविसम्मेलन, २१ अगस्त को पत्रकार सम्मेलन हुए।

५. अमृत महोत्सव का दूसरा चरण— अनुशासित शालीन लगभग चार किलोमीटर लंबी अनुशासित शालीन व भव्य रैली निकाली। टाउन हाल में विराट आयोजन हुआ। सूचना एवं प्रसार मंत्रीश्री जीवराज अल्वा मुख्य अतिथि थे। उपस्थिति लगभग १५०० लोगों की थी।

इसी दिन रात्रि को तेयुप बेंगलोर द्वारा—आचार्य तुलसी व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर प्रतियोगिता तथा ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

६. दो अक्टूबर गांधी जयंति के अवसर पर राजभवन में कर्नाटक राज्यपाल के आमंत्रण पर सर्वधर्म सम्मेलन सभा में मुनिश्री का विशेष

धींग, मोरियावाड़ी क्षेत्र में मूलतः असमी जनता का संपर्क बहुत लाभदायी सिद्ध हुआ। असमी लोग अधिकांशतः श्री शंकरदेव के अनुयायी हैं। वे मूर्तिपूजा नहीं करते। उनके सिद्धांत जैन धर्म से काफी मिलते हैं। उनकी धर्मोपासना के लिए नामधर (धार्मिक स्थान) होते हैं। नामधर में भी कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनका व्यापक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार का अवसर असम में प्रथम था। काफी बड़ी संख्या में लोगों ने व्यसन-मुक्ति के संकल्प स्वीकार किए। प्रवचन तथा व्यक्तिगत संपर्क के द्वारा उनका संपर्क बराबर बना रहा।

जोरहाट में अमृत-महोत्सव के विराट् कार्यक्रम का गरिमापूर्ण प्रभाव समग्र असम की धरती पर हुआ।

अमृत-महोत्सव के लिए निर्धारित राष्ट्रीय संकल्पों के व्यापक प्रसार के लिए सप्त रविवारीय कार्यक्रमों की आयोजना की गई। जोरहाट के बौद्धिक और आभिजात्य वर्ग ने इसमें विशेष रूप से भाग लिया। भावात्मक एकता दिवस के अवसर पर विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। पूरे वर्ष में प्रायः सर्वत्र बौद्धिक और विशिष्ट व्यक्तियों का संपर्क रहा। उनमें वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रिंसिपल, सामाजिक कार्यकर्ता आदि प्रमुख हैं। विशेष उल्लेखनीय नामों में असम की भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती अनवरा तैमुर, असम के शिक्षामंत्री श्री एम० सी० शर्मा कामरूप जिला के डिप्टी कमिशनर श्री प्रतुल शर्मा, शिलोंग (मेघालय) के डिप्टी कमिश्नर, गोहाटी नगर निगम के उपाध्यक्ष श्री जे० के० जैन, सनातन धर्म के प्रसिद्ध संत स्वामी रामदासजी आदि हैं।

विशिष्ट व्यक्तियों के उद्‌गार

श्रीमती अनवरा तैमूर ने कहा—"देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा में आचार्यश्री तुलसी के अणुव्रत आंदोलन का महत्त्वपूर्ण योगदान है।"

असम के शिक्षामंत्री श्री एम० सी० शर्मा ने कहा—"शिक्षा में जीवन-विज्ञान की बात आचार्यश्री तुलसी का मूलस्पर्शी दृष्टिकोण है। इसके माध्यम से उनका धर्मसंघ हमारा काम कर रहा है। हम भी शिक्षा में जीवन-विज्ञान के विषय को जोड़ने का प्रयत्न करेंगे।"

कामरूप के डिप्टी कमिशनर श्री प्रतुल शर्मा ने आचार्यश्री तुलसी, तेरापंथ, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और साधु-साध्वियों की हस्तकला को देखकर

कहा—"मेरे जीवन में आज के दो घंटे का समय अविस्मरणीय रहेगा। मैं महसूस करता हूं कि यदि वह संपर्क नहीं होता तो एक महान् उपलब्धि से मैं वंचित हो जाता।"

शिलोंग के डिप्टी कमिश्नर ने जैन धर्म, अणुव्रत, आचार्यश्री तुलसी के संबंध में जानकारी प्राप्त करके कहा—"ऐसे संतपुरुष ही संसार को विनाश से बचा सकते हैं।"

गौहाटी नगर-निगम के उपाध्यक्ष श्री जे० के० जैन ने कहा—"मुझे प्रसन्नता है कि एक जैनाचार्य समूचे राष्ट्र और समाज का पथदर्शन कर रहे हैं। वे समूचे राष्ट्र और समाज की आशा और आस्था के केन्द्र हैं।"

स्वामी रामदासजी ने कहा—"उदयपुर से मुझे समाचार मिलते रहते हैं कि आचार्यश्री तुलसी उस क्षेत्र में प्रभावशाली कार्य कर रहे हैं।

जैन संस्कारों को पुष्ट करने के लिए प्रायः सभी क्षेत्रों में ज्ञानगोष्ठी का क्रम चलाया गया, जो बहुत उपयोगी रहा।

संस्मरण : प्रेक्षा से समाधान

लंका (असम) में जैन साधुओं के आगमन का प्रथम अवसर था। जैन-जैनेतर सभी वर्ग के लोग अत्यन्त श्रद्धा से सभी कार्यक्रमों में भाग ले रहे थे। सरदार मोहनसिंह के परिवार को लंकावासियों में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त है। उनका पूरा परिवार संत समागम का लाभ ले रहा था। सरदार मोहन सिंह और उनकी धर्मपत्नी ने एक बार पृथक् समय लेकर मुनिश्री की उपासना की। कई प्रकार की पारिवारिक उलझनों ने उनके दिमाग में काफी तनाव था। उन्होंने मुनिश्री से तनाव-मुक्ति का उपाय पूछा। मुनिश्री ने श्वास-प्रेक्षा की विधि बतलाते हुए उनका मार्गदर्शन किया। उन्होंने उसका प्रयोग किया और तनाव-मुक्ति के साथ अनेक उलझनों और समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लिया। संत समागम और प्रेक्षा के प्रति उनकी आस्था बढ़ गई।

प्रेक्षा से व्यसन-मुक्ति

नौगांव में एक व्यक्ति कभी संतों के संपर्क में नहीं आता था। एक दिन अकस्मात् मुनिश्री से उसका साक्षात् हो गया। मुनिश्री ने संपर्क में नहीं आने का कारण पूछा। उसने अपना दिल खोलते हुए कहा—जब आपने पूछ ही लिया तो मैं साफ-साफ बतला देता हूं। मेरे जीवन में अनेक प्रकार के व्यसन हैं। तंबाकू मैं पीता हूं। जर्दा, खैनी मैं खाता हूं। शराब का प्रयोग मैं

कर लेता हूं । जुआ मैं खेलता हूं और भी अनेक प्रकार की बुरी आदतें हैं । यद्यपि दूसरों को इनका पूरा पता नहीं है, किन्तु मैं मानसिक रूप से लाचार हूं । इन्हें छोड़ नहीं सकता । मन में यह संकोच होता है कि आपके पास आऊंगा तो आप कोई न कोई नियम-संकल्प लेने के लिए कहेंगे । मैं नियम निभा नहीं सकता । व्यसनों में इतना गहरा फंसा हूं कि वे मुझे भले ही छोड़ दें, पर मैं तो इस जन्म में इन्हें नहीं छोड़ सकता ।

मुनिश्री ने कहा—"मैं तुम्हें कोई भी व्यसन छोड़ने के लिए नहीं कहूंगा तब तो तुम संपर्क रखोगे ? उसने कहा—क्या आप मुझे बुराई छोड़ने के लिए नहीं कहेंगे ?

मुनिश्री ने कहा—जब तुम कोई भी व्यसन नहीं छोड़ सकते, तो मैं सिर्फ दबाव देकर क्या करूंगा ? हां, तुम इतने काम करते हो, तो मैं तुम्हें एक काम और करने के लिए कहूंगा ।

उसने आश्चर्य से पूछा—कौनसा काम ?

मुनिश्री ने कहा—"तुम नियमित श्वास-दर्शन का प्रयोग किया करो ।

उसने ईमानदारी से प्रयोग किया । कुछ दिन पश्चात् वह बोला—"क्या कारण है कि आजकल न तो तंबाकू पीने का मन होता है, न जरदा आदि खाने में रुचि होती है, न शराब की बोतल छूने का जी करता है । पहले जुए में सारी-सारी रात बीत जाती थी, पर अब पता नहीं क्या हो गया उधर मुंह करने को भी मन नहीं होता ।

मुनिश्री ने कहा—तुम कहते थे न कि इस जन्म में तो व्यसन नहीं छूट सकते ।

वह बोला—मुझे स्वयं आश्चर्य हो रहा है कि यह सब कैसे हो गया ?

मुनिश्री ने कहा—श्वास-प्रेक्षा से भीतर में रूपान्तरण होने लगता है । उसी का परिणाम है कि विजातीय तत्त्व छूट जाते हैं ।

निरन्तर अभ्यास से वह सर्वथा व्यसन मुक्त हो गया । प्रेक्षाध्यान के प्रति उसकी आस्था बढ़ गई ।

युवाचार्यश्री का संदेश

मुनि गुलाबचंद जी ने अपने सहवर्ती दो साधुओं के साथ सुदूर प्रदेश में लंबी-लंबी यात्राएं कीं । उन्होंने अच्छा कार्य किया है । लोगों को धर्म की दिशा में बहुत प्रेरित किया है ।

हमारा उद्देश्य "तिन्नाणं तारयाणं" अर्थात् अपनी साधना चले, वह पहली बात है, और साथ-साथ लोगों के लिए भी हम कुछ करें, उन्हें भी मार्ग दिखाएं। ये दोनों कार्य चलें। इससे अपना कल्याण, जनता का कल्याण और शासन की गरिमा बढ़ती है।

उन्होंने ऐसा कार्य किया है। शासन की सेवा की है। लंबे समय तक सुदूर प्रदेशों में रहे हैं। वे और अधिक इसको विकसित करें।

आमेट —युवाचार्य महाप्रज्ञ

२६ अगस्त, १९८५

अग्रगण्य—मुनिश्री विनयकुमार "आलोक"

सहयोगी—मुनिश्री कुलदीप कुमार, मुनिश्री तत्त्वरुचि

चातुर्मास—चंडीगढ़, (केन्द्र शासित)

तपस्या—मुनिश्री "आलोक"—उप-४४, बेला-२, तेला-३।

अणुव्रती हजारों बने। चंडीगढ़ प्रवास के दौरान पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री मुनिश्री के संपर्क में आये। विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति विविध कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए। अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंदसिंह लोंगोवाल, अकाली दल के वरिष्ठ नेता श्री सुरजीतसिंह बरनाला (वर्तमान में मुख्यमंत्री), पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रकाशसिंह बादल, श्री वाजपेयी, सेना में पश्चिमी कमान के अध्यक्ष श्री के० सुंदरजी, राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, गृहमंत्री शंकरराव चव्हाण आदि वरिष्ठ नेताओं से मुनिश्री मिले व बातचीत की। पंजाब व हरियाणा की विधानसभाओं में मुनिश्री के भाषण हुए।

अग्रगण्य—मुनिश्री उगमराज

सहयोगी—मुनिश्री विरधीचंद, मुनिश्री चिदानंद

चातुर्मास—जोजावर (पाली, राज०)

तपस्या—मुनिश्री उगमराज-मासखमण—१, तेला-२२

गुरुधारणा-५

अग्रगण्य—मुनिश्री रोशनलाल

सहयोगी—मुनिश्री संभवकुमार

चातुर्मास—बाड़मेर (राज०)

यात्रा—८६५ किलोमीटर, मंत्र दीक्षा—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—१२४

कार्यक्रम—पचपदरा में तीनों संप्रदायों की महती उपस्थिति में महावीर जयंति का कार्यक्रम मनाया गया। कवास गांव में पंच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगा। बाड़मेर में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाया गया, जिसमें बाड़मेर के जिलाधीश श्री के० एस० मणी, पुलिस अधीक्षक एस० एन० जैन, मूर्तिपूजक खरतरगच्छ संप्रदाय की साध्वी श्री चन्द्रप्रभा, रामस्नेही संतश्री स्वरूपानंद, पत्रकार श्री केसरीमल, चौहटन के पूर्व विधायक श्री भगवानदास आदि ने भाग लिया।

अग्रगण्य—मुनिश्री सोहनलाल (राजगढ़)

सहयोगी—मुनिश्री जयचंदलाल (छापर) मुनिश्री विजयराज (राजगढ़)।

चातुर्मास—लूणकरणसर (बीकानेर, राज०)।

यात्रा—स्थिर प्रवास, पंच सूत्री संकल्प—५०, शीलव्रत—२।

जप—२ करोड़ ७२ लाख (ॐ अभीराशिको नमः) जैन-विद्या-परीक्षार्थी-६९।

तपस्या—मुनिश्री सोहन-उप-४२, बेला-एक, एकान्तर-२ महीना।

मुनिश्री जयचंद—उपवास-४२।

मुनिश्री विजयराज—उप-६०, बेला-१, एकान्तर-२ महीना।

श्रावक-श्राविकाओं में—$\frac{१}{३९०८}$, $\frac{२}{७०}$, $\frac{३}{९०}$, $\frac{४}{५}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{३}$, $\frac{८}{४३}$, $\frac{९}{३}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{५}$, $\frac{१५}{२}$, $\frac{१७}{१}$।

कार्यक्रम—अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत राजकीय चिकित्सालय में मुनिश्री विजयराज के सान्निध्य में व डा० सांखला की अध्यक्षता में अनेक कार्यक्रम हुए।

संस्मरण

ममीता बुच्चा (लूनकणसर) के सीने व हृदय में खराबी थी। डॉक्टरों ने उसकी शल्य चिकित्सा की राय दी। उसने मुनिश्री की प्रेरणा से ग्याहर की तपस्या की। उसका दर्द काफूर हो गया, अच्छी नींद आने लगी, मन प्रसन्न हो उठा। इसी तरह श्रीमती सोहनी बोथरा, श्रीमती मनोहरी बुच्चा, श्रीमती कमला, श्रीमती लक्ष्मी भी विभिन्न रोगों से पीड़ित थीं। तपस्या का क्रम प्रारंभ होते ही उनके रोगों का क्रमशः उपशमन होता गया।

मुनिश्री के लिए आचार्यवर का संदेश :—

"लूणकरणसर में मुनि सोहनलाल जी के आंख में तकलीफ है। मुनि जयचंदजी व मुनि विजयराज बड़े उत्साह से सेवा कर रहे हैं। एक संत की अपेक्षा बताई गई है और अपेक्षा सही भी है, जब तक ऐसा मौका नहीं मिलता तब तक हमारे उत्साही मुनि विजयराज को ही काम संभालना होगा। वहां की अपेक्षा हम ध्यान में रखेंगे और मौका आने से कुछ विशेष लक्ष्य रखेंगे।

अग्रगण्य—मुनिश्री रवीन्द्र कुमार

सहयोगी—मुनिश्री मुनिव्रत, धर्मानंद

चातुर्मास—नाभा (पंजाब)

यात्रा—५५६ किलोमीटर, क्षेत्र-२०

मंत्र दीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा-१००, जैन धर्म दीक्षा-२२।

पंच सूत्री संकल्प—१०१, वर्गीय अणुव्रती-८००, वर्षीतप-१।

तपस्या

मुनिश्री रवीन्द्र—१/६, २/२, ४/१, १५/१, जप-डेढ़ घंटा, ध्यान-आधा घंटा।

मुनिश्री मुनिव्रत—१/६, ३/१, जप-आधा घंटा, ध्यान-आधा घंटा मौन-चार घंटा।

मुनिश्री धर्मानंद—१/३६, २/३, ३/१, ४/१।

मुनि त्रय ने प्रतिदिन सामूहिक कई आगमों का तथा संघीय साहित्य का भी वाचन किया।

कार्यक्रम—जगराओं में द्विदिवसीय प्रेक्षा प्रयोग शिविर लगा, जिसमें युवक परिषद् के युवकों ने सोत्साह भाग लिया। महावीर जयंति व अक्षय तृतीय के भव्य कार्यक्रम हुए। नाभा में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि समारोह समायोजित हुए। स्थानीय जैन हाई स्कूल एवं गवर्नमेंट हाई स्कूल में मुनिश्री का प्रवचन हुआ। अकाली विधायक राजा नरेन्द्रसिंह, कांग्रेस सरकार के पूर्व मंत्री श्री गुरुदर्शन सिंह व कम्युनिस्ट नेता कामरेड गुरुदेवसिंह आदि ने मुनिश्री से मुलाकात की। हिसार में तेयुप द्वारा भिक्षु वाचनालय तथा जगराओं में लाला झंडूमल वाचनालय का उद्घाटन हुआ।

अग्रगण्य—मुनिश्री मगनमल 'प्रमोद'

सहयोगी—मुनिश्री फतहचंद 'पंकज', मुनिश्री मैतार्य

अग्रगण्य—मुनिश्री मूलचंद 'मराल'

सहयोगी—मुनिश्री वर्धमान

चातुर्मास—दोनों संघाटकों का संयुक्त (वाव, गुजरात)

मुनिश्री मूलचंद—यात्रा-८०० किलोमीटर, क्षेत्र-२५

तपस्या—$\frac{१}{२७}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{५}{५}$, वाचना-२५०० पृष्ठ, जप-डेढ़ घंटा, ध्यान-आधा घंटा।

कार्यक्रम—१० मार्च/पालनपुर/लक्ष्मण टेकरी के विशाल हॉल में मुनि श्री का "मानव जीवन और अणुव्रत" विषय पर सार्वजनिक भाषण हुआ। इस कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि श्री कांति भाई संघवी ने भी अपने विचार रखे। ज्योतिर्विद श्री जयंतिभाई शास्त्री ने मुनिश्री के दर्शन किये। राधनपुर में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस मौके पर सुश्री वसुमती ने वर्षीतप का पारणा किया। भाषण में मुनिश्री के सान्निध्य में महिला मंडल का विशेष कार्यक्रम रहा।

बहुत बचे

मुनिश्री मूलचंद एक दिन शौच से निवृत्त होकर आ रहे थे। एक पागल आदमी ने उन पर लाठी से जोरदार प्रहार किया। किंतु दूसरा प्रहार करे, उससे पहले वे संभल गये। प्रहार तो काफी तेज था, किन्तु उन्होंने तत्परता से टाल दिया। गुरुदेव की कृपा से बहुत जल्दी स्वास्थ्य लाभ भी हो गया। आचार्यश्री ने इस प्रसंग पर एक संदेश प्रदान किया, जिसमें आचार्यप्रवर ने मुनिश्री के साहस की सराहना की तथा मूर्तिपूजक आचार्यश्री ओंकार सूरि के सौहार्द एवं एकता के प्रयास को महत्त्वपूर्ण बताया।

मुनिश्री मगनमल "प्रमोद"

यात्रा—८५६ किलोमीटर, क्षेत्र—५०

वर्गीय अणुव्रती—हजारों, दीक्षा—७५, सम्यक्त्व दीक्षा—१७५

तपस्या—मुनिश्री "प्रमोद"—$\frac{१}{२४}$, $\frac{२}{३}$, $\frac{३}{१}$ जप एक घंटा

मुनिश्री "पंकज"—$\frac{१}{१७}$, $\frac{२}{३}$, $\frac{३}{४}$ जप दो घंटा

मुनिश्री मैतार्य—$\frac{१}{१०}$, $\frac{३}{२}$, $\frac{६}{१}$ आयंबिल—६, जप—एक घंटा

कार्यक्रम—विक्रोली (बंबई) से चातुर्मास परिसमाप्ति के बाद विहार किया। बंबई के उपनगरों में अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। कुर्ला में कच्छी वीसा ओसवाल सेवा संघ के विशाल हॉल में मुनिश्री का विशेष प्रवचन हुआ।

मलाड़ में "राष्ट्रीय एकता में अणुव्रत का योगदान" विषय पर कार्यक्रम तथा पूरी बंबई की ओर से विदाई कार्यक्रम रखा गया। ठेकाले में निर्माणाधीन नहर के अभियंता, अधिकारियों के साथ मुनिश्री का वार्तालाप हुआ। मनोर, बलसाड़, सूरत, अहमदाबाद में भी रोचक कार्यक्रम हुए। डीसा में मुनिश्री की अस्वस्थता की वजह से पांच महीने रुके। वहां मर्यादा महोत्सव, महावीर जयंति व अक्षय तृतीया के कार्यक्रम हुए।

बाव चातुर्मास में संघाटक द्वय की युगपत् सन्निधि में आयोजित होने वाले कार्यक्रम इस प्रकार हैं—अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के अतिरिक्त अनेक अन्य कार्यक्रम भी हुए। चातुर्मासिक प्रवास में अनेकों इंजीनियर, डॉक्टर आदि ने मुनिश्री से अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि पर अनेक बार बातचीत की। वहां चातुर्मास कर रहे मूर्तिपूजक आचार्यश्री ओंकार सूरि से पृथक्-पृथक् विषय पर वार्तालाप हुआ।

अन्य विवरण—भक्तामर—२०, प्रतिक्रमण—३०, कल्याण मंदिर, चौबीसी ६, निर्धारित पांच थोकड़े—८ बहिनों ने, अणुव्रत परीक्षार्थी—१५, जैन विद्या परीक्षार्थी—४७

तपस्या—(श्रावक-श्राविकाओं में) १/३०६७, २/६५, ३/८८, ४/३५, ५/१५, ६/४, ७/४, ८/९, ९/६, १०/१२, ११/२, १३/५, १६/३, १७/१, ३१/८, ४५/१

दो मास एकान्तर—३५, उपवास वारी—१३

'ॐ अभीराशिको नमः' का जप—२५ लाख

तपस्या के विभिन्न प्रयोग भी कराये गये। भिक्षु चरमोत्सव तथा दीपावली के दिन काफी बेले, तेले हुए।

मासखमण तथा उससे ऊपर तपस्या करने वाले।

१. मुनिश्री फतहचंद 'पंकज'—३१
२. कुमारी अरूण मेहता—३१
३. कुमारी जयश्री दोसी—३१
४. श्रीमती तारा मेहता—३१
५. कुमारी वर्षा मेहता—३१
६. श्रीमती लीला मेहता—३१
७. श्रीमती सज्जन मेहता—३१
८. कुमारी ललिता दोसी—४५
९. श्रीमती लीना मेहता—३१
१०. श्रीमती चंची मेहता—३१

आमेट अमृत-महोत्सव पर बाव से करीब २०० भाई-बहिन गये। संघवी परिवार में ३ मौत हो जाने पर ६०-६५ भाई-बहिनें गए। समय-समय पर लोग संघ रूप में जाते रहे।

मुनिश्री को प्राप्त आचार्यश्री के संदेश—

मुनि मगनमल जी !

बंबई से विहार किया और दर्शन की भावना को लेकर चल पड़े। रास्ते में घुटनों में अधिक दर्द होने पर भी तुम चलते रहे, यह हमारे संघ का समर्पण, दृढ़ मनोबल है, पर शरीर की तरफ भी कभी-कभी ध्यान देना जरूरी होता है।.......कहीं संभव हो तो प्राकृतिक चिकित्सा का ध्यान देना जरूरी है जिससे शरीर भी हल्का रहे व ठीक हो जाये। सभी संत मानसिक समाधि से स्वस्थ रहे।

१५-१-८५ आचार्य तुलसी

मुनिश्री पूनमचंद (गंगाशहर) के साथ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण संदेश प्राप्त हुए। मुनिश्री फतहचंद तथा अन्य बहिनों के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री ने प्रेरक संदेश प्रदान किए।

अग्रगण्य—मुनिश्री जशकरण, मुनिश्री मिलापचंद

सहयोगी—मुनिश्री पृथ्वीराज, मुनिश्री प्रमोदकुमार

चातुर्मास—बोरावड़ (नागौर राजस्थान)

यात्रा—१०० किलोमीटर, क्षेत्र—१३

पंच सूत्री संकल्प—३५०, मंत्र दीक्षा—१२५, जैन धर्म दीक्षा—२, व्रत दीक्षा—१५, शीलव्रत—१०, जैन विद्या परीक्षा–१५२, अणुव्रत परीक्षा—३६, पत्राचार पाठमाला—१५, पांच थोकड़ा सीखने वाले ३१, थोकड़ा सीखने वाले ८०, कुल गाथाओं का कंठीकरण १,००,००० गाथा। ३१ लड़कियों ने ५४ वस्तुओं को सीखा, जिनमें थोकड़े, संस्कृत स्तोत्र, गेय काव्य आदि शामिल हैं। एक-एक बहिन ने क्या-क्या ग्रन्थ सीखे, इसकी रिपोर्ट बहुत व्यवस्थित मिली है।

संतों में पच्चीस बोल सहित छह थोकड़े सीखने वाले हैं—मुनिश्री पृथ्वीराज, मुनिश्री प्रमोद कुमार।

साधुओं में ६३ उपवास हुए, मुनिश्री प्रमोद ने आठ की तपस्या की। मुनिश्री मिलापचंद छाछ के आगार पर उल्लेखनीय तप-तप रहे हैं। १७ फरवरी को उनके ३६१ दिनों की तपस्या थी। संभव है आचार्यवर के बोरावड़ पधारने पर पारणा होगा।

मुनिश्री के सान्निध्य में विभिन्न संघीय कार्यक्रम हुए। मुनिश्री के

संपर्क में आने वालों में प्रमुख हैं—विधान सभा में लोकदल में नेता श्री नाथूराम मिर्धा, जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री कल्याणसिंह कालवी, मकराना के विधायक श्री अब्दुल अजीज, प्रधान श्री भंवरलाल पुरोहित, संवाददाता श्री हनुमान प्रसाद सोढ़ाणी।

आचार्यश्री के संदेश

जसोल
४-२-१९८५

मुनि मिलाप का एक मासिक भ्रमण अच्छा रहा, ऐसा गौतम जी से ज्ञात हुआ। मुनि मिलाप परिश्रमशील है। तुम लोगों में शासन भक्ति, समर्पण भाव सहज है सो तो है ही, पर मुनि पृथ्वीराज का सेवाभाव और विशिष्ट है। शिष्य प्रमोद भी विनम्र रहता हुआ प्रमोद भावना को न भूलें।

आचार्य तुलसी

एक-दूसरे संदेश में मुनिश्री मिलापचंद के इस तप को आचार्यवर ने उत्कृष्ट मनोबल का परिचायक बताया तथा मुनिश्री के संघ के प्रति सर्वात्मना समर्पण की सराहना की। मुनिश्री जशकरण के सान्निध्य में हो रही संतों (प्रमोद मुनि के अठाई भी) तथा श्रावक-श्राविकाओं की तपस्या के प्रति आचार्यवर ने शुभकामना प्रकट की।

एक मासिक व उससे अधिक सेवा करने वाले—१. श्रीमती मिश्रीमल भंडारी, २. श्री सोहनलाल ३. श्रीमती सुन्दरलाल कोटेचा ४. श्रीमती सुन्दर लाल कोटेचा।

अग्रगण्य—मुनिश्री गणेशमल (गंगाशहर)
सहयोगी—मुनिश्री कन्हैयालाल, मुनिश्री चारित्ररुचि
चातुर्मास—रतनगढ़ चूरु, (राजस्थान)
यात्रा—१११ किलोमीटर, क्षेत्र—५
पंच सूत्री—संकल्प ४५०
तपस्या—मुनिश्री गणेशमल उपवास—२
मुनिश्री कन्हैया—उपवास—३६, नव—१
मुनिश्री चारित्र रुचि, उपवास—४१, एक महीना एकान्तर
क्षमा आदि के भी विशेष प्रयोग हुए। जप करोड़ों में हुआ। हजारों सामयिकें

हुई । चातुर्मास प्रारम्भ होने के साथ अमृत-महोत्सव संदर्भ में प्रतिदिन घर-घर में एक दिन का अखंड जाप होता । परमेष्ठी वंदना से प्रारम्भ इस अनुष्ठान का समापन "सिरियारी रो संत" गीत से होता ।

कार्यक्रम

चाड़वास के द्विमासिक प्रवास में अन्यान्य कार्यक्रमों के साथ मर्यादा-महोत्सव समारोह समायोजित हुआ । चैत्र मास में मुनिश्री का पुनः समागम हुआ । वहां मुनिश्री गणेशमल व मुनिश्री राकेशकुमार की युगपत् सन्निधि में महावीर जयंति का भव्य कार्यक्रम हुआ । बीदासर के प्रलम्ब प्रवास में नियमित तत्त्व गोष्ठियों के अलावा अक्षय तृतीया का भी कार्यक्रम रहा । अमृत-महोत्सव के प्रथम चरण के प्रथम दिन का कार्यक्रम मुनिश्री व द्वितीय दिवस का समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी श्री मानकंवर के सान्निध्य में हुआ । रतनगढ़ में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि भव्य समारोह हुए ।

अग्रगण्य—मुनिश्री सोहनलाल (लूणकरणसर)

सहयोगी—मुनिश्री जोधराज, मुनिश्री चारित्रप्रकाश

चातुर्मास—तारानगर, चूरू, (राज०)

यात्रा—१५० कि० मी०, क्षेत्र—५

पंच सूत्री संकल्प—११५, सम्यक्त्व दीक्षा—६०, साधुओं में ६५ उपवास हुए । भाई वहिनों में वर्षीतप—२

८/२, ६/९, १ २/३

अग्रगण्य—मुनिश्री डूंगरमल

सहयोगी—मुनिश्री चंपालाल (सरदारशहर) मुनिश्री शोभालाल

चातुर्मास—चूरू (राज०)

कार्यक्रम

मुनिश्री का पूर्व चातुर्मास जयपुर था । जयपुर के कॉलेज, स्कूल व अन्य शिक्षण-संस्थाओं में अणुव्रत कार्यक्रम हुए । राजस्थान प्रांतीय कॉलेज व माध्यमिक विद्यालयों का त्रिदिवसीय अणुव्रत सेमिनार रखा गया । जेसीस संस्था की ओर से अवधान का कार्यक्रम रखा गया ।

चौमूं में दिगंवर समाज के विशेष निवेदन पर महावीर जयंति का कार्यक्रम मनाया गया ।

चूरू में श्री हणूतमल सुराणा की हवेली में मुनिश्री चंपालाल ने अवधान के दो कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जिसमें राज० उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गुमानमल लोढा, स्थानीय विधायक श्रीमती हमीदा बेगम, जिलाधीश, सेशन जज एवं अन्य बुद्धिजीवी समुपस्थित थे।

वैष्णव समाज के आग्रह पर कृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम मुख्य बाजार स्थित पोद्दार भवन में विशाल उपस्थिति में मनाया गया। जिनमें मुनिश्री का प्रभावी भाषण हुआ। दिगंबर जैन मंदिर में दो बार मुनिश्री का प्रवचन हुआ। स्थानीय बागला व गोयनका हायर सैकेंडरी स्कूल में अध्यापकों की प्रार्थना पर मुनिश्री चंपालाल ने रोचक अवधान कार्यक्रम प्रस्तुत किये। अमृत-महोत्सव का कार्यक्रम श्री सागरमल बैंद की हवेली में रखा गया। चातुर्मास काल में महिलाओं, युवकों की अनेक गोष्ठियां हुई, जिसमें मुनिश्री ने संघ की गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों पर सुन्दर प्रकाश डाला। चातुर्मास में तपस्या एवं जप का व्यवस्थित क्रम चला। शासन स्तंभ मुनिश्री नथमल के साथ सुजानगढ़ में मुनिश्री डेढ महीने रहे।

अग्रगण्य—मुनिश्री हनुमानमल 'हरीश'
सहयोगी—मुनिश्री देवराज (सायरा)
चातुर्मास—सिसोदा (उदयपुर, राजस्थान)
यात्रा—७० किलोमीटर, क्षेत्र—१०

वर्गीय अणुव्रती—१५०, पंच सूत्री संकल्प—२००, पच्चीस बोल सीखने वाले—१०

कार्यक्रम—सायरा में कवि सम्मेलन हुआ। पंजाबी संतश्रीविजय मुनि तथा मूर्तिपूजक मुनिश्री जयन्तविजय से मिलन हुआ, बातचीत की। रावलियां खुर्द में, (जो तृतीय आचार्यश्री रायचंदजी स्वामी की निर्वाण भूमि है), उनका १३३ वां चरमोत्सव 'सेरा' प्रांतीय स्तर पर मनाया गया, जिसमें सैकड़ों लोग उपस्थित हुए। गोगुन्दा में मर्यादा-महोत्सव का भव्य कार्यक्रम रहा। भोर गांव में महावीर जयंति मनाई गई। सिसोदा में अमृत-कलश पदयात्रा के दौरान समणियों एवं पदयात्रियों का आगमन हुआ और प्रेरणादायी कार्यक्रम हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का कार्यक्रम भी महत्त्वपूर्ण रहा। तपस्या में ७ अठाई हुई। एक वर्षीतप चल रहा है।

मुनिश्री का पहले सायरा चातुर्मास घोषित था, पर सिसोदा में आषाढ़

कृष्णा २ को रात्रि में लगभग तीन बजे अर्धांग पर पक्षाघात का आकस्मिक दौरा पड़ा। आधा शरीर निश्चेतन हो गया। वाणी अस्पष्ट हो गई। उस अस्पष्टता में ही मुनिश्री ने 'ॐ अभीराशिको नमः' का जप करना प्रारम्भ कर दिया। इतने में सहयोगी संत देव मुनि जगे, आये और घर्षण करना प्रारम्भ कर दिया। ॐ भिक्षु के निरन्तर जप व देव मुनि के घर्षण ने एक करिश्मा दिखाया और आधा अंग पुनः सचेतन हो गया। वाणी स्पष्ट हो गई। पक्षाघात की बीमारी तो उपशांत हो गई, पर शरीर में कमजोरी घर कर गई। ऐसी स्थिति में अत्यन्त कृपा कर आचार्यवर ने उनका चातुर्मास परिवर्तित कर सीसोदा घोषित कर दिया।

साध्वियों का विवरण

अग्रगण्य—साध्वीश्री जयश्री (राजलदेसर)

सहयोगी—साध्वीश्री कमलप्रभाजी (वोरज), साध्वीश्री कनकरेखाजी (श्रीडूंगरगढ़), साध्वीश्री प्रियदर्शनाजी (सूरतगढ़), साध्वीश्री मुदित प्रभाजी (उकलानामंडी)

चातुर्मास—मैसूर (कर्नाटक)

यात्रा—चातुर्मास से पूर्व ६०० किलोमीटर, मैसूर से उदयपुर—१८०० किलोमीटर, अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—५०००, पंच सूत्री संकल्प—४०००, मंत्र दीक्षा—११५, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१, जैन धर्म दीक्षा—४१, बारहव्रती—१००, शीलव्रत—५, सचित्त त्याग—५१, स्फुट त्याग—५००, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण-शिविर—५, प्रेक्षा प्रशिक्षण शिविर—१, जैन विद्या—३१, पत्राचार—२५, प्रतिक्रमण—१५, पचीस बोल—११, नई पंचपद वंदना—२००, भक्तामर-कल्याण मंदिर—१३,

तपस्या साध्वियों में—$\frac{1}{225}$, $\frac{2}{3}$, $\frac{3}{2}$, $\frac{4}{1}$, $\frac{5}{1}$, $\frac{31}{1}$

आयंबिल—४१, कंठस्थ—१०० गाथा, मौन—१० घंटा प्रतिदिन, जप—३ घंटा प्र० दि०, ध्यान—दो घंटा, स्वाध्याय—१००० गाथा प्रतिदिन, विशेष अनुष्ठान—४० लाख जप ॐ भिक्षु, ॐ अमीराशिको नमः,

वाचन—संघीय साहित्य १० हजार पृष्ठ, आगम साहित्य ५ हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य—दो हजार पृष्ठ

भाई-बहिनों में $\frac{1}{25000}$, $\frac{2}{3000}$, $\frac{3}{65}$, $\frac{4}{2}$, $\frac{5}{25}$, $\frac{7}{2}$, $\frac{8}{56}$, $\frac{9}{57}$, $\frac{10}{5}$, $\frac{11}{56}$, $\frac{15}{4}$, $\frac{30}{1}$, $\frac{31}{3}$ $\frac{45}{1}$, आयंबिल—२०००, उपवासवारी—१५, एकान्तर—२५, बेले-बेले—१, वर्षीतप—७, जप अमीराशिको नमः—१५ करोड़, ३१ की तपस्या करने वालों के नाम

१. कुमारी मीनाक्षी (मात्र १८ वर्ष), २. श्रीमती सिरिया,

३. श्रीमती पिस्ता

आचार्यप्रवर की दीक्षा-दिवस युवा-दिवस के रूप में मद्रास के उपनगर तिरवात्तुर में मनाया गया, कार्यक्रम के अध्यक्ष थे कृष्ण स्वामी रेड्डीयार। मुख्य अतिथि मद्रास हाईकोर्ट के पूर्व जज श्री एस० आर० एम० टी० सी०

(भादरा) साध्वीश्री रचनाश्री (टमकोर)

चातुर्मास—केलवा (उदयपुर, राज०)

यात्रा—५०० किमी०, क्षेत्र—४१

मंत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—१००, पंच सूत्री संकल्प—१०००

तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१

तपस्या-साध्वियों में—$\frac{१}{८५}$, आयंबिल—६, ध्यान—दो घंटा, मौन—४ घंटा

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{१००}$, $\frac{२}{८८}$, $\frac{३}{९}$, $\frac{४}{४}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{१०}$, $\frac{९}{५}$, $\frac{२१}{१}$, $\frac{३१}{१}$, वर्षीतप—२, उपवास वारी—८, एकान्तर—७, ३१ की तपस्या लक्ष्मीलाल कोठारी ने की। केलवा चौखले में आयंबिल २४८८, जप—१३ लाख का हुआ।

कार्यक्रम—अंधेरी ओरी में तेरापंथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम उत्साह पूर्वक मनाया गया। अमृत-कलश पदयात्रा के दौरान साध्वीश्री के सान्निध्य में पड़ासली व धानीन में विशेष समारोह हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सरोजकुमारी (बंबई)

सहयोगिनी—साध्वीश्री चंदना, साध्वीश्री चन्द्र लेखा

साध्वीश्री सोमप्रभा, साध्वीश्री निर्मला कुमारी

चातुर्मास—ब्यावर (अजमेर, राज०)

यात्रा—४०० किमी०, क्षेत्र—२१

मंत्र दीक्षा—१५, पंच सूत्री संकल्प—१०२, शीलव्रत—१

प्रेक्षा प्रशिक्षण शिविर—१ (५ दिन), महिला प्रशिक्षण शिविर—१ (३ दिन)

साध्वीश्री सरोज—$\frac{१}{५}$	तीन थोकड़े सीखे
साध्वीश्री चंदना—$\frac{१}{२७}$, $\frac{२}{१}$ वर्षीतप चालू	पांच ,, ,,
साध्वीश्री चंद्र लेखा—$\frac{१}{३८}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$	तीन ,, ,,
साध्वीश्री सोमप्रभा—$\frac{१}{४}$	तीन ,, ,,
साध्वीश्री निर्मला—$\frac{१}{७}$ एकान्तर-एक माह, आयंबिल-सोलह	पांच ,, ,,

साध्वीश्री के संपर्क में स्थानीय विधायक श्री माणक डाणी, विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक, प्रधानाध्यापक साध्वीश्री से मिले। विभिन्न समारोहों के राजस्थान के पत्रों में खबरें छपी। ब्यावर में मासखमण की तपस्या श्रीमती सुशीला मुथा ने की। आचार्यवर की एक मासिक सेवा श्रीमती सुवा मुथा श्रीमती पतासी श्री श्रीमाल, श्रीमती रतन सांखला, श्रीमती विदामराव ने

व्यक्तिगत की।

अग्रगण्य—साध्वीश्री लक्ष्मीकुमारी (शार्दूलपुर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री ज्ञानकुमारी (शार्दूलपुर), साध्वीश्री कानकंवर (छापर), साध्वीश्री सज्जनश्री (शार्दुलपुर) साध्वीश्री कलाप्रभा

चातुर्मास—पीलीवंगा (गंगानगर, राज०)

यात्रा—२०० कि० मी०, क्षेत्र—१०

मंत्र दीक्षा—८०, सम्यक्त्व दीक्षा—१००, श्रमणोपासक दीक्षा—७ वर्गीय अणुव्रती—७०, पंच सूत्री संकल्प—२५०, शराब त्याग—२००

तपस्या	तत्त्वज्ञान
साध्वीश्री लक्ष्मी—$\frac{२६}{१}$, $\frac{३}{२}$, $\frac{३}{५}$ आयंबिल	४ थोकड़े सीखे
साध्वीश्री ज्ञानकुमारी—$\frac{१}{५}$, $\frac{८}{१}$ मौन साधना ३१ दिन	३ " "
साध्वीश्री कानकंवर—$\frac{१}{३५}$, $\frac{३}{२}$, $\frac{४}{१}$ व्रतरतप १ आयंबिल का	
साध्वीश्री सज्जन—$\frac{१}{३०}$	३ " "
साध्वीश्री कलाप्रभा—$\frac{१}{२}$	५ " "

तपस्या—(भाई-बहिनों में) $\frac{१}{१०००}$, $\frac{२}{६}$, $\frac{३}{१०}$, $\frac{४}{५}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{१३}$, $\frac{९}{२}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१२}{१}$, $\frac{१५}{१}$ आयंबिल की बारी—२

दो बहिनों ने पांच थोकड़े सीखे, जैन विद्या परीक्षार्थी—५६

कार्यक्रम—मर्यादा-महोत्सव समारोह गजसिंहपुर तथा महावीर जयंति कर्णपुर मनाई गई। पीलीबंगा में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत हरिजन धर्मशाला, सैकेण्डरी स्कूल, नई मण्डी व पुरानी मण्डी में साध्वीश्री के भाषण हुए।

साध्वीश्री लक्ष्मीकुमारी की प्रकाशित पुस्तकें-संगीत सरिता, विचार नीड़ (दोनों आगरा प्रकाशन) महकते फूल, कालांवाली युवक परिषद्

एक माह या उससे अधिक सेवा करने वाले—

१. श्री धनराज दफ्तरी, २. श्री चंदनमल पुगलिया, ३. श्री केसरीचंद नाहटा, ४. श्री मुल्तानमल बांठिया, ५. श्री केसरीचंद बांठिया

अग्रगण्य—साध्वीश्री सुमनश्री

सहयोगिनी—साध्वीश्री सत्यप्रभा, साध्वीश्री सुरेखा, साध्वीश्री अमितश्री

चातुर्मास—उदासर (बीकानेर, राज०)

यात्रा—८५० कि०मी०, क्षेत्र—२५

अणुव्रती—५५, वर्गीय अणुव्रती—३००, मंत्र दीक्षा—४१, सम्यक्त्व दीक्षा—५७, दहेज उन्मूलन—७१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान शिविर—१, श्रमणोपासक दीक्षा—४१, थोकड़ा सीखने वाले—११, कुल गाथाओं का कंठीकरण—२५००, भक्तामर—८, चौवीसी—२, प्रतिक्रमण-११

साध्वियों में तपस्या—उपवास—९१, चोला—१, आयंबिल १३, मौन—२ घंटा

ध्यान—एक घंटा, शक्ति जागरण अनुष्ठान—२ वार, वाचन आगम —२००० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ, कंठस्थ—१५०० गाथा।

भाई-वहिनों में तपस्या—$\frac{१}{११००}$, $\frac{२}{६०}$, $\frac{३}{७५}$, $\frac{४}{२५}$, $\frac{५}{१३}$, $\frac{६}{१०}$, $\frac{७}{१४}$, $\frac{८}{२१}$, $\frac{९}{६}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१४}{१}$, $\frac{१५}{१}$, मासखमण—१, एकान्तर तप—२१, हरिजन जाति की श्रीमती आशा ने मासखमण की तपस्या की।

इस वर्ष साध्वीश्री के संपर्क में आने वाले विशिष्ट व्यक्ति हैं—राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जसराज चौपड़ा, जिला संसन जज श्री प्रेमचंद गोयल, चीफ जुडिशियल मजिस्ट्रेट श्री राधेश्याम, एडीसनल चीफ जुडिशियल मजिस्ट्रेट श्री डी० सी० मीणा, पुलिस अधीक्षक श्री जैन, कैप्टेन श्री अनिल चौवरी।

अग्रगण्य—साध्वीश्री केसर (सरदारशहर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री चांदकुमारी (टॉडगढ़) साध्वीश्री विद्यावती (श्रीडूंगरगढ़), साध्वीश्री दिव्यप्रभा (गोगुंदा), साध्वीश्री सूर्ययशा (श्रीडूंगरगढ़)

चातुर्मास—गंगाशहर (वीकानेर, राज०)

यात्रा—७५ कि०मी० (नोखामंडी से गंगाशहर)

अस्वस्थता के कारण अधिक यात्रा नहीं हुई। साध्वियों में उपवास ७५ हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री जतनकुमारी "कनिष्ठा"

सहयोगिनी—साध्वीश्री अमितप्रभा (वीदासर) साध्वीश्री कंचनवाला (सरदारशहर) साध्वीश्री ध्रुवरेखा (सरदारशहर) साध्वीश्री नयश्री (चाड़वास)

चातुर्मास—संगरूर (पंजाव)

यात्रा—१३०० कि०मी०, क्षेत्र—६१

अणुव्रती—१००, वर्गीय अणुव्रती—१५००, पंचसूत्री संकल्प ७५०

मंत्र दीक्षा—२५०, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, व्रत दीक्षा—१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (५ दिन), तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१ (५ दिन), महिला प्रशिक्षण-शिविर—१ (३ दिन), भक्तामर—२, प्रतिक्रमण—४, पांच थोकड़े सीखने वाले—१

साध्वियों में तपस्या—१/८५, ३/४, ३/३, ४/१, ५/१, १५/१, दो साध्वियों ने कंठीतप किया। साध्वीश्री नयश्री ने पांच व शेष साध्वियों ने छह-छह थोकड़े कण्ठस्थ किये। दो साध्वियों ने शक्ति जागरण अनुष्ठान किया।

भाई-बहिनों में—१/५००, ३/३, ३/२, ४/१, ५/१, ७/१, ८/१, १५/१ श्री राजकुमार सिंघला ने ५५, श्री ओमप्रकाश सिंघला ने ३६ तथा श्रीमती चेतना सिंघला ने ६६ दिन का आयंबिल तप किया।

इनकी तपस्या के उपलक्ष में युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री ने महत्त्वपूर्ण संदेश प्रदान किये।

कार्यक्रम

३ अप्रैल को हिसार में महावीर जयंति कार्यक्रम रामलीला मैदान में मनाया गया। संगरूर में त्रिदिवसीय सार्वजनिक प्रवचनमाला, अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के कार्यक्रम हुए। प्रेम सभा मॉडल स्कूल में साध्वीश्री का भाषण हुआ।

१७ अगस्त को लक्ष्मीनारायण मन्दिर में साध्वीश्री के सान्निध्य में विशाल सद्भावना सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें अकाली दल के अध्यक्ष श्री हरचंदसिंह लोंगोवाल, वरिष्ठ अकाली दल के नेता श्री सुरजीतसिंह बरनाला, महामंडलेश्वर श्री जगदीश आदि ने अपने मंजे हुए विचार रखे। इस कार्यक्रम की आकाशवाणी व दूरदर्शन पर अच्छी चर्चा रही।

साध्वीश्री के संपर्क में आने वाले विशिष्ट व्यक्ति निम्नोक्त हैं—

अध्यक्ष, शिरोमणी अकाली दल	श्री संत लोंगोवाल
मुख्यमंत्री पंजाब	श्री सुरजीतसिंह बरनाला
विधायक	श्री रणजीतसिंह वालिया
प्रधान—अकाली दल	श्री पवनकुमार सिंघला
प्रधान—जनता पार्टी	बाबू रामस्वरूप (एडवोकेट)
जनरल सेक्रेटरी—जनता पार्टी	श्री नानकचन्द
व्यापार मण्डल संवाददाता—	
दी ट्रिब्यून अध्यक्ष	श्री ओमप्रकाश गोयल

नवजीवन के संपादक	श्री राजेन्द्रकुमार बंसल (पत्रकार)
संवाददाता, इण्डियन एक्सप्रेस	श्री वीरचन्द्र 'कमल'
कैसियर कमेटी—नई, अनाज मंडी संगरूर	श्री तरसेमचंद
रीडर, एस. डी. एम. ऑफिस	श्री शक्तिप्रसाद जैन
प्रो., रणवीर कॉलेज	श्री सुरजीतसिंह गांधी
मुख्याध्यापक, गवर्नमेंट हाईस्कूल	श्री नाथप्रकाश गोयल
प्रो. अकाल डिग्री कॉलेज	श्री तेजवन्त मान
प्रो. पंजाब युनिवर्सिटी, पटियाला	डॉ. प्रीतम सैनी
म्युनिसिपल कमेटी के प्रधान	श्री सुभाषचन्द्र ग्रोवर
सर्वोदय कार्यकर्ता	श्री प्यारेलाल शर्मा
कृषि इन्सपेक्टर	डा. हरबंसलाल चुध
प्रिंसिपल, दशमेश कॉलेज	डा. सत्यपाल गुप्ता
साहित्यकार (स्टेडवार्ड प्राप्त)	डा. कृष्णकुमार शिवहरे
सुपरिंटेंन्डेंट, अकाली डिग्री कॉलेज	डा. एस. पी. गुप्ता

पंजाब विधानसभा के उम्मीदवार रणजीतसिंह बालिया चुनाव प्रचार प्रारंभ के दिन तथा जीतने के बाद सबसे पहले साध्वीश्री जतनकुमारीजी के पास आशीर्वाद लेने के लिए उपस्थित हुए। साध्वीश्री से उन्होंने कहा—साध्वीजी ! हमारे संतजी आपके गुरु महाराज से आशीर्वाद लेकर आये, तो इतना सुन्दर समझौता का कार्य हुआ। हम वहां तक नहीं पहुंच सकते। आप भी उन्हीं गुरु के शिष्या हैं, इसलिए हम आपके पास आशीर्वाद लेने आये हैं।

समाचार प्रकाशित करने वाले प्रमुख समाचार पत्र—नवजीवन, पंजाब केसरी, इंडियन एक्सप्रेस, दी ट्रिब्यून, दैनिक ट्रिब्यून।

संगरूर तेरापंथ भवन में तेयुप द्वारा होम्योपैथिक डिस्पेंसरी चलती है।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी

सहयोगिनी—साध्वी धनकंवर, साध्वी मानकंवर, साध्वी प्रमोदश्री (पड़िहारा), साध्वी प्रमोदश्री (पचपदरा), साध्वी विजयप्रभा

चातुर्मास—जोधपुर-जाटावास (राजस्थान)

यात्रा—३५० कि.मी. क्षेत्र—६

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१।

व्रत दीक्षा—१, शीलव्रत—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, जैन-विद्या—५३, पत्राचार पाठमाला—२३, साध्वियों में पांच और चार के एक-एक थोकड़े हुए। भाई-बहिनों में पचरंगी—२, अठाई—४, नौ—१, दस—१ हुए। श्रीमती गुलाब एवं श्रीमती पुष्पा नें मासखमण किये।

कार्यक्रम

महालक्ष्मी स्कूल, उम्मेद स्कूल, महिलाबाग स्कूल में साध्वी श्री प्रमोदश्री और विजयप्रभाजी के जीवन-विज्ञान पर प्रवचन हुए। जैन सिलाई स्कूल में जैन संस्कार निर्माण पर साध्वीश्री धनकंवर और साध्वीश्री विजय-प्रभा के प्रवचन हुए। महावीर भवन में तीनों संप्रदायों के बीच विश्व मैत्री दिवस पर साध्वीश्री प्रमोदश्री का प्रवचन हुआ।

आकाशवाणी जोधपुर से मैत्री-दिवस पर साध्वीश्री प्रमोदश्री की रेडियो वार्ता प्रसारित हुई। साध्वीश्री की सन्निधि में नारी जागरण का कार्य-क्रम रहा, जिसमें मुख्य अतिथि लेक्चरार श्रीमती इन्द्रा, मुख्य वक्ता लेक्चरार कन्या रत्न सुधी कुसुम भंडारी थी। साध्वीश्री धनकंवर, साध्वीश्री प्रमोदश्री, साध्वीश्री विजयप्रभा का प्रवचन हुआ।

साध्वीश्री से मिलने वाले विशिष्ट व्यक्ति—

१. श्री चंपालाल सालेचा, अध्यक्ष, चेम्बर आफ कॉमर्स
२. डॉ. आर. के. दूगड़, व्याख्याता, हिन्दी विभाग
३. श्री लक्ष्मीचंदजी सुराणा, अध्यक्ष महावीर जैन नवयुवक मंडल
४. श्री विरदमल सिंघवी, विधायक
५. श्री कानसिंह परिहार, न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय
६. श्री नेमीचन्द जैन 'भावुक', गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के महामंत्री

इन्होंने समय-समय पर कार्यक्रमों में उपस्थित होकर आचार्यश्री के विविध आयामों की मुक्त कण्ठ से सराहना करते हुए वर्तमान परिस्थिति में आचार्यश्री की देनों को बहुत ही उपयोगी बताया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री जतनकुमारी (राजलदेसर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री निछमा (सूरतगढ़), साध्वीश्री संगीतश्री (श्रीडूंगरगढ़), साध्वीश्री शांतिप्रभा (लाडनूं)

चातुर्मास—टोहाना (हरियाणा)

यात्रा—१५० कि. मी., क्षेत्र—४

मंत्र दीक्षा—१००, पंच सूत्री संकल्प—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—चार पूरे घर, अन्य—३५, व्रत दीक्षा—४१, शीलव्रत—३, त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर श्री सुरेन्द्र जैन व श्रीमती संतोष जैन के निदेशन में आयोजित हुआ, पांच थोकड़े सीखने वाली—३ वहिनें, कालू तत्त्व शतक व प्रतिक्रमण—१५, जैन विद्या—५५, श्रमणोपासक दीक्षा—१५।

साध्वीश्री	तपस्या	तत्त्वज्ञान
जतनकुमारी	५ विगय के त्याग	५ थोकड़े कंठस्थ
लिछमा	१/२५, आयंविल—२	"
संगीतश्री	१/३५, १ माह एकांतर, वेला—२	"
शांतिप्रभा	१/३६, १ माह एकांतर, २/६, ५/८	"

भाई-वहिनों में—१/१०००, २/२२, २/२१, ४/३, ५/३, ८/७, ६/८, आयंविल—एक, अठाई—एक, आयंविल की पंचरंगी—एक

साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के भव्य कार्यक्रम हुए। चातुर्मास में संस्कारों को परिपुष्ट बनाते हुए प्रत्येक परिवार की पृथक्-पृथक् गोष्ठियां समायोजित हुई।

साध्वीश्री जतनकुमारी के टखने में टी० वी० का घाव हो गया। करीव पांच महीने वीत गये अलग-अलग इलाज कराते-कराते, पर कुछ भी फायदा नहीं हुआ। सवकी चिंता वढ़ना स्वाभाविक था। एक दिन यकायक साध्वीश्री वोल उठी-यदि आचार्यश्री की मेरे ऊपर कृपा हो जाये। वे मेरे ठीक होने का कह दें, तो मैं अवश्य ठीक हो जाऊंगी।" साध्वीश्री के विचारों का ऐसा संप्रेषण हुआ कि आचार्यश्री ने टोहाना के श्रावकों (जो दर्शनार्थ गये हुए थे) से कहा—अव वीमारी ज्यादा नहीं चलेगी, जल्दी ही वह स्वस्थ वन जायेगी।" आचार्यश्री के वात्सल्य पूर्ण शब्दों का ऐसा जादुई असर हुआ कि साध्वीश्री द्वारा लाइलाज मानी जाने वाली यह वीमारी मात्र तीन दिनों में विदा हो गई। अव साध्वीश्री जी पूर्वापेक्षया स्वयं को अधिक स्वस्थ व तंदुरुस्त मानती है।

टोहाना के श्री वसंतीलाल की पत्नी का पौने तीन घंटे के तिविहार व ढाई घंटे के चौविहार अनशन में ११ अक्टूबर को समाधि-मरण हुआ। साध्वी श्री जतनकुमारी ने भरपूर सहयोग दिया। उस क्षेत्र में इस अनशन की सुंदर प्रतिक्रिया हुई।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विनयश्री (श्री डूंगरगढ़)

सहयोगिनि—साध्वीश्री केसर (श्री डूंगरगढ़) साध्वीश्री कानकुमारी (लाडनूं) साध्वीश्री—मंजु प्रभा (छापर), साध्वीश्री विशुद्धप्रभा (बीदासर)।

चातुर्मास—राजगढ़ (चुरू, राज०)

यात्रा—२८० किलोमीटर, क्षेत्र-७।

अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प—३००, सम्यक्त्व दीक्षा-२१, व्रत दीक्षा-६, थोकड़ा सीखने वाले-७, जैन विद्या परीक्षार्थी—२८,।

साध्वियों में उपवास—५१, आयंबिल-२१, आयंबिल तेला-३, आगम वाचन—११ हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य-वाचन-३ हजार पृष्ठ, मौन-७ घंटा प्रतिदिन, जप-४ घंटा प्रतिदिन।

भाई—बहिनों में तपस्या—१/८१८, २/५३, ३/२५, ३/४, ५/७, ६/१, ७/२, ८/१, ९/१ एकान्तर—३, सोलिया-२, मौन पचरंगी-२५, जप-सवा लाख।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोनांजी।

सहयोगिनी—साध्वीश्री मानकुमारी, साध्वीश्री धनकुमारी, साध्वीश्री शशिप्रभा, साध्वीश्री लब्धिश्री।

चातुर्मास—कांटाभाजी (उड़ीसा)।

यात्रा—१६०० किलोमीटर, क्षेत्र-२५।

अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प-५००, मंत्र दीक्षा-५१, सम्यक्त्व दीक्षा-४१।

शीलव्रत—५, तत्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-५, जैन विद्या परीक्षार्थी-६८, भक्तामर—६, चौबीसी-२, प्रतिक्रमण-८, थोकड़ा सीखने वाले-१४

साध्वियों में तपस्या—

साध्वीश्रीसोना—उपवास-५७, बेला-७, तेला-१।

साध्वीश्रीमान—उपवास-३५, बेला-३।

साध्वीश्री धन—उपवास-३६, बेला-२।

साध्वीश्री शशिप्रभा—उपवास३७, बेला-१, पंचोला-१।

साध्वीश्री लब्धिश्री—उपवास-२६, बेला-१।

भाई-बहिनों में—१/५२२१, २/६१, ६/८३, ४/७, ५/२, ६/१, ८/५१, ३/४, १०/१, १८/१, ३१/१, आयंबिल-८७०, वर्षीतप-४।

केसिंगावासी श्रीमती शांति जैन ने ३१ की तपस्या की।

कार्यक्रम—साध्वीश्री के सान्निध्य में केसिंगा में मर्यादा महोत्सव, रायपुर में महावीर जयंति, टिटलागढ़ में अक्षय तृतीया के कार्यक्रम हुए। अमृत महोत्सव का भव्य समारोह समायोजित हुआ।

साध्वीश्री भेंट करने वाले विशिष्ट व्यक्ति थे—टिटिलागढ़ के सव डिविजनल अफसर श्री दिगंवर महन्ती, केसिंगा के विधायक श्री भूपेन्द्रसिंह कांटावाजी के विधायकश्री चैतन्य प्रधान, कंजुमर्स को-प्रेटिव फेडरेशन केसिंगा के मैनेजर श्री ओंकारनाथ मिश्र, कांटावाजी के पत्रकार श्री रमेशचंद शर्मा आदि।

साध्वीश्री के सान्निध्य में समय-समय पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की नवभारत, देशवंधु अमृत-संदेश, समाज आदि पत्रों में चर्चा रही।

संस्मरण—९ जनवरी, १९८६। उड़ीसा प्रांत के वलांगीर जिले का छोटा सा गांव कुरसुड़। साध्वीश्री केसिंगा चातुर्मास संपन्न कर कुरसुड़ पधारी। वारह वर्षीय वालक मनोज गठिया वायु से जुड़ा हुआ था। साध्वियों के गोचरी पदार्पण पर मनोज की दादी ने साध्वीश्री से उसे मंगलपाठ सुनाने को कहा। मंगल पाठ सुनाया और ११ माला भिक्षु स्वामी की फेरने का साध्वी श्री ने कहा। जप का उस वालक पर ऐसा अचूक प्रभाव पड़ा कि उसी दिन विल्कुल नहीं चल-फिर सकने वाला वह वालक एक फलांग चलकर साध्वी श्री के दर्शन करने आ गया। साध्वीश्री के विहार के वाद भी उसने कई वार दर्शन कर लिये। इस घटना ने मनोज को भिक्षु स्वामी के प्रति अगाध श्रद्धाशील वना दिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री फूलकुमारी (सुजानगढ़)

सहयोगिनी—साध्वीश्री सज्जनां (सेवंत्री), साध्वीश्री मणिप्रभा (छापर) साध्वीश्री—प्रमिला कुमारी (सुजानगढ़) साध्वीश्री त्रिशलाकुमारी (सुजानगढ़)

चातुर्मास—लुधियाना (पंजाव)

यात्रा—४०० किलोमीटर, क्षेत्र-३०।

अणुव्रती—१२५, पंच सूत्री संकल्प-७००, सम्यक्त्व दीक्षा-३१, शीलव्रत-५, दहेज उन्मूलन-७०, सचित्त त्याग-५१,।

साध्वियों के उपवास—८, आयंविल-४५, तेला-१, शक्ति जागरण अनुष्ठान व असिआउसा का प्रयोग, आगम वाचन-एक हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य वाचन-७ हजार पृष्ठ।

भाई-बहिनों में उपवास—५००, आयंबिल-३२१, तेला-३, नौ-१, ग्यारह-२, पन्द्रह-१, जप-दो करोड़ तीन लाख।

कार्यक्रम—फिल्लौर में मर्यादा महोत्सव, गोविन्दगढ़ में महावीर जयंति के प्रभावी कार्यक्रम हुए, जिसमें अनेकों डॉक्टर, वकील आदि बुद्धिजीवी उपस्थित थे। अणुव्रत सप्ताह का कार्यक्रम तुलसी कुंज में हुआ। एस० डी० गर्ल्स हाई स्कूल में साध्वीश्री का भाषण हुआ, जिसमें स्कूल का पूरा स्टाफ व विद्यार्थी उपस्थित थे।

लुधियाना में साध्वीश्री के सान्निध्य में पंजाब प्रांतीय तेरापंथ महिला मंडल का अधिवेशन हुआ, जिसमें सैकड़ों बहिनों ने भाग लिया। स्थानीय जैन गर्ल्स कॉलेज की प्रिंसिपल श्री सरोज गुप्ता ने अपने विचार रखे। साध्वीश्री का इस अवसर पर विशेष प्रवचन हुआ। आचार्यश्री ने इस अधिवेशन पर विशेष संदेश प्रदान किया। वह इस प्रकार है—

"आज विश्व में अन्यान्य प्रसंगों की भांति महिला जागरण का प्रसंग भी बहुत जरूरी है। महिला जागरण का अर्थ है—समाज का जागरण। वह तब होता है, जब महिलाएं अपने अस्तित्व को समझें, अपनी क्षमताओं को पहचानें, शक्तियों के विकास में जागरूक रहे और उनका नियोजन करें।

हमारे समाज की महिलाएं बहुत तीव्रता से आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रही हैं। यह अच्छी बात है। लुधियाना में पंजाब क्षेत्रीय महिला मंडलों का वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा है। उसमें महिला संगठनों को सक्रिय करने, जागृति मूलक प्रयत्नों को तीव्र करने और संस्कारी महिलाओं के निर्माण हेतु विशेष चिंतन हो, यह अपेक्षित है।

—आचार्य तुलसी

अग्रगण्य—साध्वीश्री राजीमती

सहयोगिनी—साध्वीश्री कानकंवर, साध्वीश्री मानकंवर, साध्वीश्री करुणाश्री, साध्वीश्री समताश्री।

चातुर्मास—चाड़वास (चूरू, राज०)

यात्रा—३०० कि०मी० क्षेत्र—१३, (लगभग पूरा थली प्रदेश) अणुव्रती—६०, पंच सूत्री संकल्प—१३०, मंत्र दीक्षा—३३१, सम्यक्त्व दीक्षा—सामूहिक रूप में कई बार, व्रत दीक्षा, ४२५, शीलव्रत—२१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—६, (थली के विभिन्न क्षेत्रों में) योग प्रशिक्षण अध्यात्म शिविर—१३, चोवीसी, भक्तामर—६०, श्रमणोपासक दीक्षा—२१

प्रेक्षा-ध्यान शिविर—२

तपस्या	तत्त्वज्ञान
साध्वीश्री राजीमती—उपवास—७, आयंबिल—६	
साध्वीश्री कानकंवर—उपवास ३०,	६ थोकड़े सीखे
साध्वीश्री मानकंवर—उपवास—३,	
साध्वीश्री करुणाश्री—उपवास—७	७ थोकड़े सीखे
साध्वीश्री समताश्री—उपवास—७,	८ थोकड़े सीखे

भाई-बहिनों में—

बारी के उपवास—६, सोलिया तप—८, एकान्तर १०, एक इक्कीस प्रहरी पौषध, एक बंगाली युवक द्वारा अठाई व ॐ अभीराशिको नमः का जप करोड़ों में हुआ।

अनशन—श्रीमती आईदान सेठिया (साध्वीश्री विवेकश्री की संसार पक्षीया दादी) का ७७ वर्ष की आयु में १० दिनों के तिविहार व १५ मिनट के चौविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया। उनका अन्तिम समय तक मनोबल ऊंचा रहा।

श्रीमती मखूदेवी लूणिया (धर्मपत्नी श्री चंदनमल) का १५ मिनट के चौविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया। वह संघ-संघपति के प्रति समर्पित एवं दृढ़ आस्थावाली महिला थी।

विशेष लक्ष्य को लेकर चूरू में साध्वीश्री की सन्निधि में अ. भा. ते. यु. प. के संचालन में श्रावक-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें आचार्यवर के महत्त्वपूर्ण संदेश का वाचन हुआ।

साध्वीश्री राजीमती की प्रकाशित पुस्तकें :

१. ज्योतिकिरण २. दैनिक योग साधना ३. योग की प्रथम किरण

सेवा—श्रीमती केसर देवी दूगड़ ने करीब तीन माह आचार्यवर की उपासना की।

अमृत-महोत्सव के संदर्भ में एक साथ ५१ तेले, ५१ आयंबिल, १५१ एकासन, ५१०० सामायिक, ५१ तपस्या के बड़े थोकड़े, ५१ वार्षिक ब्रह्मचारी, ५१ रात्रि भोजन परित्याग (एक वर्ष के लिए) किया। चातुर्मास में भाषण, वाद-विवाद, निबन्ध प्रतियोगिता आदि अन्य कार्यक्रम आयोजित हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रूपांजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वीश्री भत्तु (सरदारशहर), साध्वीश्री पन्नांजी (गादाणा) साध्वीश्री ज्ञानवती, साध्वीश्री रतिप्रभा

चातुर्मास—खिवाड़ा (पाली, राज०)

यात्रा—३०० किमी., क्षेत्र—१३, पंचसूत्री संकल्प—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१३

प्रतिक्रमण—२, भक्तामर—१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (पाली में)

तपस्या—साध्वीश्री रूपा—उप—३१, वेला—१, भत्तुजी—उप—४५, वे—२, ते—१, सा० पन्ना—उपवास—२१, सा० ज्ञानवती—उपवास—५, सा० रतिप्रभा उपवास—२३

भाई-बहिनों में उपवास—४६१ वे—१३ तेला—१२ अठाई—२

स्थानीय हायर सेकेण्डरी स्कूल में साध्वीश्री का प्रवचन हुआ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री भीखां (नोहर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री राजकुमारी, साध्वीश्री रमाकुमारी, साध्वीश्री जयमाला, साध्वीश्री जयश्री।

यात्रा—१०० किमी. क्षेत्र—३

अणुव्रती—२१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प—५००

मंत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—६, शीलव्रत—२, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—एक, पांच थोकड़ा कण्ठस्थ—१, जैन विद्या परीक्षार्थी—५०, श्रमणोपासक दीक्षा—४

साध्वीश्री भीखा—उपवास—५, आयंबिल—४,

साध्वीश्री राजकुमारी—आयंबिल—५१ (एक साथ), उप. २६, वे. १, ते. ३

साध्वी रमाकुमारी—उपवास—२, आयंबिल अठाई—१

साध्वीश्री जयमाला—उपवास—३५, वेला—२, तेला—१, आयंबिल—७

साध्वीश्री रमाकुमारी व साध्वीश्री जयमाला ने छह-छह थोकड़े सीखे।

२० वर्षों में निरन्तर मौन, पंच द्रव्य व विगय त्रय उपरांत परिहार करने वाली साध्वीश्री राजकुमारी के एक साथ ५१ की आयंबिल तपस्या पर उनका अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर राजनगर चातुर्मासरत साध्वी

श्री सोमलता भी उपस्थित थीं। साध्वीश्री द्वारा लिखित एक पुस्तक "निरा-मया" प्रकाशित हुई। एक मासिक व उससे अधिक के सेवार्थी—

१. श्री अर्जुनलाल सोनी, २. श्री कन्हैयालाल सोनी, ३. श्री तेजराज भाणा वाले, ४. श्री मांगीलाल पगारिया, ५. श्री हीरालाल वाफना, ६. श्री मोहनलाल पगारिया, ७. श्री सोहनलाल पगारिया, ८. श्रीसुन्दरलाल कच्छारा, ९. श्री मोहनलाल वाफना, १०. श्री भंवरलाल वाफना, ११. श्री भंवरलाल चंडालिया, १२. श्री वावुलाल चोरड़िया, १३. श्री केशवलाल चौरड़िया, १४. श्री वावुलाल तलेसरा, १५ श्री रोशनलाल कोठारी।

अग्रगण्य—साध्वीश्री क्षमाश्री

सहयोगिनी—सा० सिरेकंवर, सा० गणेशां, सा. कैलाशवती सा० पंकजश्री

चातुर्मास—शेरपुर (पंजाव)

यात्रा—३६५ किमी., क्षेत्र—२५

अणुव्रती—२, वर्गीय अणुव्रती—१०००, पंच सूत्री संकल्प—२०१ मंत्र दीक्षा—१०१, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, शीलव्रत—१, भक्तामर—५, प्रतिक्रमण—१

	तपस्या	तत्त्वज्ञान
साध्वीश्री क्षमाश्री—	उपवास—३१, वे—१,	६ थोकड़े सीखे
साध्वीश्री सिरेकंवर—	उपवास—२५,	६ थोकड़े सीखे
साध्वी गणेशां—	उपवास—३८, वे—१, आयंविल—६	,,
साध्वीश्री कैलाशवती—	उपवास—५१, आयंविल—८, वेला—१	६ थोकड़े सीखे
साध्वी पंकजश्री—	उप०—३१, वे—१, तेला—१	६ ,,

भाई-बहिनों में उप०—४२५, आयंविल—१६०, वे०—५, तेला—२, चो०—१ आयंविल तेला—७

कार्यक्रम—वुढलाढा में साध्वीश्री के सान्निध्य में श्री कृष्णचंद की अध्यक्षता में मर्यादा-महोत्सव, जाखल में आचार्यश्री तुलसी दीक्षा दिवस, सुनाम में महावीर जयंती व अक्षय तृतीया कार्यक्रम संगरूर में आयोजित हुए। अमृत-महोत्सव कार्यक्रम के साथ श्री प्रेमचंद सीघला को अभातेयुप० द्वारा "युवक रत्न" अलंकरण प्रदान किए जाने पर अभिनंदन किया गया। साध्वीश्री से नेत्र विशेषज्ञ डा. राजकुमार (भोसी), कुरुक्षेत्र के न्यायाधीश श्री सुभाषचंद्र,

एस. डी. ओ. श्री एस. एल. जिंदल आदि विशिष्ट व्यक्ति मिले और बात-चीत की।

अग्रगण्य—साध्वीश्री भागवती (बाव)

सहयोगिनी—सा० पानकंवर (शार्दूलपुर), सा. मनोहरां (भादरा), सा. कंचनरेखा (बाव)

चातुर्मास—नोखामंडी (बीकानेर, राज०)

यात्रा—११०० कि०मी०, क्षेत्र—३५

मंत्र दीक्षा—७५, सम्यक्त्व दीक्षा—६५, शीलव्रत—१, पंचसूत्री संकल्प—१५०, पांच थोकड़े सीखने वाले—३, जैन विद्या—४३,

साध्वियों में तपस्या—सा० भागवती—उप०—२५, सा० पानकंवर—उप—४५, सा० मनोहरा—उप०—४१, बेला—१, ते—१, चो—१, साध्वी कंचनरेखा—उप—२४

चातुर्मास में अन्यान्य कार्यक्रमों के साथ अमृत-महोत्सव का कार्यक्रम भव्य रहा।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कमलप्रभा

सहयोगिनी—सा० अकलकुमारी, सा० सुधाश्री, सा० लघिमाश्री, सा० कीर्तिसुधा

चातुर्मास—कानोड़ (उदयपुर, राज०)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र—१३

मंत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—२१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, भक्तामर—४, चौवीसी—७, थोकड़ा सीखने वाले—२

साध्वीश्री कमलप्रभा—१/६३,

मौन—३ घंटा, जप १/२ घंटा

सा० श्री अकलकुमारी—१/६५, २/५, २/२, ३/२ मौन—३ घंटा जप—१/२ घंटा

सा० सुधाश्री—१/३५, ४/४ आयंबिल—५, मौन—तीन घंटा, जप व ध्यान आधा घंटा, सा० लघिमाश्री—४ माह आयंबिल-एकान्तर, मौन—२ घंटा, जप—१/२ घंटा ध्यान—१/२ घंटा

सा० कीर्तिसुधा—१/६६ आयंबिल—४, मौन—एक घंटा

सभी साध्वियों में अभीराशिको नम., ओम् भिक्षु आदि मंत्रों के अनुष्ठान हुए। सभी साध्वियों ने केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट पांच थोकड़े कण्ठस्थ

किये ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री आनंदश्री

सहयोगिनी—सा० रजतरेखा, सा० गुणप्रभा, सा० दीपांजी,

चातुर्मास—कोटा (राजस्थान)

यात्रा—६०० किमी., क्षेत्र—५

अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—७००, पंच सूत्री संकल्प—५०० सम्यक्त्व दीक्षा—२५,

साध्वियों में तपस्या—उपवास—२७, आयंबिल—६

कार्यक्रम—चातुर्मास में जैन एकता सम्मेलन, अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह, स्कूलों में सार्वजनिक प्रवचन, संवाददाता सम्मेलन, द्वितीय श्रावण में ग्यारह दिन तक खरतगरच्छ मंदिर में साध्वीश्री द्वारा कल्पसूत्र का वाचन आदि प्रभावी कार्यक्रम हुए ।

साध्वीश्री की सन्निधि में आयोजित समारोहों की राष्ट्रदूत, नवज्योति, राजस्थान पत्रिका, अधिनायक, जननायक, देश की धरती आदि पत्रों में खबरें छपीं ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सिरेकंवर (श्रीडूंगरगढ़)

सहयोगिनी—सा० केशर, सा० लीला, सा० मनोहरा, सा० कुशलरेखा सा० काव्यलता

चातुर्मास—गोगुन्दा (उदयपुर, राज०)

यात्रा—५७१, कि०मी०, क्षेत्र—३१

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प—३५१, मंत्र दीक्षा—१४५, सम्यक्त्व दीक्षा—२५०, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, शीलव्रत—२, व्रत दीक्षा—२८, श्रमणोपासक दीक्षा—२७, प्रतिक्रमण—१३, भक्तामर—५, थोकड़ा सीखने वाली बहिनें—५, श्रमणोपासक दीक्षा—२६

साध्वियों में तपस्या—उप—७०, बे—३, ते—१, इक्कीस—१

भाई-बहिनों में—१/१३०९, २/६५, ३/४६, ५/९८, ६/१, ८/४, ९/१, १०/१

साध्वीश्री काव्यलता ने २१ की तपस्या की । तपस्या के १५ वें दिन प्रदत्त अपने संदेश में आचार्यवर ने कहा—साध्वी सिरेकंवरजी के साथ साध्वी काव्यलता तपस्या कर रही है । १४ दिन पार कर दिये । आगे बढ़ रही है,

अच्छा है। जब तक तन और मन साथ दे और साथ ही जप, स्वाध्याय, ध्यान चलता रहे, तब तक चलना चाहिये। पारणे में विशेष खाद्य संयम रखना है। जितने दिन की तपस्या हो, उतने दिन खाद्य संयम रखना है।"

साध्वी कुशलरेखा व साध्वी काव्यलता ने क्रमशः चार व छह थोकड़े कण्ठस्थ किये।

कोठारिया गांव में साध्वीश्री के प्रवास में श्री भैरूलाल ने अनशनपूर्वक समाधि-मरण का वरण किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रायकुमारी (चाड़वास)

सहयोगिनी—सा० मीरां (राजलदेसर), सा० लीलावती, सा० विद्याकुमारी (सिसाय), सा० संयमप्रभा

चातुर्मास—डीडवाना (नागौर, राज०)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—१५, वर्गीय अणुव्रती—२१, मंत्र दीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा—४१, व्रत दीक्षा—७

साध्वियों में तपस्या—उपवास—१८५, बे—८, तें.—१ हुआ।

भाई-बहिनों में—उपवास—३०५, बे—७, ते—७, छह—१, अठाई ५, नौ—१०, ग्यारह—१

अग्रगण्य—साध्वीश्री सुखदेवांजी (सरदारशहर)।

सहयोगिनी—सा० मीरां, सा०, चांदकंवर, सा० मधुबाला, सा० विज्ञान श्री

चातुर्मास—रानी स्टेशन (पाली, राज०)

यात्रा—६७५ किमी. ;क्षेत्र—५

अणुव्रती—२०६, वर्गीय अणुव्रती—२५, पंच सूत्री संकल्प—१२५

मंत्र दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा—१५०, व्रत दीक्षा—११, भक्तामर—१५, चौवीसी—७, प्रतिक्रमण—२५

साध्वियों में तपस्या—उपवास—१२५, अठाई—१ हुई

साध्वीश्री मधुबाला व साध्वीश्री विज्ञान श्री ने पांच-पांच थोकड़े कण्ठस्थ किये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोहनकुमारी (छापर)

सहयोगिनी—सा० गणेशां, सा० जेठां, सा० लज्जावती, सा०

लावण्य श्री

चातुर्मास—उदयपुर (राज०)

यात्रा—२८०० किमी., क्षेत्र—४२

मंत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—७४, व्रत दीक्षा—१६, अणुव्रती—३६ वर्गीय अणुव्रती—८००, प्रतिक्रमण—३२, पचीस बोल—४०, भक्तामर—१२, चौबासी—२, श्रमणोपासक दीक्षा—७

साध्वीश्री सोहनकुमारी—उप० २५, ४ थोकड़े सीखे

साध्वीश्री गणेशा-बेला—६, पं० ६, तीन माह एकान्तर, प्रतिमाह ४ उपवास

साध्वीश्री लज्जावती—उप० १३, ३ थोकड़े सीखे

साध्वीश्री लावण्यश्री—उप०-१, ४ थोकड़े सीखे

भाई-बहिनों में—१-२-सैंकड़ों, ३/८०८, ४/२५, ५/१५, ६/१, ७/२, ८/१५, ९/१

मासखमण—१, सामूहिक आयंबिल-४५०

कार्यक्रम—बसती विगहा में साध्वी के सान्निध्य में अणुव्रत गोष्ठी हुई तथा सिधारिया में तुलसी मानस विद्या मंदिर हाईस्कूल में अध्यापकों के बीच प्रेक्षाध्यान व अणुव्रत पर चर्चा हुई। अजीतमल डिग्री कॉलेज के प्राचार्य ने प्रेक्षाध्यान में काफी रुचि प्रदर्शित की और प्रेक्षाध्यान की पत्रिका कॉलेज की लायब्रेरी में मंगाने का प्रस्ताव किया।

ग्राम बकेवर में जनता महाविद्यालय के प्राचार्य श्री शिवसेवक तिवारी ने अपने विद्यालय में साध्वीश्री के सान्निध्य में विशेष कार्यक्रम रखा। सिरसा में जैन इंटर कॉलेज में अध्यापक तथा विद्यार्थियों के बीच मध्याह्न तथा सायं दो कार्यक्रम हुए, जिसमें प्राचार्य एवं शिक्षकों ने प्रेक्षाध्यान शिविर में आने की इच्छा प्रकट की। चातुर्मास में अणुव्रत सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम समायोजित हुए।

साध्वीश्री के संपर्क में आने वाले विशिष्ट व्यक्ति हैं—जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री प्रेमचंद जैन, पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री आर० एल० शाह, विधायक सुश्री गिरिजा व्यास, जिला रसद अधिकारी श्री पी० सी० बलाई, मेवाड़ मंडलेश्वर महंत श्री मुरली मनोहर शरण, जनजाति विकास आयुक्त श्री एम० एल० मेहता, रा० वि० पीठ के संस्थापक उपकुलपति श्री जनार्दनराय नागर, उदयपुर नगर प्रन्यास के पूर्व चैयरमैन श्री गिरधारीलाल

शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा, पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर आदि।

एक माह या उससे अधिक सेवा करने वाले—

१. श्रीमती बदाम बाई गादिया (६ माह से चालू) २. श्री नानालाल श्रीमावत ३. श्रीमती हुलासबाई पोरवाल ४. श्रीमती प्रतापबाई करनपुर वाला ५. श्रीमती स्वागबाई तोतावत ६. श्रीमती अंबाबाई धर्मावत ७. श्रीमती नाथी बाई चवाण ८. श्रीमती नोजीबाई चवाण (कोचलावाला) ९. श्री मोहनलाल घूपिया १०. श्री भंवरलाल पगारिया ११. श्रीमती अजय तलेसरा १२. श्रीमती कस्तुर राजनगरवाला १३. श्रीमती विमला सुराणा १४. श्रीमती मोहन कोठारी १५. श्रीमती रतन भोलावत १६. श्रीमती मगन १७. श्रीमती मोहन करनपुरवाला १८. श्रीमती भंवरी मजावदवाला १९. श्रीमती प्राण खाकड-वाला २०. श्रीमती कंकु सहलोत २१. श्रीमती रोशन २२. सुश्री चंद्रा मारू

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोहनां (लाडनूं)

सहयोगिनी—सा० रतनकुमारी (सरदारशहर), सा० विनयश्री (श्रीडूंगरगढ़), सा० संवेगप्रभा (लूनकरणसर), सा० मंजुलता (लाडनूं)

चातुर्मास—साक्री (महाराष्ट्र)

यात्रा—५०० कि०मी०, क्षेत्र—२५

सम्यक्त्व दीक्षा—५५, श्रमणोपासक दीक्षा—६, थोकड़ा सीखने वाले—५, शीलव्रत—१, अणुव्रती-५१, पंच सूत्री संकल्प—२५१, प्रतिक्रमण—१६

साध्वीश्री	तपस्या	तत्त्वज्ञान
सोहनां	उप०-१४, बे०—१, छह—१ आयंबिल—५	
रतनकुमारी	उप०-२५, बे०-१, ते०-१, चो०-१, आयं-२१	
विनयश्री	उप०-१, आयं-५	५ थोकड़े सीखे
संवेगश्री	उप०-८, चो०-१, आयं-५	५ ,, ,,
मंजुलता	उप०-२, आयं-३	५ ,, ,,

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{५०}$, $\frac{२}{८३}$, $\frac{३}{५३}$, $\frac{४}{८}$, $\frac{७}{८}$, $\frac{८}{४}$, $\frac{९}{८}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१२}{५}$, $\frac{३०}{८}$, $\frac{३१}{२}$ आयंबिल मासखमण—१, हरिजन समाज में $\frac{१}{५१}$, $\frac{२}{६}$, $\frac{३}{३}$। श्रीमती शांता झांकरिया, श्रीमती कमला कोटेचा, श्री रगदूलाल टांटिया ने मासखमण किया।

साध्वीश्री के सान्निध्य में लोहारा में प्रेक्षाध्यान शिविर, पांचाराम में मर्यादा-महोत्सव, कन्हैगांव में सार्वजनिक प्रवचन, मनमाड़ में महावीर जयंति व अक्षय तृतीया कार्यक्रम हुए।

संस्मरण—साक्री निवासी श्री नेमीचंद पगारिया का पुत्र ववलू। उम्र ८ साल। रविवार के दिन ७ वजे ट्रेक्टर के नीचे आकर दव गया। जिला अस्पताल में ववलू को ले गए। डॉक्टरों ने ऑपरेशन करने से इंकार कर दिया। श्रीमती पुष्पा ने अपने लाल लाडले को गोद में लिटाया और भिक्षु स्वामी-भिक्षु-स्वामी का जप प्रारम्भ कर दिया। पूरे परिवार ने जप-मय वातावरण हो गया। दो घंटे वाद ववलू ने आंख खोल ली। डॉक्टर भी अब ऑपरेशन करने के लिए सहमत हो गये। ऑपरेशन सफल हो गया। माता पुष्पा अपने वच्चे के वचने का एक मात्र कारण आराध्य भिक्षु-स्वामी के जप को मानती है।

अग्रगण्य—साध्वीश्री नगीना (टॉडगढ़)

सहयोगिनी—सा० पद्मावती (शाहदा), सा० कंचनकंवर (उदयपुर), सा० पुष्पावती (वाव), सा० गवेषणाश्री (समदड़ी)

चातुर्मास—वालारम, हैदरावाद (आंध्रप्रदेश)

यात्रा—५३६ कि०मी०, क्षेत्र—३१

मंत्र दीक्षा—७०, सम्यक्त्व दीक्षा—१३७, शीलव्रत—४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, सचित्त त्याग—११, वर्गीय अणुव्रती—३००, पंच सूत्री संकल्प—५००, जैन विद्या—१५५, पत्राचार पाठमाला—६, प्रतिक्रमण—३७, भक्तामर—११, पचीस वोल—१०, थोकड़ा सीखने वाले—२५

साध्वियों में उपवास—१८५, वे०—२, सा० कंचनकंवर, सा० पुष्पावती ने मासखमण किये, साध्वियों में प्रतिदिन मौन ६ घंटा, जप—साढ़े तीन घंटे, ध्यान—२ घंटा, आयंविल—५१, तथा ॐ अभीराशिको नमः का सोलह लाख से भी अधिक का जप विशेष अनुष्ठान के रूप में हुआ।

भाई-वहिनों में—१/१८२९, २/३५, ३/७५, ४/४, ५/२, ६/२, ७/३, ८/८, ९/३, ११/३, १२/१, १५/१ आयंविल—६९५५, ॐ अभीराशिको नमः का जप—६२ करोड़

तपस्या के उपलक्ष में आचार्यश्री का संदेश

साध्वी पुष्पावती ने हैदरावाद में मासखमण की तपस्या की है। यह अच्छी वात है। हमारा संघ त्याग-तपस्या के वल पर ही टिका हुआ है।

त्याग-तपस्या से ही इसकी दीप्ति बढ़ रही है। इस मासखमण तपस्या से अन्यान्य लोगों को प्रेरणा मिलेगी।

आमेट आचार्य तुलसी

१६ जुलाई, १९८५

आचार्यश्री ने जागृति पत्र के लिए भी संदेश प्रदान किया।

कार्यक्रम

८ जनवरी से १४ जनवरी तक साध्वीश्री के सान्निध्य में एवं जेठाभाई व नगीनभाई के निर्देशन में 'प्रेक्षाध्यान शिविर' का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन इनकमटैक्स कमीशनर श्री विमलचंद श्रावक ने किया।

२८ फरवरी/'मर्यादा-महोत्सव' समारोह साध्वीश्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ। प्रमुख वक्ता थे अल्लाड़ी श्री कुप्पुस्वामी चीफ जस्टीस ऑफ आंध्रा, कृषि निदेशक मौलवी श्री जैनलावुद्दीन आंध्रप्रदेश, यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ० चंद्रभाण रावत।

१ मार्च/साध्वीश्री के सान्निध्य में 'आंध्रा में जैन धर्म' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। आंध्रप्रदेश के अनेक गणमान्य विद्वानों ने भाग लिया। शोध निबंध पढ़े गये और जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने वाली अनेक झांकियां पर्दे पर प्रस्तुत की गई।

३ मार्च/महावीर जयंति के उपलक्ष में चारों संप्रदाय का विशाल समारोह हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन आंध्रप्रदेश के राज्यपाल डॉ० शंकरदयाल शर्मा ने किया। साध्वीश्री के भाषण से लोग प्रभावित हुए। उपस्थिति करीब ७-८ हजार की थी। तेलगू और हिंदी दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम को रिले किया गया था। स्थानीय पत्रों में भी अच्छी चर्चा रही।

७ मार्च/'जैन धर्म की विश्व को देन' विषय पर रवींद्र भारती में विशेष कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि थे—आंध्र के मंत्री श्री अशोक गणपति राजू। प्रोफेसर श्री शांतिलालजी डागा आदि।

११ जुलाई/साध्वीश्री पुष्पावती जी के मासखमण के उपलक्ष में विशाल जनमेदिनी के बीच तप अभिनंदन-समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आंध्र विधानसभा के अध्यक्ष श्री नारायण रावजी।

२९ जुलाई/साध्वीश्री के सान्निध्य में 'सर्व धर्म समन्वय' का विराट् आयोजन हुआ। उद्घाटन कर रहे थे महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल-

सिंह। अन्यान्य धर्मों के प्रमुख श्री गोपालराव, चीफ जस्टिस, डॉ० के० डेविड, प्रिंसिपल आंध्र ख्रिश्चिन थियोलोजीकल कॉलेज, महमूद पासा ब्रादर्स तख्त-नशीन स्टेट प्रेसिडेंट जेमीएटस सोफिया आंध्रप्रदेश, श्री ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी प्रीतमकारजी, श्री डी० रामचंद्रराव आदि। कार्यक्रम बहुत सुंदर रहा। कार्यक्रम के समाचार हिंदी मिलाप, हैदराबाद समाचार, सिटीजन, न्यूज टाइम, हिंदुस्तान, जैन संदेश आदि पत्रों में प्रकाशित हुए। तेलगु तथा दिल्ली दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से कार्यक्रम प्रसारित किया गया।

आंध्रा के मुख्यमंत्री श्री एन० टी० रामाराव का साध्वीश्री नगीनां से मिलन हुआ। अणुव्रत, आचार्यश्री तुलसी तथा अन्य विषयों पर वार्तालाप हुआ।

६ अक्टूबर/साध्वीश्री कंचनकंवरजी के मासखमण के उपलक्ष में साध्वीश्री नगीना के सान्निध्य में तप अभिनंदन समारोह रखा गया। प्रमुख अतिथि थे—श्री वंदेमातरम रामचंद्रराव जी।

संस्मरण—स्वामीजी के नाम का चमत्कार

मध्याह्न का समय। प्रवचन समाप्त हुआ। श्री कन्हैयालाल नखत (सिकन्दराबाद) अपनी पुत्रियों के साथ ऑटोरिक्शा से घर लौट रहे थे। चौराहे पर पहुंचते ही एक ट्रक ने सामने से आकर टक्कर मार दी। ऑटो उलट गया। आंखों सामने अंधेरी छा गई। मुंह से भिक्षु स्वामी के अतिरिक्त और कुछ नहीं निकला। नाम का ऐसा अमोघ प्रभाव पड़ा है कि जो ट्रक सबको कुचलकर आगे निकलने वाला था हठात् वहीं रुक गया। श्री कन्हैयालाल साहस बटोरकर खड़े हुये। अपनी एक लड़की नीचे दब गयी थी खींचकर बाहर निकाला। ड्राईवर को गहरी चोट लगी। ये पांचों सदस्य बाल-बाल बच निकले। सबको आश्चर्य यह था कि बिना रोके ही ट्रक कैसे रुक गई। वापस आकर साध्वीश्री से मंगलपाठ सुना और स्वयं और तथा तीन पुत्रियों के बाल-बाल बच जाने के पीछे भिक्षु स्वामी के नाम को माना।

द्वार लोहकवच बना

यात्रा के दौरान एक दिन साध्वीश्री का प्रवास नवनिर्मित छत्रम् हुआ। श्रद्धालु लोगों के घर करीब एक कि०मी० दूर थे। बाहर से आने वाले लोग कार्यक्रम के बाद अपने-अपने गांव लौट गये। कासीद साथ था नहीं। काली कजरारी रात। ४-५ व्यक्ति आकर दस्तक देने लगे। यहां केवल हम साध्वी

लोग है, उन्हें सूचित कर दिया गया था, किंतु उनकी इच्छा पूर्ति नहीं होने से क्रोध उभर आया। हर हालत में अंदर घुसने के लिए कृत संकल्प हो गये। छत्रम् के आगे-पीछे और ऊपर से रास्ता खोजने लगे। भीतर प्रवेश का सुराख नहीं मिला। जोर-जोर से दस्तक देकर द्वार तोड़ने का भरसक प्रयास कर रहे थे। उधर द्वार लोहकवच बनता जा रहा था। सफलता कहीं से भी हाथ नहीं लगी। लगभग साढ़े दस बजे से प्रातः ५ बजे तक यह क्रम चलता रहा। साध्वियों के 'ॐ-भिक्षु' और 'जय भिक्षु-जय तुलसी' का स्वर गूंजता रहा। इस प्रकार साध्वियां इस विघ्न से निर्विघ्न बन गई।

अग्रगण्य—साध्वीश्री जतनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० पानकुमारी, सा० कमलावती, सा० गरीमाश्री
चातुर्मास—टापरा (बाड़मेर, राज०)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र—१५

मंत्र दीक्षा—३००, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, शीलव्रत—२, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, पंच सूत्री संकल्प—१४५, श्रमणोपासक दीक्षा—४, भक्तामर—३, चौबीसी—३, जैन तत्त्व प्रवेश, (भाग एक) की परीक्षा में परीक्षार्थी—४१

सा० जतनकुमारी के उप०—१५, बे०—१, सा० कमलावती उप०—२७, बे०—१, सा० गवेषणाश्री उप०—६, साध्वीश्री गवेषणाश्री ने छह थोकडे कंठस्थ किये। भाई-बहिनों में आयंबिल—२५०० हुए। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह व अमृत-महोत्सव के सुन्दर कार्यक्रम रहे।

अग्रगण्य—साध्वीश्री गुलाब कंवर

सहयोगिनी—सा० फूलकुमारी, सा० रायकंवर, सा० चंद्रकला, सा० हेमरेखा

चातुर्मास—मारवाड़ जंक्शन (राज०)
यात्रा—६९० कि०मी०, क्षेत्र—३५

अणुव्रती—४५, अणुव्रती—५०१, पंच सूत्री संकल्प—१०१, मंत्र दीक्षा—१५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१५१, व्रत दीक्षा—५, शीलव्रत—१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, भक्तामर—१३, चौबीसी—१

साध्वियों में पन्द्रह—१, पं०—१, अठाई—२, उपवास—५०१

अग्रगण्य—साध्वीश्री कानकुमारी

सहयोगिनी—सा० प्रभाश्री, सा० मधुरेखा, सा० सविताश्री, सा० कुंदनप्रभा, सा० प्रेमप्रभा।

चातुर्मास—वीकानेर (राज०)

यात्रा—४०० कि०मी०, क्षेत्र—६

वर्गीय अणुव्रती—२४१, पंच सूत्री संकल्प—२४०, मंत्र दीक्षा—१०५, सम्यक्त्व दीक्षा—१५१, व्रत दीक्षा—५१, शीलव्रत—३, प्रेक्षाध्यान शिविर—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, ५ थोकड़े सीखने वाले—१, तीन थोकड़े सीखने वाले—३, पचीस वोल—१०१

साध्वियों में तपस्या—उप०—७२, ते०—२१

भाई-वहिनों में—$\frac{१}{१०००}$, $\frac{२}{५१}$, $\frac{३}{८५}$, $\frac{४}{१७}$, $\frac{५}{१५}$, $\frac{६}{७}$, $\frac{७}{५}$, $\frac{८}{११}$, $\frac{९}{३}$, $\frac{१०}{३}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१३}{१}$, $\frac{१५}{१}$, $\frac{३०}{१}$ आयंविल मासखमण—१

साध्वीश्री से भेंट करने वाले विशिष्ट व्यक्ति-जिला पुलिस अधीक्षक श्री पी० पी० सी० भंडारी, राज० नहर आयुक्त श्री पी० सी० जैन, नगर विकास न्यास के श्री भवानीशंकर शर्मा, राज० पत्रिका के संवाददाता श्री श्याम शर्मा, नवज्योति के श्री विष्णु शर्मा, युगपक्ष के श्री जशकरण सुखानी आदि। गण-राज्य पत्र ने आचार्यवर के अमृत-महोत्सव पर विशेषांक प्रकाशित किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रूपां (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० चांदकंवर (हांसी), सा० पानकंवर (सरदारशहर), सा० सूरजकंवर (वीदासर), सा० सिरेकंवर (सुजानगढ़), सा० सरस्वती (हांसी)

चातुर्मास—श्रीडूंगरगढ़ (चूरू, राज०)

यात्रा—८० कि०मी०, क्षेत्र—५

वर्गीय अणुव्रती—६००, मंत्र दीक्षा—२७०, सम्यक्त्व दीक्षा—१०२ प्रेक्षाध्यान शिविर—५, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—४, ५ थोकड़े सीखने वाले—५, भाई-वहिनों के करीव चार लाख गाथायें कंठस्थ हुई।

तपस्या—सा० रूपां, सा० सिरेकंवर प्रतिमाह ४ उपवास, सा० सरस्वती ते०—१

भाई-वहिनों में वारी उपवास—१७, एकान्तर—१६, आयंविल वारी—१६, सोलिया—२७, पखवाड़ा—२, एक साथ तेले—१६५, एक साथ

आयंबिल—२२१, वर्षीतप—६

अमृत-महोत्सव के संदर्भ में तपस्वी श्री मूलचंद बाफणा ने ४५, ३८, ५४ की एक ही वर्ष में तपस्या की। कम उम्र में अठाई करने वाली सुश्री ज्योति पुगलिया—११ वर्ष २. सुश्री नीलम छाजेड़—६ वर्ष ३. सुश्री मधु भंसाली—साढ़े आठ वर्ष ४. प्रदीपकुमार छाजेड़—साढ़े आठ वर्ष।

साध्वीश्री के सान्निध्य में अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। पूर्व विधायक श्रीमती कांता खतूरिया साध्वीश्री से मिली व बातचीत की। इस वर्ष आदर्श साहित्य संघ से सा० रूपांजी द्वारा लिखित 'उनकी कहानी मेरी जुबानी' पुस्तक प्रकाशित हुई।

श्रीडूंगरगढ़ में जै० श्वे० तेरा० सभा द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालय तेरापंथी महिला मंडल द्वारा सार्वजनिक सिलाई, बुनाई प्रशिक्षण दिया जाता है। महिला मंडल द्वारा गरीबों की मदद हेतु सिलाई मशीनों का वितरण किया गया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री मेणरया

सहयोगिनी—सा० छोटां, सा० केशर, सा० संवेगश्री

चातुर्मास—झकनावद (मध्यप्रदेश)

यात्रा—५४० कि०मी०, क्षेत्र—२२

पंच सूत्री संकल्प—१७५, मंत्र दीक्षा—२३, सम्यक्त्व दीक्षा—१५७ व्रत दीक्षा—६, मद्य निषेध व मांस परिहार करने वाले—६०, जैन विद्या परीक्षार्थी—५१, अणुव्रत परीक्षार्थी—२५, पचीस बोल—४१, लघु दंडक, तत्त्व चर्चा—६, प्रतिक्रमण—६, भक्तामर—१

साध्वियों में उपवास—६६, ते०—१ हुआ। सभी साध्वियों ने पांच-पांच थोकड़े कण्ठस्थ किये।

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{७५}$, $\frac{२}{१५}$, $\frac{३}{१०}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{८}{३}$, $\frac{९}{१}$ एकान्तर—तेले-तेले—१, बेले-बेले—१, बारी उपवास—६, आयंबिल—३२

साध्वीश्री के सान्निध्य में अनेक समारोह समायोजित हुए। नई दुनिया, स्वदेश, दैनिक भास्कर (इंदौर) आदि पत्रों में कई बार समाचार प्रकाशित हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोमलता

सहयोगिनी—सा० किस्तुरां, सा० कीर्तिलता, सा० शांतिलता, सा०

शकुन्तला

चातुर्मास—राजसमद (उदयपुर, राज०)

यात्रा—५०० कि०मी०, क्षेत्र—कई

श्रमणोपासक दीक्षा—२१, प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर—१ (५ दिन का)

साध्वीश्री सोमलता उप०—९, मौन—४ घंटा, ध्यान आधा घंटा, स्वाध्याय—१००० गा०

साध्वी किस्तुरां—२ घंटा मौन, ३०० गा० स्वाध्याय

साध्वीश्री कीर्तिलता—उप० ३०, दो घंटा मौन, ६०० गा० स्वाध्याय

साध्वीश्री शांतिलता—३ घंटे मौन, १५ मिनट ध्यान, ३०० गा० स्वाध्याय

साध्वीश्री शकुन्तला—दो घंटे मौन, १५ मिनट ध्यान, ३०० गा० स्वाध्याय

साध्वियों में जप के विशेष प्रयोग भी हुए।

आचार्यवर के आमेट चातुर्मास में राजसमंद से सैंकड़ों-सैंकड़ों लोगों का दर्शनार्थ आना-जाना रहा। साध्वीश्री के सान्निध्य में अनेकविध कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री इन्द्रूजी

सहयोगिनी—सा० रायकंवर (सुजानगढ़), सा० पुनां (सुजानगढ़), सा० लिछमां (गंगा), सा० मर्यादाश्री (गोगुन्दा)

चातुर्मास—पीपाड़ शहर (पाली, राज०)

यात्रा—५०० कि०मी०, क्षेत्र—८

मंत्र दीक्षा—११, सम्यक्त्व दीक्षा—५५, शीलव्रत—१, श्रमणोपासक दीक्षा—८, पंच सूत्री संकल्प—८४, भक्तामर—९, कल्याण मंदिर—२, जैन तत्त्व प्रवेश—१, चौवीसी व आराधना—७, पंच सूत्रम्—२, तत्त्व चर्चा—५०, जैन सिद्धांत दीपिका—१, कालू तत्त्व शतक—३९ प्रतिक्रमण—६९, पच्चीस वोल—८४

तपस्या—साध्वियों में—सा० इन्द्रूजी—उप० ७, सा० पुनां—उप० ८६, वे०—२, ते०—१, सा० रायकंवर—उप० २५, ते०—१, सा० लिछमां—उप० ९, सात—१, सा० मर्यादाश्री—उप० ८१, वे०—१, ते०—३

भाई-वहिनों में—१/३९२, २/१९६, ३/९, ४/३, ५/४, ८/५, ९/२, ११/२, १६/१ साध्वीश्री

मर्यादाश्री ने आलोच्य वर्ष में १०३६ गाथा कंठस्थ की।

अग्रगण्य—साध्वीश्री चारित्रश्री

सहयोगिनी—सा० मनोहरां, सा० विनयश्री, सा० धर्मलता, सा० हेमलता

चातुर्मास—पालघर (महाराष्ट्र)

यात्रा—७०० कि०मी०, क्षेत्र—७५

मंत्र दीक्षा—१५०, जैन विद्या परीक्षा—८५, प्रतिक्रमण—४१, वर्गीय अणुव्रती—२५, शीलव्रत—१ सचित्त त्याग—२, भक्तामर—८, पचीस बोल—१०, थोकड़ा सीखने वाले—७, व्रत दीक्षा—१५, सम्यक्त्व दीक्षा—६२

साध्वीश्री चारित्रश्री—उप० १६, बे०-१, ते०-१, मौन-दो घंटा, वाचन-३५०० पृ०, स्वाध्याय-४०० गाथा

साध्वीश्री मनोहरां—उप०-६, मौन-तीन घंटे

साध्वीश्री विनयश्री—उप०-१३, बे०-१, ते०-१ दो घंटे मौन

साध्वीश्री धर्मलता—उप०-१२, ते०-१, मौन-डेढ़ घंटे, वाचन-५०० पृ०

साध्वीश्री हेमलता—उप०-४२, ते०-१, मौन-दो घंटे, वाचन-२००० पृ०, स्वाध्याय-५०० गाथा

चारित्रश्री ने ४००, सा० हेमलता ने ३००० गाथा कण्ठस्थ की।

भाई-बहिनों में—$\frac{२}{३५}$, $\frac{३}{१३}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{३}$। $\frac{८}{१५}$, $\frac{१७}{१}$, $\frac{३०}{१}$, $\frac{३३}{१}$

साध्वीश्री के सान्निध्य एवं जेठाभाई व नमीन भाई के निदेशन में दो प्रेक्षाध्यान शिविर लगे। ४ सितंबर को पालघर कॉलेज में साध्वीश्री का 'शिक्षण व नीति' विषय पर प्रवचन हुआ। वहां नियमित ज्ञानशाला चलती है जिसमें ५०-६० विद्यार्थी पढ़ते हैं। पालघर क्षेत्र में यह प्रथम चातुर्मास है। साध्वीश्री के चातुर्मास के साथ ही यह क्षेत्र चातुर्मासिक क्षेत्रों की गिनती में आ गया है।

अग्रगण्य—साध्वीश्री तोजां

सहयोगिनी—सा० इन्दुमती, सा० सत्यवती, सा० पुण्यदर्शना

चातुर्मास—रतलाम (मध्यप्रदेश)

यात्रा—१२०० कि०मी०, क्षेत्र—३१

अणुव्रती—२१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प—५००, मंत्र-दीक्षा—८५, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, व्रत दीक्षा—६, शीलव्रत—५,

प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (रतलाम में), थोकड़ा सीखने वाले—५, भक्तामर व चौबीसी—५, जैन विद्या परीक्षा—६७

साध्वियों में तपस्या—उप०—११५, बे०—३, ते०-४, पं० २, आयंबिल—३१, एकान्तर—१ माह, मौन व जप-२-२ घं०, ध्यान—आधा घंटा

भाई-बहिनों में—बे०—१५, ते०—३१, सोलह—१, पचरंगी—१

साध्वीश्री सत्यवती व साध्वीश्री पुण्यदर्शना ने पांच-पांच थोकड़े सीखे।

आचार्यश्री ने ५ मई को कानाना से साध्वीश्री तीजां को एक संदेश प्रदान किया जो इस प्रकार है—

'मालवा प्रदेश में विहरमान साध्वी तीजांजी ! सुखपृच्छा। तुम लोग समाधि पूर्वक विहार करना। साध्वी तीजांजी को कई वर्ष हो गये। सुदूर विहार करके आए हैं। सब जगह अच्छा काम किया है। स्वास्थ्य का ध्यान रखना। जहां कहीं रहो, शासन की प्रभावना करना।'

युवाचार्यश्री ने रतलाम में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर के लिए एक संदेश प्रदान किया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत भावात्मक एकता दिवस के दिन गुरुसिंह सभा के अध्यक्ष श्री हरदयालसिंह, रवीन्द्र नाथ भटर, इमामश्री मौलाना जाहीद साहब, जमीयत उलमा के महाराज मसूद अरीबसा, महाविद्यालय के प्रोफेसर श्री बी० एल० आच्छा आदि महानुभावों ने भाग लिया।

साध्वी तीजांजी अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ बदनावर से पेटलावद जा रही थी। किशनगढ़ व घुघरी मध्य विशाल माही नदी बह रही थी। उस नदी पर जो कच्चा पुल बना हुआ था उससे साध्वियां चलीं। साध्वियां चढ़ तो गई, पर उतरना कठिन हो गया। वापिस उसी रास्ते से उतरना शुरु किया। अगर एक भी पैर इधर-उधर हो जाये, तो कोई भी दुर्घटना घट सकती है। साध्वियां भिक्षु स्वामी के नाम को मन व वाणी में रखते हुए उस विषम परिस्थिति से उबर गईं।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विद्यावती (श्रीडूंगरगढ़)

सहयोगिनी—सा० गुणसुन्दरी, सा० महाकंवर, सा० प्रियवंदा

चातुर्मास—जलगांव (महाराष्ट्र)

यात्रा—८०० कि०मी०, क्षेत्र—२१

अणुव्रती—१५१, पंच सूत्री संकल्प—२५००, सम्यक्त्व दीक्षा—१५०, व्रत दीक्षा—६, शीलव्रत—४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—४, पचीस बोल—११, भक्तामर—२२, प्रतिक्रमण—१५, कल्याण मंदिर—४

सा० विद्यावती, सा० महाकंवर एवं सा० प्रियवंदा ने ६-६ थोकड़े सीखे। साध्वियों मे उप०—१८, आयंबिल—१२ हुए।

भाई-बहिनों में—१/८००, २/९५, ३/३०, ४/७, ८/५, ६/६८, ११/२, उपवास की बारी—४, जलगांव के एक ही छाजेड़ परिवार की ७ बालिकाओं ने एक साथ ९ की तपस्या की।

कार्यक्रम—जलगांव में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण संदेश प्राप्त हुए। इस शिविर में ७१ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर समापन के अवसर पर महाराष्ट्र कांग्रेस एस० के उपाध्यक्ष व विधायक श्री सुरेश दादा जैन, स्थानकवासी समाज के संघपति श्री नथमल लूकड़ उपस्थित थे।

साध्वीश्री के सान्निध्य में पश्चिमांचल तेरापंथ श्रावक संघ का छठा अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जिसमें ५० क्षेत्रों के ३०० प्रतिनिधि आये। कार्यक्रम में विधायक श्री सुरेश दादा जैन, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री भंवरलाल जैन, बंबई के श्री बंशीलाल कुचेरिया, श्रावक संघ के मंत्री श्री शांतिलाल नांदेचा आदि की प्रेरक उपस्थिति थी। इस अधिवेशन में कई प्रस्ताव पारित किये गये। अधिवेशन पर प्रदत्त आचार्यवर का संदेश—

पश्चिमांचल बहुत लम्बा चौड़ा क्षेत्र है। हजारों तेरापंथी इस क्षेत्र में रहते हैं। उनके मन में धर्मसंघ एवं संघपति के प्रति सहज ही गहरी निष्ठा एवं श्रद्धा के भाव हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ की सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि वह एक नेतृत्व और अनुशासन में उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। साधु-साध्वियों की तरह श्रावक-श्राविकाएं भी धर्मसंघ के अंग हैं। उनका दायित्व है कि वे भी अपने सामाजिक संगठन को सब प्रकार से सुदृढ़ बनायें।

पश्चिमांचल तेरापंथ श्रावक संघ अपना आगामी अधिवेशन जलगांव में साध्वी विद्यावती के सान्निध्य में करने जा रहा है। इसमें विचारशील श्रावकों के भाग लेने की संभावना है। आशा है उस अवसर पर इन विषयों पर भी चिंतन करेंगे।

१. भावी पीढ़ी के युवकों और युवतियों में किस प्रकार धार्मिक संस्कारों को सुरक्षित रखा जाए।
२. अमृत-महोत्सव के अवसर पर घोषित पंचसूत्री कार्यक्रम का व्यवस्थित रूप में किस प्रकार प्रचार-प्रसार किया जाए।
३. समाज में किस प्रकार सादगी की भावना को बढ़ावा मिले तथा प्रदर्शन की भावना समाप्त हो।

—आचार्य तुलसी

विधायक श्री सुरेश दादा जैन जलगांव के विधायक हैं। युवा प्रतिभा संपन्न जैन श्रावक हैं। चातुर्मास में वे, उनके भाई व माताजी साध्वीश्री के संपर्क में रहे। आचार्यश्री ने उन्हें व्यक्तिशः संदेश भी प्रदान किया।

घांटजी, आर्णी, जवला दाख्हा, खामगांव, लोणी, गवली, मेहर, देवल गांवमाली, लोणार, पहूर व जलगांव में साध्वीश्री ने अवधान प्रयोग किये तथा हस्तकला प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ। आकोला में मर्यादा-महोत्सव एवं श्रावक-सम्मेलन, मेहकर में महावीर जयंति मनाई गयी।

साध्वीश्री के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रमों में सम्मिलित होने वाले व भेंटकर्ता विशिष्ट व्यक्ति थे—सिविल जज श्री नरवाडे, विधायक श्री सुरेश दादा जैन, मराठी कवि श्री नामदेव राठा, इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल श्री वी० के० श्रीवास्तव, एम० जे० कॉलेज के प्रिंसिपल डी० एस० नेमाडे, नूतन मराठा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री के० आर० सोनवणे, पूर्व विधायक ईश्वर बाबू जैन, विधायक श्री हरिभाऊ, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिंसिपल श्री सुन्दरलाल मल्हारा आदि। उन्होंने आचार्यश्री एवं उनके द्वारा की जा रही प्रवृत्तियों की प्रशंसा की।

साध्वीश्री के सान्निध्य में मनाये गये अमृत-महोत्सव कार्यक्रम में महिला मंडल ने २१ संकल्प लिये। चातुर्मास में साध्वीश्री के सान्निध्य में दो बार प्रेस कांफ्रेंस हुई। दो बार आकाशवाणी से 'जैन धर्म व आचार्य तुलसी' तथा 'राष्ट्रीय एकात्मकता व मेरा धर्म' विषय पर साध्वीश्री के विशेष वक्तव्य प्रसारित हुए।

अनेकविध कार्यक्रमों के समाचार जिन पत्रों में प्रकाशित हुए, वे प्रायः मराठी भाषा के हैं। वे हैं—मातृभूमि, शिवशक्ति, युक्तिवाद, आकोला समाचार, विश्व सागर, द० हितवारा (अंग्रेजी) नवभारत, युग-धर्म, लोकमत, लादमीदार आदि।

संस्मरण—साध्वीश्री विद्यावती के साथ साध्वीश्री प्रियवंदा हैं। उनके बायें पैर में लगभग तीन वर्षों से एक गांठ थी। उनके विभिन्न रूप थे। कभी वह लाल, कभी उसमें सूजन तथा कभी दर्द उठ जाता था। डॉ० ने ऑपरेशन की सलाह दी। जलगांव में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर में जब जेठाभाई का आना हुआ तब उनसे सलाह मशविरा करके साध्वीश्री प्रियवंदा ने ध्यान व अनुप्रेक्षा का अभ्यास प्रारंभ किया। दस दिनों में ही ऐसा चमत्कार घटित हुआ कि वह गांठ शनैः शनैः लुप्त हो गई, दर्द दूर हो गया।

अग्रगण्य—साध्वी रतनश्री (लाडनूं)

सहयोगिनी—सा० कुलप्रभा, सा० रमावती, सा० शुक्ल प्रभा

चातुर्मास—फिल्लौर (पंजाब)

यात्रा—२५० कि०मी०, क्षेत्र—१३

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—७१, पंच सूत्री संकल्प—१११, सम्यक्त्व दीक्षा—७०, ६ पूरे परिवार, शीलव्रत—५, प्रतिक्रमण—८, भक्तामर—३, पचीस बोल—५१, मद्य-मांस त्याग—५५१, सचित्त त्याग—५८०, ठहराव परित्याग—५१, चाय-त्याग—५१

भाई-बहिनों में सवा लाख का जप व ४५१ आयंबिल हुए।

भटिण्डा बाजार में सार्वजनिक प्रवचन, जेतोमण्डी में महावीर जयंति कार्यक्रम तथा कोटकपुरा में सनातन मंदिर में साध्वीश्री का प्रवचन हुआ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सूरजकंवर (जयपुर)

सहयोगिनी—सा० पानकंवर, सा० रायकंवर (जयपुर), सा० जयकंवर (खाटू), सा० कुंदनरेखा (हिसार)

चातुर्मास—कालू (बीकानेर, राज०)

यात्रा—१८५ कि०मी०, क्षेत्र—३

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प—५१, श्रमणोपासक दीक्षा—५१, मंत्र दीक्षा—६६, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, शीलव्रत—५, थोकड़े सीखने वाले—७, भक्तामर—७, प्रतिक्रमण—५, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, (८ दिन का), व्रत दीक्षा—५१

तपस्या साध्वियों में—सा० सूरजकंवर—उप० ३३, ते०—१, सा० पानकंवर उप० ३७, सा० रायकंवर उप०—४६, बे०—१, सा० जयकंवर उप०—४१, ते०—१, सा० कुन्दनरेखा उप०—६१, बे०—२, ते०—२,

चो०—१, आयंबिल ते०—१, सा० रायकंवर, सा० जयकंवर व सा० कुंदनरेखा ने छह-छह थोकड़े कण्ठस्थ किये।

भाई-बहिनों में—$\frac{२}{८५}$, $\frac{३}{८३०}$, $\frac{५}{८८}$, $\frac{६}{७}$, $\frac{८}{५५}$, $\frac{९}{१८}$

नव वर्षीय पांच कन्याओं ने अठाई तप किया, वे हैं—समता नाहटा, समता सांड, सुनीता, चंचल व सरिता बोथरा।

साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के कार्यक्रम हुए। तपस्या का उत्कृष्ट उपक्रम चला। अनेकों सांस्कृतिक, वक्तृत्व कला विकास के कार्यक्रम संपादित हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री राजकुमारी

सहयोगिनी—सा० जतनकुमारी, सा० कमलरेखा, सा० सोमयशा

चातुर्मास—बायतू (बाड़मेर, राज०)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र—२०

अणुव्रती—२०, पंच सूत्री संकल्प—१५०, सम्यक्त्व दीक्षा—७१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, भक्तामर - १३, चौबीसी—१०,

साध्वियों में काफी आयंबिल हुए। भाई-बहिनों में सैकड़ों उपवास व अन्य तपस्याएं हुईं। सा० राजकुमारी के उप०—४०, बे०—१ तथा साध्वी कमलरेखा के उपवास—१५, तेला—१० हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पिस्तां

सहयोगिनी—सा० पुन्नां (बीदासर), सा० दीपमाला (उमरा), सा० स्वर्णलता (श्री करणपुर)

चातुर्मास—टॉडगढ़ (अजमेर, राज०)

यात्रा—४५० कि०मी०

अणुव्रती—२१, पंच सूत्री संकल्प—२१, व्रत दीक्षा—२१

तपस्या सा० पिस्तां—उप०—४१, आयंबिल—१४, बे०—१, ते०—२, अठाई—१, सा० पुन्नां—उप०—३१, आयंबिल—८, बे०—१, सा० दीपमाला—उप०—३२, आयंबिल—५, बे०—१, सा० स्वर्णलता—उप०—२२, आयंबिल—८, अठाई—११

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{८०९}$, $\frac{२}{३५}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{६}$, $\frac{८}{९९}$, $\frac{१०}{१}$ वर्षीतप—२, दो महीने एकान्तर—३, सामूहिक आयंबिल हुए—६९, टॉडगढ़ में उप जिलाधीश श्री माणकचंद जैन, पुलिस उप अधीक्षक श्री भोपालसिंह साध्वीश्री से मिले।

अग्रगण्य—साध्वीश्री चांदकुमारी (लाडनूं)

सहयोगिनी—सा० राकेशकुमारी (राजलदेसर), सा० तिलकश्री (सुजानगढ़), सा० मंजुबाला (मोमासर), सा० तितिक्षाश्री

चातुर्मास—कलकत्ता महासभा भवन

यात्रा—१८३१ कि०मी० (दिल्ली-कलकत्ता) क्षेत्र—३१

अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—७००, पंच सूत्री संकल्प—हजारों, मंत्र दीक्षा—१०००, सम्यक्त्व दीक्षा—६१, व्रत दीक्षा—५१, शीलव्रत—५, प्रेक्षाध्यान-शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, जैन विद्या परीक्षा—६०, थोकड़ा—१२१, प्रतिक्रमण—२१

साध्वियों में उप०—४५, मौन—प्रतिदिन पांच घंटा, जप—तीन घंटा, ध्यान—२ घंटा, विशेष अनुष्ठान—ॐ अमीराशिको नमः ६ लाख, स्वाध्याय—५ हजार पृष्ठ

भाई-बहिनों में उपवास—हजारों तथा बेले, तेले, सैकड़ों हुए। ४१ दिन की तपस्या श्री चैनरूप वेद, ३५ की श्री नेमीचंद मालू ने की। अन्य तपस्याएं—४/९५, ५/८५, ६/२५, ८/८५, ९/४५, १०/५, ११/३, १३/२, १५/४, १६/५, ३५/१, ४१/१ वर्षीतप—१६, सोलिय तप—६ एकान्तर १५१, बेले-बेले एकान्तर—१ बारी के उपवास—२१, सामूहिक तेले—२५१, सामूहिक आयंबिल—१११

कार्यक्रम

२१ जनवरी को इलाहाबाद की सेन्ट्रल जेल में कार्यक्रम। कारागृह के मुख्य जेलर ने अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान से प्रभावित होकर अपने हस्ताक्षर सहित रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उत्तर प्रदेश प्रान्त मिर्जापुर के दिगम्बर जैन मंदिर में मर्यादा-महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ।

झूमरी तिलैया (कोडरमा) दिगम्बर जैन धर्मशाला में और जीवन-व्यवहार विषय पर विचार परिषद् का कार्यक्रम रहा। जैन व जैनेतर लोगों में प्रेक्षाध्यान पद्धति की अच्छी प्रतिक्रिया रही।

दुर्गापुर (बेनाचट्टी) में अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन हुआ।

वर्द्धमान/कलकत्ता महासभा के तत्त्वावधान में अमृत-महोत्सव का प्रथम चरण उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। सैकड़ों भाई-बहिनों ने आयंबिल तप स्वीकार किया।

तारकेश्वर/कलकत्ता तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा अमृत-महोत्सव के

उपलक्ष में विशेप कार्यक्रम रखा गया। सैंकड़ों युवकों द्वारा पंच सूत्र स्वीकार किये गए।

रिसड़ा/स्थानीय सभा के तत्वावधान में पंच दिवसीय अध्यात्म प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। निर्देशिका श्रीमती निर्मला जैन थी।

रिसड़ा कन्या मंडल ने अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

कलकत्ता चातुर्मास में परिसंपन्न कार्यक्रम

११ अगस्त को विराट् महिला सम्मेलन। सान्निध्य—साध्वीश्री चांद कुमारीजी। अध्यक्षा—अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सज्जनदेवी चोपड़ा। प्रमुख वक्ता—डा० प्रभा खेतान, विशेप अतिथि—राजकुमारी बेंगानी, जैन बालिका विद्यालय की प्रधानाध्यापिका।

प्रत्येक रविवार को महत्त्वपूर्ण विपयों पर विशेप आयोजन हुए।

क्षमापना पर्व के उपलक्ष में जैन सभा के तत्वावधान में "मैत्री पर्व" का कार्यक्रम। अध्यक्ष—श्री धर्मचंद जी सरावगी, भूतपूर्व विधान परिपद् सदस्य। प्रमुख वक्ता—प्रो० कल्याणमल जी लोढ़ा, कलकत्ता विश्वविद्यालय।

२२ सितम्बर को अमृत-महोत्सव का द्वितीय चरण "जनाभिनंदन समारोह" के रूप में विशाल पैमाने पर मनाया गया। कलकत्ता महानगर की ७१ सस्थाओं के द्वारा आचार्यप्रवर का अभिनंदन किया गया। उद्घाटनकर्ता—श्री कमल वसु—मेयर, कलकत्ता नगर निगम। प्रधान अतिथि—श्री अशोक कुमारसेन, विधि मंत्री—भारत सरकार। अध्यक्षता—श्रीमती पद्मा खास्तगीर, न्यायाधीश कलकत्ता उच्च न्यायालय। प्रमुख वक्ता—श्री कल्याणमल लोढ़ा, कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं श्री राजेश खेतान, विधायक पश्चिम बंगाल विधान सभा।

२२ अक्टूबर को महासभा के तत्वावधान में पंच दिवसीय "जीवन-विज्ञान अध्यात्म प्रशिक्षण शिविर" का समायोजन। जिसमें १२५ बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर संचालन कार्य तुलसी अध्यात्म नीडम् के निदेशक श्री धर्मानंदजी ने किया। अध्यक्षता श्री मोहनलाल लोढ़ा ने की।

१४ नवंबर को अहिंसा सार्वभौम दिवस का विशिष्ट कार्यक्रम रहा। अध्यक्ष—श्री देवकीनंदन पोद्दार, विधायक प० बंगाल विधान सभा। प्रमुख-वक्ता—श्री शांतिलाल जैन, कौंसिलर कलकत्ता नगर निगम।

आज के दिन गृहमंत्री, श्रममंत्री आदि अनेक राजनेताओं, साहित्यकारों पत्रकारों आदि के विशेष संदेश मिले।

१७ नवंबर को "अहिंसा सार्वभौम दिवस" का द्वितीय चरण उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

अध्यक्ष—श्री सौगतराय, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री।

प्रमुख वक्ता—श्री अजित सेन गुप्ता, माननीय न्यायमूर्ति, कलकत्ता उच्च न्यायालय। श्री राजेश खेतान—विधायक, प० बंगाल विधान सभा।

अग्रगण्य—साध्वीश्री संतोका

सहयोगिनी—सा० मधु, सा० मानकंवर, सा० संयमश्री, सा० जगत् प्रभा, सा० सुलेखा।

चातुर्मास—मोमासर (चूरू, राज०)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—८०, पंच सूत्री संकल्प—२०००, व्रत दीक्षा—७५, प्रेक्षाध्यान शिविर-१ तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१, जैन विद्या परीक्षा-३०, पांच थोकड़े सीखने वाले—५०

तपस्या साध्वियों में—१/१०८, २/१९, ३/३, ४/१, ५/१ सा० संयमश्री, सा० जगत्प्रभा, सा० सुलेखा ने छह-छह थोकड़े कण्ठस्थ किये।

भाई-बहिनों में—१/२०८८, २/६०, ३/३०, ४/१४, ५/१०, ६/५, ७/३, ८/१८, ९/४, १५/१

वर्षीतप—१, दस वर्षीया लड़की सुधा नाहटा ने अठाई की तपस्या की।

साध्वीश्री के सान्निध्य में अनेकविध कार्यक्रम आयोजित हुए। कई विशिष्ट व्यक्ति साध्वी श्री के संपर्क में आए, वे हैं—पूर्व नहरमंत्री श्री चंदनमल बैद, प्रधानाध्यापक श्री गौरीशंकर जोशी, विश्व हिंदू परिषद् के अध्यक्ष श्री सूरजमल आर्य आदि। मोमासर जैन संस्कारों की पुष्टि में उल्लेखनीय है। यहां श्री भोजराज नंवेती कुशल संस्कारक हैं।

अग्रगण्य—साध्वीश्री अजितप्रभा (लावा सरदारगढ़)

सहयोगिनी—सा० भत्तु (केलवा), श्री हेमकंवर (देवरिया), सा० अजितप्रभा (रामसिंह का गुड़ा)

चातुर्मास—मायरा (उदयपुर, राज०)

यात्रा—६५० कि०मी०, क्षेत्र-४०

मंत्र दीक्षा—१०१, श्रमणोपासक दीक्षा—२०, सम्यक्त्व दीक्षा—१३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१, पंच सूत्री संकल्प-५३५, प्रेक्षाध्यान शिविर-१, जैन विद्या परीक्षा-५४, प्रतिक्रमण-९ साध्वीश्री भत्तुजी ने तीन माह एकांतर किया व एक वेला किया। श्री जीतमल भोगड़ ने मासखमण किया। श्री भंवरलाल मेहता, श्री चुन्नीलाल सोलंकी व श्री जसराज जैन ने गुरुदेव की एक माह से भी अधिक उपासना की।

साध्वीश्री के सान्निध्य में कई स्कूलों व सार्वजनिक स्थानों में अणुव्रत कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कंचनकुमारी (उदयपुर)

सहयोगिनी—सा० गुलाबां, सा० श्रद्धाश्री, सा० विजयमाला, सा० प्रज्ञाश्री

चातुर्मास—जसोल (बाड़मेर, राज०)

यात्रा—३०० किमी०

वर्गीय अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प-२००, सम्यक्त्व दीक्षा—३०० मंत्र दीक्षा—१००, व्रत दीक्षा—१००, ६ नये परिवारों ने गुरु धारणा की, भक्तामर—२५, पांच थोकड़े सीखने वाले—३,

साध्वियों में उप—८७, वेला—२, सा० कंचनकुमारी, सा० श्रद्धाश्री सा० विजयमाला, सा० प्रज्ञा श्री ने छह-छह थोकड़े कण्ठस्थ किये।

भाई-बहिनों में उपवास—९०००, वे—३००, अठाई—१९, नव-२, दस—२, आयंबिल—२५००। श्री सोहनलाल बुरड़ ने मौन मासखमण किया।

भाई-बहिनों ने धार्मिक ग्रंथों की सैंकड़ों गाथाएं कंठस्थ की।

अग्रगण्य—साध्वीश्री भाग्यवती (श्री डूंगरगढ़)

सहयोगिनी—सा० लिखमावती, सा० मंजूश्री, सा० शरद्प्रभा

चातुर्मास—भीनासर (बीकानेर, राज०)

यात्रा—१७ कि०मी०, क्षेत्र—४

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—१००, पंचसूत्री संकल्प—१०५, मंत्र-दीक्षा—११, व्रत दीक्षा—१५, शीलव्रत—७, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, भक्तामर—४, पच्चीस बोल—७

तपस्या—सा० लिखमावती-उप—११, वेला—६, सा० मंजूश्री उप—

१६, सा० शरद्प्रभा-उप—२२ ।

भाई-बहिनों में—१/९८०, २/२०, ३/९२, ४/९, ५/१, ८/९, ९/२ वर्षीतप—९, आयंबिल—१०१०, जप—एक करोड़ ४५ लाख ।

साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुव्रत सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम समायोजित हुए ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रतनश्री (श्रीडूंगरगढ़)

सहयोगिनी—सा० सुव्रतां, सा० कुलवाला, सा० सुमनप्रभा (श्रीडूंगरगढ़), सा० मुक्तिप्रभा (फतहगढ़)

चातुर्मास—गांधीधाम (कच्छ, गुजरात)

यात्रा—१०४१ क्षेत्र—२६

मंत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१, जैन धर्म दीक्षा—२, वर्गीय अणुव्रती—१०१, पंच सूत्री संकल्प—१०१, व्यसन मुक्ति—१००, जैन विद्या परीक्षा—५०, अणुव्रत परीक्षा—२०, प्रतिक्रमण—११, भक्तामर—५ ।

कार्यक्रम—साध्वीश्री के सान्निध्य में मर्यादा-महोत्सव भुज, महावीर जयंति मोरवी (सौराष्ट्र) में आयोजित हुई, जिसमें स्थानकवासी संप्रदाय के मुनिश्री भास्कर, साध्वीश्री जयाबाई, नगरसेठ विक्रम भाई आदि उपस्थित थे ।

गांधीधाम में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रमों में नगराध्यक्ष श्री छोटाभाई शाह, विकास अधिकारी श्री रंगाटुरै, सत्यनारायण सत्संग मंडल के प्रमुख श्री एच० एम० वोरा उपस्थित थे। सबने आचार्यश्री की विविधमुखी प्रवृत्तियों की प्रशंसा की ।

आठ कोटि स्थानकवासी संघ के आचार्यश्री छोटालालजी महाराज ने साध्वीश्री से मिलने पर कहा—तेरापंथ एक सुव्यवस्थित धर्मसंघ है। इस संघ के आचार्य तेजस्वी हैं । इसके साधु-साध्वियां अनुशासित एवं साहसी हैं ।' मोरवी में लीमड़ी संप्रदाय की सुप्रसिद्ध साध्वीश्री जयाबाई स्वामी से साध्वीश्री का मिलना हुआ । जैन क्रांति के सम्पादक श्री रसिक भाई दोषी ने उलाहने के अंदाज में कहा—'आपको यहां एक कमरे में किसने बैठा दिया । विश्व विश्रुत आचार्य तुलसीजी की शिष्याएं आई हैं, तो उनका सार्वजनिक कार्यक्रम होना चाहिये, जिससे जैन धर्म का वर्चस्व बढ़े ।' उनके मन में तेरापंथ की उज्ज्वल छवि अंकित थी ।

तपस्या—सा० रतनश्री—उप० ५, सा० सुव्रतां—उप० ६, सा०

मुक्तिश्री—उप० १६

भाई-बहिनों में—८१०६^{१}, ६५^{२}, ३६^{३}, ५^{४}, १^{५}, १^{६}, ५^{८}, २५^{८}, ६^{९}, १^{१२}, १^{१५}

आयंबिल—४००, वर्षीतप—५, एकान्तर—७

आचार्यश्री की समन्वयपरक व मण्डनात्मक नीति से पूरे जैन समाज में व्यापक प्रभाव पड़ा है। सौराष्ट्र की राजधानी राजकोट जैसे धार्मिक कट्टरता वाले क्षेत्र में साध्वीश्री पधारी। तेरापंथ के साधु-साध्वियों का १८ वर्षों की प्रलंब अवधि के बाद आगमन हुआ। वहां साध्वीश्री से सैकड़ों-सैकड़ों लोग मिलते, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत पर बातचीत करते। राजकोट स्थानकवासी संघ के संघपति श्री जयंतीभाई दोषी ने सरदारनगर स्थानक में साध्वीश्री से प्रवचन करने का निवेदन किया। साध्वीश्री उस स्थान में गईं, तो वहां समागत शांताबाई स्वामी प्रवचन-हॉल में बैठ गईं। साध्वीश्री को देखते ही वह झुंझला गई और उठकर जाने लगी। साध्वीश्री ने साथ में प्रवचन देने की बात कही, पर उन्होंने अनसुनी कर दी। उस क्षेत्र के प्रमुख श्री मूलजी भाई ने कहा—आप प्रवचन दें। सात दिन तक साध्वीश्री का उस स्थानक में प्रवचन हुआ। लोगों ने अच्छा लाभ लिया। २०-२५ घर तेरापंथी बने। श्री मगनभाई शाह ने वृद्धावस्था में साध्वीश्री की अच्छी सेवा की। सुलेखा ने छह थोकड़े कण्ठस्थ किये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विजयश्री

सहयोगिनी—सा० जयप्रभा, सा० शशिरेखा, सा० मृदुलाकुमारी, सा० सुधाकुमारी

चातुर्मास—भिवानी (हरियाणा)

यात्रा—४०० कि०मी०, क्षेत्र—५

अणुव्रती—१५, पंच सूत्री संकल्प—१०००, मंत्र दीक्षा—४५, सम्यक्त्व दीक्षा—१५, जैन-विद्या परीक्षा—५०

कार्यक्रम—सनातन धर्म हाई स्कूल, भिवानी के प्रांगण में करीब ४ हजार की उपस्थिति में जैन समाज की ओर से एक कार्यक्रम रखा गया, जिसमें साध्वीश्री का भाषण हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम भी समायोजित हुए। फतहपुर में विषयबद्ध प्रवचनमाला व रतनगढ़ में दो बार कवि सम्मेलन हुआ।

साध्वीश्री के संपर्क में आने वाले विशिष्ट व्यक्ति हैं—वैश्य ट्रस्ट,

भिवानी के ट्रस्टी डा० वी० डी० गिरिधर, ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्यश्री कृष्णचंद्र पंत, वैश्य हायर सैकेण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री एस० एन० महता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता श्री भूषण मलिक आदि।

अग्रगण्य—साध्वीश्री हुलासां (गंगाशहर)

सहयोगिनी—सा० केशर (पड़िहारा), सा० शीलवती (लाडनूं), सा० ऋजुप्रज्ञा (वाव), सा० मंगलमाला

चातुर्मास—भगवतगढ़ (सवाई माधोपुर, राज०)

यात्रा—६०० कि० मी० क्षेत्र—३३

मंत्र दीक्षा—२८, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, श्रमणोपासक दीक्षा—२१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, पचीस बोल—१७, प्रतिक्रमण—५, तत्त्वचर्चा व तेरह द्वार—६, चौबीसी व आराधना—१, जैन-विद्या परीक्षा—५८, पांच थोकड़ा सीखने वाले—६

तपस्या—साध्वियों में—सा० हुलासां उप०—६५, बे०—१, ते०—१, विगय वर्जन का प्रयोग, मौन—५ घंटा

सा० केशर उप०—२३, बे०—१, एकांतर—१ माह

सा० शीलवती उप०—४३, बे०—३, आयंबिल—७, एकांतर—२ माह

सा० ऋजुप्रज्ञा उप०—२५, उन्होंने छह थोकड़े कण्ठस्थ किये।

सा० मंगलमाला उप०—२१, आयंबिल—७, एकांतर—१ माह

भाई-बहिनों में—५५०६^{१}, ९३^{२}, ५३^{३}, ३^{४}, ५^{५}, ९^{८} एकांतर—५, वर्षीतप—६, श्री मिश्रीलाल जैन पिछले १२ वर्षों से वर्षीतप कर रहे, पिछले वर्ष उनका निधन हो गया।

जप—७ करोड़ ८६ लाख २४ हजार, आयंबिल कुल—५५६७

अमृत-महोत्सव के संदर्भ में लोगों ने विविध संकल्प ग्रहण किये। अणुव्रत से संबंधित कई कार्यक्रम हुए। भगवतगढ़ से श्री मिश्रीलाल मास्टर ने सपत्नी एक माह से ऊपर आचार्यवर की उपासना की।

संस्मरण—साध्वीश्री सन् १९८५ २१ अप्रैल को जयपुर-भगवतगढ़ मध्य महीरों के टापरे गांव पधारी। जिस मकान में साध्वीश्री ठहरीं, उस मकान के मालिक श्री रामनारायण का तीन वर्षीय पौत्र अकस्मात् बेहोश हो गया। नब्ज पकड़ में नहीं आ रहीथी। सभी परिकरों की आंखों से आंसू बरसने लगे। उस भयंकर गर्मी के मौसम में उसे किसी भी अस्पताल में भर्ती

कराने के लिए कम से कम ८ कि०मी० दूरी तथा वाहन के रूप में साईकिल ही उपलब्ध थी। उस विषम स्थिति में साध्वीश्री ने मंगलपाठ सुनाया। 'विघ्न हरण' गीतिका करीब आधा घंटे सुनाई। इस बीच बच्चे ने आंखें खोल दीं और वह ठीक हो गया। उस बच्चे के माता-पिता एवं पूरे परिवार के लोगों ने इसके पीछे साध्वीश्री का उपकार माना। दूसरे दिन अति आग्रहपूर्वक भिक्षा दी और बहुत दूर तक पहुंचाने गये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कमलाकुमारी (उज्जैन)

सहयोगिनी—सा० इन्द्राकुमारी (चारभुजा), सा० संतोषकुमारी (हांसी), सा० रतनकुमारी (सरदारशहर), सा० कुसुमश्री (सुजानगढ़), सा० राजप्रभा (फारबिसगंज)

चातुर्मास—फतहपुर (सीकर, राज०)

यात्रा—२०८ कि०मी०, क्षेत्र—५

अणुव्रती—१०१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पंच सूत्री संकल्प—३००, मंत्र दीक्षा—५१, व्रत दीक्षा—२१, जैन विद्या परीक्षा—३७, पञ्चाचार पाठमाला—१५, प्रतिक्रमण—१८

साध्वियों में तपस्या—उप०—६, वेला—४, चोला—२१ साध्वियों में पृथक्-पृथक् मंत्रों का १३ लाख का जप हुआ। साध्वियों में २ हजारों पृष्ठ प्रमाण आगम व संघीय साहित्य का वाचन हुआ। हजारों गाथाओं का स्वाध्याय हुआ। ध्यान व जप का भी उत्कृष्ट क्रम चला। साध्वीश्री राजप्रभा ने महाबल मलयासुंदरी पर २५० पृष्ठ प्रमाण एक गेय काव्य लिखा है तथा अंग्रेजी भाषा का एक काव्य 'एम्वोसियस ओसन' लिखा, जिसमें १०५ पद्य हैं।

भाई-बहिनों में तपस्या—उप०—३११, बे०—६१, ते०—३, चो०—५, पं०—३, सात—१, अठाई—३, नौ—१, दस—१, आयंबिल—११६, एकांतर—१६। भाई-बहिनों में जप के कई अनुष्ठान चले।

कार्यक्रम—सीकर के जिलाधीश श्री सुधीन्द्र गोमावत ने साध्वीश्री के सान्निध्य में ज्ञानशाला का उद्‌घाटन किया। पुलिस उपअधीक्षक श्री नारायणसिंह राठौड़ ने साध्वीश्री से भेंट की। झूंझनूं के सांसद परमवीर चक्र विजेता श्री अय्यूब खां, विधानसभा के उपसचेतक श्री अश्क अली टांक ने साध्वीश्री से अणुव्रत पर बातचीत की। प्रमाण-पत्र वितरण समारोह में एस० डी० एम० श्री भंवरलाल वर्मा उपस्थित थे।

१८ अगस्त को 'देश की समस्याएं व पंचसूत्री कार्यक्रम' परिचर्चा में राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री श्री रामदेवसिंह महरिया विशेष रूप से उपस्थित थे। साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव तथा अन्य प्रभावी कार्यक्रम हुए।

साध्वीश्री के अनथक प्रयत्नों से दो घरों में घरेलू कारणों से आत्म-हत्या करने वाली दो महिलाओं को आत्महत्या का परित्याग करा दिया। कालांतर से उनके घरों में शांति भी हो गई।

अग्रगण्य—साध्वीश्री फूलकुमारी (लाडनूं)

सहयोगिनी—सा० सुमनकुमारी, सा० गुप्तिप्रभा, सा० मंगलप्रभा, सा० शीतलप्रभा

चातुर्मास—सूरत (गुजरात)

यात्रा—२२२६ कि०मी०, क्षेत्र-४५

मंत्र दीक्षा—११०, सम्यक्त्व दीक्षा—१२५, जैन धर्म दीक्षा—२५, व्रत दीक्षा—६२, शीलव्रत—३, मद्य-त्याग—६७, पंच सूत्री संकल्प—५००, प्रतिक्रमण—१३, पच्चीस बोल—३८, श्रमणोपासक दीक्षा—११, अणुव्रती—२०१, पंचसूत्री संकल्प—६०००, शीलव्रत—३१, पत्राचार पाठमाला—२३, अणुव्रत परीक्षा—१३, भक्तामर—२

साध्वियों में तपस्या—

सा० फूलकुमारी—उप०-३१, ४ थोकड़े सीखे

सा० सुमनकुमारी—उप०—७५, बे०—१, ते०—२, चो०—१, ३ थोकड़े सीखे

सा० गुप्तिप्रभा—उप०—३१, बे०—१, ६ थोकड़े सीखे।

सा० मंगलप्रभा—उप०-३८, बे०—१, ५ थोकड़े सीखे

सा० शीतलप्रभा—उप०—२२, बे०—२६, ते०—१, चो०—१, १ माह आयंबिल तेले

भाई-बहिनों में—२/५५, ३/५५, ४-८/३६, ८/६७, ३/८, १०/५, ११/५, १५/५

वारी उपवास—२७, अभीराशिको नमः का जप—१२ करोड़ ८ लाख, ५१,००० पृष्ठों का वाचन ५१ व्यक्तियों में।

कार्यक्रम—जीवन-विज्ञान के प्रचारार्थ ७ स्कूलों व कॉलेज के विद्यार्थियों व शिक्षकों के बीच साध्वीश्री का प्रवचन हुआ। साध्वीश्री के सान्निध्य

में प्रेक्षाध्यान की नियमित कक्षा लगती । प्रेक्षाध्यान के अनेक शिविर भी लगे । साध्वीश्री से मिलने के लिए कई विशिष्ट महानुभाव आये उनमें अम्बाजी के दिगम्बर जैन श्री रतनलाल हैं । वे प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेने के बाद निरंतर अभ्यास करते हैं ।

सूरत के सनातन धर्म के प्रमुख कार्यकर्ता श्री पोपावाला ने आचार्यश्री तुलसी के युग को स्वर्णिम युग बताया । गुजरात के पूर्व शिक्षामंत्री श्री चोखा-वाला, इन्जीनियर श्री भारतभूषण, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री महेश भाई तथा डॉक्टरों, प्रोफेसरों, अध्यापकों, इंजीनियरों, पत्रकारों आदि ने साध्वीश्री से भेंट की तथा विविध विषयों पर बातचीत की । सूरत कारागृह में कैदियों के बीच साध्वीश्री ने प्रवचन दिया । संस्कार केन्द्र का शुभारंभ हुआ ।

समाचार-प्रकाशन—समय-समय पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की कई पत्रों में खबरें प्रकाशित हुई । अमृत-महोत्सव के संदर्भ में आचार्य श्री के व्यक्तित्व व कर्तृत्व से संबंधित अनेक लेख प्रकाशित हुए । मुख्य पत्रों के नाम इस प्रकार हैं—गुजरात मित्र, गुजरात समाचार, प्रताप आदि ।

संस्मरण—अनुप्रेक्षा : एक चमत्कार

१६ वर्ष पूर्व साध्वीश्री गुप्तिप्रभा को वमन की शिकायत थी । जान-बूझकर किसी के सामने उन्होंने बात प्रकट नहीं की । अपितु सोचा अच्छा है खाना खाती रहूंगी, तो काम चलेगा और वमन से मोटापा नहीं होगा । वेकार-वेकार सब निकल जाता है । व्यक्त करने से दीक्षा में बाधा आयेगी एवं दवाओं का आश्रय लेना पड़ेगा । उसी छोटी-सी बीमारी का उग्र रूप सामने आया—उन्हें दिन में १५-२०, ऊपर में २७ बार तक वमन हो गई । आहार की तो बात दूर रही पानी भी सम्यक् प्रकार से पच नहीं सकता । स्थिति चिंतनीय थी, शरीर पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा—आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक एवं एलोपैथिक दवाइयां लेते-लेते तंग हो गई तात्कालिक लाभ होता है और फिर वही स्थिति बन जाती है । आखिर उन्होंने किसी अदृश्य प्रेरणा से स्वयं के मनोबल को टटोला एवं कृत संकल्प बन गई कि मुझे इस बीमारी को अपनी शक्ति से समाप्त करना है । सोचा मेरे वमन का कारण है—पित्त की प्रबलता और स्वस्थता का चिह्न है वात पित्त कफ की समानता । अतः "समदोषः समाग्निश्च" इस सूत्र के सामने देखती हुई यकृत पर हाथ रख अनुप्रेक्षा करूं । लगभग ३ महिने तक रात्रि ११ बजे के बाद सोये-सोये दो-एक घंटा प्रयोग

नियमित चला—मानसिक चिंतन एवं भावों की दृढ़ता ने आत्म विश्वास के फलक पर साकार रूप ले लिया। परिणामतः २५ अप्रैल १९८५ से आज तक वमन नहीं हुई। वह संकल्प वर्तमान में भी चल रहा है।

सूरत में साध्वीश्री सान्निध्य में तथा श्री जेठाभाई व नगीनभाई के निर्देशन में एक प्रेक्षाध्यान शिविर लगा, जिसमें आचार्यश्री, युवाचार्य श्री, साध्वी प्रमुखाश्री के महत्त्वपूर्ण संदेश मिले।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रतनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० कानकुमारी, सा० रतनकुमारी, सा० प्रशमरती सा० प्रेक्षा श्री

चातुर्मास—नोहर (गंगानगर, राजस्थान)

यात्रा—६०० कि०मी० सेव—५२२

व्रत दीक्षा—१५, सम्यक्त्व दीक्षा—१२१, दहेज त्याग—५१, पंचसूत्री ५२५, प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (नोहर में), तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-२ जैन-विद्या परीक्षा—४७, अणुव्रत परीक्षा—२१, थोकड़ा—३१, चौबीसी व आराधना—१, भक्तामर—२

साध्वियों में—उपवास—५५, आयंबिल—२१, बे०—१, ते०—२, अठाई—६, मौन—२ घंटा, जप—१.३० घं०, ध्यान—१ घं०। साध्वियों ने विभिन्न ग्रन्थों की २२०० गाथा कण्ठस्थ की। आगम-साहित्य के २५०० व आगमेतर-साहित्य के ७०० पृष्ठ पढ़े गये। साध्वियों में ओम् भिक्षु का १२ लाख, शक्ति जागरण अनुष्ठान का सवा लाख व ओम् अर्हं अभीराशिको नमः का ६ लाख जप हुआ।

भाई-बहिनों में—१०/८, १२/२, ३/१, ४/२, ८/३, ५/१, ६/१, १०/१, वर्षीतप—१, एकांतर—२, ओम् अर्हं अभीराशिको नमः का जप—१ करोड़, ६१ लाख, आयंबिल—१७५३, २१ लोगों ने १ हजार पृष्ठ साहित्य-वाचन का संकल्प लिया।

भादरा में साध्वीश्री के सान्निध्य में महावीर जयंति का कार्यक्रम मनाया गया। स्कूलों में अणुव्रत-कार्यक्रम हुए। पंजाब केसरी, नवभारत टाईम्स, जैन समाज, दैनिक नवज्योति, प्रताप केसरी, सीमा किरण आदि पत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों के समाचार प्रकाशित हुए।

अग्रगण्य—साध्वी कमलश्री

सहयोगिनी—सा० पानकुमारी (लाडनूं), सा० कमकू (सरदारशहर),

सा० जिनरेखा (गंगाशहर), सा० इलाकुमारी (गंगाशहर)

चातुर्मास—शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)

यात्रा—१५०० कि० मी०, क्षेत्र—७

वर्गीय अणुव्रती—७५, पंच सूत्री संकल्प—३०००, मंत्र दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा—१५, व्रत दीक्षा—६०, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, थोकड़ा—११, भक्तामर—२५,

तपस्या—सा० कमल श्री—उप०—३०, वे०—१, आयंबिल—१६

सा० पानकुमारी—उप०—३५, दे०—१, आयंबिल—५

सा० झमकू—उप०—४५, वे०—१, ते०—१, आयंबिल—५१

सा० जिनरेखा—उप०—५, आयंबिल—२

सा० इलाकुमारी—उप०—५५, वे०—१, चो०—१, आयंबिल—१७

भाई-बहिनों में—२/३००, ३/४००, ४/३०, ५/२५, ६/३, ७/११, ८/३०, ९/१८, १०/१५, ११/१०, १५/२, १७/१, ३१/५, ३७/१, ५५/१ श्रीमती प्रेमलता ने ५५ व श्रीमती पुष्पा कोठारी ने ३७ की तपस्या की।

कार्यक्रम—अहमदाबाद मार्ग में भागली प्याऊ में मूर्तिपूजक मुनि कमल विजय जी व लेखेन्द्र विजयजी आदि ९ संत तथा साध्वी महेन्द्रश्री जी के साथ दो दिन कार्यक्रम चला। वे साध्वीश्री से बड़े ही आत्मीय भाव से मिले। वे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से पूर्व में मिले हुए हैं। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व तेरापंथ की विशेषताओं से वे काफी प्रभावित हैं। रानीवाड़ा में महावीर जयंति व पालनपुर में अक्षय तृतीया के कार्यक्रम आयोजित हुए।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत गुजरात विद्यापीठ में एक विशेष कार्यक्रम रखा गया। शाहीबाग तेरापंथ भवन में ब्रह्मकुमारियों का दशाब्दी महोत्सव में निरन्तर दस दिनों तक साध्वीश्री का प्रवचन हुआ। उन पर जैन-दर्शन का अच्छा प्रभाव पड़ा।

गुजरात के प्रायः सभी पत्रों में अमृत-महोत्सव के उपलक्ष में लेख छपे। धानेरा में दो परिवारों के बीच कई वर्षों से भारी मन-मुटाव चल रहा था। साध्वीश्री के प्रयासों से उन्होंने परस्पर खमतखामना किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री मनसुखां

सहयोगिनी—सा० गणेशां (लाडनूं), सा० सिरेकुमारी (चूरू), सा० विवेक श्री (फतेहगढ़), सा० विद्युत्प्रभा (मोमासर)

चातुर्मास—आड़सर (चूरू, राजस्थान)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—५१, पंचसूत्री, संकल्प—१०१, मंत्र दीक्षा—२१, सम्यक्त्व दीक्षा—२५, व्रत दीक्षा—११, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१ (५ दिनों का) कुल गाथाओं का कंठीकरण—५०००

तपस्या—सा० गणेशां—उप०—३६, बे—१, ते—१

सा० सिरेकुमारी—उप०—४६, बे—१, ते०—१, सा० विवेकश्री—उप०—३१, सा० विद्युतप्रभा—उप०—३२

भाई-बहिनों में—बे०—११, ते०—५, चो०—१, पांच—१, अठाई—१, नौ—१, तेरह—१

जसोल से प्रदत्त आचार्यश्री का संदेश—

४-२-८५

साध्वी मनसुखां जी !

सुख पृच्छा, तुम छोटे गांव आड़सर में खूब समाधि से रह रही हो। प्रसन्नता से अपनी संयम चर्या चला रही हो, यह विशेष बात है। सभी साध्वियां चित्त समाधि-पूर्वक रहना। क्षेत्र को अच्छे ढंग से संभालना,

श्रेयम् कुशलम्

साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने संदेश में साध्वीश्री मनसुखांजी के समर्पण भाव, सहजता व सहिष्णुता को उल्लेखनीय बताया तथा उन्होंने अन्य सहवर्ती साध्वियों से नया प्रतिक्रमण सार्थ सीखने का इंगित किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सुबोध कुमारी (बीदासर)

सहयोगिनी—सा० सुन्दर, सा० केसर, सा० कंचनकंवर, सा० सुदर्शना श्री

चातुर्मास—देवगढ़ (उदयपुर, राजस्थान)

यात्रा—१००० कि०मी०, क्षेत्र—१५

अणुव्रती—५००, वर्गीय अणुव्रती—८००, पंचसूत्री संकल्प—१५००, मंत्र दीक्षा—२००, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, व्रत दीक्षा—१४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, जैन-विद्या परीक्षा—१०१, पत्राचार पाठमाला—७, प्रतिक्रमण—५१, थोकड़ा—५, भक्तामर—५, चौबीसी व आराधना—१

साध्वीश्री सुबोध—कण्ठस्थ—१००० गाथा, वाचन—३०० पृष्ठ, मौन—३ घंटा, जप—१ घंटा

सा० सुंदर—वाचन—१५०० पृ०, मौन—५ घं०, जप—१ घं०

सा० केसर—वाचन—३१०० पृ०, मौन—५ महीने निरंतर, जप—१-१ घं०

सा० कंचनकंवर—वाचन—३१०० पृ०, मौन—५ महीने निरंतर, जप—१ घं०

सा० सुदर्शना श्री—कण्ठस्थ—५०० गाथा, वाचन—२०० पृ०, मौन—२ घंटा, जप—१ घंटा, सवा लाख नवकार—जप का विशेप अनुष्ठान

साध्वियों में उप०—२००, ते०—३१, छह—३

भाई-वहिनों में—$\frac{१}{२०००}$, $\frac{२}{५१}$, $\frac{३}{२५०}$, $\frac{४}{१३}$, $\frac{५}{१४}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{२५}$, $\frac{९}{५}$, $\frac{११}{२}$ $\frac{१३}{१}$, $\frac{१५}{१}$, $\frac{१६}{१}$, $\frac{३०}{३}$

साध्वीश्री के सान्निध्य में शिविर आयोजित हुआ। देवगढ़में आयोजित श्रावक सम्मेलन में राव साहव श्री नाहरसिंह, सर्वोदय नेता मनोहरसिंह मेहता, विकास अधिकारी मीठुसिंह आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। चातुर्मास में सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता हुई, जिसमें ६६ भाई-वहिनों ने सोत्साह भाग लिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री झमकू (राजलदेसर)

सहयोगिनी—सा० चांदकंवर (जोधपुर), सा० मूलां (सुजानगढ़), सा० मदनकंवर (उज्जैन)

चातुर्मास—देशनोक (वीकानेर, राजस्थान)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—११, वर्गीय अणुव्रती—२४, पंचसूत्री संकल्प—४, मंत्र दीक्षा—२५, वारह व्रत—२४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, थोकड़ा सीखने वाले—७, श्रमणोपासक दीक्षा—१

तपस्या—सा० झमकू—उप०—१२, सा० चांदकंवर—उप०—२१, सा० मूलां—उप०—९, सा० मदनकंवर—२५, वे०—४

भाई-वहिनों में—$\frac{१}{५३१}$, $\frac{२}{२५}$, $\frac{३}{१५}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{८}{६}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१५}{५}$, एकांतर—११, वारी उपवास—२, वर्पी तप—२

काफी भाई-वहिनों ने अमृत-महोत्सव के संदर्भ में उपवास, आयंविल, नवकारसी, पौरसी, माला फेरने आदि के नियम ग्रहण किए। नव वर्षीय लड़की मंजू छाजेड़ ने अठाई तप किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी 'प्रथम' (श्रीडूंगरगढ़)

सहयोगिनी—सा० राजकुमारी, सा० अनोपकुमारी, सा० ऋजु श्री, सा० परमयशा

चातुर्मास—सुनाम (पंजाब)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र-३१

अणुव्रती—३१, पंचसूत्री संकल्प—२२७, सम्यक्त्व दीक्षा—२०१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२ (जाखल व सुनाम), तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (जाखल, सुनाम, लोंगोवाल), प्रतिक्रमण—७

साध्वियों में—उप०—११५, बे—१, ते०—१, आयंबिल—१०१

भाई-बहिनों में १०१ सामूहिक आयंबिल हुए।

कार्यक्रम—जाखल हायर सेकेण्ड्री स्कूल में साध्वीश्री का प्रवचन हुआ। इन्दिरा बस्ती में अणुव्रत बाल भारती व मॉडल बेसिक स्कूल में अणुव्रत कार्यक्रम हुआ। वहां तीन नये घर तेरापंथी बने। लोंगोवाल गांव में साध्वीश्री की प्रेरणा से ५ घर नये तेरापंथी बने। कई व्यक्तियों ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह में अनेक परिसंवाद व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। स्थान-स्थान पर प्रतिष्ठित लोगों ने साध्वीश्री से संपर्क किया।

साध्वीश्री परमयशा के संसार पक्षीय बाबा श्री चंपालाल गोलछा साध्वियों की मार्ग की सेवा कर रहे थे। उनकी धर्मपत्नी अकस्मात् जीप से गिरने से गहरी चोट लगी। बचने की कोई आशा नहीं थी। खून से लथपथ श्रीमती गोलछा बेहोश हो गई थी। उसी समय साध्वीश्री ने नवकार महामंत्र, विघ्न हरण गीत सुनाया। उस विषम अवस्था में श्री चंपालाल के मुख से एक ही बात थिरकती रही कि देव, गुरु, धर्म के प्रताप से सब ठीक ही होगा। श्रीमती गोलछा को चूरू अस्पताल में दाखिल कराया गया। वहां इलाज होने के बाद वह पूर्ण स्वस्थ बन गई।

अग्रगण्य—साध्वीश्री आशाकुमारी

सहयोगिनी—सा० मानकुमारी, सा० लिछमां, सा० कलाश्री, सा० कल्याणमित्रा

चातुर्मास—नरवाना (हरियाणा)

यात्रा—१४६ कि०मी०, क्षेत्र—१०

पंचसूत्री संकल्प—२१, मंत्र दीक्षा—६०, सम्यक्त्व दीक्षा—१०

तपस्या—सा० आशा—उप०—३५, बे०—३, ते०—१, सा० मान कुमारी—उप०—३०, सा० लिछमां—उप०—८१, बे०—१, सा० कल्याण-मित्रा—२८। सा० आशा ने पांच, सा० मान व सा० कला श्री ने छह तथा सा० लिछमां व सा० कल्याणमित्रा ने पांच थोकड़े कंठस्थ किए।

भाई-बहिनों में—उप०—४००, बे०—१३, ते०—२, चो०—४, पं०—१, अठाई—१, आयंबिल—१८००

माघ महीने में साध्वीश्री जींद विराज रही थी। सायं अर्हत् वंदना के पश्चात् वहां के प्रमुख श्रावक श्री किशोरीलाल जैन अचानक बेहोश हो गये। उस समय साध्वीश्री कलाश्री ने स्वामीजी का, ओम् अभीराशिको नमः का मंत्र जोर-जोर से सुनाया। पौण घंटे के बाद बिना किसी दवा के वे होश में आ गए और क्रमशः स्वस्थ हो गए। इस घटना ने श्री किशोरीलाल को स्वामीजी के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धाशील बना दिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० छगनां, सा० लक्ष्मीवती, सा० कुशलश्री, सा० ललितकला

चातुर्मास—आसाढ़ा (बाड़मेर, राजस्थान)

यात्रा—२६ कि० मी०, क्षेत्र—३

वर्गीय अणुव्रती—१२३, पंच सूत्री संकल्प—५४, मंत्र दीक्षा—३५ शिविर—२, कालू तत्त्वशतक—५, भक्तामर—५, पंचसूत्रम्—२, थोकड़ा—६, प्रतिक्रमण—५, जैन विद्या परिक्षा—५५, श्रमणोपासक-दीक्षा—१५, व्रत दीक्षा—१०

साध्वियों में—उप० १८३, बे०—६, पं०—१, नौ—२, ओम् अभी-राशिको नमः का जप—३४ लाख, वाचन—५००० पृ०। सा० पानकुमारी ने २००, सा० कुशल श्री ने २३०० व ललितकला ने १५०० गाथा कण्ठस्थ की तथा छह-छह थोकड़े सीखे। साध्वीश्री पानकुमारी ने ५१ दिन की विशेष साधना में प्रतिदिन २२ घं० मौन, २ घं० ध्यान, १ घं० जप, २ घं० स्वाध्याय व १५ द्रव्य से ज्यादा खाने का संकल्प किया।

भाई-बहनों में—१/१५०० २/८० ३/४० ४/२० ५/२१ ६/१ ८/१७ ९/२ २६/१ वर्षीतप–२ एकान्तर—१४, आयंबिल की बारी—१० अनेकों ने रात्रिभोजन, सचित्त आदि का त्याग किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री गुलाबकंवर (भादरा)

सहयोगिनी—सा० मत्तु, सा० ज्योतिप्रभा, सा० धर्मप्रभा, सा० संयमलता

चातुर्मास—भादरा (गंगानगर, राजस्थान)

यात्रा—८०० कि० मी०, क्षेत्र—१६

मंत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, पच सूत्री संकल्प—१३००

तपस्या—सा० गुलाब—उप० ६५ बे०—१ ते० २ सा० मत्तु—उप० ५०, बे०—१

सा० ज्योतिप्रभा—उप०—५५, बे०—१, छह—१, अठाई, सा० धर्मप्रभा उप०—५०

सा० संयमलता-उप० ४५

साध्वी श्री के सान्निध्य में स्कूलों में कई सार्वजनिक कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री धनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० कमलू, सा० ज्योतिश्री, सा० कुंथु श्री, सा० भावनाश्री

चातुर्मास—हांसी (हरियाणा)

यात्रा—१२११ कि० मी०, क्षेत्र—५५

मंत्र दीक्षा—१६, व्रत दीक्षा—१४, श्रमणोपासक दीक्षा—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (तोपाम, ऊमरा सिसाय), प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (हांसी)

तपस्या—सा० धनकुमारी-उप०—३०, चो—१, सा० कमलू-उप०—२० नौ—१, सा० ज्योतिश्री—उप० ४१, सा० कुंथु श्री—२०, सा० भावना श्री-उप०—२६

साध्वी श्री का लोंगोवाल स्कूल में प्रवचन हुआ। तोपाम में महावीर जयंति मनाई गई। हांसी में चार महीने चातुर्मास में निरन्तर ज्ञानशाला चली।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रायकुमारी (रतनगढ़)

सहयोगिनी—सा० रतनकुमारी (चूरू), सा० रविप्रभा (लाडनूं) सा० पूर्णिमा श्री (सरदारशहर)

चातुर्मास—पानी (राजस्थान)

अणुव्रती—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, प्रतिक्रमण—२१, ओम् अभी-

राशिको नमः की ३ माला का नियम—११०० ने लिया। सा० रायकुमारी ने उप० ३५, बे० १ किया। चातुर्मास में ज्ञानशाला निरन्तर चली।

अग्रगण्य—साध्वी श्री जतनकुमारी (राजगढ़)

सहयोगिनी—सा० सूरजकुमारी (टमकोर), सा० धनकुमारी (लाडनूं) सा० गुणवती (टमकोर), सा० अमितरेखा (जगोल)

चातुर्मास—पुर (भीलवाड़ा, राजस्थान)

यात्रा—३१३ कि० मी०, क्षेत्र—१६

मंत्र दीक्षा—२००, सम्यक्त्व दीक्षा—५२, जैन विद्या परीक्षा—१६० तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (नान्दशा, आमली, पीतास) अणुव्रत परीक्षा-९० पत्राचार पाठशाला—१५

भाई-बहिनों में—उप०—५००, बे०—६० ते०—७१, चो० से नौ तक—१०, आयंबिल—२००

साध्वीश्री की विशेष प्रेरणा से ५० हरिजनों ने मद्य-मांस का परित्याग किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री मोहनां (श्रीडुंगरगढ़)

सहयोगिनी—सा० चांदा, सा० प्रेमलता (श्रीडुंगरगढ़), सा० प्रतिभा श्री (गंगाशहर), सा० लोकप्रभा (लाडनूं)

चातुर्मास—पेटलावद (मध्यप्रदेश)

यात्रा—१२०० कि० मी०।

साध्वियों में उप० १०६ हुए।

भाई-बहिनों में उप०—२०००, बेले से सात तक—७७, अठाई से सोलह तक ३३, ३०० विद्यार्थियों ने अणुव्रतों को स्वीकार किया। २०० व्यक्तियों ने मद्य-पेय का त्याग किया। साध्वीश्री की प्रेरणा से ४२ व्यक्तियों ने अमृत-महोत्सव संदर्भ में १४०० आयंबिल करने का संकल्प लिया।

अग्रगण्य साध्वीश्री रतनकुमारी (लाडनूं)

सहयोगिनी—सा० सुमतिकुमारी (लाडनूं) सा० राकेश कुमारी (वायतु) सा० हिम श्री (सरदारशहर), सा० मधुरलता (रामसिंह गुडा)

चातुर्मास—सरदारपुरा—जोधपुर (राजस्थान)

यात्रा—६०० कि० मी०।

साध्वियों में उपवास—५२।

भाई-बहिनों में ५००० आयंबिल हुए। पंच सूत्री संकल्प—४००

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी 'द्वितीय' (श्रीडूंगरगढ़)

सहयोगिनी—सा०—चम्पा (श्रीडूंगरगढ़), सा०—मूलां (फतहगढ़), सा० प्रभावती (फतहगढ़)

चातुर्मास—ईड़वा (नागौर, राजस्थान)

यात्रा—९०० कि० मी, पंच सूत्री संकल्प—१४१।

साध्वियों में—उप०—११०, बे०—२, चो०—१, जप—९ लाख

भाई-बहिनों में—आयंबिल—२२४०, मासखमण—१

अग्रगण्य—साध्वीश्री मोहनकुमारी (राजगढ़)

सहयोगिनी—सा० मालू (मोमासर) सा० रतनकंवर, सा० कनक श्री (राजगढ़), सा० धर्मयशा

चातुर्मास—जौहरी बाजार—जयपुर (राजस्थान)

यात्रा—८०० कि० मी०। साध्वियों में—उप०—११२, ते०—७ साध्वी श्री के सान्निध्य में।

मदनगंज—किशनगढ़ में साध्वीश्री के सान्निध्य में महावीर जयंती का भव्य कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर स्थानकवासी साध्वी श्री पुष्पावती भी उपस्थित थी। जोवनेर कॉलेज में साध्वी श्री का भाषण हुआ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कंचनप्रभा (सुजानगढ़)

सहयोगिनी—सा० मनोहरां (छापर), सा० मंजुरेखा (वाव), सा० उदितप्रभा (उकलाना)

चातुर्मास—गंगापुर (भीलवाड़ा, राजस्थान)

यात्रा—३०० कि० मी०, साध्वियो में—उप० ४५

अग्रगण्य—साध्वीश्री गोरांजी

सहयोगिनी—सा० चेतना श्री (सरदारशहर), सा० उज्ज्वल कुमारी (सिसाय), सा० लाभवती (वाव), सा० जिनबाला (गंगाशहर)

चातुर्मास—जगरावां (पंजाव)

यात्रा—२५०० कि० मी०

अणुव्रती—२०२, पंचसूत्री संकल्प—४५०, मंत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१२१, प्रेक्षा अभ्यास शिविर—१ (तीन दिन)

साध्वियों में उप०—११० । भाई-बहनों में जप काफी हुआ ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री संतोषकुमारी

सहयोगिनी—सा० गुलावकुमारी (सरदारशहर), सा० सोहनां (राजलदेसर), सा० धनकंवर (लाडनूं) सा० शशिकला (हांसी)

चातुर्मास—राणावास (पाली, राजस्थान)

यात्रा—५४१ कि० मी०, क्षेत्र—१५

सम्यक्त्व दीक्षा—७६, प्रतिक्रमण २८, थोकड़ा—२७, भक्तामर–६, धूम्रपान त्याग—५१, अणुव्रती—३५, विशेष जप ५१ लाख

तपस्या—साध्वी श्री संतोष कुमारी उप०—८२, बे०—५, ते०—१

सा० गुलाब कुमारी—उप०—५६, ते०—१

सा० सोहनां—उप०—३८, बे०—५, ते०—१

सा० धनकंवर—उप०—५१, सा० शशिकला—उप० २६

अग्रगण्य—साध्वी श्री रायकुमारी (राजलदेसर)

सहयोगिनी—सा० कानकुमारी (राजलदेसर), सा० मदन श्री (बीदासर,) सा० अणिमा श्री (मोमासर), सा० संघप्रभा (राजलदेसर)

चातुर्मास—मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

चातुर्मास के दौरान साध्वी श्री के सान्निध्य में वाग्वर्धिनी संगोष्ठियों के अन्तर्गत दो चर्चास्पर्धा प्रतियोगिता समायोजित हुई। दीपावली के दिन साध्वी वृन्द में करीब सात घंटे निरन्तर जपाराधना चली। १६ नवम्बर को साध्वी श्री के सन्निधि में सतरह वर्षीया लड़की सुश्री ममता बरड़िया के मास-खमण का तप अभिनन्दन समारोह आयोजित था, जिसमें जैन-जैनतर समाज ने सोत्साह भाग लिया। इस मौके पर प्रमुख समाज सेवी वैद्य श्री हरनाथ शर्मा उपस्थित थे। १४ नवम्बर को आचार्य श्री का जन्म दिन अहिंसा सार्वभौम दिवस के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम में मिर्जापुर जिला कांग्रेस (आई) के महामंत्री श्री माता प्रसाद दुबे, जिला भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष श्री सुरजीतसिंह, जिलाधीश श्री नागेश्वर नाथ उपाध्याय, वैद्य श्री रोशनप्रसाद, जैन दर्शन के विद्वान् श्री जय कुमार जैन, प्रतिष्ठित नागरिकों, पत्रकारों ने भाग लिया।

अग्रगण्य—साध्वी श्री किस्तुरां (लाडनूं)

सहयोगिनी—सा० शुभवती (सिसाय), सा० गुणमाला (उदयपुर)

सा० चंद्रप्रभा, सा० सम्यक्प्रभा (सरदारशहर)

चातुर्मास—मद्रास (तमिलनाडू)

मंत्र दीक्षा—१००, श्रमणोपासक दीक्षा—३५, प्रतिक्रमण—२०

तपस्या—भाई-बहिनों में १/हजारों, २/सैंकड़ों ३/२५० ४/१० ५/२२ ६/३ ७/४ ८/३६ ९/२१ १०/२ ११/१० १४/१ १५/४ १७/२ २१/१ ३२/२ ४५/१।

श्रीमती कन्या भंसाली ने ५४ व श्रीमती सुशीला बोहरा तथा श्रीमती बदामी डूंगरवाल ने ३१ की तपस्या की। एकान्तर—३७, बेले-बेले एकांतर—५, वर्षीतप—७, आयंबिल—२७८००, ओम् अभीराशिको नमः का जप—२८ करोड़, ५१-५१ व्यक्तियों ने जमीकंद, सचित्त रात्रिभोजन आदि का त्याग किया।

साध्वी श्री के सान्निध्य में सास प्रशिक्षण शिविर, बहु प्रशिक्षण शिविर, बाल प्रशिक्षण शिविर तथा कई वाद-विवाद व भाषण प्रतियोगिताएं हुईं। २० सित० को मध्याह्न तेरापंथ भवन में सभी जैन सम्प्रदायों का सामूहिक क्षमापना का रोचक कार्यक्रम हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत बी० जी० हायर सेकेण्ड्री स्कूल, मुगनीबाई सनातन हायर सेकेण्ड्री स्कूल, गणेश बाई गेलड़ा हायर सेकेण्ड्री स्कूल आदि स्कूलों में साध्वी श्री का भाषण हुआ।

साध्वी श्री की पावन निश्रा में अमृत-महोत्सव का भव्य कार्यक्रम रहा, जिसमें मुख्य अतिथि थे तमिल फिल्मों के हास्य अभिनेता व तमिल 'मासिक' तुगलक के सम्पादक श्री चो० एस० रामस्वामी। उन्होंने अपने वक्तव्य में आचार्यप्रवर के विभिन्न आयामों की प्रशंसा करते हुए उन जैसे संतों की मौजूदा हालात में सख्त जरूरत बताई। इस अवसर पर साध्वियों ने अपने भावभरे उद्गार व्यक्त किये।

८ दिसम्बर को समाज-भूषण श्री जसवंतमल सेठिया को उनके ७८ वे जन्म दिवस पर एक विराट् अभिनन्दन समारोह में ७८ हजार रुपयों की थैली भेंट की गई।

अग्रगण्य—साधना निकाय व्यवस्थापिका साध्वीश्री यशोधरा

सहयोगिनी—सा० नीतिश्री (देवगढ़), सा० आनन्दप्रभा (हिसार), सा० ज्योत्स्नाकुमारी (श्रीडूंगरगढ़), सा० गुणरेखा (बीदासर)

चातुर्मास—भागलपुर (बिहार)

साध्वीश्री यशोधराजी पिछले पांच वर्षों से बंगाल, बिहार, असम जैसे सुदूरवर्ती उत्तरी-पूर्वी राज्यों में परिभ्रमण कर रही थी। वहां उन्होंने

कलकत्ता आदि क्षेत्रों में चातुर्मास किया। पूरे बंगाल प्रवास के दौरान उनके प्रवचनों में हजारों बंगाली, ग्रामीण, शहरी, बुद्धिजीवी लोग उपस्थित होते क्योंकि साध्वी श्री उनकी ही भाषा बंगला में धाराप्रवाह बोलती थी। साध्वी श्री का बंगला भाषा बोलने, लिखने, पढ़ने पर अच्छा अधिकार है। उनके प्रवास के दौरान धर्मसंघ की उल्लेखनीय प्रभावना हुई। पंचवर्षीय सकल यात्रा के बाद साध्वी श्री ने उदयपुर अमृत एवं मर्यादा महोत्सव पर आचार्य वर के दर्शन किये। मर्यादा-महोत्सव के पावन प्रसंग पर उनकी साध्वी नियोजिका के रूप में महत्वपूर्ण नियुक्ति हुई।

खंड २ में साधु-साध्वियों की जो रिपोर्ट हमें मिली। उसे देने का प्रयास किया है। कुछ साधु-साध्वियों की तेरापंथ-दिग्दर्शन रिपोर्ट संक्षिप्त एवं सुव्यस्थित थी, कुछ की अति विस्तृत थी। कुछ साधु-साध्वी संघाटकों का विवरण हमें आचार्यवर को समर्पित होने वाले वार्षिक विवरणों से भी मिला। दिग्दर्शन की रिपोर्ट प्रस्तुति के लिए जैन विश्व भारती, शिविर कार्यालय से कई परिपत्र भी प्रेपित हुए थे जिन साधु-साध्वी संघाटकों की हमें बिल्कुल रिपोर्ट नहीं मिली, उनका विवरण निम्नोक्त हैं :—

संघाटकपति	चातुर्मास
१. मुनिश्री बालचंद (आसींद)	दौलतगढ़ (भीलवाड़ा, राजस्थान)
२. ,, शुभकरण (सरदारशहर)	राजसमंद (तुलसी साधना शिखर)
३. ,, मुल्तानमल	पचपदरा (बाड़मेर, राज०)
५. ,, नवरत्नमल	लाडनूं, जैन विश्व भारती (राज०)
५. ,, अगरचंद	छोटी खाटू (नागौर, राज०)
६. ,, नथमल (बागोर)	सुजानगढ़ (चूरू, राज०)
७. ,, अमोलक चंद, मुनि श्री हंसराज	पड़िहारा (चूरू, राज०)
८. ,, जयचंद लाल	इन्दौर (मध्यप्रदेश)
९. ,, सागरमल 'श्रमण'	अहमदगढ़ (पंजाब)
१०. ,, सोहनलाल (श्रीडूंगरगढ़) मुनि श्री संगीत	हिसार (हरियाणा)
११. ,, जंवरीमल	सिरसा (हरियाणा)
१२. ,, महेन्द्र कुमार	अणुव्रत-विहार, नई दिल्ली
१३. साध्वीश्री कंचन कुमारी (राजनगर) ,, भीखांजी (लाडनूं)	लाडनूं सेवाकेन्द्र (नागौर राज०)
१४. ,, चांदकुमारी (मोमासर)	शार्दूलपुर (चूरू, राज०)

१५. साध्वीश्री मनोहरां (सुजानगढ़) सांडवा (,, ,,)
१६. ,, मोहनकुमारी (डीडवाना) छापर (,, ,,)
१७. ,, हर्षकुमारी (सरदारशहर) } सरदारशहर (,, ,,)
,, सुखदेवां (चूरू)
१८. ,, भीखां (सरदारशहर) } राजलदेसर (,, ,,)
,, छगनां ,,)
१९. ,, मोहनकुमारी (तारानगर) श्रीगंगानगर (राजस्थान)
२०. ,, भीखां (श्रीडूंगरगढ़) नाल (बीकानेर, राज०)
२१. ,, मानकुमारी (सरदारशहर) बीदासर, समाधि केन्द्र (चूरू, राज०)
२२. ,, मोहनकुमारी (राजलदेसर) ग्वालियर (मध्यप्रदेश)
२३. ,, सूरजकुमारी (सरदारशहर) मलाड़ (बम्बई)
२४. ,, सिरेकुमारी (,,) गोविन्दगढ़ (पंजाब)
२५. ,, रायकुमारी (सुजानगढ़) पटियाला (पंजाब)
२६. ,, कमलाकुमारी (सरदारशहर) कालांवाली (हरियाणा)
२७. ,, रामकुमारी (,,) जीन्द (,,)
२८. ,, संघमित्रा (श्रीडूंगरगढ़) (सदर बाजार) दिल्ली

साधु-साध्वियों की उत्कृष्ट तपस्या

अमृत-महोत्सव में इस बार साधु-साध्वियों में बहुत तपस्याएं हुई हैं। गुरुकुलवास में मुनि श्री अर्जुनलाल ने पानी के आगार पर मासखमण की तपस्या की। उनके तप की पूर्णाहुति पर आचार्यवर ने एक दोहा फरमाया—

वय बिहोत्तर वर्ष में, वाह मुनि अर्जुन वीर।
मासखमण आमेट में, साध्यो संत सधीर ॥

मुनिश्री भवभूति ने १५, मुनिश्री श्रेयांसकुमार ने ८ व मुनिश्री जिनेश कुमार ने ५ की तपस्या की। मुनिश्री लाभरुचि ने आछ के आगार पर १५ की तपस्या की।

साध्वियों में दीर्घ तपस्विनी साध्वीश्री पन्नांजी ने आछ के आगार पर १८ अगस्त को ५१ दिनों की तपस्या सानंद संपन्न की। आचार्यवर व युवाचार्य श्री ने एक साथ ग्रास दिया। आचार्यश्री ने उनके बारे में एक पद्य फरमाया—

पन्नां दीर्घ तपस्विनी, इक्यावन दिन साज।
युवाचार्य आचार्य कर, करे पारणो आज ॥

उल्लेखनीय बात यह थी कि सदा की भांति साध्वीश्री पन्नांजी ने इस

वार भी कुछ अभिग्रह स्वीकार किए। वे अभिग्रह हैं—

१. आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री साध्वियों के स्थान पर पधार कर एक साथ ग्रास दें।

२. साध्वी प्रमुखाश्री जी एक साथ २१ साध्वियों के साथ पारणे के लिए कहें।

३. सवा लाख का जप पूरा हो जाये।

४. साधु-साध्वियां साध्वी पन्नांजी के पास आकर कुछ खाए या पीए।

ये चारों अभिग्रह पूरे न होते, तो सात दिन की तपस्या आगे बढ़ाई जाती। ये चारों ही अभिग्रह पूर्ण हो गये और उन्होंने सानन्द पारणा कर लिया।

साध्वीश्री स्वयंप्रभा जी के आछ के आगार पर २९ सितंबर को १२१ दिनों की उत्कृष्ट तपस्या का अंतिम दिन था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के सान्निध्य मे उनका अभिनंदन किया गया। दूसरे दिन ३० को आचार्यवर साध्वियों के स्थान पर पधारे। आचार्यवर ने साध्वीश्री को अपने हाथ से ग्रास दिया और उनके प्रति यह दोहा फरमाया—

चौमासी तप आदर्यो, आछ ग्रहण उपरान्त।
अमृतोत्सव आमेट में, स्वयंप्रभा चित्त शांत॥

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—

सुगुरु चरण सान्निध्य, तप रो दिवलो चास।
स्वयंप्रभा सहज्यां वस्यो, आत्मानंद उजास॥

इनके अतिरिक्त साध्वीश्री सुमति श्री ने आछ के आगार पर मास-खमण किया।

साधु-साध्वियों का महाप्रयाण

(१) साध्वीश्री मनोहरांजी (सरदारशहर) का लाडनूं में २२ फरवरी १९८५ रात्रि में आठ दिन की तपस्या तथा दो दिन के चौंविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया। वे ७२ वर्ष की थीं। आचार्यश्री के शब्दों में वे प्रकृति की सरल और भद्र थी।

(२) साध्वीश्री पद्मश्री जी (वोरावड़) का ददरेवा (चूरू) में ११ मार्च को आकस्मिक स्वर्गवास। वे साध्वीश्री सुखदेवांजी (चूरू) के साथ थीं।

(३) साध्वीश्री किस्तूरांजी (सरदारशहर) सुजानगढ़ में २ मई को कैंसर की बीमारी में स्वर्गस्थ हुई। वह मुनिश्री नगराज (सरदारशहर) की